

बि दे ह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका संस्कृतम् ISSN 2229-

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल २०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)



बि दे ह बिदेह *Vi deha*  
**बिदेह** <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम मैथिली  
पारिषद ई पत्रिका *Vi deha Ist Maithili*  
*Fortnightly ejournal* नर एक देखरौक लेन गुथा  
सुभके बिदेहमे कए देखी। Always refresh the  
pages for viewing new issue of  
VI DEHA. Read in your own script  
**Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur mukhi T**  
**elugu Tami I Kannada Malayalam Hindi**

ई अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानकीकृत संस्कृतम् **ISSN 2229-**

२.१.किशोरीकाष्ठ मिश्र जी सँ नरौणावागण मिश्र जी द्वारा जेन  
साक्षाकोव

२.२.उमशकामि सा-१. रँहूकषिया वचना मे २. घोघ उठरैत  
गज्जन

२.३.१.नरैन्दु अमाव सा- केन्द्रीय रिश्नेरिन्धानयक न२ क२ बाज्ज आ  
केन्द्र मे रँठि बहन हाव/ उमोहक रंग सगाष्टु शेताद्वी सगाबोह-  
डा. सचिदार्णद उंपेष्का पव निधन पविषद् भेनाह नावाज्ज । २.  
सृज्जीत अमाव सा - वाम जग्गासैरपव रिशेय/ मिथिनाक कण  
2

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह* १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

कण्ठमे बागमती ३. किशोर कावीगव- अकछ भेल छी । / (एकछा हास्य कथा)

२.४.बिहारी कथा-१.उमथकामि मा २.अमित मिश्र ३.टन्स हमाव मा ४.अशीष टोपरी

२.३.१.बरि भुषण पाठक- ओकब तौरव हमाव सगना २.शिर हमाव मा 'टिन्स'- रैहिरा नाट्य अगल तान



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

२.७. गजेन्द्र ठाकुर- शैलमोक्षम् / दिग्वि

२.१.१. आशीय अन्वेषण- "सगव बाति दीप जवय" केव अन्तु आ  
साहित अकादेमी कथा गोष्ठीक उदय २. प्रियाका मा- सगव बाति  
दीप जवय गव साहित अकादेमीक कर्तु। सबकारी पागव भेन  
रैभनभोज/ साहित अकादेमीक कथा वरीन्द्र दिग्विमे समाप्त-  
वरीन्द्रक कथागव कोला छट लै भेन- १७म सगवबाति दीप  
जवय छेमे रितावाणी न२ गेली ३. स्मृति आनन्द- नोसागुठी  
छुट्टेक लोकार्पण

२.१.१. जगदीश प्रसाद माडनक कथा-हाथ २. अन्तर्जाल- मातृभाषा  
दिवस क रैल

बि एच् रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

३. पद्य

३.१.१. शिर अगाव ना 'छिन्नु' २. न. नमन प्रसाद ठाकुर ३. श्यामल  
नमन

३.२.१. उमथकामि ना २. कमल मोहन छुनु ३. प्रेमचन्द पौडेल ४. करी  
ना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

३.३.१. अक्षित मिश्र २. मिहिर ना ३. उमेश पासराण

३.४.१. जगदीश प्रसाद माडन २. अक्षित मिश्र ३. कल्याण ठाकुर

३.५.१. टंकु कर्माव ना २. परम कर्माव ना

३.६.१. श्रीराम कर्माव ना २. मिश्र ना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

३.१.डा. मेनिष्वर कमार

३.५.बाग बिनाम सार २. प्रभात बाग भुष्ट



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

४. मिथिला कला-संगीत १. गणेश ठाकुर २. बाजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) ३. उमेश मंडल (मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक ज़ोर-जुझु/ मिथिलाक जिनगी)

३. गद्य-पद्य भावती: संग्रहमे डरवान- हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद रिणीत उपेन

७. रौनारना प्रते-रौन गजन १. मिथिल सा २. अमित मिश्र ३. टंदन कुमार सा ४. जगदानन्द सा मय ५. करी सा ६. डा. शशिधर कुमार “बिदेह”-रूपण (रौनगीत)

१. भाषागत बचना-लेखन -[माथक मैथिली], [बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोय (ऑनलाईन पत्रिका रौन मर्च-डिक्शनरी) एस.एस. एस.क्यू.एन. सर्व आधारीत -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]



बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्दा प्रवाण अंक ( ब्रैल, तिबहुता आ देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link .

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्दा प्रवाण अंक ब्रैल, तिबहुता आ देवनागरी कगमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

बिदेह आर.एस.एस.एच.डी ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-547X

"बिदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रमा प्रेषित कर ।

अपन बिदेह बिदेहक बिषयमे सुचित कर ।

↑ बिदेह आब.एस.एस.होड एनीमेटेडके अपन साइट/ रीगपव नगाडु ।

रीगप "लगाडु" पव "एड गाडजेड" मे "होड" सेलेक्ट कर  
"होड यु.आर.एन." मे

<http://www.videha.co.in/index.xml> रीगप केनस  
सेले बिदेह होड प्रेषित कर सकेत छी । गुगल बीडवमे पठरा  
केन <http://reader.google.com/> पव जा कर Add a  
Subscription रीगप निजक कर आ थानी स्थानमे  
<http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कर आ  
Add रीगप दराड ।

Join official Videha facebook group.

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

Join Videha groups

बिदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल प्रोडक्शन्स  
मागछे

<http://videha123radio.wordpress.com/>

Videha Radio

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ मिथि पारि बहन  
छी, (cannot see/write Maithili in  
Devanagari / Mithilakshar a follow links  
below or contact at ggajendra@videha.com)  
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाहुँ । संगहि बिदेहक सुत  
मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रॉब्लमे  
ऑनलाइन देवनागरी पागप कक, रॉब्लसँ कापी कक आ रड  
डायलैगमे पोस्ट कए रड फागनकेँ सेर कक । विशेष  
जाणकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क  
कक । ) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM  
)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/  
Firefox 2.0/ Google Chrome for best view of  
'Videha' Maithili e-journal at  
<http://www.videha.co.in/> .)

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रवाल अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ (डिजिटल, रीड स्वयं साव आ दुरक्षित मने सहित) डाउनलोड करवाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउं ।

VI DEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव

example

भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाटककार आ कश्मिरी विद्यापतिक स्मृति । भारत आ लगानक माछिमे पसबन मिथिलाक धवती प्रोटीन कानहिँ महान प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिना लोकनिक छि मिथिला बने मे देखु ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका* बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

गौरी-शिवक गानरनि कानक मूर्ति, एहिमे मिथिलासबमे (१२०० रर्य पूरक) अभिलेख अकित अछि । मिथिलाक भावत आ लपानक माछिमे पसबन एहि तबहक अग्राग्य प्राप्ति आ नर सुगए, छि, अभिलेख आ मूर्तिकनाक हेतु देखु 'मिथिलाक खोज'

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सर्क, अद्ययण संगहि बिदेहक सर्क-गजल आ नृज सर्क आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेखागुण सभक संग्रह सकलक लेन देखु "बिदेह सूचना सर्क अद्ययण"

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह जानबूतक डिस्कमन होबामाव जाई ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबूत) पब जाई ।

ए रैब मून प्रकाश(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेल  
अहाँक नजरिमे कोन मून मैथिली पोथी उपयुक्त अछि ?

Thank you for voting !

श्री बाजुदेव मंडलक “अप्लवा” (कविता-संग्रह) 13.84 %

श्री रौचन ठाकुरक “रौंछीक अपमान आ जीवनदेरी”(दुष्टा नाटक)  
10.03 %



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

श्रीमती आशा मिश्र “उच्छ” (उपन्यास) 6.57 %

श्रीमती गंगा साक “अव्युत्ति” (कथा संग्रह) 5.54 %

श्री उदय नावाय मिह “नटकेता”क “ला एन्ट्री:या प्रविशे  
(नष्टक) 5.54 %

श्री स्वभाव चन्द्र यादवक “रत्नोत रिंगड-त” (कथा-संग्रह)  
5.54 %

श्रीमती रीणा कर्ण- भारणाक अहिर्गर्भव (कविता संग्रह) 5.54 %

श्रीमती मेघालिका रमिक “किन्तु-किन्तु ज्ञीरण (आमेकथा)  
7.61 %

श्रीमती रिता बाणीक “भाग लो आ रत्नचन्द्रा” (दुष्टा नष्टक)  
6.92 %







२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

श्री जगदीश प्रसाद मंडल जीक “तलेगल”(रौत-प्रेमक कथा संग्रह) 50%

श्री जीरकांत - थिथिबक रिश्ता 28.57%

श्री मूवनीधर झाक “गिनगिनहा गाछ 19.64%

Other : 1.79%

ई लेख द्वारा प्रकाशित(२०१२)।साहित्य अकादेमी, दिल्ली।क लेख अहाँक नज़रमे कौन कौन लेखक उपस्थित छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्योति शर्मा टोपरीक “अर्चि” (कविता संग्रह) 25.53%

श्री रीति उपाध्यायक “रम प्रेक्षित डी” (कविता संग्रह) 6.38%

श्रीमती कामिनी “समयसँ समुद्र कलित”, (कविता संग्रह) 6.38%

श्री प्रवीण काश्यापक “रिचयन्ती रविवार कालक बति” (कविता संग्रह) 5.32%

श्री आशीष अग्रवालक “अनिल आखि”(गद्य संग्रह) 24.47%



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

श्री अक्षय मोहंन "एतरे ठा नहि" (कविता संग्रह) 5.32%

श्री दिगीप अमाव मा "कृष्ण"क जगल बहल (कविता संग्रह)  
7.45%

श्री आदि यागारवक "भोख पेमिनसँ लिखल" (कथा संग्रह)  
5.32%

श्री उमेश मण्डनक "मिस्तकी" (कविता संग्रह) 11.7%

Other : 2.13%

ई लेख अखराद प्रबन्ध (२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेख  
अहाँक नजरिमे के उग्राउ छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेश अमाव रिकन "मयाति" (मवाठी उग्रास श्री रिष्ट  
सखास थान्कव) 36.84%

श्री महेश नायास बास "कार्मेनीस" (कौकशी उग्रास श्री  
दायेंदर मारजो) 11.84%

श्री देवेश मा "अखतर"(रौंया उग्रास श्री दिवान्दु पालित)  
13.16%

श्रीमती मेषका मणिक "देशे आ अख कविता सत" (लपानीक  
अखराद मून- लेखिका थापा) 13.16%



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

श्री प्रभु कृष्ण कृष्ण श्रीमती शशिबाला- मैथिली गीतगोविन्द  
( जयदेव संस्कृत ) 10.53 %

श्री बाग्यबाग्य सिंह 'मनोहर' (श्री तकरी शिरीशक पित्रिक  
मनोबाली उग्रास) 13.16 %

Other : 1.32 %

श्री प्रभु कृष्ण-समग्र योगदान २०१२-१३ : मनोबाली सहित  
अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !

श्री राजेश्वर नान दाम 53.45 %

श्री डा. अमरेश्वर 22.41 %

श्री लक्ष्मण सिंह 22.41 %

Other : 1.72 %

१. संगीतकीय

।

१

20



युनीकोड पत्र साहित्य अकादेमीक कथाछाँयमे पर्छाँ रितबन

डा. बसन्त नारायण झा द्वारा युनीकोड पत्र साहित्य अकादेमीक कथाछाँयमे पर्छाँ रितबन कएन गेल । एम् सँ मात्र ए स्पष्ट भेल जे पर्छाँ निश्चिन्ताबलै नहिये युनीकोडक विषयमे कोनो जानकारी छहिन आ नहिये रिसर्च रा युनीकोड दुनु अक्षरक निर्माण कोनो प्रावधिक त्रुटि छहिन । ई ए पत्रक ओग सभ लोक लेन महत्त्व छै जे सीधै छहिन छहिन जे पूर्वाग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोनो निश्चिन्ता छहिन ।

एम् पहिल चेतना समितिक आविष्कारमे युनीकोड लेन चेतना समितिक योगदानक छहिन देखैत छी ! तबहुता युनीकोड आविष्कारकर्ता अक्षय पाण्डेय जखन पछिला लेन बहिन ई ह्य ह्यका कहल बहिन छहिन जे रियासति त्रुटिमे शिर ऊँच ठाँवक दोष छहिन, ओत सँ अहाँ मैथिलीक कितार कनि सकै छी, ऊँच दु तीन दिन ओ दोष आ समिति रँद बहिनक काव्य ओत सँ घुमि गेल, रँदमे ओत एक गोष्ट कहलक छहिन जे सभ दिन अहाँ अहाँ छी, से ए समिति अखन कम्सँ कम १४-१५ दिन आव रँद बहिन काव्य दु अक्षरमे सगळ १-सँ १२ लेन छै ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

आ अश्वत्थर न२ क२ ओ घुवन बहथि आ मे समिति अपन  
सारिकामे युनिकोड लेन ओ जे योगदान देनक तकव चर्चा  
करैत अछि ! गोरिन्द मा जीक पता मँगनापव एक पोष्ट  
रिप्लान् ( ! ) हुनका कहनथिह जे धुव ओ की रैतेता, आ  
गोरिन्द मा जीक पता ले देनथिह आ तथन दोसर ठामस  
हुनका पता उँगनद्व कवरौउन गेल ।

२

बिहनि कथा

०७ फरवरी १९९३. मे सहयोगी मटक, मोहना, मधुबनीक रैसावमे  
झुमाराजी द्वारा बिहनि कथाक शैक्षणिक अवधारणा प्रस्तुत कएन  
गेल जेकर समर्थन श्री बाबू केनहि । एकव समर्थन सरस्वती  
शैलेन्द्र आनन्द, भवनाथ भवन, प्रेमचन्द्र पंकज, नमन प्रसाद,  
प्रभु कुमार मन्डल, मनमोहन मंडल, अश्वमेध, अश्वमेध, कुमार  
बाबू आ सचिदानन्द मंडल केनहि । पहिल बिहनि कथा पोष्टी २०  
फरवरी १९९३. केँ छठौँ कर्णोमीमे लेन, जेगमे बिहनि कथाक  
स्वरूपक चर्चा आ बिहनि कथाक पाठ लेन । ए मे शैलेन्द्र  
आनन्द, श्रीबाबू, उमाशंकर पाठक, झुमाराजी, यशनाथ मिश्र, मतिनाथ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मिश्र, श्यामसुन्दर ठाकुर, मनसुन्दर शर्मा, भद्रनाथ भद्रनाथ, प्रेमचन्द  
पंकज, प्रभु शर्मा, मन्मथ, मनसुन्दर शर्मा, शर्मा बाबू,  
मन्मथसुन्दर, रिजयसुन्दर, शर्मा, सुनील कर्ण, सुनील शर्मा, कर्ण,  
कवचजी, रिजय शर्मा, मिश्र, कमलेश्वर शर्मा आदि भाग लेने छै।

बिदेहक बिदेह कथा बिशेषाकमे बिदेह कथाक स्वरूप आ ओकर  
समीक्षात्मकपद देब बाम चर्चा लेन आ कथाक नव्यांग आ बिदेह  
कथाक बिस्तृत चर्चा लेन।

किछु गोठेकेँ “बिदेह कथा” शिर्षकलेन आगति अछि। ओ आध  
पन्नाक कथाक लेन नव्यकथा शिर्षक प्रयोग कबैलेन बिदेह छै।  
शुद्ध तथेन ३-४ पन्नाक कथा लेन कोन शिर्षक प्रयोग कबैलेन ?  
नव्यकथा तँ तथेन प्रयोग होए छै। तँ की “अति नव्य  
कथा” शिर्षकलेन बिदेह कथा लेन प्रयोग कएन जाए ? एतए जे  
तर्क सहित अकादेमिक दिशि कथा गोष्ठीमे देन लेन से  
होए छै। ओ लोकनि ३-४ पन्नाक कथा लेन “कथा”; आ  
“बिदेह कथा” लेन “नव्यकथा”; शिर्षकलेन प्रयोग कबैलेन ओकर  
बिदेह। शुद्ध कथा, थिम्मा, शिर्षक तँ बिदेह कथा, नव्य कथा,  
दीर्घ कथा, उपन्यास सब लेन प्रयोग एकठाँ शिर्षकलेन अछि,  
महाकाव्यमे सेहो कथा होए छै। एतए हमरा अपन युव  
दिनक एकठाँ थिम्मा (जे बिदेह कथा भए सकैए) मोन पडैत



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

अछि- हिसारक कछामे मागल थीछी रैछी कौस थीछी रैवारड की,  
अ कहलागव एकछी बिद्यार्थी उत्तर देलक; मागल रैछी काम, काव  
थीछी-थीछी कष्ट जेते; से ओग बिद्यार्थीक कहल बने। मासुब  
सहिर तममेनथिन्ह ले, कहलथिन्ह जे राबल रैछी सत्रल रैवारड  
दू रैछी सात हेते ? बिद्यार्थी कहलक ले। किए ? एक-एक  
कष्ट जाले तँ दू रैछी सात भेल ले। मासुब सहिर  
कहलथिन्ह। बिद्यार्थी कहलक- ले। राबल आ सत्रल तँ स्रतल  
अतिर रैना अछि। तखन मासुब सहिर कहलथिन्ह- तहिना  
मागल थीछी आ कौस थीछी स्रतल अतिर रैना अछि।

ए डिमकसलक रौद “रिहल कथा” मोदारीगव आगति कलेरैना  
लोकनि रात रूनि जेत से आशा अछि।

रिहल कथाक अतिरिक्त आव सत्र बिधागव जे डिमकसल जखिन  
हुन, तग सत्रकेँ बिदेह गोष्ठी सत्र द्वावा अतिर कप देल जा  
टुकल अछि।



बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

बिदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ इन्टरैक्टिव लेखोलेखीक प्रदर्शन ।  
किछु रिचाव डाक आ ई-पत्रसँ सेहो आएन । )-  
[http://esamaad.blogspot.in/page\\_05.html](http://esamaad.blogspot.in/page_05.html)

मैथिली नष्टक वंगमाट बिदेह: २५-२६ जनवरि २०१२ स्थान  
चलौबागज,समावगव । निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा  
आधुनिक मैथिली नष्टक आ वंगमाटपव: ११-१५ सितम्बर २०११ आ  
२४-२७ सितम्बर २०११के ।

मैथिली गजल, कता, कबितागव निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम  
परिचर्चा: २७-२९ नवम्बर २०११ आ ०३ आ ०४ दिसम्बर २०११

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

मैथिली हांगकु, ठेका, मैथिली, ठेगा, ठेगा पब निर्मली, जिना  
सुपौनमे अन्तिम पबिर्चा: १२-१३ नवम्बर २०११ आ १९-२० नवम्बर  
२०११

मैथिली बाँन साहित्य पब निर्मली, जिना सुपौनमे अन्तिम पबिर्चा:  
१३-१४ अक्टुबर २०११ आ २२-२३ अक्टुबर २०११

मैथिली रिहसि, नया, दीर्घ कथा आ उपन्यास पब निर्मली, जिना  
सुपौनमे अन्तिम पबिर्चा: २९-३० अक्टुबर २०११ आ ०३-०४  
नवम्बर २०११

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह* १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, अनुवाद, मासिक मैथिली आ  
शेर्लाखनी पत्र निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा: ०९-०२  
अक्टुबर २०११ आ ०४-०६ अक्टुबर २०११

मैथिली महिला आ हेमिसिस्ट लेखन पत्र निर्मली, जिना सुपौलमे  
अन्तिम परिचर्चा: ०३-०४ सितम्बर २०११ आ १०-११ सितम्बर २०११

मैथिली कला-शिल्प-संगीत पत्र निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम  
परिचर्चा: २०-२१ अगस्त २०११ आ २१-२२ अगस्त २०११

मैथिली हास्य-रङ्ग पत्र निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा:  
०७-०१ अगस्त २०११ आ १३-१४ अगस्त २०११

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका* बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-547X**

मैथिली गुगल ट्रांसलेट, गुगल ट्रांसलेट, गुगल ट्रांसलेट  
टून, मैथिली बिकीपीडिया, केशी आ तिवहता मूलीकोडक  
एनकोडिंग पब निर्मिती, जिना स्वप्रीतमे अन्तिम परिचर्चा; ०३-०१  
दिसम्बर २००५, १३-१४ दिसम्बर २००५, ०३-०३ दिसम्बर २००५, १२-  
१३ दिसम्बर २००५, ०४-०३ दिसम्बर २०१०, ११-१२ दिसम्बर २०१०,  
११-१५ दिसम्बर २०११, २४-२३ दिसम्बर २०११

मैथिली मे प्राथमिक आ मध्य विद्यालयी शिक्षा मैथिली माध्यम  
मिथिला मे करेरा लेन निर्मिती, जिना स्वप्रीतमे परिचर्चा; ०३  
फरवरी २०१२

[मैथिलीमे ई-पत्रकारिता :: उमेश मंडल]



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

इ-पत्रकारिताक प्राबल्य भेल लेखक ओ पाठक रसमे काहू बृद्धि देखल जागत अछि । एकव अलक काव्यमे महत्पूर्ण अछि भौगोलिक दूरीक अत । जेसँ बिदेहमे पसबन मैथिली भाषी, साहित्य प्रेमी सब सोना एनाह । एठाम अपन लिटाव रक्त कवरीक पूर्ण स्रतंत्रा लेखको आ पाठकोले भेटैत छन्हि । बचनापव त्रवित छिप्पणी-समीक्षा-सालोचनाक स्वरिवा सेहो छल्लेखल्लेख अछि ।

छल्लेखल्लेख मैथिलीक पहिल उगल्लितिक रूपमे बिदेहक पूर्ण-कप 'भासविक पाठ' ओ जुनाग २००४ सँ <http://gajendrat hakur .bl ogspot .com/> लिंकपव उगल्लै अछि । उना यादु जिरोमिष्टीजपव २००० ईसँ इ सागत बहए, जे यादु द्वारा जिरोमिष्टीज रँद क२ देनाक रँद आर उगल्लै ले अछि । मैथिली इ-पत्रकारिताक आवल्लक श्रेय बिदेहकेँ छै आ तँ एकव नाँ अछि 'बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका इ-पत्रिका' रतमानमे १०३ छै अक इ-पत्राकित अछि । गुगल एल्लेखल्लेख छेछै केव मोतारिक 'बिदेह इ पत्रिकाकेँ ओ जुनाग २००४ ईसँ अखन धरि ११६ देशिक १,३,०२ ठामसँ १२,०४३ छोटै द्वारा ३३,४३,२ रिभिन्न आग.एस.पी. सँ ३,३३,१०१ लेव देखल गेल अछि ।

बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड  
<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi> पव उगल्लै अछि । नगलग २०० सँ लेखी मैथिली



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

पौखी देवनागरी, तिबहुता आ ब्रैल तीन्ही निषिमे जे पी.डी.एफ. फाउन्टने हनी डाउनलोड जेन उगनट्टे अछि अलक बचकावक अनाले जगदीश प्रसाद मंडनक 281 कथा संग्रह, 281 एकांकी संग्रह, 381 नाटक, 281 करिता संग्रह, पाँचठा उगनट्टेक सेहो उगनट्टे अछि । एकव अतिविष्ट ११००० सँ लेखी, तिबहुतामे निखन, ३.०० रँथ प्रवाण तानपत्र, बिदेह द्वावा कन क२ ओकव देवनागरी निषातकाक संग ए सागठपव डाउनलोड जेन उगनट्टे अछि । सबकावी आ गव सबकावी संस्था सत द्वावा अथन धवि कएन समस्त प्रयाससँ ए नगभग १०० ग्राम लेखी अछि । ए समस्त कार्यमे नगभग १०,००० घण्टीक प्रेम नगाउन जेन अछि आ एतए तिबहुता, ब्रैल आ अन्तर्विष्टीय फेलाएक अन्तर्गत (आ.ग. पी. ए) निखीक सेहो लेखी कएन जेन छै आ तग संरधी पौखी जे श्री गजेन्द्र ठाकुर द्वावा निखित अछि ओ हनी डाउनलोड जेन सेहो उगनट्टे अछि ।

बिदेह मैथिली ऑडियो संकलन

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>, एतए बिबिध बिबाक ऑडियो जेना कथा, करिता, गजल, हाङ्क, ठेका, हेरुन, हेगा गत्यादि, देन जेन अछि । एठामक ऋथा आकर्षी अछि ३.० घण्टीक ऑडियो संकलन जे मिथिलाक सत जाति आ धर्मिक संकाव, लोकगीत आ रारहाव गीत जे मैथिलीक जाति आधारित भाषा हेराक अरबाकापव मावक प्रभाव सिद्ध कए बहन अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

मैथिली रीडियोक संकलन

[http://sites.google.com/a/videha.com/videha-](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video)

video , एतए नष्टक, समीनाव, बर्यभ्रत, बसन्तटोकी, माया-  
टकेरी, करि-सन्धान, बिदेहक नाष्ट आ माहिर डुमरक रीडियो,  
मिथिलाक थोड़, गीत- संगीत, मैथिली रीडियो, लोकन  
आर्कागर, सगव बाति दीप जवए, साझाकोव, रिद्धापति पर्र,  
मैथिली गजल आदिक रीडियो डुगलद्ध अछि । एठासक दूथा  
आकर्षा अछि, मिथिलाक सब जाति आ धर्मक संस्था, लोकगीत  
आ बरहाव गीतक रीडियो, आ पहिन रैव बिदेहक सौजस्य  
सतया कक्षाक दीक्षा भावतीक गाउन 'गोरिन्ददास'क गीत । एमे  
नगलतग ३.००० घण्टीक मेहनति बिदेहक सदस्यग द्वारा नगाउन  
गेल अछि ।

बिदेह मिथिला चित्रकला/आधुनिक चित्रकला आ चित्र-

[http://sites.google.com/a/videha.com/videha-](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/)

paintings-photos/ लिंकगव डुगलद्ध अछि 'मिथिला  
चित्रकला, आधुनिक चित्रकला, बैंगल, टोरेण्टा-सङ्क नाष्टक सहित  
कएक हज्जकर्म डुगव ह्माष्टे अछि जगमे २०० सँ डुगव  
मिथिलाक रणस्पति, १०० सँ डुगव मिथिलाक जीव-जन्तु आ १००  
सँ डुगव मिथिलाक जनजीवनक किमानी आ कावीगरी संस्कृतिक  
ह्माष्टे मेहो अछि जगमे ३.००० घण्टीक मेहनति बिदेह  
सदस्यग द्वारा नगाउन गेल अछि ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुबिनि संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह मैथिली जानवृत्त एग्रीजेशन : <http://videha-aggregat or .blogspot .com/> पब मैथिलीक सभ लेखसांगठक बिरबणी सहजताक लेन उंगनद्वै अछि ।

बिदेह द्वारा मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित कए <http://madhubani-art .blogspot .com/> सांगठपब बाखन लेन अछि । एतए सभविषी पोस्ट अछि जकरा माध्यमसँ मैथिलीक श्रेष्ठ साहित्य बिरबणीक सभसँ बाखन लेन अछि । ए अनुवादमे लगभग १०० वर्षसँ लेखी सभसँ लेख थर्क कएन लेन अछि ।

बिदेह:सदेह- पहिल तिवृता (मिथिलासभ) जानवृत्त (बैंगल) <http://videha-sadeha.blogspot .com/> ए मैथिली भाषाक मिथिलासभमे सज्जित पहिल लेखसांगठ अछि ।

बिदेह:बैंगल- मैथिली बैंगलमे : पहिल लेख बिदेह द्वारा <http://videha-brail .blogspot .com/> पब मैथिलीक पहिल सांगठ अछि जे कमरे: मिथिलासभ आ बैंगलमे अछि जेकरा सभसँ सभसँ छोट माथिठवसँ सभसँ आदमी पढा सके छथि तहिना सभसँ छोट सभसँ छोट सभसँ निकालि सके छथि । जेग दुनूमे लगभग हजार-हजार (१०००-१०००) वर्षसँ लेखन लेन अछि ।





लगा त्रुष्टका मागुष्ट मैथिलीमे रौटा सरहक लेन एक मात्र मागुष्ट  
अडि जे संगीततु मागुणि खरामक नामगव- <http://mangan-khabas.blogspot.com/> बाखन लेन अडि । रौन साहित्य  
जेना रौन कथा, लेवक कथा, रौन करिता आदि समस्त रौन  
साहित्यकेँ आधुनिक-लेखनिक दृष्टिकोणसँ लिखन श्री जगदीश  
प्रसाद माडनक १२३. गेष्ट लेवक कथाक अलावेँ विभिन्न लेखक  
केव साहित्य एंगव सहजताक संग उगनरैव अडि जेकवा लिखिमे  
पसवण लेना, रौटते लेना आ किमोवक लेन त्रुि डालनोड हेतु  
उगनरैव अडि ।

बिदेह लेडियो: मैथिली कथा-करिता आदिक पहिन पोडकास्ट  
मागुष्ट- एँठामसँ मैथिलीमे गीत-संगीत, कथा-करिता, गजन-  
हागकु, ठेका-हेरुनक संग अलक परिचर्चा प्रसारित कएन जागत  
अडि । मागुष्टक नाँ अडि-  
<http://videha123radio.wordpress.com/>

बिदेहक हेमसूक टोरेष्टिया-हवरैवी २००+सँ अडि जे प्रवास  
हर्मेष्टिमे डन  
<https://www.facebook.com/groups/10299304978/>  
आ <https://www.facebook.com/groups/7436498043/>  
पव, नर हर्मेष्टिमे एतए  
<http://www.facebook.com/groups/videha/> उगनरैव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

अछि, आ फेसबुकपब मैथिलीक सभसँ पुरान टोरेष्टिया अछि । ए टोरेष्टियापब +४००सँ रैसी मैथिली भाषी सदस्य द्वारा गत मास १०,००० पोस्ट आ ११०० सँ रैसी फोटो पोस्ट कएल गेल अछि । प्रतिदिन १३.० घण्टासँ ढुंगब कागज पोस्ट सभपब अरैए जगमे मिथिला-मैथिली विकासपब सम्बन्ध परिचर्चा होएत ।

बिदेह मैथिली नाष्टा उमेर- मैथिली बंगमाटकेँ रैखिक त्रुव प्रदान केनक अछि जे श्री रौचन ठाकुरजी द्वारा

<http://maithili-drama.blogspot.com/> पब उगल्ल अछि । एतए मैथिली आ अंग्रेजीमे मैथिली बंगमाटक छि-आ रेडियोक माध्यमसँ रिसुवासँ वर्ष १९३० पोस्टमे देनगेल अछि, जे मैथिलीक अखन धरिक “नैपस्थिक छुवा” रैना बंगमाटक बिच्छु बिदेह मैथिली समाजसुब बंगमाटक प्राबन्ध केनक अछि । नगभग २००० वर्षीक मेहनति ए रेसमागुपब अखन धरि भऽ चुकल अछि । एतए मिथिलाक गम-गाममे होगत मैथिली बंगमाटक अतिविधि, कोनकाता, जलकपुव, बाजुरिबाज, पछिना, दिगी आदिक बंगमाटक रिरवण मेहो उगल्ल अछि ।

समदिया- <http://esamaad.blogspot.com/> पब पुनम मन्डन आ प्रियाका ना द्वारा २००४ जेमे शुक भेल, साहित्यिक पत्रकारिताक नीकसँ हष्ट कऽ नुज पोष्टनक रा जे-पेगबक कएमे मैथिली पत्रकारिताकेँ एतएसँ प्राबन्ध भेल । अखन धरि ३.२३ सँ रैसी पोस्ट एठाम भेल अछि । सरश्रेष्ठा नुजकेँ मासक समदिया पुरस्कार देन जागत अछि । अगस्त २०१२मे सरश्रेष्ठ मैथिली पत्रकारकेँ ‘बिदेह मैथिली पत्रकारिता सन्मार्गसँ सन्मानित



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

कवरौक घोषणा अछि जे आरौ साले-साल सेहो देन जाएत ।  
ए लेखमागछपव अखन धरि ३.३.०० घण्टीक मेहनति पूनम मन्दन  
आ प्रिण्टा मा ठागामँ न२ क२ समाचार अपलोड कवरौक  
कार्यमे क२ टुकन छथि आ ए मागछ श्री बागबरोस कागडि  
भ्रमरक सीरियन टोविक भ्रमरहोडक अतिरिक्त ठेव बास उल्लेख  
क२ साहित्यिक मोहभ्रम मैथिली पत्रकारिताक परिचय द२ टुकन  
अछि ।

मैथिली फिल्म <http://maithilifilms.blogspot.com/>  
श्री गजेन्द्र ठाकुर, श्री रौचन ठाकुर, श्री रिनीत उपाध्याय, श्री सुनील  
कुमार मा आ श्री आशीष अलुवरि द्वारा संचालित मागछ अछि,  
एपव मैथिली, अंगिका, बज्जिका आ सुबजापुरीक पूर्ण रिक्वा  
उपलब्ध अछि । एतए अखन गटामँ उपाध्याय पोस्टर उपलब्ध अछि ।

अलुवरि आखर

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/> -  
एपव ४५४१ गज्जन, २२४१ कता, रौचन, नात, १२४४ कर्माग, १०४१  
कवीर आलेखक अनाले शैलो-नागवीर संचालित रिडियो सेहो  
उपलब्ध अछि ।

मैथिली हागकु <http://maithili-hai.ku.blogspot.com/>  
- ए लेखमागछ मैथिलीक साहित्यिक पत्रकारिताक प्रतिमान प्रस्तुत  
करैत अछि । मैथिली हागकु (प्रोफ़ेसर दृष्टिगत ३/१/३.) ठेका



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

(प्रोग्रत दृष्टिगव ३.१/३.१/१) हेरुण (प्रोग्रत दृष्टिगव गद्यक  
एक-दु या तीण अक्षरद्वेदक अंतमे ओतरे हागकु या ठगका)  
हेगा (तेतु सरिधी छि), शेषर्यु आदिक थावी आ प्रिक्ठिस मत  
एतए तेठे जाएत ।

मानक मैथिली <http://manak-maithili.blogspot.com/>  
- ए रेखमागठपव मैथिलीक अक्षरजलिपव मानकीकृत स्वरूप लपान  
आ भावतक मैथिली भाषाशास्त्री लोकनिक मतक अक्षरमाव ।  
मैथिलीक साहित्यिक पत्रकारिताक प्रतिमाष प्रस्तुत करैत अछि ।

बिहनि कथा <http://vihani-katha.blogspot.in/> पव,  
मैथिली करिता <http://maithili-kavita.blogspot.in/> पव, मैथिली कथा  
<http://maithili-katha.blogspot.in/> पव आ मैथिली  
समालोचना <http://maithili-samalochna.blogspot.in/> पव उपलब्ध अछि ।

बिदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रिक्ठिकन लेखोलेखीक प्रदर्शन ।  
किछु रिचाव डाक आ ई-पत्रसँ सहो आएन । )-  
[http://esamaad.blogspot.in/p/blog-page\\_05.html](http://esamaad.blogspot.in/p/blog-page_05.html)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

मैथिली नष्टक वीरगाथा विरुपावः २५-२६ जनवरी २०१२ श्राव  
चलोवागज,समावश्रव । निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा  
आधुनिक मैथिली नष्टक आ वीरगाथावः ११-१५ सितम्बर २०११ आ  
२४-२७ सितम्बर २०११के ।

मैथिली गजल, कता, कर्वागपव निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम  
परिचर्चा: २७-२९ नवम्बर २०११ आ ०३ आ ०४ दिसम्बर २०११

मैथिली हागक, ठणका,शेरु, ठगा, ठरुण पव निर्मली, जिना  
सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा: १२-१३ नवम्बर २०११ आ १९-२० नवम्बर  
२०११

मैथिली रान साहित्यपव निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा:  
१७-१७ अक्टुबर २०११ आ २२-२३ अक्टुबर २०११

मैथिली रिहति, नय, दीर्घ कथा आ उगन्नाम पव निर्मली, जिना  
सुपौलमे अन्तिम परिचर्चा: २९-३० अक्टुबर २०११ आ ०३-०७  
नवम्बर २०११

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासुपिह बरकृष्ण ISSN 2229-

547X VIDEHA

मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, अन्वराद, मासक मैथिली आ  
शेहरनी पब निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम पबिर्छा; ०९-०२  
अक्टुबर २०११ आ ०१-०२ अक्टुबर २०११

मैथिली महिना आ हेमिसिस्ट लेख पब निर्मली, जिना सुपौलमे  
अन्तिम पबिर्छा; ०३-०४ सितम्बर २०११ आ १०-११ सितम्बर २०११

मैथिली कना-शिप-संगीत पब निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम  
पबिर्छा; २०-२१ अगस्त २०११ आ २१-२२ अगस्त २०११

मैथिली हास्य-रागा पब निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम पबिर्छा;  
०३-०१ अगस्त २०११ आ १३-१४ अगस्त २०११

मैथिली गुगन ट्रांसलेटव टुनकिष्ट, गुगन ट्रांसलेट, गुगन लेखिअ  
टुन, मैथिली बिकीपीडिया, लेखी आ तिवहता सुलीकोडक  
एनकोडिग पब निर्मली, जिना सुपौलमे अन्तिम पबिर्छा; ०३-०१  
दिसम्बर २००१, १३-१४ दिसम्बर २००१, ०३-०३ दिसम्बर २००१, १२-  
१३ दिसम्बर २००१, ०४-०३ दिसम्बर २०१०, ११-१२ दिसम्बर २०१०,  
११-१२ दिसम्बर २०११, २४-२३ दिसम्बर २०११



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मैथिली मे प्राथमिक आ मध्य विद्यालयी शिक्षा मैथिली माध्यम  
मिथिला मे करेबा लेल निर्मल, जिला स्तरीय मे परिचर्चा, ०३  
नवम्बर २०१२-०४-०५

नियन्त्रित: ए आ-पत्रकारिता मे साहित्यिक आ राजनीतिक दू  
पत्रकारिता निर्माण अछि जतए, दृष्ट आ त्रैय माध्यमक प्रचुर  
प्रयोग कएल गेल अछि । ]

४

साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगव बाति दीप जवए कहल  
जाए ?

अजित आजाद- प्रभास कुमार टोपरी द्वारा रणबसमे  
आयोजित सगव बाति दीप जवए मे हिन्दी कहानीक पाठ लेल  
हुन । पठनामे आयोजित सगव बाति दीप जवएमे सेहो  
हिन्दीमे कहानी पाठ लेल हुन । कथाकार बहथि द्वयकेँ सनभ  
आ सतोय दीक्षित, उर्दू भोजपुरी आ मगहीमे सेहो कथा पाठ  
लेल हुन अछि । महिषी कथा गोष्ठी (१३ अगस्त १९९१) एक  
सन्ध्या द्वारा आयोजित हुन । पूर्णियाँ गोष्ठीकेँ सेहो एक  
आयोजक लेल हुन । पठनामे हम स्टेट बैंक ऑफ गडिया,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह काव्योपदेश आ सुधा द्वारा प्रायोजित कएल  
छी । एहिमे हर्ष की छैक ? सगरी बाति दीप जवयक मट  
सब लेन खोजन छैक आदि मैथिलीक शक्तिपत्र ले ।

कपेसि कमाव सा लैथ: आग जे त्नात लेन अछि मैथिली लेह  
शिक्षाक छैक । मैथिली कथा ऐच्छिक नामाव आ सब की भ  
बहन अछि ? छी.. ।

सब रंगमण सा सब लेसन अछि मैथिली केव छैकएव रंगि क  
एकवा सबसँ गह आशा कएन जा सकैत अछि ।

रिणीत उपेन: कमानद सा कमा जे जे पवटा रितवा कबएले  
बहनि हम ओकवा तखन देखल बनी, पवटासँ मागन जे हूकव  
तखन छैकएके न२ क२ नहि करे रैवारैव अछि । अप्पन  
रैड 1ग सब कियो क२ सकैत अछि, दोसवाक कवी तखन  
कोला गग लेएत । पवटा दुगायरे कोला पेघ रा छोट गग  
नहि अछि आदि ओगमे जे दुगन अछि ओकवा न२ क२ गतिव  
हैरक चाली । छैबलछै/ तिवहता युनीकोड के न२ क२ के  
कत काज क२ बहन अछि तकरा लेन ठीक तथक कोला पवटा  
दुगएक चाली । तखन रिस्वनीयता रंगन बहत । कमाजी एहन  
रिद्वान आ आदवणीय लोकसँ आ उन्नीद नहि छन । मैथिलीक  
रिस्तारसँ मिथिला रैठत ।





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

अजित आजाद जी के स्प्रोचिकरण देरौक चली। मामना गंभीर अछि। हम सब मैथिली भाषाक लेन काज कइ बहन छी नहि कि कोर्टमे। एक गमती के पुखता करैक लेन पहिबुका गमतीक उदहारण नहि देन जा सकैत अछि। अ कहय मे कोनो मकोट नहि जे अजित आजादजी रैड स्टुडिओरना आ कर्मठ लोक अछि। राबहु छ्ठी धरि मीट मीटानस सामान्य लोक नहि कइ सकैत अछि, जे हम दिग्री गोष्ठीमे देखनहूँ। हुनकामे किछु दिरा मेडि तँ अछि तहि मँ ओ रैड गंभीर भइ कइ मीट मीटानस कइ सकनथि। रुदा कनी-कनी गगक रा अलग्ग गगक काका हुनकब तब नीचाँ आरि जागत अछि। हुनका अहि पब धान देरौक चली।

जौं टी.ए/ डी.ए क गग अछि तँ एकानि जी/ नरीन जी/ अजित आजाद जी मँ अग्रबोध जे अहि गग के स्प्रु कएन जाय जे टी.ए/ डी.ए देन गेन अछि रा ले। दिग्रीमे बहरैना लोक तँ ओहिना पहुँचरौ कएन, रुदा जे राबहु मँ आयन छन ओकव की हिसार-कितार छन। जौं अ तीनु गोष्ठीमे कियो अहि मामनाके स्प्रु कवय तँ ठीक नहि तँ अहि मामने मे तीनु गोष्ठीक मोन सहमति रूमन जाय।

उमेश मंडन: "मिथिला रिप्रेजिन्टेशनक "मैथिली" पत्रिकामे रीणा ठाकुर जगदीश प्रसाद मंडन आ शिर रुमाव ना जीक आलेख मंगरैलहि रुदा डिपार्टमेन्टक एकठा आध्यापक दू गोष्ठीक आलेख छ्ठी देनहि।" हमने मँ मंगरैल बहथि।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

गजेन्द्र ठाकुर:

अजित आजाद जी अही तबहक नुज ठाक करैत बहे छथि/  
हमरा नग सगव बातिक बजिस्तैव क कोणी अछि, की अहाँ ओग  
कथा सभक पन्ना रैता सकै छी ?

अबबिन्द ठाकुर जीक स्वप्नोन्मेष गोष्ठीमे मेहो हिन्दी कथाक पाठक  
सूचना अछि । तँ की सगव बाति कै हिन्दीक गोष्ठी रैना देन  
जाए ? रैजू करिबन्धन मे मिथिला बाज्य जन राजन बहथि तँ  
की सगव बाति कै मिथिला बाज्यक मट रैना देन जाए ?  
अजित आजाद कै रूमन छनि जे एन.आ.ग. सी. आ. स्टेट रैकक  
एडरर्सीजमेन्टकी पालिसी छै ? की सहित अकादेमीक नोटो  
मात्र एडरर्सीजमेन्ट छन ? ले, ओ स्नामिन् छन जे दिव्यीक कथा  
गोष्ठीकै सगव बाति ले हेरै देनकै/अजित आजाद जी अही  
तबहक नुज ठाक करैत बहे छथि/ ओ करिबन्धनमे यंत्रणाथ जीक  
स्वतंत्राक चर्चा करैत कहल बहथि -“कहि देन गेनहि छै  
आँछै” तँ की ओ सगव बातिक अंग भऽ गेन ? स्वप्नोन्मेष ओ  
की केल बहथि ? उमेनि मंडन जी कै ओ कहनहि जे ए  
रैकका छैलौव सहित सन्धान जगदीश प्रसाद मंडन कै छैलैतनि,  
रूदा हेल शैकबदेव साक हेलन एनहि उमेनिजीकै जे अजित  
आजाद छैलौव सहित सन्धानक ग्राँड निस्ट रैलननि आ जगदीश  
प्रसाद मंडनक पोथीक नाम ग्राँड निस्टमे ओ ले देननि ?  
ओ कथनी कथनीमे हर्क कि ? “कथा पावस” मे शिर ह्माव  
सा जीक कथा सप्तादक अशोक अरिचन देननि रूदा सहायक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषींह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

सम्पादक अजित आजाद जातिरादी मासिकताक चरते काँटि  
देवनि (जेना अमोक अरिचन कहि छथि) ? तहिना मिथिला  
रिप्रेजिन्टानसक “मैथिली” पत्रिकामे रीणा ठाकुर जगदीश प्रसाद  
मन्डन आ शिर हमार सा जीक आलेख मंगलमहि ह्रदा  
डिपार्टमेन्टक एकठा आवागक दुनु गोठेक आलेख छै देवनि ।  
शिर हमार सा आ जगदीश प्रसाद मन्डनक क समीक्षाक दनित  
रिजर्जिस्म सत घरैइ । गेल छथि ? सीविजम डिजसम ये अजित  
आजाद जी ए तबहक नुज ठीक की माहिर अकादेमीक गिवा  
पव क२ बहन छथि, जे अगल गोष्ठी ये मैथिली पौथीक  
प्रदर्शनक अवसति ले देवक ?

जगदीश प्रसाद मन्डन, रोज ठाकुर, कपिलेश्वर बाउत, बाजुदेव  
मन्डन, उमेश पासराज, अछनानामोत्री, दुर्गाशब्द मन्डन,  
साइ दुबजी आदि श्रेष्ठा कथाकार लोकमि एकठा पौष्टिकार्डो  
ले देवक आयोजन मन्डनक निर्णय अछि, उना ते सँ ए  
लेखक सतक सृष्टवपव कोला हक ले पडतहि । भ२ सकैए  
१३.म गोष्ठीक आयोजक अमोक आ कमलमोहन दुनु रतिमान  
आयोजकले हुनक सतक पता सायस रा अनायस ले देल  
हेथिह आ रतिमान आयोजक ले से सुविधाजनक लागल  
हेतहि । जगदीश प्रसाद मन्डनजीक आयोजनमे सत  
गोष्ठीगोष्ठीगोष्ठी आ चन्दन ठीका पाग धारी भोज आ आन छथि,  
ह्रदा रोजेरा कानमे अगल आयोजनले रतिमानभोज रतिमान  
रति छथि । उना ए आयोजन माहिर अकादेमीक हस्डस  
आयोजित भेल आ एकवा माहिर अकादेमीक कथा गोष्ठी मात्र  
मागल जाए । मैथिली माहिरक गतिहामे १७ म सगव बाति  
दीग जवगक कगमे ए जातिरादी गोष्ठीले मागता ले देल जा  
सकत । माहिर अकादेमीक मैथिली रिभागक जातिरादी छेवा

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह* १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

एक रैब हएब मोनो आधन अछि जखन ओ मैथिलीक एकमात्र  
स्वायत्त गैजेटेड त्रैडि देनक ।

।।

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा रौबोआहारी...गजेन्द्र ठाकुर द्वारा  
.....श्री

दिनांक ३-१-१९४१ ई.के. जन्म ।

भवन-गुवन परिवार ।

तीन पीढ़ी ई एक पुरखियाह परिवार छल अछि छन ।



जल्मि रौरौ तहिना पिता भवथिन्ह ।

घब लग गौथवि-गभाव बहल पामिक सुखिवा भवहि ।

माता-पिताक संग दीदीयोक परिवारक संग मिनन-जूनन  
परिवार ।

तग संग अगला किछ जमीन...

आ गामक जे रौठवरौया मालिक बहथिन्ह हुषकव खेतो रौठाग  
करैत भनाह जगसँ खेरा-पीराक अतार सेहो ले । एक तँ  
रुशिगतो आभाव देसव पितोक दुगव पाविराविक-समाजिक अतार  
पड़न भवनि जगसँ किछ अगुआन रिटाव बहनि ।

जल्मि भतभोजमे रौरी पड़ि ते पट बुमि जागत अछि जे  
भोज अतिम दोड़मे आरि गेल तँए आरि गतजाव ले  
कवरौक चली ।



जौ गतजाव कवरौ तौ तुखने उठरौ ।

तगसँ नीक जे मवि-धूमि सरौ द२ कमि नी ले तौ दोथ केकव  
हेते ।

तह्निा अथेज्जी गोमन अगन सत किछु समेष्टि बहन छन ।

१९४२ ई.मे जे तूफानी आन्दोलन उठन ओ कमन ले, उग्रसँ  
उग्रतले तेन जागत छले, जेकव पबिसाग १३ अगस्त १९४१ ई.  
छी ।

रूपा दैमोक दगो एकदुई या ले, अगलाये खेपछे होगत  
छले ।

कतौ जातीय उन्माद तौ कतौ साम्प्रदायिक उन्माद ।



कतौ धन-सम्पत्तिक तँ कतौ गज्जत-श्रोकक ।

जहिया स्रतवता संग्राम जेब पकड़ल तहिया रँगानक अकान,  
रिहावक भूमकम (१९३४)क प्रभावसँ प्रभावित भन । स्रतवताक  
नङ्ग गमे विविधचिन्तक योगदान देमैक कोना भागसँ कम ले  
बहन ।

एक दिनि प्रसूतेनी मोचक झूठप्रकथ तँ दोसब १९४०ई.क रौद  
मोशिलिस्ट पार्टी आ कम्युनिस्ट पार्टी राजनीतिक मोच पौदा  
कलैत बहन ।

समाजिक रीट जागककताक नहबि चलैत बहन ।

जहिया मोशिलिस्ट पार्टी अगल किछ कार्यक्रम न२ ठाढ़ भन तहिया  
कम्युनिस्ट पार्टी ।

दवतंगा जिलाक पहिल टीम (१९३९-४०) पार्टीक सदस्यता ग्रहण  
क२ चुकन भुगार ।

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

रथदाव कार्यकर्ता रैनि उतवि टुकन डनाह ।

तलिना मोशेनिमिष्टे पाठी, गाम-गाम पहुँच टुकन डन ।

१९४२ ई.क. जल-आनदोनन पुमठैनी मोचमे धक्का मावनक ।

धक्कासँ रिटावमे टुष्ट-फुष्ट भेन ।

धक्कासँ टुष्ट नर मोचक रंग मोहो एन ।

सामाजिक परिवर्तने पौदा क२ टुकन जे जमीनदारी समाप्त हेरौ  
कवते, बाजा-बजराव ठहरौ कवते ।

आग धरि क जे जमीन निमासीक प्रथा डन आ मानगुजावी असुनक  
जुन्य डन ओ मेठेरौ कवते ।





नर रिटाव जल-गणक रीट पौदा न२ टुकन डन ।

मिथिलाटक रीट समावपुव गलाकाक अगुगन प्रतियुता वहन  
अडि ।

जलिना शिक्षाक क्षेत्रमे तलिना आर्थिक क्षेत्रमे ।

देशिक पैमानामे गलाका गढुआएन ले डन अगुआएन डन ।

एकसँ एक महान प्रकय पौदा न२ टुकन अडि ।

आजादीक नड १०१मे खुल रौलौमिहार क्षेत्र डी ।

समावपुव अग्रेजक ह्रथ्थ अड्डामे डन ।



दमन नीति कतेो चनन तँ अछि फेब्रुवारी चनन ।

मिथिलाचनक रीच समावस्थ गनाका ओ फेब्रुवारी छी जगमे मिथिलाक  
गतिहास दर्शन, अथला मनकि बहन अछि ।

अथला गाथवमे हुन, माष्टि-गामिमे स्वर्गध जरीरित अछि ।

फेब्रुवारी गाम-समाजमे दर्जला जाति दर्जला समादाय, अदोमँ  
अथल धरि मिनि-जुनि एकठाम रास करेत एनाह अछि ।

भूमिपोक शक्ति ठहल उँरव अछि जे देशेक पहिल श्रेणीक  
समय अरादीरैला फेब्रुवारी अछि ।

रीसम सतारदीक पाँचम दशक देशेकँ ए कपे आनदोनित क२  
देनक जे लोक जन-गण धर-परिवारसँ आगु रैठि देशेक जन  
अगनाकँ अर्पित क२ देनक ।



जहिया दशकक पूर्वाह्न आबद्धोनि केलक तहिया एक संग  
अलकौ प्रमि उठि कइ ठाढ़ भेल ।

उना एकसंग खुशी आग धरिक देशिक गतिहासमे कहियो ले  
भेल भुन जते भेल ।

जेलो-जेलो आजादीक माँडा फहरैक दिन नगिटागत गेल  
तेला-तेला खुशीमे रैठ तबरी होगत गेल ।

अ पा दशक जहिया जहोमे नगन तहिया अ पा दशक बग-  
बगक सगला देखेमे खुशीसँ रीतल । सजाक रीट तँ ले ह्रदा  
देशिक बाजनीतिमे आर्थिक ह्रदा स्पष्ट रिभाजित कइ देल  
भुन ।

कियो देशिक पूर्ण आजादी देखेत भनाह तँ कियो लोवा  
आजादी रूनेत भनाह ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

उना देशिक भीतर बौद्ध, बुद्धक, जाति-सम्प्रदायक बुद्धाद  
एते जेव पकड़ि जेल छन जे भीतर-बौद्धक नद १०मे  
बाजनीतिक दन अवस्था छन ।

उना तेजगिरी नद १० देशिक नक्षत्रमे आरि छन छन ।

भावत-पाकिस्तान रिताजक एक-एक जगसाधकै सकसोबि  
बहन छन ।

दसो रैथिक जेनक बुद्ध छन दसो संगी सतक रीट छुट्टि बहन  
छननि ।

काना-पानी जलमे संगे छनान बुद्धा गाम-समाज रिताजित भ२  
छननि । १३. अगस्त (१४ अगस्तक बौद्ध रैजे वातिक  
उत्तर)कै तिबंगा सँडा हलबान ।

अग्रज शीसक अन्त भेल ।



जब-मासक दुदिये खुशीक नहि असुयो ले तेन भन आकि  
गाँधीजीकेँ बाजधानीमे दिस-दहाव गोली नगनहि, जे मोसलक  
संगष्ट छि अस्तुत करैत अछि ।

सरिबास सतामे सरिबास रैषरै शुक तेन ।

सरिबास रैषन 1952 ई.सँ आस चुआअ । अफिया शुक तेन ।  
बाज्या आ केन्द्र सबकाव रैलक चुआर तेन ।

सर सबकावक गठन तेन । ओना देशक रिस्तायो अथेजो  
मोसलसँ तेन, ह्दा हज्जो समस्याक रीट पछि देनक ।

सर सबकावक रीट हज्जो समस्या उपस्थिति भ२ गेन ।

गाय-गायमे रकाम्त जमीनक नड १७ पसवि गेन भन ।

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बाजनीतिक सभ पार्टीक एकदुहरी समर्थन बहल नइ । ग सफा  
भेल । ... ..

... ..

... ..

... ..

१९३० ई.मे पिताक निधन भेलनि ।

जखन तीन र्थक बहनि ।



दू भाँगक भोगाबीमे छह रँथक भाग (भैया) बहथिन्ह ।

पिताछी कबीर एक मास रोगाव बहनाह ।

गनाजोक नीक रोरस्था ले, तारैत दबडंगा अस्पताल ले रँगन  
छले ।

माड-मुकसँ न२ क२ जड १-रूँठीक गनाज समाजमे चलैत  
छन ।

आजूक परिवार जकाँ ले जे ले रैछी राग-माएकेँ देखेत अछि  
आ ले माए-राग रैछी-गतोहूकेँ ।

काका अलक अछि दूदा अगला परिवारक जँ जिम्मा ले न२  
छनरै तँ अलले हम सब मातृभूमि, देशे महान कह छिथ ।

बि दे रु मिदे Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

गंगादावी पुरिक छद्मिगव हाथ बथि क२ कहे पड़त जे देनि  
की आ लेनि की ?

हमरा ले भेन तेकव दोखी हम ले ?

एक तँ अगला परिवारमे समाग दोसब गामक कोला जाति एह  
ले जग जातिमँ पारिवारिक संरिध ले बनहि ।

तग संग जातियो नमहर छैन ।

गामक टाक कातक गाममे कहुँमेती मेहो बनहि आ अथला  
डहि ।

ओहो सब अगलामे समाग निर्धारित क२ अरैत-जागत बहत  
डनाह ।

कान्ही मेहो नीक रँलौननि ।





एकसँ एक थिन्सकब आ एकसँ एक गप केनिहार ।

तँए दिन-बातिमे कोना अतब ले ।

अन्धकार परिवारमे नहिसे छनहि तँए अन्धकार परिस्थिति रँगल  
छन ।

अन्धकार परिस्थिति रँगल परिवारक भविष्य दिनि सेहो नजबि  
पड़नि ।

भैयाक रिश्ताह भऽ गेल बहनि ।

चाबि-पाँच रँधमे रिश्ताह होगत छन । तद्धमे मौसी (मात-  
भए रँधमे सबसँ जेठ मौसी आ सबसँ छोट माए । ) बिबरा  
भऽ गेलीह ।

बि देह बिदेह Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

मौसीकेँ मात्र दुर्गयेष्टी रैष्टी, परिवार अन्त भऽ जोगनि ।

मौसीक प्रभार मागक हुँपव, तँए जेठ-भायक रिखाह पाँटे  
रैथमे भऽ जोगनि ।

भरिया दिसि दृष्टि पड़ि ते लिनकापव नजनि पड़नि ।

उडागल पकड़न बाणिक अरस्था ओहल होगत जेकब कोला  
निशुक्ती ले ।

जीरियो सकेँ छथि मरियो सकेँ छथि ।

तँए एहेन अरस्थामे निचारोमे गमानदारी अलै डै ।

मद्धी (ददिया सम्भव) परिवार स्वयम् ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ददिया ससुबक कष्टमैती गोधनपुव मौसीक परिवारमे ।

मौसीक आराजानी रैवसा रैलि एठास ।

ददिया ससुब सुवाग तीड़ । गोधनपुवक मौसाक छोट भाए संग  
अ रैए-मगनाह ।

हुन-प्रगट रिहीन मौसी माएकेँ कहि देनथि ।

जेठ-छोटक रिचाव बसैत माए आग्रासन द२ देनथि जे अथन  
तँ अगल अछोराष पेल छथि, राजा-दैरीक कोला ठेकाष ले  
छै, तँए अथन किछ ले, रूमन जेते ।

महुषीक परिवार रैरहाविक दृष्टिये दर ।

ताड़-खजूबक गाढ रैसी ।



एक-नगागत रूठ । (ददिया असुब) अणन पननो भवि गौती आ  
टद्वेन लनहि गहुँटि मृत्यक आथिबी समए तक रौवगामे बहि  
गोनो ।

मृत्यक अतिमा बाति, डिर्गिया जखिते सतकेँ अणन रूमि गछए  
नगननि ।

जे रौन जखित डन, रूमि भ२ गोन ।

हाथ-पएवक डोनर रूमि भ२ गोन ।

माएकेँ नगमे रूजा रूठ । (ददिया असुब) गोणनखवरनो योमाकेँ  
समरौरित करैत कहनथि- “समधि, जे रूछो हमरा द२ दिख ।  
गोरब पाबैले गोती देरैनि ।”



मिष्टिगक प्रसूतार जकाँ लोभलखवरीना मोना समर्थन करैत  
करनथि आ तँ घब कथा भेल, एमे कि हँ-हुँ करन जाएत ।’

तही रीट मोना छपकि गेली- “रल्लि, अखल रौन-रौध अछि  
लिनका रौछा देलियनि । तनिये रँथमे रिखाहक रौत पक्का भऽ  
गेल ।”

अखल धरि परिवारमे अगलामँ गाथ दूहेक, हब जोतैक आ  
खुँछागब रौछा रँथिया करैरौक छलनि ले बहए ।

पिताक परोड भेलहुँ समेगब सकुन पहुँचलथि । गाममे लोखब  
प्राणकारी सकुन भेल ।



तीतघर बहल भूमकम (५५३) अ.मे. थमि गड़ल ।

बाज्जा-दैर तेल जल्लि लोकर घवाड़ १ रँदलि नगए तल्लि  
मकुनक घवाड़ १ रँदलन ।

उग मयैमे तीक्ष्ण कटहरी रैबामे डल ।

दड्डिलरैबिया कटहरीक घबमे मकुन चनए नगल ।

गड्ढाति ओहो रँदलि अखुलका जगहगव गहूँचल ।



रैबमा पंडितक गायक श्रेणीमे गणन जागत अछि ।

गवोगष्टक लोक गेठवी मार्के जलैत छन्हि, जिनका सात सए  
रीया जमीन बाज-दबडगामँ भैठैन छनि ।

ठगा ओ जमीन रैबमा सीमामे ले पड़ैत अछि ऊदा दु कोस  
हष्ट कइ छन ।

आर ले छन्हि ।

दोसब रैचमे चाबि गोठे, रैद, ब्याकबा साहित्यसँ आचार्य  
केननि ।

बि दे रु मिदे Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

दू गोठेके मेडन भैठेनि ।

तना तीन गोठे गामे राहब बिद्यालय पकड़ि जेनि, झुदा एक  
गोठे (मेडनवाही) गामे नून-तेनक दोकान क२ जेनि ।

‘पठे हावसी रौछे तेन चरितार्थ भ२ जेन ।

झुदा अगल नगल आ मेहनति तनु गोठेके आर्थिक क्षेत्रमे  
पहुँचा देनि ।

समाजपब रूत अधिक प्रभाव पड़न ।

मेहनती गाम तहियो डन अथला अछि ।

आल गामे कमो पठन-लिखन लोकके लोक छुटकी लेत अछि,  
से रोक्या ले अछि ।





समावश्वर रोजावसँ माथिलीह रसुत-जातक (दोकाषक) मोठवी  
लैंगीक लोदमे अलैत दुनार, जे सभ देखैत छल ।

गाममे एकठो दोकाष ।

सरैरक नष्ट दोकाषसँ ।

उना एकठो समावश्वरक रँगिया सेहो आरि लेबामे दोकाष  
खोजल रहथि ।

समावश्वरक रँगियाक परिवार तुमकामे बगुँ भऽ गेलनि ।

ऊँठाक घर बहल सभ दरौ कऽ गेलि गेलनि ।

रएह लेबाम आरि रँगि गेलनि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

पिताक मृत्युक किछु ले यादि छल, मिर्छा गाडीमे जलैत  
अडिया छै..... । ओना अंग्रेजी शिक्षा सेहो गाममे कम  
प्रतिशेतेमे पहुँचि छल छल ।

गामक उत्तर बरानी बिद्यालय आ दक्षिण दीप बिद्यालय छल बल  
छल ।

तहकिया हाथ सुकल आ बरिमावपुर हाथ सुकल सेहो रनि गेल  
छल ।

गामक जे तीनु पंडित राखल बल छल तहकिया सरलक परिवार  
गाममे बल छल ।

अपना छुट्टी गाममे बल छल ।



एकडोबिमे तीनु गाम (नरानी, रैबमा, दीप) बहिनो सामाजिक  
रातारबामे रूतु अरि तिमनता अछि ।

एक ठँ पवगल्लक प्रभार दोसब सामाजिक रैगारैछ ।

जग नरानी दीपमे ताड़-खजूरक गाछ सेहो भवगुन अछि  
तगताम रैबमामे एकाछी गाछ ले अछि ।

दोसब काका गहो अछि जे मध्य रंगीन जाति रूतुअरि  
अछि ।

मन् सैतानीस...

भावतक स्वतंत्रताक त्रिपार्षिक मन्डा हलवा बहन छन ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रूदा कम्युनिस्ट पार्टीक माषणाग डन जे भावत स्वतंत्र ले भेन  
अछि ।

अमनी स्वतंत्रता भेटैर रौकी छै...

मिथिलाक एकठा गाम...

जग्न होगत अछि एकठा रौदाक.. ओही रथ ...

ओग स्वतंत्र रा स्वतंत्र ले भेन भावतमे...

पिताक मृत... गरीबी..

कस मोकदमा...



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रचितक जेन सँघर्षमे भेलैले स्वतंत्र भावतक रा स्वतंत्र ले भेल  
भावतक जेन....

आग लेबामे पाँट-दम रीयास प्ये जेत ककरो ले..

उग गाम मे आग जलित अछि आगयो किसानी आमेनिर्भव  
संस्कृति...

प्रवाहितरादगव लेखारादक एकछत्र बाज्यक जतऽ भेल समाप्ति..

संघर्षक समाप्तिक बाद जिनकव लेखन मैथिली साहित्यमे आनि  
देनक प्रवर्द्धन...

जगदीश प्रसाद मंडल- एकठाँ रायोप्राप्ति... गजेन्द्र ठाकुर द्वारा  
.....गीत

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-



गजेन्द्र ठाकुर

[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)

[http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post\\_3709.html](http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html)

२. गद्य

२.१. किशोरीकांतु छि जौ नँ नरोनाराना छि जौ द्वावा जेन साँझकोव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

२२. गुप्तकालीन सा-१. बहूकालीन बाला मे २. घोष उठैत गजल

२३. नरेंद्र काल सा- केन्द्रीय बिदेह बिदेह नरेंद्र काल बाज्य आ केन्द्र मे रैति बलन हल/ उमालक संग सगल शिताली सगल- डा. सतिशर्मा उपेक्षा पल मिला पबियतु बेलाह नाराज । २. स्वर्गीय काल सा - बाय जगल सगल बिदेह/ मिथिलाक कल काले बायलीता ३. किशो कालीन- अकलु बेला डी । (एकलु हल कथा)

२४. बिदेह कथा-१. गुप्तकालीन सा २. अति मि ३. टंक काल सा ४. अतिम टंकली



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

२.३.१. बरि भुषा पाठक- ओककब तौलब हमार सगला २.गिरि कमार  
मा ठिगनु- रैलिया बाछ अपल तान

२.३.गजेन्द्र ठाकुर- मोहम्मद / दिल्ली

२.१.१. आशीष अरिहो- सगल बाति दीप जलबलब अन्तु आ सहिब  
अकादेमी कथा गोष्ठीक उदय २.गिरि कमार- सगल बाति दीप जलबलब  
पब सहिब अकादेमीक कट्टा/ सबकारी पागलब तेन रैलिया/भोज/  
सहिब अकादेमीक कथा बरिन्द्र दिल्लीमे सगल- बरिन्द्रक कथापब  
कोला छर्ता ले तेन- १३म सगलबाति दीप जलबलब तेनमे रितावली  
म२ गेली ३.सुमित अरिहो- मोसागरी छुटके लोकगीत



बिहारी मिहिर *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

२.५.१. जगदीश प्रसाद माडनक कथा-कथा २.५.१.१. माडनका कथा-कथा  
क रैलख



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-  
547X VIDEHA

अर्द्धशताब्दी सँ बेसी (गत 50 वर्ष) सँ मिथिला-मैथिलीक सेवा कएनिहार श्री किशोरीकान्त मिश्र, पूर्व अध्यक्ष,  
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाता सँ सेल गेल साक्षात्कार।

— श्री नवोनारायण मिश्र, सचिव, कोकिल मंच, कोलकाता



प्रश्न : अपने कलकत्ता कहिया अयलहुँ ?

उत्तर : 1956 ई० क जुन मे हम कलकत्ता अएलहुँ। अर्थ उपावर्जनक संग शिक्षा  
ग्रहण करब उद्देश्य छल।

प्रश्न : मिथिला-मैथिली सँ कहिया आ किनका प्रेरणा सँ जुड़लहुँ ? तपनकुल  
की उद्देश्य छल ?

उत्तर : गणित मे कमजोर रहबाक कारणे विद्यालय मे विज्ञान विभाग नहि  
भेटल। कला विभागक स्तर मे अएलहुँ आ गणितक स्थान पर मैथिली  
विषय भेटल। विद्यालय मे प्रत्येक शनिदिन बाद-बिबाद प्रतिस्पर्धा  
होइ छलैक। एहि मे जे किछो भाग लऽ सकै छल — पक्ष या विपक्ष मे।

हमहूँ भाग लेब शुरू कएल। उपप्रधान अध्यापक स्व० शिवनारायण मिश्र, मुँठ ग्राम निवासी प्रतियोगिताक अध्यक्ष छलाह।  
मातृभाषा प्रेमी, विद्यालयीय विज्ञान विषय छोड़ि प्रत्येक विषय मे निष्णात। विद्यार्थी लोकनि जानबाक माध्यम हिन्दी या  
अंगरेजी रखै छलाह। शिवबाबू हमरा लोकनि केँ मैथिलीमे बाजक छूट देलन्हि। ओही ठाम सँ मैथिलीक प्रति प्रेम जागल  
छल। कलकत्ता मे 1959 ई० क जनवरी मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद्क स्थापना भेल। हम एवं स्व० राजकुमार मल्लिक  
साहित्य प्रेस मे काज करैत रही। तँह हमरा एहि संस्था सँ ससद् कर्तव्यनिह। उद्देश्य छल मात्र मातृभाषाक प्रति आदरभाव आ  
ओकर सेवा केनाइ।

प्रश्न : साहित्य केँ अपने कोन तुल्य देखैत छी ?

उत्तर : मैथिली साहित्य केँ हम श्रद्धा भाव सँ देखैत छी। साहित्य संगे अखबारक दुष्टिकोण रजनिहारक प्रति हमरा मुक्त-  
भाव उत्पन्न होइत अछि। साहित्य अकादमी मे मैथिलीक स्थान प्राप्त करबा मे हमरा लोकनि कितुँ ध्याँक अधिक  
परिश्रम कएलहुँ। मिथिला सांस्कृतिक परिषद् केँ मैथिलीक मान्यता संगहि साहित्यिक संस्था रूपेँ साहित्य अकादमी  
मान्यता देलक। साहित्य अकादमी मे अपना केँ कर्ताधर्ता बुझै छथि ओ लोकनि ओहि समय मे साहित्य अकादमीक  
नामो नहि जने छलाह। आइ ओ पैघ मैथिली सेवक आ साहित्यकार कहबै छथि। साहित्य अकादमी मे आप भाषाक  
संग मैथिलीक मान घटल एहि बात पर ध्यान नहि दए मात्र मुद्रा उपावर्जन मे लागल रहै छथि। साहित्य अकादमीक  
मैथिली सेमिनार केँ प्राथमिक पाठशाला बुझै छथि आ ओहि मंच पर नव लेखक केँ लेखनक अ-आ -क-ख सीखक  
अवसर प्रदान करै छथि। कथन छन्हि — नव साहित्यकार केँ प्रोत्साहन दए रहल छथि।

प्रश्न : पोथी प्रकाशनक क्षेत्र मे मिथिला सांस्कृतिक परिषद्क महत्वपूर्ण भूमिका रहलैक अछि एवम् अपनेक सम्पादन मे सेहो  
पोथी-पत्रिका प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण कोना की अछि ?

उत्तर : परिषद्क स्थापना बसलहि सँ परिषद् पोथी एवं स्मारिकाक प्रकाशन करैत रहल। मुद्रण व्यवस्था सँ जुड़ल रहबाक  
कारणे हम आ स्व० राजकुमार मल्लिक परिषद्क प्रकाशन एवं मुद्रणक व्यवस्था करै छलहुँ। जेँ कि हम युवक छलहुँ  
मल्लिकजी अधिकतर भार हमरे पर छोड़ि दैत छलाह। ओहि दिन मे मिथिला मिहिरक प्रकाशन बिना कार्यक्रम केँ  
होइत छल। स्व० सुधीश शैखर चौधरी मिहिर मे छपए वाला सामग्रीक वर्तनी एक रखै छलाह। मैथिलीक वर्तनी  
विधारण मे मिहिर एवं सुधीशजीक काज स्तुत्य रहल। आब पुनः जेनेक रचनाकार ओतेक तरहक वर्तनी।

हमहूँ हुनके अनुसरण करैत परिषद्क तमाम प्रकाशन मे वर्तनीक एकरूपता रखै छलहुँ। हमरा देखरेख मे प्रायः  
परिषद्क पोथी छपैत रहल आ ओकर वर्तनी एक रहल। मिहिरक अनुकरण करैत उल्टा कोमाक स्थान पर अर्द्धाक्षर  
प्रयोग करैत रहलहुँ। स्वनामधन्य स्व० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपत्रक' वर्तनी केँ लोक करैत परिषद् द्वारा प्रकाशित हुनक  
पोथी मे परिषद् द्वारा व्यवहृत मानक वर्तनी भेटल।

parishad



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

[4]

प्रश्न : कविपति विद्यापतिक सर्वमान्य चित्र-निरूपण परिषदे द्वारा निर्धारित कथल गेल छल तकर विवरण देल जाय।

उत्तर : 1961 ई० सँ पूर्व हमरा लोकनि विद्यापतिक स्मरण निराकार रूपेँ करैत रहलहुँ। परिषद एहि अभावक पूर्ति कयलक। विद्यापतिक वंशज लोकनिक देहक मूर्ति, मुद्राकृति आदिक आधार पर विद्यापतिक काल्पनिक चित्रक निर्माण कयल गेल। चित्रकार छलाह मुँगेर जिला निवासी रामानन्द सिंह, स्वामीय निवास 9, गुप्ता लेन, कलकत्ता-8। चित्रक उद्घाटन दिनांक 14 नवम्बर, 1960 के गेल, उद्घाटनकर्ता छलाह स्व० लक्ष्मण पाण्डेय (भारती पुस्तक मंदिर)। समारोहक अध्यक्षता कयलन्हि विश्व शिक्षा विद्वान डा० सुकुमार सेन। अपन अध्यक्षीय भाषण मे कहलन्हि - "मैथिली, बंगला, असमिया, उड़िया आदि मागधी प्रसूत भाषाक आदि कवि विद्यापति छथि। कवि, निबन्धकार, गल्पकार, इतिहासज्ञ आदिक रूप मे भारत कहियो हिनकर महत्व कै नहि बिसरत।" डा० प्रबोध चारायण सिंह विद्यापति चित्र निरूपण हेतु परिषदक भूमि-भूमि प्रशंसा कयलन्हि।



विदेह माथिलीमिह संस्कृतम् तत्कालीनमे आयोजित विद्यापति कथल समारोहमे ५० लक्ष्मण पाण्डेय विद्यापतिक चित्रक अनावरण करैत।

विद्यापतिक चित्रक उद्घाटनक बाद विभिन्न पत्र-पत्रिका मे चित्र प्रकाशित कराओल गेल, विभिन्न मैथिली सेवी संस्था के पत्रओल गेल। एक वर्षक समय सीमा मुखल गेल संशोधन परिवर्द्धन हेतु। कतहुँ सँ कोनो प्रकारक विचार नहि अएला पर परिषद डाक तार विभाग, भारत सरकार सँ विद्यापतिक डाक टिकट हेतु बज्रधार आरम्भ कयलक। अहर्निश प्रयासक बाद 17 नवम्बर, 1965 ई० कऽ विद्यापतिक डाक टिकट बजार भेल। विचार-विमर्श हेतु दिनांक 28 सितम्बर, 1965 ई० कऽ परिषद कार्यालय मे आयल रहथि श्री एस. पी. चटर्जी, फिलेटेलिक आफिसर, डाक तार विभाग, भारत सरकार आ ओ अपन मननल दऽ गेलाह -



"It has a great pleasure for me to record the activities taken by the Mithila Sanskritik Parishad, Calcutta for bringing out a commemorative postage stamp to honour the great poet of Mithila, Vidyapati."

Sid - S. P. Chatterji, Phila. Officer

प्रश्न : जनगणना मे मैथिली लिखयबाक अनुरोध कहियो सँ कहियो धरि चलल अछि ?

उत्तर : 1961 ई० क जनगणनाक रिपोर्ट देखलाक बाद जाहि मे मैथिली-भाषीक संस्था मात्र तत्कालीन दरभंगा जिलाक जनसंख्याक लगभग छल, 1961 ई० सँ भेल जे हेमनि तक चलल। भऽ सकै अछि भविष्य मे चलए।

प्रश्न : मैथिलीक युवा साहित्यकार केँ प्रोत्साहित करबाक भविष्य मे को योजना अछि ?

उत्तर : भविष्य युवा साहित्यकारक प्रति परिषद सदा सहृदयता रखैत अछि आ भविष्य मे राखत। परिषदक प्रकाशन केँ अपन एकटा मानदण्ड छैक तथापि युवा साहित्यकार केँ प्रोत्साहन स्वरूप कनेक जुसो रचनाक प्रकाशन परिषद करत। एहि बेर : श्री अनमोल झाक लघुकथा संग्रह 'टिकनौलजी' प्रकाशित कएलक।

प्रश्न : नव-पीढ़ी लेल अपने को सन्देश देबय चाहबन्हि ?

उत्तर : युवा पीढ़ी हिन्दी एवं अंगरेजी परत भए गेल छथि। अपना घर मे अंगरेजी माध्यम सँ चर्चाकए करए मे सक्षम नहि छथि तँ हिन्दीक शरण मे जाइ छथि। दुधमुँसे जच्चा केँ दुलारे हिन्दीमे मे करताह। ओना आजुक परिप्रेक्ष मे अंगरेजी आवश्यक अछि हिन्दी नहि, ओना केवैक भाषा सीखी से नीक। मैथिली केँ बचक राखि एवं बेचि कऽ नहि। शिक्षाक माध्यम जे हो परंच घरक एवं गामक भाषा मैथिली रहए। मनीषी लोकनि केँ दृष्टि मे राखि धीमा-पूला केँ आगू बढूय मे अभिभावक लोकनि सहयोग करथि, जे मनीषी कहियो हिन्दी आ अंगरेजीक शरण मे अपन मातृभाषा त्यागि नहि गेलाह। जेना - सर गंगानाथ झा, डा० अमरनाथ झा, म० म० उमेश मिश्र, डा० जयकान्त मिश्र, श्री योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' आदि।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

उत्पत्ति मा

१. रूकपा बच्चा मे २. घोष उठैत गज्ज
१. रूकपा बच्चा मे

गज्ज मे ह्य कटि बाथैत छी । संगहि मैथिली मे थोड रूक  
गज्ज मेहो निथे छी आ गज्जक पोथी सँ गठराक गछा बहे ए ।  
मैथिली मे रूक कय गज्ज संग्रह अछि आ ओहो स्रुत ले होगत  
बहे ए । एहन परिस्थिति मे ह्यवा श्री अवरिन्द ठाकुरजीक सद्यः  
प्रकाशित मैथिली गज्ज संग्रह 'रूकपा प्रदेश मे' गठराक अरम्भ  
भेटैत आ ह्य एहि पोथी केँ आद्यापस्तु गठनहूँ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

सरसै पहिल ह्य श्री अवरिन्द ठाकुरजी केँ मैथिली गजनक पोथी  
निखराक लेन रैवांग दैत छियेहि । मैथिली गजनक उथल लेन  
एक डेग हवा मरुपूर्ण नाली ए । पोथीक छेष्ट अप रैखु नखव  
अछि । ठाँगा अप कागतक कोष्टि सेहो उठम अछि । पोथीक  
भूमिका गजनकाव अपल निखल छथि अप ओहि से गजन अप एहि  
संग्रहक संग्रह से रूत बाम गप सर कहल छथि । जेना पुत्र सखा  
मातक दोसब पावा से गजनकाव कहैत छथि जे मैथिलीक मिजाजक  
सीमा (अ मैथिलीक नहि, हमार अपल सीमा भऽ सकैत अछि) केँ  
देखैत गजनक ब्राकबा (बन्दी, काहिया, मिसबा, मतना, मरता  
आदिक) स्थापित मापदंडक कमरेछी पब हमार सत गजन खा उतवत  
तकब दारी तऽ नहि ए ठाँ अछि रैखि ह्य तँ अ सकाब्य छै छी जे-

----- हमार सीमाक  
काबलें प्रस्तुत गजन से कएक जगह सुनि पाठक लोकनि केँ त्रुष्टि  
भेष्टि सकैत छनि । " एहि पावाक अस्तु से ओ कहै छथि जे रैखक  
दोथ किछु शेर से भेष्टि सकैत अछि । ह्य गजनकावक सवालना  
कहैत छी जे ओ भूमिका से अपल कएक ठाम रैखक अप अपल दोथ  
हएँ ब्रीकाव कएल छथि । पोथी केँ आद्यापानु पठना पब हमार अ  
ले रूमाएन जे एहि संग्रहक गजन सर कोल-कोल रैख से निखल  
छान अछि । अवरिक कोला ठाँ रैख से कोला गजन नहि अछि,  
मैथिली से आंग-काहि प्रयात्र होग रैना सबन रार्मिक रैख से सेहो  
कोला गजन ले अछि । गजनकाव केँ एक गजन से अ निखराक  
छाली छन जे कोल रैख से गजन निखल छान अछि । जँ अ  
"आजाद-गजनक संग्रह थीक, तँ हूँका एहि रातक उल्लख कवरौक  
छाली छन । भूमिकाक उपरोक्त पावाक शुक से गजनकाव कहै छथि  
जे मैथिलीक मिजाज केँ देखैत एहि से उर्दु-हिन्दी गजनक  
मिजाजक नकन कवरौक प्रयास कएन जागत तँ एकबा रूमावारी नहि  
ठाँ कहल जागत आओर सफलता सेहो नहि भेष्टैत । ह्य हूँकब गप  
सँ सलगत छी जे नकन कवरौ उचित नहि । ह्यदा एकठाँ गप ह्य



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

कहने छैत छी जे एकरे बिबाक एकठा मियम लोगत छै आओव  
जहि स्त्रे मे ओहि बिबाक उदय भेल बहेत छै ओहि स्त्रे मे  
स्थापित भेल मियमक पोषण केल रीना कोला बच्चा मुन बिबा मे  
कोला भन् सकैत अछि । जेना मैथिली मे सम्राट्ठ आ मोहबक  
पवम्परा छैक आ जे गजरा मे रा गजवाती मे रा की कोला आष  
ताया मे सम्राट्ठ आ मोहब गारै छली तँ मियम कोला रैदनि  
जेतैक । जे मियम रैदनि ते तँ ओ दोसर छी भन् जेतैक ।  
तहिना गजन अरै स्त्रे मे जग लेलक आ ओ स्वाभारिक छै जे  
एकर मियम (ब्याकवा) ओहि स्त्रेक स्थापित माण्डक आष पव  
रैल । स्थापित माण्डक पोषण करै सकल नहि कहल जा सकैत  
अछि । आ जे सकलक गप करी तँ गजन कहै अरै-हिन्दीक  
सकल थीक । एक दिन गजनकाव गजन कहैक जोत ले छेडि  
बहुन छुथि आ दोसर दिन गजनक ब्याकवाक मियम पोषण कै सकल  
कै छुथि ओ छिटि ले रूमेशन । गजन स्थापित माण्डक पव जे ले  
कहल गेल तँ बच्चा कै गजनक स्थल पव दोसर नाम देल जा  
सकैत अछि ।

पुत्रा संथा दस पव दोसर पावा मे गजनकाव कै छुथि जे ओ जीरक  
सँ सिद्धा लेत छुथि । ओ स्वागत योग्य गप भेल । जीरक सिद्धा  
सँ तैयार राजन मोहदगव हरे कबै । रुदा भोजन रैलै काल  
छाँवक सिद्धा पाणि मे मोमे हुना क पवमि देना सँ भात नहि  
कहागत अछि । छाँवक सिद्धा कै अदल मे देल जाग छै तख  
भात तैयार होग छै । तहिना जीरक सिद्धा जे ब्याकवा मियम  
आ छिन्न-फलक अदल मे पकाउन जागत अछि तँ मोहदगव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

बच्चा भेटैत अछि । बिबा बिशेषक मागदम तौडरौक फाँतिकाबी  
घोषणा कएला छी सँ किछु बिशेष हास्यदा रा उमेद तँ नहि जलै  
ए । जँ कियो मागदम तौडे छथि तँ मागदम पब छलै रैना लै  
नकनछी आ रोजीगार कलै उचित नहि । गज्जन आ हकबा आ दोहा  
मे थोडक अन्तर तँ छै जे बहलै कबैत । अन्तु, ग गज्जनकाबक  
अपन रिटार छैहि आ अपन प्रकाशित सेहो छैहि ।

गज्जन संग्रहक सँ गज्जन पठलौ । बिबा रत्न सँ नीके नागन ।  
गज्जनक ब्याकबाक आधार पब कहि सकैत छी जे रत्नक दोथ तँ  
प्रत्येक गज्जन मे छैक आ जँ ग आजाद-गज्जनक संग्रह थीक तँ  
गज्जनकाब ग गप कतौ लै कहल छथि । गज्जनकाब लै स्पष्ट  
कवरौक छली छल जे कोन कोन रत्न मे गज्जन सँ निखन छल  
अछि । हमरा रूमल गज्जनक कोनो शीर्षक लै होगत अछि, ह्मदा  
प्रत्येक गज्जन लै एकठा शीर्षक देल छल अछि । रत्नक अतिविज्ञ  
बदीय आ काहिल्याक नियम सेहो कएक ठाम पालल लै भेल अछि आ  
ग गप गज्जनकाब भूमिका मे सेहो स्वीकार कएल छथि । जेना पृथ्वी  
राजस मे मतनाक दुनु पाँति, दोसर शैव आ पाँचम शैव मे काहिल्या  
मे आयर प्रयोग भेल अछि, तँ दोसर आ टाकि शैव मे अरु क  
प्रयोग अछि । पृथ्वी टोरीस मे मतनाक पहिल पाँति मे काहिल्या मे  
अ आयर अछि आ दोसर पाँति आ अरु शैव मे आत आयर  
अछि । पृथ्वी पटल मे काहिल्या की छै, से लै रूमल । पृथ्वी  
तिवर्ष मे प्रत्येक पाँति मे काहिल्या एकदम हवाक हवाक अछि ।  
पृथ्वी अर्थात् मे मतना, दोसर शैव आ टाकि शैव मे काहिल्या मे  
अ प्रयोग अछि आ अपन सँ शैव मे काहिल्या मे अ प्रयोग



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

अछि । गृथा उमसठि मे सेहो बदीय आ काहिल्याक स्मृता ले  
अछि । गृथा डिगसठि मे काहिल्या मे कते 'अन' आ कते 'आउन'  
प्रयुक्त अछि । गृथा सडसठि आ तिरतवि मे सेहो काहिल्याक नियमक  
उल्लंघन भेल अछि । तहिना संग्रहालयक रीना काहिल्याक नियम सेहो  
एक दु ठाम हवाक हिसारें ठीक ले अछि । एकव अतिविक्त आउव कएक  
ठास काहिल्याक नियमक पालन ले भेल अछि । ह्य उदाहरण स्वका  
किछ गृथाक उल्लंघन कएनहुँ । ह्य ग उद्धृत ले अछि जे खाली दोध  
ताकन जाय ह्यदा जै गजन कहि जिये तै गजनक नियमक पालन  
हेराक छाल । सरै गोठै केँ जलकारी जेल ग रीता दी की रीना  
बदीयक गजन तै भन् सकेत अछि, ह्यदा रीना दुकसु काहिल्या भेल  
गजन ले भन् सकेत अछि ।

भुमिका सँ एकठा रीत आर स्मृति लोग ए जे गजनकाव संग्र २००१ सँ  
मैथिली मे गजन लिखै शुरू केलथि, जना ओ हिन्दी मे पहिलहुँ गजन  
लिखैत छल । एकव मतनरै ग भेल जे गजनकाव "अनटिहार  
आख" (मैथिली गजन केँ समर्पित रीनाग) सँ रूत रीत मे मैथिली  
गजन लिखै शुरू कएल छथि आ मैथिली गजनक रबीयता मे रूत  
रीत मे आगल छथि । "अनटिहार आख" रीनाग देखना सँ पता छल  
छै जे गजनकाव एहि रीनाग पर सेहो अपन कएक ठा गजन २००९  
सँ एखन धरि देल छथि । ओ "अनटिहार आख" रीनाग सँ टिहार  
छथि, तै ग उमेद अछि जे एहि रीनाग पर प्रकाशित मैथिली  
गजनक रिसुत रीतका केँ जलक देखल हेतल । ग उमेद छल  
जे प्रसुत गजन संग्रह मैथिली गजनक नरै पीढ़ी जेल एकठा  
उदाहरण रीत । ह्यदा एहि संग्रह मे गजनक रीतकाक जे उपेक्षा





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

भेन अछि, जे गजनकाव भूमिका मे स्वर्ग स्त्रीकाव कएल छथि, निवाशि  
उपेक्ष करैत अछि । रुदा ग संग्रह गजनकावक पहिलक मैथिली  
गजन संग्रह अछि, तेँ गजनक राकबाक गमती भेलाग्न स्वतारिक  
अछि । अशि राख करै छी जे हुनकर आगामी गजन संग्रह मैथिली  
गजन मे अपन अलग स्थान बाथत ।

२

घोष उठैत गजन

मैथिली गजनक पहिलक प्रकाशित पोथी "उठा बहन घोष तिमि"  
पठेबाक सौभाग्य भेटैत । ए गजन संग्रहक गजनकाव श्री रिबुति  
आनन्द छथि । एहि पोथी मे हन टैंतीस गोष्ट गजन अछि । पूवा  
पोथी केँ एकहि रैसाव मे पठि जेनहूँ आ रैब-रैब पठेनहूँ । सरस  
पहिल रम श्री रिबुति आनन्दजी केँ मैथिली गजनक पहिलक संग्रह  
प्रकाशित करौ जेन धन्यवाद दैत छियेहि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

एहि पौथीक दुनिया मे गजनकाव कहे छथि जे मैथिलीक गजन नोम-नोम हिन्दी सँ प्रभावित अछि हुनका हिन्दी जकाँ जमान नथि; अछि एखना धरि । " आगु हुनकर कलागत छैन्हि- "पावम्पिक र्याकवा सङ्गित अङ्गित तृष्टि सब ठाम नक्षित छैन्हि । ज्ञा ह्य द्वासात्मक सार सकेत करनहुँ अछि जे कथा-साहित्य नए र्याकवा दिस सँ यदि मुँहो घुमा लेन जाय तँ कोना हर्ज नथि । किंए तँ ह्य मालेत छी जे जे पाठकक रस नथि अछि । किन्तु मूर्ध नथि रँगत । तेँ की ----- र्याकवा सँ भवतीत भन् नथि निखन जाय । " गजनकावक पहिलक कथक सङ्ग मे ह्य निरेदस अछि जे गजनक पम्पवा अक्की- हक्की सँ शुक लेन अछि आ ओतहि सँ आन भारतीय भाषा मे पम्प अछि । हिन्दी-उर्दू मे गजन कहराक पम्पवा मैथिली सँ पहिल शुक लेन तेँ रँहस्य लोक निश्चित भन् जागत छथि जे मैथिलीक गजन हिन्दी गजनक नकन छी रा ओग सँ प्रभावित लेन अछि । गजनकाव सेहो एहि मिथ्या धावा सँ प्रभावित छथि । आर गजनक र्याकवा थोड-रँहूत सफलक संग सँ भाषा मे तँ एक बहत । एँ छिति केँ ह्य ह्यारोँ प्रभावित लेनाँ कहराक कोना छैले अछि । गजनकावक दोसर कथ देथि ह्य निवधि लेन छी । पता ले किया एख धरि जे दू गजन सङ्ग (सँसँ पहिलक आ सँसँ अन्तिम प्रकाशित) पठनहुँ, एहि दू मे गजनकाव कथा- साहित्यक आगु र्याकवा केँ कोना मोजब ले देरँ छैले छथि । एकठाँ गग मेष वधक छली जे साहित्यक निर्माण रीयाकविक अन्वेषक राँदे सफल लेन अछि । ग ह्यवाक गग अछि जे सफल आ शुभक ह्यारोँ सँमान्य परिवर्तन र्याकवा मे होगत बहन छैले । रीया रीयाकविक अन्वेषक भाषा पठन, निखन आ रँजराँ जोग बहत ? जिनका मे साहित्य निर्माणक मादा छैन्हि, हुनका मे र्याकवा केँ पाठक सार अरँ ह्यारोँ छली ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X

आरौ ह्य एहि संग्रहक गजनक संग्रह मे किछ गप कहऽ छहऽ । ग  
गजन संग्रह ओहि सभ मे निखन गेन अछि जखन मैथिली गजनक  
राकबा आ रैवक संग्रह मे रैवत रैमी जलतऽ सरिजलक ले  
हुन । ह्य एकबा एना कहऽ छहऽ जे ग गजन संग्रह "अपठिहाव  
आथव" जूग सँ पुरिक गजन अछि जखन रैव, वदीह आ काहियाक  
नियमक पाकनक रियन मे रैवत वाम गप सरिजल सुनत ले हुन ।  
एहि हिसारौँ जूँ ए संग्रहक गजन सभ मे रैवक दोथ छैक तँ ग  
सुतारिक रैमागत अछि । एहि संग्रहक कोना ठाँ गजन कोना रैव  
मे ले अछि । तेँ ए संग्रहक रैव गजन (जाहि मे काहियाक  
नियमक पाकन भेल ह्य) सभ केँ "आजाद-गजनक श्रेणी मे बाखन  
जा सकैत । आरौ गजनक काहिया आ वदीहक संग्रह मे किछ  
गप । एहि संग्रहक रैवत वाम गजन मे काहिया आ वदीहक नियमक  
पाकन भेल अछि । ह्य कएक गजन मे वदीह आ काहियाक गनती  
अछि । जेना पृथ टोदह पव मतना देखना पव रैमागत अछि जे  
"ग मोसम" वदीह अछि आ "वालेह" आओर "उतारैह" काहियाह्य अछि  
अछि । ह्य दामर शैव आ आगुक आष शैव मे एकव पाकन ले  
भेल अछि आओर शैव सभ रैमा वदीहक "अ" काहियाह्य अछि ।  
पृथ पदह पव सेहो यैह दोथ अछि, जाहि मे मतना मे वदीह  
"कहाँ कवनक प्रयोग अछि आ आष शैव सभ रैमा वदीहक "अन"  
काहियाह्य अछि । एहल दोथ पृथ मोनह मे देखन जा सकैत  
अछि, जतय मतना मे "कले हुन" वदीह मागन जयराक छल । ओना  
ए गजनक आष शैव सभ मे दु ठाँ काहियाक सुनत प्रयोग अछि,  
जे नीक वालेह । ह्य हिसारौँ काहियाक दोथ पृथ रीम, रौगम,  
टोरीम, पटीम, अष्टीगम, उतारीम(संग्रहक काहियाक नियमक दोथ),  
रौतम आ सौतम मे सेहो अछि । एकव संग्रहक रिस्तुत रीम देरौ  
ह्य अपेक्षित ले रैमि कवन छी, कियक तँ ग ह्य उद्वेग कथनि  
ले अछि । गजन संग्रहक सँ गजनक रियन-रस्तु नीक अछि आ  
गजनकाव अपन तारना नीक जकाँ प्रकट केल छल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-547X

किछ गज्जनक काहिया आ वदयक दोथ जँ कात क२ क२ देखी, तँ  
ग गज्जन-संग्रह एकठा नीक गज्जन-संग्रह अछि । गज्जनकावक गज्जन  
कहयौक अमता सेहो नीक बुझागत अछि । हमरा ग अचबज लागि  
बहन अछि जे ए संग्रहक बाद गज्जनकावक दोसर गज्जन-संग्रह किया  
ले आएन अछि । एकव कावा तँ गज्जनकावे केँ गता हेतैन्हि, हुदा  
अपन अग्रतरक आभाव पव ह्य कह२ छै जे श्री रिभूति आनन्द  
नीक गज्जन लिख सकैत छथि । जँ रेल्वक रिटाव ले कवी तँ २०१२  
मे आएन श्री अवरिन्द ठाकुरजीक गज्जन-संग्रह सँ कवीर एकतीस बेर  
पहिल ११५ मे लिखन गेन एहि संग्रहक गज्जन सँ उम्दा कहन जा  
सकैत अछि । एकव कावा ग जे एहि संग्रहक गज्जन सँ मे  
काहियाक नियम-गानक प्रतिशेति रतमान समयक संग्रह सँ सँ केँ  
अछि । कथाक मजबूती सेहो नीक कोष्टक अछि । खानी फलबन  
तुकमिनी केन गज्जन ले कहन जा सकैत अछि, ग गप एहि संग्रह  
केँ गठमाक बाद एखनका गज्जनकाव सब केँ सेहो बुझैतहि, ग  
आशि अछि । गहो एकठा अचबजक नियम अछि जे जखन मैथिली  
मे नीक गज्जन एतेक मान पहिलो कहन गेन छल तखन एकव बाद  
गज्जनक विकास-गात्रा पढि-तीस बेर धरि कत२ आ किया ठमकि  
गेन । रीचक अरवि मे मैथिली गज्जनक विकासक धार मे राह किया  
बैनि गेन छल ग रिटावनीय गप अछि । उना आर ग राह छुटि बहन  
अछि आ अशोक नर जोति मे मैथिली गज्जनक घोष उठि बहन  
अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

ई बचोपब अप्प मंतरा ggaj endr a@vi deha.com पब पठाई ।

१. नरेंद्र कुमार मा- केन्द्रीय रिश्तेरिखानक म२ क२ बाज्य आ केन्द्र  
मे रैठि बहन हाव/ उमोहक मंग समाप्तु शैतली सारोह- डा.  
महिदास उमोहक पब निष पबियद् भेनह नाराज । २. स्वर्गीत  
कुमार मा - बाय जगामेरपब रिशेय/ मिथिलाक कष कषमे बायमीता  
३. किशोर कवीपब- अकड भेन डी । //(एकठा हाय कथा)

१

नरेंद्र कुमार मा

केन्द्रीय रिश्तेरिखानक म२ क२ बाज्य आ केन्द्र मे रैठि बहन हाव

रिहव मे केन्द्रीय रिश्तेरिखानक स्रपणक म२ क२ केन्द्र आ बाज्य  
सबकारक मया रैणन गतिबोध समाप्तु नहि भ२ बहन अडि । एक दिन  
आखिरी नीतीमे कुमार मोतीरि मे केन्द्र रिश्तेरिखानक स्रपित



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह बरबहुल **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

कबरौ पब अउम छथि तऽ दोसर दिस केन्द्रीय मासिक सभास मंत्री कपिल सिन्हा गयो ये स्थापित कबरौ पब जेव दऽ बहन छथि । एहि मासिमा ये तीस दिस पहिले मासिमा श्री सिन्हा के छिन्नी निधि मोतीहारी ये रिप्रेजिन्टेशन स्थापित कबरौक मासिमा देहबोली छि । एहि मासिमा जलतरै जेठेन अछि जे गयो ये रिप्रेजिन्टेशन स्थापित कबरौक जेन केन्द्र सबका के सभास जमल उपाध्याय कया देनक अछि । केन्द्रीय रिप्रेजिन्टेशनक कर्तव्य डायरेक्टर जलक पाठ्य एकर प्रष्टि करैत कहनि अछि जे मासिमा जेठेन अछि जे गयो ये जलतरै सदर्भ ये मासिक सभास विकास सभास आ कया सभासक मासिमा सहासि रनि गोन अछि । उपाध्याय अछि जे केन्द्रीय रिप्रेजिन्टेशनक मासिमा दु र्थ स श्री कयाव आ श्री सिन्हाक मासिमा छिन्नी का आदर-प्रदर ये उपाध्याय कऽ बहि गोन अछि । रिप्रेजिन्टेशनक स्थापना गयो मोतीहारी आ पठना ये स कोला जगह पब हो एहि पब एथल धरि कोला सहासि नहि रनि सकन अछि । तानकि श्री सिन्हा एहि मासिमा पब एथल बाज्य सबकाक सग सभास स्थापित कबरौक प्रयास कऽ बहन छथि ।

प्रदेशे ये उच शिक्षक विकासक जेन प्रस्तावित केन्द्रीय रिप्रेजिन्टेशनक जगह कऽ नऽ कऽ प्रदेशे ये बाज्यति सेहो कया बहन अछि । मोतीहारी आ दुषु ठाम रिप्रेजिन्टेशनक स्थापनाक जेन आदोष छनि बहन अछि । मासिमा श्री सिन्हा कयाव एहि स पहिले 29 फेब्रुवरी 2012 के सेहो श्री सिन्हा के छिन्नी निधि मोतीहारी ये रिप्रेजिन्टेशन स्थापित कबरौ पब जेव दैत गयो ये रिप्रेजिन्टेशन स्थापित कबरौक बिरोध कयाल जगह । केन्द्रीय मासिक सभास मंत्री जलतरै देल जगह जे गयो पाठ्य ये प्रस्तावित जगह ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक केन्द्र अछि जे गयो अन्तराष्ट्रीय कया अछि स 25 किलोमीटर दूरी पब अछि । श्री सिन्हा थोद रात्रिक कयनि जे बाज्य सबका केन्द्रीय रिप्रेजिन्टेशनक स्थापनाक जेन मोतीहारीक अनारो कोला विकल्प नहि देनक । केन्द्रीय मासिक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

समाज मंत्री गंगा मे बिदेहियानयक स्थापनाक प्रस्ताव कबबैक  
अनुमोदन करैत कहनि जे बिदेह मे केन्द्रीय बिदेहियानयक अपन  
अनुयायी पकिसव के रैदमरैक द्वाँरै अछि । पहिलि उँचि जगहक  
खोज मे किछ रय गंगा देन छैन अछि । ओ छव सतके  
प्रारतापूर्ण शिक्षा देबैक बाह्यीय काज मे सहयोग कबबैक अपन  
कयनि अछि । श्री सिद्ध बिदेहियक द्वाँरैक ओहि शिकायत के किमून  
जगहँत कहनि अछि जे पँजरी, हबियाँ, बाजसुँ, उँडिनी,  
तल्लिआड़, बिदेह आ बिमाछेन एदने आदि एदने मे बिदेहियानय  
स्थापित कबबै मे एक मागदंड अपनाउन छैन अछि । श्री कमाव  
शिकायत कयल छनाह जे बिभिन्न एदने मे केन्द्रीय बिदेहियानयक  
स्थापनाक न२ क२ हबक-हबक मागदंड अपनाउन जा कहन अछि ।

श्री सिद्ध किछ दिन पहिल द्वाँरैक के छिनी निथि एहि राँत पब  
जोब देल छनाह जे बिदेह मे केन्द्रीय बिदेहियानय लस ठाम स्थापित  
कयन जाय जे लराँग माझ आ अपन यातायात सम्पर्क सँ जोडन  
बल्लैक संगहि रासुरिक आ आधारभूत संरचना सँ परिपूर्ण हो ।  
द्वाँरैक तीस दिन पहिल छिनी निथि मोतीहारी मे बिदेहियानय  
स्थापित कबबै पब जोब दैत कहल छनाह जे मोतीहारी ऐतिहासिक  
जगह अछि । एहि ठाम बाह्यपिता महायो गंधीक स्मरण झूडन  
अछि । ओ स्पष्ट कयनि अछि जे मोतीहारी केन्द्रीय बिदेहियानयक  
स्थापनाक लेन उँपहाउ जगह अछि आ सबकार सत तबहे स्वरिधा आ  
आधारभूत संरचना उँपल्लै करैबैक लेन तैयार अछि ।

उँमोहक संग सगाँव शिताई सगाँव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह चन्द्रकान् ISSN 2229-

547X VIDEHA

डा. सचिदानन्द उपेक्षा पब निषण पबियद् भेलाह नावाज ।

बिहारक स्वाशाक मय र्थ पुवा होयराक अरुमव पब प्रदेसि भवि ये  
आयोजित कयन गेल बिहार शेतद्धि समारोह समारु भन् गेल ।  
तीस दिसक एहि समारोहक दरमिण बाजबानी पठना सहित पढायत  
सुब धरि कतेको कार्यक्रम सम्पन्न भेल । तीस दिस धरि सम्पूर्ण प्रदेसि  
मे पारिनि बिहार जका रातारका र्शन बल्ल । जिना प्रथम आ  
पढायत सभ मे सेहो सबकाबी आ लोब सबकाबी सुब पब कार्यक्रम  
आयोजित कयन गेल । बाजबानी पठना मे सम्पन्न तीस दिसक  
समारोह मे बिभिन्न स्तरक कतेको नागि पिवागि रान्ति भाग न  
प्रदेशेसमीक उमह मे सहभागी र्शनाह । पठनाक इतिहासिक गांधी  
मैदल मे लोकप्रिय कार्यक्रम आ श्री प्रुष्ट सावक तरुण मे शोम्नीय  
संगीत समारोहक अर्धद लोक सभ उठौननि । 24 नाथ रान्ति फष्ट मे  
र्शन द्धुआ समारोह सुन पब बिभिन्न रिभागक स्थापन पब प्रदेशेक  
बिकासक लेन सबकाबी द्वारा चलाउन जा कहन बिकास योजनाक जलतर  
लोक सभ के देन गेल । बिहारक लोकरपूर्ण गतिहास, बिकासक  
रतिमान गति आ लोकहित मे सबकाबी द्वारा प्रदेशेक बिकासक र्शान  
गेल योजनाक प्रदर्शन सेहो कयन गेल । प्रदेसि सांस्कृतिक बिकास  
जलतर सेहो लोक सभ के देन गेल । लेखक लोक माध्याम स  
प्रदेशेक सभ र्थक यात्राक प्रदर्शन आ जाया टिक माध्याम स बिहारक  
गतिहास आ रतिमान सांस्कृतिक सांस्कृतिक इतिहास प्रदर्शन करैत  
अर्जनि सिन्हा, टटल क्माव, दिसनि दिसाक आ शोकेन्द्र क्मावक ह्माठे  
लोकरा लोक सभक आकर्षण केन्द्र र्शन कहना ।

शेतद्धि समारोहक दरमिण गांधी मैदल मे गायक उदित नारायण,  
मृगा शर्मा, केनशि थेव, बर्रानी र्धु, र्धुन सुधियोक स्रधुव आराज  
पब सुयेत कहनाह तन् शोम्नीय संगीत समारोह मे पढित जसबाजा  
उस्ताद बाशिद थाण, गुनाम द्धुतथा थाण आ अजद अली थाणक  
गायिका स भावतीय संगीत जीरैत भन् कहन । एहि अरुमव पब





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

प्रसिद्ध हिन्दा निर्देशक प्रकाश झा द्वारा बिहार पब रीनाउज मिलाक  
प्रदर्शन मेहो कयल गेल । गीत-संगीत आ अल मलावैजक  
कार्यक्रम मया एहि अरमब पब आयोजित राजल मेला मे बिहारी  
भोजल, दली छुड़ १, माछ छुवा, लिप्पी-छोथा, राङ्गिनी, जेजेरी, मत्त,  
नीलीरु झूम आदिक संगति पञ्जाब, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, गुजरात  
आ दक्षिण भारतीय राजलक मायाग स स्वाद लेलनि ।

उला तः ई बिहारक शिताई समारोह छल ह्मदा ई पुवा समारोह  
ह्मदाही नीतीश ह्मदा पब केन्द्रित छल । समारोह मे भाग लेरै  
रना मत्त प्रह्मथ लोक ह्मदाहीक प्रशंसा करै अपन दाहिनु रूमलनि ।  
रय भवि धरि छल शिताई कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न भेला पब  
सबकाव बाहल सभ लेलक अछि । एहि समारोहक श्रेय ह्मदाहीक  
देरै मे पुवा सबकाव अल नालन कल । समारोहक दवर्षास  
रिपकक उपेक्षा पब सबकावक सहयोगी भाजपाक रिवास पार्यद  
हलेद प्रतापक रिदाली तेरल मेहो मोमा आयल । बिहारक ईश्वरवा  
मे प्रह्मथ बुझिका के निरालि कयल राना मदिदलद मिहाक एहि  
समारोहक दवर्षास लेन उपेक्षा पब सबकाव के कठघरा मे ठाठक  
देलनि । एहि मदिद मे हलेद प्रताप ह्मदाहीक छिरी मेहो  
निखलनि ह्मदा सबकाव दिन स एहि पब कोला प्रतिष्ठा नलि लेन ।  
समारोह प्रारंभ लेलाक बाद एहि दिन हुनक सफलताक बादो सबकाव  
निश्चित बलन । उला रिवाद तः बाजा प्रार्थना कः नः कः मेहो  
उठि बलन अछि । एहि माहिना मे एकठा जलहित याचिका मेहो  
भाजपाक रिवा लता छद किशोर पवासर पठेला उठ न्यायलय मे  
दायल कयलनि अछि । बाजगीत मे मिथिलायक उपेक्षा पब मेहो  
सबकाव छुप्पी नदल अछि । खैर, समारोहक दवर्षास एहि तकक  
रिवाद समारोहक उमेह मे दरल बलन ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

२

सुजती क्काव मा

बाम जगामेपव रिशेय

मिथिलाक कष कषमे बाम्नीता

जलकपुवमे मात्र नहि पुले मिथिलाजनक घर घरमे मोहव गाउन जा  
बहन अछि । सतकेँ घरमे एक्क बगकेँ उमोह अछि । भगराष  
बामक बरिदिष जग दिस बहन अछि ।

उमोहकेँ रषि कबेत जलकपुव गमे बहन मधुराणी रानी कहैत छथि  
भगराषक जग भलेही अयोध्यामे भेल होगक ह्दा उमोह ह्णकव  
सम्भारिमे सेहो कय नहि । ओ मोहवकेँ एक पाँति स्मरैत कहैत  
छथि जँ जगान बघुषदष रषष ठूँठन ले नकषा हवि दैनक दधु गवाज  
तुतला भेल ह्णमागु..... ।

जलकपुवक दु ठी दवरारकेँ उल्ला सजाउन गेल अछि जेला  
रिराहपछमी कानमे सजाउन जागत अछि । सजावमे मिथिला  
दवरार आ अयोध्या दवरारमे प्रतिस्पर्धा देखन गेल अछि ।

अयोध्या दवरार अर्थात बाम मदिबकेँ सजावमे ओतएकेँ महम्ह एतेक  
रसु छथि जे गते नहि जनहि शुक्ल बाति केषा रित गेल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जगज्ज ओमोह रूषिण करैत बास मन्दिरक मरुथ बास गिबी कहैत छथि  
जेलो नागि बल्ल अछि हमरा घबमे भगवणकेँ जग भव कहल होएक  
। भगवणक जग बेला हागमे किछ नहि भेल होएक यदि किछ  
आकर्षण नहि बहिलेक तब आखिब एतेक लोक बास नरुगमे जलकपुव  
लेला अछैत ।

जलकपुव नगर पालिका ४ क पण्डित विद्यानाथ ना कहैत छथि ओज्जा  
जै लेन ठीक बहिलेक, रस जीप अछैकेँ भावत सँ जलकपुवबहिलेक  
नीक सुविधा बहैत तब देखितहुँ कतेक लोक जलकपुव अछैत अछि  
। भगवण बासमे जे शक्ति अछि ओ कत्र पाओत ।



बास नामा उबमे गहिओ जा केँ सग नहि कोण ।

जिह सिमथ सकठ गिष्टि दर्श तुम्हारे कोण । ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुरीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

जिहकब सुन्दर नामकेँ दुदयामे रँसा जेना मात्र सँ सम्पूर्ण कार्य भऽ  
जागत अछि । जिहकब समाज कोना दोसर नाम नहि अछि ।  
जिहकब सार्व मात्र सँ पुनः संकष्ट समाप्त भऽ जागत अछि ।

कमहागमे नहि योग, नहि यत्न आ नहि उत्साह महत्त्व अछि । एक  
मात्र बाधक शांति सँ सम्पूर्ण जीवनकेँ उद्धार कऽ सकैत अछि ।

संतुलित कर्म अछि । प्रभु श्री बाधक भक्तिमे कष्ट, देखावा नहि  
आधुनिक भक्ति मात्र आधुनिक अछि ।

गोपनी तनुमी दाम कहैत छथि उत्साह आ रीवाज प्रभुकेँ प्रेमाक जेना  
मात्र नहि अछि । रक्षी प्रेम भक्ति सँ पुनः मैथिली धारा जागत अछि  
।

प्रेम भक्ति सँ मात्र श्री बाधक भेटैत अछि ।

छुटैत मनहि के धर्म ।

धुत कि गार कोण राखि रिलेख । ।

प्रेम भक्ति जन रिष्य बधुवाग ।

अति अन्तर्गत मैथिली न जाग । ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

अर्थात् मैथिली धोना सँ कि मैथिलि छुटि सकैत अछि । जनकै  
मथना सँ कि कोला यी छुटि सकैत अछि । अलिना पोका भद्रिकणी  
निनि जनक रिना भितरक मैथिलि कहियो नहि छुटि सकैत अछि ।  
प्रभुकेँ भद्रि रिना जीरन निवस अछि अर्थात् कमलि । प्रभु भद्रिक  
स्नाद एहन स्नाद अछि जे एहि स्नादकेँ रूमि छान ठोका सँभावक सत  
स्नाद हिका नागत । भद्रि जीरनमे ठोकरे महर्षि अछि जतेक  
स्नादिष्ठ भोजनमे ह्वा ।

भगति हीन ग्रा सर सुख असे ।

मरन रिना रँहु राख्ख जे मे । ।

अर्थात् जेना ह्वाकेँ रिना रँटिया सँ रँटिया भोजन स्नाद हीन होगत  
अछि ओहिना प्रभुकेँ चोकर भद्रि रिना जीरनक सुख समूहि सत हिका  
हेधत अछि ।

बामन ऐतिहासिकता

टैत महिलाक शुभ पक्षक नरणी तिथिक दिन भगवत बामन जग  
भेन अछि ।

भावतक छेम्मेकेँ एक लोचनकरावी संस्था भावत ज्ञान कतेको रयिक  
मोष सँ जे पता नगोनक अछि जे बामन जग ३.५४ ज.पु. १०



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जगरवीक भेल छल । बाक रियसमे ई शोध झुंझमे कतेको  
ऐतिहासिक, रिद्वान्, बारमाय जगतक आग्र प्रस्तुत कएल गेल छल ।

एहि शोधक तथापव प्रकाशि गवैत एकव संस्थाक छैथी डिके हवि  
कहनहि एहि शोधमे बारिकि बागाबाकेँ मुन आधार मालैत अलक  
ऐतिहासिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, ज्योतिषीय आ प्रवातद्विक तथाकेँ  
सहयोग लेल गेल अछि ।

बाक मिथिला संग सङ्ग्रह

भगराव बाककेँ मिथिला संग सङ्ग्रह सेहो प्रगाठ अछि ।

भगराव बाक रिवाज मिथिला नरेशे जलकक पुत्री सीता संग लेल बह्य  
।

मिथिलाक कष कषमे बाग सीता बहन अछि ।

जलकपुवमे मात्र नहि पुन मिथिलाधनमे कोला उमर होगत बाग  
सीताक प्रगाण रिवा उ उमर पुर्णे नहि होगत अछि ।

जलकपुवक जलकी मदिबक महन्ध बाग तपेध्वि दाम ऐष्टर कहैत  
हुथि मदिबमे हनेक सफा कहैत छी हनेक सफा ई बुमागत कहैत  
अछि भगराव बाग जलकी ऐतिहासिक हुथि । ई स्थिति मिथिलाधनक  
कतहुँ जागत छी तऽ बुमागत अछि । हेव जूँ मिथिलाधन सँ  
बाह्य गेलहुँ तऽ कतहुँ नहि अन्तर होगत अछि उ कहनहि ।



३

किमिष काविराव

अकड भेल छी ।

(एकटा हास्य कथा)

आज दस बर्यक बाद किछु काज म दबडंगा आएल बनी । तीसले तीसले ठेग म दबडंगा नष्टिष उतबले बनी कि ल की खुबएल छललेत छललेत बिदेहियाना के पद आरि लेलहुं । उत आरिते



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

मातव सञ्जुता प्रकाश सङ्गता कावेजक पद । अ रिद्यार्थी जीवक सञ्जुता  
हैमी ठीठोना श्रमा माध मन्दिर के द्रव नगाएँ जम के तम मोन  
पवि गेन । उअ दिन मोमराव के तद्ध ये माल मलीक मोमराव  
तद्ध लोकनिक भिड भिमले म रैठि गेन के की कावेज के रिद्यार्थी  
वीया-गुता जराण रूठ प्रवास मभ पूजा करे जेन अगमियाँ त भेन ।  
रिशेष क२ माधुरेयिकाथ महादेव मन्दिर ये उव रैमी भिड । श्रमा  
माध मन्दिर नग पोथवि अडि उतए माधुरेयिक महादेवक मन्दिर मोहो  
ठेक । उही ठाम श्रमा माध के दर्शन कए रौराक पूजा जेन महादेव  
मन्दिर अएनहूँ । रौरा के जन रैगतात छ । पूजा केनाक रौद  
मन्दिर म रौराव निकेल रैग पीठ पव नए रिदा भेन बनी । कैमरा  
गावा ये नष्टकले बह रिदा होगते बनी की पोथवि घष्ट नक रौरा  
तेष्टे भए गेनह । उ रैजनाह हो रैठा के डिगन कारीगर एकर  
आर । रौराक नग ये ज्ञा हुनका श्रमा केनियेन त उ रैजनाह  
नीके बह । अर्ग हो कारीगर अ कहन दावनी कष्टा जेरु मे नहि  
अहि दुआले त टिहै न ये पोथा भए गेन । गावा ये कैमरा नष्टकले  
देथनिया त मोन पवन जे कही तू दवर्तगा अएन हेरैह । आर ज  
तू दवर्तगा आरिण गेन छह त हमर पंटेती कए दैह हो रैठा कि  
कहियन हम त अकश्फ भेन छी ।

रौराक गग स्त्री हारा हैमी म कन नही गेन ।  
हैमैत हैमैत हम रैजकहूँ अग यो रौरा अहाँ कियक अकश्फ भेन छी  
आ कथिक पंटेगती । रौरा तामे अघोव भेन रैजनाह अर्ग हो  
कारीगर हम अकश्फ भेन छी आ तू दाँत टिहारी ये नगन छह ।  
हम रैजकहूँ यो रौरा अहाँ जूनि थिमियाँ एकष्टी गग कछ त अछ  
मग उधवदानी महादेव ज अकश्फ भेन अडि त हारा सभक केलेन  
हान हेटे । रौरा अगल त सौमे दुनियाक पंटेगती करैत छी हम  
एकष्टी छेष्ट छीन तद्ध अहाँक पंटेती कोना कवर । रौरा हएव





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

रैजनाह हो रैठा अप्पन सप्पत कहैत छियेह सठ मे ह्य रैठ  
अकह्य भेल छी । ह्य रैजनाहूँ यो रौरौ अकह्य त ह्य मीडियारना  
सत भेल छी खरैव निथेत आ संपादित करैत, एक टैमन के  
लाकबी छेवि दोमव टैमन के नाकबी पकड़ैत, मीट ममला रना खरैव  
रैजनाह स्रैत, टैमन मानिक के दरार कखरै सैत, रौक जेका  
दुगटाप अकह्य भेल छी ।

हम गग स्रि रौरौ रैजनाह आरि हमारो गग स्रैरहक की अगल  
ठा करैरहक । ह्य रैजनाहूँ नहि यो रौरौ गह्य रौत त पुठे मे  
डनहूँ जे अहाँ किये अकह्य भेल छी । रौरौ डमक दुगदुगरैत  
रैजनाह हग्य मे स्रैर स्रैर बाग कलौ जे ह्य किये अकह्य  
भेल छी । हो रैठा पहिल एकठा ह्योठे थीट दैह ह्य भेल टैमनो  
पव रैकिंग नुज चो दिहक जे रौरौ अकह्य भेल छी । जोको त  
रूमते ह्य जे ह्य केलस कष्टम जिलगी जरीर बहन छी । ह्य  
रैजनाहूँ ठीक डैक रौरौ अहाँ रैजैत जाड आ ह्य लेकड केल  
जागत छी आ ह्योठे थीट दैत छी ह्यदा ग कष्ट जे आग अहाँक  
विशुन कतए बहि गेल । रौरौ अगोछा स ह्य पुठित रैजनाह हो  
कारिगव की कहियथ हो ह्य जिरैत जिलगी अकह्य भेल छी ।  
गणेशि कार्तिक दुनु ठा खुबगुछी हवदा नड आग करैत कहै एकठा  
कहैत छै जे ह्य विशुन न के नाचरै त दोमव कहैत छै जे ह्य  
डमक रैजा के नाचरै । अहि कल कल मे ग दुनु ठा ह्यक-ह्यकी  
घिटा-तिवी क ह्य डमक मेहो ह्योठे दैत अछि । एकवा दुनु ठा  
दुखाले ह्य अकह्य छी । हो रैठा ततरैक नहि कि कहियथ हो नहि  
गोह्य के रैजनाह पमावि दैत छियेह ह्यदा कार्तिक के मयूव ओकवा  
ओग गाछ पव स ओग गाछ पव न जा के जेका गोका दैत  
अछि । ते पव स गणेशिक मुस ओकवा कुतेव ह्यतेव दैत अछि ।  
तुही कहथ त रौरौ रैजनाह के कोला ह्य बह्य कियो देखिहार ले



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

कोश ल ठेक ठेकवा क दैत अछि हम त तू दुखले अकछ भेल  
छी ।

तुही कहल ल आरक धीमा-पुता के मिथा गढ़ । के  
कि हेते । हम रोजनहूँ आर की भेल यो रौरा । हमर गग स्त्री ओ  
रौजनह लो रौरा तू रौरा थाल रूमहेत डुक कहनिअ त जे हम  
अपल घबक लोक म अकछ भेल छी । लो रौरा तौरा मज्ठा गग की  
कहिनअ जहिया म गणेश के शिखरिअ के लोकबी भेलै छी  
कार्तिक के पुन रौरा के सरकारी ठेकदारी भेलै छी दुनु गोष्टे एका  
रौरा घुगवा के ल देथेत अछि जे हम जीवैत छी आ की गुगल ।  
तही दुखले तुही कहल ल एले धीमा-पुता कोल काजक जे रूठ  
माथ रौरा के रूकवा मे मरे लेन गाम मे असगर छोडि दैत अछि  
आ अपल लोकबी मे मल भेल मज्ठा आचार-रिचार रिनवैत  
मागाजिक कर्तव्य म रह योडि लेत अछि ।

अ गग कहैत-कहैत रौराक आथि लारा गोलेल ओ आथिक  
लार पोछि हिचकैत रौजनह लो रौरा आर रूकवा मे लोवी दम  
छी एकमात्र सहा । दूदा आर हूको अरु भेलै छी ओकरो की  
दोष । कहैत छिये जे भाग पीम दियअ त लोवी दम रौजैत  
छथि आर हमरा भाग पीमन बहि लेथेत रौमी लोक नागल अछि त  
छनि जाड रिश्तरिआनय कैम शिखरिअ ओग ठाम भवि डुक भागक  
कसी पीरि लेर । ओग ठाम सीम मगल आ मारवाडी कालेज के  
रिश्तारी मज भाग थाग लेन सेहो अरैत छैक । लो रौरा हम त  
तह दुखले अकछ भेल छी । आर हम एका मज्ठा दवर्तगा मे बहि  
बलै तू हमरा लल छल अपल मज्ठा दियी । हम तेल माडथ एका  
रौरा देवा पब बलै ज जावो लोखान नागत त ओही ठाम एस



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मेडिकल नम्र मे छै ओत देखाओ दिहथ । हम रैजनाहूँ हँ हँ रैरा  
छु ल ग त हमर मोठागा जे अहाँक छल छकोवा कबँक हमरा  
अरुमर छैत ।

रैरा रैजनाह लो रैरा एकठा गप तोवा कलगा त रिसले गेलिये  
ककह कनि, हग मेल पवि छल । कबीगर मञ्जरी गप तु की  
स्फुरैत लो हम की कहियथ ग भागमर पाँडा दुखले मेहो हम  
अकछ भेल छी । हम हुनका म पुछलियेन मे किअक यो रैरा । त  
ओ रैजनाह लो कि कहियथ आर महामर मदिब मे रौडि नगा  
देनकेयो । हम जित्तमरम पुछलहु कथिक रौडि यो रैरा । ओ  
हम रैजनाह लो रैरा श्यामा मदिब मे एकठा रौडि नागन छैक  
झुङ-51क, यत्तपरित-151क, रिरौह-251क, आ रैजिदल-501क  
तही के देखा देखी भागमर हमरा मदिब मे एकठा रौडि नगा  
देनके जे रैराक स्तन पुजा-501क, डमक रैजा के पुजा  
कवर-201, दुब छ १५१-151 आ भागक स्तन पसानी-101क ।  
देखेत छलक जहिया म ग रौडि नगले तहिया म त हम ओर रैरा  
अकछ भेल छी ।

हम रैजनाहूँ मे किअक यो रैरा त ओ रैजनाह कि  
कहियथ रियायी म त भागक पसानी दुखले मदिब मे झुङ झुङ,  
घिछा-तिवी, देह हाथ तोवा-हवावी क लोत अछि । ततरेक नहि  
पिछनका मोरारी दि त कि कहियथ एकवा मरुनक मप्रवदा मे  
हमर विमल छै छल हम त आर तहु दुखले अकछ भेल छी । ओ  
म त नीक नहाति पठत नहि आ पवीका मे हमर भेना पव रा क  
नयन अना पव हमरा पविअरैत अछि । जे हे जवनाह महामर

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

केहल रोगीस डरु पास कवा दैतह से नहि हो रीछा ह्य त अरि  
तह्र दुखल अकड भेल छी ।

ए बच्चापन अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाई ।

बिहारी कथा १.उत्पत्ति मा २.अर्पित शि ३.टंका क्काव मा ४.अर्पित  
टोपरी

१

उत्पत्ति मा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह कथा

१

स्वामी पत्रिका

एक दिन मिहमा देखेरी जेन मिहमा हान सगबिबान गेन बही । ओतय  
मिहमाघबक मैलजब गाडी सँ उतलेत देवी ब्रागत ये लागि गेन ।  
ओ हवा छिहँत डन । मिहमा शुक हएँरी ये किडु देवी डन । ओ  
हवा अपन कक ये रौमा क२ छह-पास कबरँत गगन । मिहमाक  
मो शुक भेनाक रौदो हान ये रौट रौट ये शास्ता पाणी गुडैत  
बहन । हवा छेँकी रौँरी ओ सँ अचबज सँ देखेत डन । मिहमा  
समाप्त भेनाक रौद मैलजब आदरपुरक हवा गाडी तक अविगाति  
देनक । डेवाक रौँत ये हवा छेँकी रौँरी हवा गुडनक- "पाणी ओ  
मैलजब अहाँक एतेक खातिर रौत कियेक करै डन ? ओतय तँ  
आबो लोक सँ डन, ह्मदा ककरो दिस तकरौ लै करैत डन । " हवा  
रौँजल- "रौँरी, अहाँ लै बुझल । हवा स्वामी पत्रिका छि । "  
छेँकी रौँजल- "तखन तँ अहाँ कै आबो ठाम ओ स्वामी पत्रिका  
भैँछैत छत । " हवा अपन रौँदुवी ये कहलौ- "हाँ-हाँ, आबो ठाम  
भैँछैत । " ओ पत्रिका रौँजल- "तखन कहि सँ हवा अहाँ  
असकनक तीतव तक गाडी सँ डोड । प्रमूष निह गाडी सँ तीतव  
तक आरै छै आ रौँत शेष देखायै छै । अहाँ तँ हवा रौँदल गाडी  
सँ उतारि दैत छी । " हवा सकपकागत रौँजलौ- "रौँरी प्रमूष  
कनकठबक रौँरी छि । कनकठब कै हवा सँ पौष स्वामी पत्रिका



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

ठेठेन ठेक । हमार अहाँक अमकुनक स्तनन गवष्टि ले ठेठेन  
अछि । " छेठकी कमि गेल आ कहलक- "ले अहाँ हमार हूँमि के  
छी । हम् गडी सँ अमकुनक तीव्र तक जायँ । " हम आरँ उकरा  
की बुनैरैतियेक । हम छुग बहि गेलौ ।

२

ठेगमावा ठेगमावा

मोरौङलक अनामक घब-घबरी सुनि क२ मिश्रिजीक निम्न धुँष्ट गेलैहि ।  
उ मोरौङल दिस तकलाह आ अनामक रैल कलेत हेल स्वतंत्रक उपाय  
कब२ नागलाह । आ की कनियार्क कडगव आराज कल मे ठुकलैहि-  
"यो किया अनामक क२ गडल छी ? साठे पाँच रैजै छै । उँ, ले  
तँ रैच सभ केँ अमकुन लेल के तैयार कबउँतेक । हम ननु  
रैलै लेल जा कहल छी । भवि दिस तँ अहाँ अहिमे मे हसी  
तोडलै कले छी, कली घरो गव अश्रम दियो । " मिश्रिजी रिला कोला  
रिबोस केले गोम मासमिहाव मान जान जकाँ छुगटाग रिडाउम सँ  
उँतवि राखला मे ठुकि गेलाह । निरुत भेलाक बाद रैच सभ केँ  
उँतरै२ नगलाह । रैच सभ हलकव हलैल लेहल मे अमकुन जयरा  
लेल तैयार हुँ नागल । एकएक रैडका रैछी बाजू राजन- "गागा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

अहाँ हमार कापी आसकूँ ? " मिश्रजी- "ले, रिसवि गेनहुँ । कहि  
आहिम मे रँडु काज छ । " बाबू राजन- "अहाँ तीन दिन सँ रिसवि  
बहन छी । बोज आहिमक काजक नाथे हमार कापी ले आरि बहन  
अछि । अहाँ केँ हमार काज मोष ले केँए । " ठुल्ल सँ कनियाँक सुव  
भगमाय सँ रँडवेल- "ग तँ लिखब प्रवास आ पोष्टेष्ट रँडवेल  
अछि । सबक कोला काज मे लिखब कोला अतिकटि ले छैहि ।  
आग हमा अपन तौल कापी आसि देखै । " कहूँ राँचा सँ केँ  
तेयार कवा मिश्रजी रँड-सृष्टि धरि राँचा सँ केँ छोडि देवा अएनाह  
तँ कनियाँ एकठा काल बनिष्ट हाथ मे था दैतथिह । सद्धी अछि,  
दुध आ आस रँडु सँरहक निष्ट । मिश्रजी रँडवेल- "कणी दय धव  
दिय । हमा रँडद जकाँ भवि दिन नागन केँ छी, तगयो अहाँ सँ  
केँ हमार सँ सिकागत केँए । " कनियाँ कहतथिह- "रियाहि कऽ अहाँ  
आसकूँ आ सिकागत करै अ भाडा पर लोक ताकी हमा ? " रँडवेल  
मिश्रजी छुपछाप राजन दिन ससवि गेनाह । राँचे मे रँडुजीक फेल  
मोरौगत पर एतेहि- "हो, मरुमक देरौन लामिया गेलैक । वंग  
कवरौलै अ पाग कहिया पछैरैक ? " मिश्रजी रँडुसँ रँडवेल-  
"अगिला मास पाग पठा सकर । " मिश्रजी थिसियागत कहतथिह-  
"कतेको मास सँ तौ अगिला मासक गप केँ छ । ग अगिला मास  
कहियो आउत की ले । " मिश्रजी केँ अपन गामक सीमा परबक  
ठेगारा गोमाग मोष पडि गेलैहि, जकवा पर सँ कियो आरैत  
जागत एकठा ठेगा केँ दैत छै । हुँका रँडवेल गेलैहि जे  
उ ठेगारा गोमाग भऽ छक छथि ।

दस रँडे मिश्रजी आहिम पँछनाह । कणी काल मे आहिम अपन  
कफ मे रँडा कऽ पुढतथिह- "कहि एकठा अर्जेष्ट हागत लार्डिग  
अ देल छनहुँ आ अहाँ रँडा काज केले भागि गेनहुँ । " मिश्रजी-  
"सब, रिसवि गेलियो । एथल कऽ दैत छी । " आहिम- "मित यैह  
रँडवेल केँए । किछो यदि केँए अहाँ केँ ? " मिश्रजी मोछ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

वागनाह- "गहो ले छोडनक । फर्मी पब रैनन अछि तँ हुकुमत  
देथरैए । " अहिंसब हुनका दूग देखि कहलैथ- "की कोला नरै  
रैहना सोटे छी की ? जाई काज कर कर दियार । " शिरोजी- "सब,  
कहलौं ले रिसवि गेल बही । तबत कर दैत छी । " अहिंसब-  
"अछा, बोज तँ यैह रैहना केए । किछो मोल केए की ले ?  
अपन नाम तँ मोल छैत ले । की नाम अछि अहाँक श्रीमान किय  
शिरोजी । " शिरोजीक मुँह सँ हकट्ट निकलल- "तेगमावा गोमाङ्ग । "

२

अमित शिरो

बिहारी कथा





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

छेबि

बिदेहब रौंरौ । सहिदेह । जौत पब साक्षात सबसुती कए रौस  
। सहिदेह

सबै बिबा पब एक समाज पकड डुननि दूदा पाग कए अतार ये एको  
ठा पोथी डुपन नहि

डुननि । एक दिन साँम ये रौंरौ दिने जाग डुनह । पँहुट  
गोनाह पतुक महन ।

एकठा सुनब काँतब रना पोथी आकर्षित केनकनि तैए किन लेनाह  
। घब पब आरि

पटे नए रौंसनाह , जेला-जेला पन्ना डुनैरौत गोनाह तेना-तेना  
आँखि गोनाग

पेय होगत गेलौ । काँतब कए पाछ लेखक कए नाँ पठनहि  
,आँखि ओब पेय भ गेलौ

। मोट नागनहि ठका , मयथ-जलरब गाडी-घोड़ । कए छेबी त  
देखल डुनौ दूदा

शेदक छेबी पहिब रौं देखलौह । आन टिजक छेबी ये त पता  
छनि जाग डै दूदा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

झूठ मँ निकलैत रौन कए छोबी मे कमिको पता नहि छलै छै ।  
धन्य छथि एहन छोब

आ धन्य छैल छोबी कए स्थापन . . . । ।

३

टंटा क्वाब सा

सबबा मदलेश्वर सुन

मधुबनी, बिहार

बिहारी कथा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह चन्द्रका ISSN 2229-

547X VIDEHA

अक्षकव दृशति

हाथ मे मोड़ । लाल, मोल मोल किछो फूल मे पड़ल ह्य रंजना  
दिन छनि जागत बनी, एतरे मे हमर नंगोष्टिया भजल त्रैकुण  
सोमना मे आरि लेलाह, ओ रंजना मे घर घूमल जनाह, दलिया हाथ मे  
अष्टौ बहल आ रंजना कान पव रंजि भविष्य रंजनीक कयाग भवि  
मे सुलैत डल्लू दूदा आग हुनकर पहिल-ओला देख सरूत भैल  
लेल, नगीत अरितहि भवि पाँज पकडी लेलाह...की हान-समाचार डौ  
रौ भजल, रंजना ले कतेक दियका रौद भैल भेल अछि...ए धन भए  
लेलाह...रंजनाह, हमरो मोल हुनकर एहि गिरता आ हमरा एति मल  
देखि गद-गद भ लेल, पड़लियेह...की हान डल्लू रंजना दियक रौद गाम  
मोल पड़ल, रंजना रंजनाह, काज-बाज मे रात कहैत डी, समये  
नहि भैल अछि जे गाम आगर, ए त आठम दिन रियाह डी तंग  
आरंग पडल, हम पड़लियेह-ठीके ? ओ गंभीर होगत रंजनाह-हाँ  
एहिठाम रंगले मे बखरीबी...हम पड़ल-दूदा तौ एला किछ पड़ल  
-ठीके ? , हम कल अक्षकव होगत रंजनाह-नहि, नहि, अलि...हमरा  
त रिसरोमे नहि भ बहन अछि...ओना ए मान रंजना भूत डै देखलक  
ले रंजनाह मेहो रंजना भ लेल, आर ओ हमर रात रंजना  
बहन, रंजना रंजना-ए रौ त हमरा रूठ रंजना डैल जे हमर गिरती  
ओहि पैंतिस रंजना रंजना मे कहैत डै, हम रंजना  
कहलियेह-नहि, नहि...अले हमरा कहल लेल त हम त रौवा एथला  
एह पैंतिस रंजना अरु मे अठार रंजना डौडा कहल दूदा ए  
त रौवा सब कहैत कहैत डल्लू, त्रैकुण रंजना रंजना-हाँ...हाँ, ठीके  
कहरी डै ले जे अप्पन रियाह भ लेल त नगल खतम हम  
कहलियेह - नहि, नहि ए कहरी रंजना गलत अछि, हमरा रंजना  
कोला रियाह रंजना ए नहि चाहैत होगत जे अक्षकव रियाह नहि  
हो, त्रैकुण अक्षकव होगत रंजना-मे कियेक ? दोसबक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुवीविह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

दृष्टाति के बहि देखय छहिन अछि ? -हम कहनिथोह.उ भता के  
हंसय नगनाह.

४

• अशीय टोकी

बिहारी कथा

ऊक

किछु दिन पहिले जखन हम पुर्णियाँ पठनाक लेन रस पकड़लौं तँ  
हमर एकठाँ मिय मेहो पठना पवीरकाँ दे लेन जाग भुन संयोगसँ  
हमरा दुनु गोठेक सँट मीवा ट्रेन्स नामक रसमे भुन जे रस बिहार  
बाज्य गथ पबिरलन निगमक अवीर आरौ भुन जकब पठनामे नाँक  
जगह गधी मेदलसँ म्ठन गलाका भुन। तँ हम दुनु गोठे एकठाँ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

ठेम्भुमँ पँहूचौ महराब मदिबक पाछाँमे एकठाँ रैड निक सक  
चाहरनाक दोकास डले जकर दोकासमे चार पीरै रैनाक तीड़ नागन  
बहे डले से हाँ दूनु गोठे चार पीरै जेन गेलौ । कि ए तँ  
हमो दिनी आरैक डल आ हमर गिरैके दिक २ रैजेमँ पबिका डले  
से हा दूनु गोठे मोचौ जे कि ए ले पठेना घुम । हा दूनु  
गोठे पहिन शुकथात महराब मदिबमँ शुक केजौ, ओना तँ पठेना हा  
रैहते रैर घुमन डी हूदा हमर गिर कहनक जे चनु दूनु गोठे  
आग घुम । शुकथात तगराक दर्शनमँ भेन । ओकर रौद सृष्टि  
पवित्रमे नागन प्रवास कोसनाक मशीन डले से हा दूनु गोठे उत  
घुम नगलौ । जखन टाक कातमँ घुमन भऽ गेल तँ एकठाँ केसामे  
देखलौ, एकठाँ महिना रैड जोकमँ काले डल से हा दूनु गोठे उत  
गेलौ तँ दंग बह गेलौ कि ए तँ उत एकठाँ महिना एकठाँ हूदक  
मग निपटि-निपटिकऽ काले डले आ के डले जे हमरा गाममे कहल  
जेन पेसा ले डल से अहाँ मऽ हमर मदद कर । लोक मऽ ओकरा  
किड ल किड पाग देरै नागन । हमो गछा भेल जे किड पाग  
हमँ दिँ, से हा अगल पाकेमँ २० ठाँकाक एकठाँ लाठ निकालिकऽ  
ओकरा देखलौ, से ओ हमरा आशीराद देनक आ कहनक जे अहाँ ठेरो  
दि जाँरु । हमरा ओकरापर दया आरि गेल हूदा हमर दोस्त हमरा  
कहनक जे अहाँ ठका गेलौ । हा ओकरा कहलौ एना कोना तँ ओ  
कहनक जे अहाँ एकव हिति देखु तँ अहाँकेँ एकवापर मेक भऽ  
जधत । हमरा ए रौतपर यकीन ले भेल हूदा हमर दोस्तक कहँ  
तँ ठीके डले । हए उत एकठाँ लोककेँ सेहो पछलौ तँ ओहो  
मए रौत कहनक आर तँ आर ओ तँ ओहो कहनक जे एकवा नशि  
जाले छिँ के दै डे । हमरा सेहो मोष भेल जे रौतऽ के दै  
डले । ओकर हँसमँ जखन स्फुरलौ तँ पए नगक माँगे थमकि गेल  
कि ए ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

ओकरा पुलिस रैना एक सभ ठकामे नाराजि नहनि दऽ दैत छलै जा  
ओकरासँ कमा कऽ नहि गऽगामे ले तँ कतौ अपन ठाम नऽ जा कऽ  
छेकि दैत छलै ।

हमरो ता तक देखैक समय भऽ रहल छल मै हमरौ अपन देखै  
पकड़ैले सृष्टिक अन्दर छनि गेलौ । ठक तँ पुलिस छलै रैनाबी  
बूढ़ी या की ठकत, ओकरासँ ठका कऽ हमरा नीके लागल ।

ए बरामा अपन मतिर ggaj endr a@vi deha.com पर पठाई ।

१.बरि भूषण पाठक- ओकरा तौलब हमरा सगला २.शिर कमाव  
मा छिन्नु- रैनिवा नाछ अपन ताल

१

बरि भूषण पाठक

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

उक्कव तौहव हम्हार सगला

नाम:सूर्यकांत

उमेव :रैगामिस रय

बग:गोब

नरौग:पाट हलै नउ गट

राम आथिक दुपव मे आ दहिना रौहि पव छैक निशान

समस्तीपुर मैथिली ग्रामीण बैंक ,कविगण मोखा क एकठा खाता  
हम्हार (हम हम्हार सार्वजनिक बग क बहन छी)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुरीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

पहिले पहिल मात्र यैह सुचना कैक्स क माध्याम सँ दिगेली सँ  
बाजरीर मा ज़ी भेजना । बाजरीर मा दिगेली पुलिस मे  
उपनिवीक्षक डुथिन ,आ हुनका पता डगनि जे सूर्यकांत हमर  
गिमियोत भाय डुथि .....दिन डुले सोनह अगस्त दु हजाव  
दस । जखन हमरा बुझा गेल जे सूर्यकांत भाय अ डागरी  
निखला तखन हम कहनियेन जे अ डागरी भेज दिगथ । अ  
डागरी अजरीर तबीका सँ निखन गेल ड़ेक । जतते दिनचर्या  
अगला प्रति ओतरे समाजक प्रति । ओना डागरी क रूत बस  
रात हमरा अगमोहाति नागन .....कथला कथला एतते कि  
सूर्यकांत अगुण मर्यादा धेए देल हो.....रूदा अ विषय मे  
हम किछु नग कहरी किअक त गजेन्द्र ज़ी कहना कि डागरी के  
मुले कप मे ड़ागन जाय ,ते डागरी क कंठेठ पव हमरा किछु  
नग कहरी के अछि .....ओला मवन आदमी के विषय मे की  
कहन जाय ?

हमरा त२ अहो नग बुझरी मे आरि बहन अछि कि अ डागरी  
मे किछु साहितिक ततर अछि रा नग ? कथला डागरी तथय  
आ समे क२ सँदर्भ सूरीकारित ड़ेक आ कथला नग ,कथला  
कथला त२ डागरी अगुण कप के ड़ोडत सँभावण ,कथा  
,कविता दिमि भाग२ चरित अछि । कथला कथला मगला क२  
कपक मे समाहित हेर२ नातीत अछि । डागरी निखला ड़ेक  
मिथिलाक्षर मे आ हमर मिथिलाक्षर बहरौ कब कमाजोले ,ते





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

एकठाँ अहो मेहनत रैठि गेल । ह्रदा गर्जेद ज़ी क२ अ  
कहतरेँ छुनि जे एगो दुगो पृथ के मित्रताति अनेथित  
कलेत भेजेत बद्ध ।

डायरी के प्रस्तुत करैत सब सँ पहिले हम बाज़ीर राँव के  
धन्यवाद दैत छिए जे ओ अंगुष्ठा बसत दैनंदिनी क२ रीट  
सूर्यकांत क२ डायरी मे दिनचर्या देखैथे आ एहियो सँ आगु  
रैठि लेवायन डायरी के खोजि निकानना । अ डायरी सूर्यकांत  
भावक२ मकान मानिक बाथि लेनक२ आ कोला साहित्यिक रसत  
बुमि रैचरों के हिलाक मे बहए । ए डायरी क२ तथ्य के  
प्रस्तुत करैत हम सूर्यकांत भाव क२ आत्मा सँ अस्मा मालीत  
झी , किएक त२ डायरी मे कतेको एहन छेज छैक , ज२ सँ  
बिराद उद्गमना होयत आ मृतात्मा क२ संरक्ष मे अति  
उद्गमन त२ सकैत छैक । ह्रदा ए धन्यवाद आ अस्माप्रार्थना  
क२ प्रार्थनाकता तथ्य , ज२थन डायरी मे कोला सत्र हो  
। डायरी मे कतहू कतहू शीर्षक छैक आ कतहू न२ । संरक्ष  
नमहव शीर्षक छैक ‘उक्कव हमाव तोहव सपना ’ । आ डायरी  
क२ पहिल पृथ पव एकठाँ छेठ शीर्षक बहे ‘सोयरी आ सपना  
' । ए खेप मे ‘सोयरी आ सपना’ प्रस्तुत अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

## सोयबी आ सगना

अ कोना अछुत सगना नह बहे । सब लोक अगन अगन रैछा  
क जेन एहिना सगना देखे छैक ,आ अ ओकब पहिलो सगना  
नग छलै । पहिलो नग ,दोसरो नग ,तेसर ..... ,रुदा आग  
सँ तीस-चारस मात्र पहिल तीस ठी रैछा रहूत सबाका रौत  
छलै ,से दम्पति अगन सगना के देखरौ ,सगना के अगोवरौ  
,पौसरौ के सरँ उँगफा करैत जेन । सगना ये पाणि देनग  
,सगना के हरा नगेनग ,सगना ये सँ आरुष्ट रौरुष्ट के साह  
केनए ,सगना के छेब-शेतान सँ रैछारैत ,लोक-रैद के कहैत  
गुणैत । सगना के हाथ-पैव ,रुह-कास सरँ रैजए । ए ये  
नगभग नउ महीना जाणि जेनग । आ अ नउ महीना कोना  
रीतनग दम्पति के गते नग छलै ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

एक दिन मिथिला क एकठा गाम मे सगला के धवती पव  
उतावरौक ब्यारमथा प्रारंभ भेल । तीन-चारि ठाँ जगना  
, एकठा चमेल ,आमि-पामि ,तेल-मोष,मारुण-कपड़ । आ गीत-  
नाद । आ रौआ ले अगले समे डले ,उग समे मे ,रैछा  
जगमे कान एकठा थाम भूमिका लेन किछु जगना के रैजाउन  
जागत डले ,ए मे सरसँ प्रसिद्धित जगना उग रक्षा सँ होगत  
डनथिन जे मिथिले नग समस्त भावतर्यक जाति-रिचाव मे  
अछोप मानन जागत डले ,मतनरँ सरसँ महत्पूर्ण काज आ  
काज केनिहार क दबजा अछोपक । ए सरँ रौत रौद मे  
, पहिले सगला क२ सर्प ,गंध सँ मोष के त्रिजा त२ लेन जाए  
। आ सगला के जमीन पव उतावरौ क जिम्मेवारी उग रक्षा  
के हाथ मे जेकवा सगला देखरौ क२ माली हो । ऋदा  
लैडिग ऑफ ड्रीमस क२ मजबूत पागलठ सत अगन-अगन  
अवतार क२ रौत अतिथान के सहज दिना दैत बगरिवली रौत  
,कथला ठेन पड़ ।स कथला धर्म प्रवाण कथला शिबीर रिक्ताण आ  
यौन रिक्ताण सेहो ..... जगनी-जातिक मज्जाक सुरक्षागमन मे  
निहित रैदना के कम करैत । आ सगला के छोट छोट हाथ  
डले ,छोट छोट पएव ....आथि कान सरँ छोट छोट । आरँ  
सगला सरसँ अगना लेन सगला देख सकैत डले .....

ऋदा सगला के नून नग छैथन गेलै , ए दम्पति कनि अगन  
बैहै यैह रौत नग ,रैछा 'रैछा' बैहै ,रैछी नग । आ सगला  
एथन सीधा-सीधी रौत चलेत बैहै ,भुथ ,प्यास ,गवम-ठड केरन  
सगला मे आरौ ,आ अले कोला सगला देखै के उमेव  
डले.....जे रौग माए क सगला सएह रैछा क । आ  
छोट-छोट सगला के पूरा कए लेन माए-रौग बहलै कबथिन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X **VIDEHA**

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

,से अगण स्रविधा के समेटैत रौआ क२ आरणीयकता पव  
केद्रित भ२ गेलै घब ।

एथन तक सगना मे सगना क२ मथफुठैएन नग भेलै । से  
किएक ? त एथन छोटका सगना के लथ पएव नग भेल भेलै  
, ओकव आथि नग फुठैलै भन एथन ,ते ओकवा देखाओन गेलै  
जे रौआ ले सगना एहिना देखरौ क२ चाली आ सगना मे मात्र  
यैह सर देखरौ के चाली । से तीन चारि साल तक ककरो आ  
रात दियोगो मे नग एलै जे ए परिवारक प्रत्येक सदस्य के  
कोन मात्रा मे सगना देखरौ क२ चाली । एथन तक थाए-पीरै  
, पहिबनग-ओठए ,गीत-गानक सीमित राङ्गमकोप भेलै ..... आ  
ओग समै मे गाम मे राङ्गमकोप देखरौ रना आरैत भेलै आ  
ओकव चकवका पेठी मे आठ-दस ठा थिड़की बहेत भेलै आ  
घुमैत फाटै क२ साथ गीत सेहो सुनागत भेलै । फाटै आ  
गीत मे मार्जस्य हेरौक चाली से रौआ के ओग समै मे नग  
बूमेल । आ रौआ नग चिन्हैत भेलै ते एके सिलसा मे  
सवनका पृथ्वी बाजकपूर सँ न२ के सवनका गोरिन्द प्रधान तक  
के फाटै अजीरै आकर्षक गाली । फाटै क२ झुआ ,जग मे  
मारवण-पीठनए ,हँसेनए ,दोड़नए त२ बहरै कवए छोट 1-  
छोट 1 एक दोसर के पकड़ल सेहो बहे । आ रौआ के ओग  
समै मे आ बूम२ आरि गेल भेलै जे रौआ अलग लोग भग  
आ बूट्टी अलग .....



आ रौआ क२ जखन नाम लिखेनग त२ रौआ एगो मोवा आ  
एगो रौवा लेल असफन पहुँचि लेनग । असफनो ये रौआ  
अपन रौवा के छोड़ । सबक रौवा ये सपे के बांध  
। असफन क२ रातारवण रौआ के रौमी नग नीक नागले । ए  
ठाम गवसरे सरे हिंदी रौजेत दुनखि आ हाथ ये मोछका  
सछकरी बाथेत दुनखि । रौआ के त२ अहो पता नग बहे  
जे हिंदी कोला भाषा होगत छैक ,हाँ ओ सरे जे रौजेत  
दुनखि से गाम ये केओ नग रौजेत बहे .....रुद्र नग छु  
जे नीकन डेया आरौ दुखि कहियो कहियो गाम ,आ छु जे  
रुद्रन डेया दुखि ,छु दुनु गोछे गामो ये हिंदी रौजेत दुखि  
,त२ की हिंदी रहबिया भाषा भेलै ,गाम पबक नग रोड पबक  
,असफनक भाषा । रुद्र ओग रौत सबक लेन ओग सये कोला  
अरकामे नग छलै ,अ कोला सपना नग छलै ,ते मोवा असफन  
तक बाथि रहूतो रौछा मदिब दिसि निकलि जाग आ रौओ सए  
कवए । मदिब पब ,पोथवि दिसि ,गाडी ये ओ सब समाज  
मिलैत छलै ,जेकवा सपना ये देखन आ मोछन जा सकैत  
छैक । कलैक युन ,कक्का क२ ननका नताम ,हूकब रौमरीछी  
,उतवराय छैनक अगली आ परितवा आ डोमा क२ ताव आ  
तवफन ये रहूत नगो छलै । आ असफनक सरमान्य रुद्रा  
शिनिन छलै ,मतनरे शिनिनक कनी छै छुछ । ये ताव क२  
कनी गो हिस्सा गिनरी क२ गारुछी छलै । ओग सये ये रौआ  
के रूमन नग छलै जे परितवा दुमाध छैक आ परितवा के  
छुग देना सँ रुद्र तक दुआ जागत छैक । ओग सये अहो  
नग रूमन छलै जे डोमा डोम जाति क२ रौछा नग रुद्राव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषिंह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

ढेक आ डोमा नाम बाथि एगो जोगथेम कएन गेन बहे ,आ  
असकन मे डोमा क२ माए राग केँ अ मारित कबरैए मे दम  
नगरै पड़लै जे डोमा क२ असली नाम सुकमार ढेक ।

झुदा लोआ ले हमार हिति किछ अलग बहे ,आग तक घर मे  
हमरा केँ नग सुनलै हमरा जन्मक कहानी । ल माए ल  
राँरु ल भाय-रहिन सर । हम रिशुछ पवहितिया घर मे जन्म  
जेनियग । घरक पुवा अर्थरगरमथा राँरु केँ द्वारा मांस मे  
आरंग रना सीदहा पव निर्भर बहे ,तेँ घरक पुवा बाजनीति  
जजिमिका पव केँदित छलै । भोव मे राँरु नहा-मोना पुजा  
क२ जेना केँ राँद सीधे भागथिन गमयष्टी । आ अ गायघाँ गाम  
हुनकव समत योग्यता आ रिद्धता क२ मँट छलै । ए ठाम  
हुनका जेन कोला कपटिमेन त२ नग बहे ,तेँ मारित कबरौ आ  
नग कबरौ मग किछ नग बहे झुदा अ जे निर्दल सँभारना  
छलै मे कतेको सँभारना केँ नुन छठी केँ मारि देनकए । एकव  
धवती एको डेग नग छलै ल अकामि एको लथ केँ तेँ रामन  
केँ रामन बहि मरौ केँ छलै ,ए ठाम रिशु माँ सत्यनावय  
कथे मे बहथिन ,हुनकव दम छी गढास छी कप कहियो मगना  
मे आयन ,रिवाँ कपक राँते छोड़ू । ए ठामक रिशु नम्मी  
सहित आरैत बहथिन आ कहियो टोरेन्नी ,कहियो अँठन्नी  
,कहियो मरा कपैया आ कहियो 'राँद मे द२ देर' क२  
पुनकडि सुनारैत गोलोक छनि जागत छनथिन .....



प्रकाशक:

२

शिर कयाव सा 'ष्टि'नु'

रहिवा नाछए अपन तान

प्रसन्न शीर्षक हय कोना अपन बचनावयक क्रियाशीलता ले  
रान-कानमे “मिथिला मिहिर” पढ़ैत छलौ। साप्ताहिक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

महिबक सब गोष्टे अकमे ए शीर्षकसँ एकठा म्थागी स्तंभ  
डुपेत छन ।

रैड रैथा भऽ बहन अछि जे भावत रर्यक प्रदूख भाया सब  
उत्तर आधुनिक साहित्यक कर्षे अपन-अपन संसृतिसँ भाषामे  
उमावाएन छी । ए सर्रथा सत्यसँ रौछिक प्रभार रैशी बहेत  
अछि, पर्वत एकठा आव गप्पगव जौ आत्मीय भऽ कऽ बियास  
देन जख तँ सामाजिक मा बचनक मध्य सामाजिक होगछ ।  
सनातन संसृतिमे “जाति”क रिभेद रैशी बहन दूदा सब  
रैदिक संस्कारमे अछोपक महतकेँ सहो नकाबि ले सकैत छी ।  
हमले पूर्रज निखल छथि “कर्म प्रधान सिद्धे करि बाधा” प्राप्ति  
भनमाग्य शिरदेष्टी मे सही एकवा स्त्रीकाव तँ कएननि । तँ  
सभकेँ जातिसँ अपन उर्त कऽ मोचरौक छली । आन जातिकेँ  
के कह्य मिथिनामे तँ जौनशोक मध्य रैडका बिदेह छैक, जौ  
ए रिभेद मात्र रैराहिक संस्कार धरि सीमित बहते छन तँ  
येन-केन प्रकारेण स्त्रीकावर्ग, दूदा “पिपरी” जे हमर भोज्य  
संसृति विशेष छि थिक ओकरा देरैमे रैड भावी थारि भऽ  
जोन छैक । अन्तर्द्वन्द्व मात्र एतरेँ धरि ले भनमाग्य रक्षक  
कोला करि तँ एतए धरि निखल छथि-

अछछि ए कोदछि ए आ दूसरबय,





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका संस्कृतम् ISSN 2229-

अ मवस त मैथिलिक पाप ठवस

अछड़ि ए मैथिल ब्रह्मण एकठा मुन होगछ, ए श्रेणीक ब्रह्मण दड़ि उगा जिनक “लहवा” आ समस्तीपुरक बिड़हा गाममे भवन छथि। रएह लहवा जकवा कहियो “मिथिलाक पौक्सि” कहन जेन अछि। आर कहन जाए “मैथिल” ए दोहासे करि ककवा मसल छथि? मात्र त्रिविध, भगवान् आ उच्छृम्भक जयराव ब्रह्मण। जे एहेन करि जेन आन ब्रह्मणों अछेप त आन जातिके की कहन जाए? रियापति स्मृति पर समारोह रा कोला मट हूँ हामराव थपड़ि रैजुआक जेन ए प्रकारक दोहा मिथिलाक पहिचान मानन जाग बहन अछि-

लेनी लेनी ओ लेतिनीयाँ

दीप गोपबन्धु लेतिनीयाँ

पाँट गाम गच्छी पवगला

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

उत्तम गाय नलोव

तेली सूरी रसए माथेपुव

नैठक ठैठ नखलोव

जौ मधुबनी जिनोक मात्र डुंगव नि नखन किछए गाय भनमाधुबनक  
गाय तौ गोपेने, सबस, गजेन्द्र रा आनंद भनमाधुबनक ले ?

ममतीपुव जिनोमे भनमाधुबनक ताहिक बिरेछन तौ आव बिटि  
ठगे कएन गेन अछि-

“श्रियाय ममतीपुव बाणी छैन

किछ घब छैठका आव सभ छेव”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषींह चन्द्रिका ISSN 2229-

धन्यवाद देवैक चाली एहेन प्रसंगक ब्याख्या जे जे रिसरि गेल  
हुनि जे “छेब”क कोना जाति ले लोगत छैक, ओ कथाकथिक  
तन्मात्रक परिवारमे सेहो जन्म न२ सकैत हुनि रा लेत  
हुनि ।

केओ ले मोहनहि जे हविरि तका मण प्रोजेन साहित्यकाव  
मात्र एकरा मैथिली लेखियो नष्टक “उगला ले मोव कतए गेलौ”  
किएक लिखनहि ? एकरेव सम्प्रतिपक्षक नरूपप्रतिपक्ष मैथिली  
टिप्पणिक डा. आर.पी.मिश्र लिखनमे दैनिकमे अपन आलेख  
लिखल हुनाह जे अरिकाव देवैक कान हमरा सभकेँ दक्षिणा  
कहन जागत अछि तखन मैथिलीकेँ आगाँ रैद्वैक आमा हमरा  
किए करैत हुनि ? हर्षाविवरण केँ, पौद्गाव बामारताव अरु  
मण बचनाकावक केओ मैथिलीमे लिखनक प्रेरणा किएक ले  
देनकनि ?

गजेन्द्र ठाकुर, उमेश माडन आ शिरमाव मा मण साधका  
लोक समाजक सभ रक्षक बचनाकावकेँ प्रोत्साहित क२ सकैत  
हुनि तँ प्रेरण साहित्यकावक की हमरा आमा बखनाग अपवाद ?



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

तुरणशेखर मिह तुरणशेखर अतिशय प्रेक्षाजनि दैत छियनि जे एकठा लिपिक महाकरि आवनी प्रसाद मिहके मैथिलीमे लिखरौक प्रेषणा देननि ।

जखन सम्प्रतिप्रवमे मैथिलीक अतिशय वक्तव्य आनन्दोत्पन्न होगत अछि तँ डा. नरेश कुमार रिकन सभसँ आगाँ बहैत छथि । 1960-70मे लिपिक करिता सभ मिथिला मिहिवमे छपैत छल तखन मैथिली साहित्यक गतिहासमे डा. दुर्गाशंख झा प्रेक्षा लिपिक बाँटि लिखि ले देनन्हि ? हमर कहैत छैत जे सभसँ दृष्टिमे सभसँ बहैत छथि, हुनका जे आत्मीय भन्त कइ सोचन जाए तँ सभ प्रेक्षा समाधान छैक । “मिथिलामे बहैत सभ लोक मैथिल” छैत उल्लेख सभ सँ गहिरा कथन जागत अछि । ए तबहक उल्लेखसँ अम उल्लेख भेलाग सभसँ । जेना अगला छवि छेलासँ सँ कोला छेलाकेँ छेव-छेव माथ कहैत छथि जे “तौं हमले छेला छै ।” तँ ओहि प्रवक्त दिमागमे निश्चित उपेक्ष छैत जे शायद हम दोसर बाकी प्रवक्त छै ।

अतमे, हमर आग्रह छैत जे सभसँ दृष्टिकोण बाखर अनिराय आ सभसँ वक्तव्य सभसँ तत्र मानन जाए, ले तँ सभसँ धार रहैत कवतीह आ साहित्यक लेन ओ अगला आमेघाती सेहो छैत ।

बिन्दु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

ए बचनपत्र अपन मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पत्र  
पठाउ ।

गजेन्द्र ठाकुर- शैलमोक्षम् / दिग्वि

१



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुप्रीति संस्कृतम् ISSN 2229-

शेर्माश्रम

(अ कथा “जखन तखन” पत्रिका आ “कथा पावस” कथा सकलमे डगल अछि, अदा दू ठाम सकीर जातिरादी मानसिकतारेना सम्पादक लोकनि एकव किछ महसुस भोग काँटि देल अछि । एतए सम्पूर्ण कथा अखिकर कथामे देल जा रहल अछि । )

मिह बासिमे सुर्ग, मोछी-मोछी मोनल अगस्त मँ मोनल मितयैव धरि । किछ सुखैरौक होअए तँ सभसँ कइ । लौद । मिह बासिमे मित्रक मित्रक तानपत्र सभ पसबन बहेत डल, बारिक परिवर्तन योजना, जे एहि तानपत्र सभमे जान हुकैत डल । आनदा मित्रक मित्राजीक एहि तानपत्र सभक परिवर्तन मलायोगसँ करैत रहथि । कडगर लौदमे तानपत्र पमालैत आनदा, मित्रक ओहिना मोन अछि । मित्र संग जिनगी रीति गेनहि आनदाक । अदा एहि रीतक मिहबासि अनासँ पुरिहि आनदा छनि गेलीह... आ आरँ जखन ओ ले अछि तखन जीविक परिवर्तन कोना होएत । मित्रक आ ओहि तानपत्र सभक जीविक..

अम । मित्रक अम । मित्रक अर्थ हम सभ गति लेत छी । आ लेब अम शुक भए जागत अछि ।



बुकेसवी अँगना चान घन गङ्गिया

तहि तब कोगनी घन्मटास हे

कठरौ चन गाढ, रौठरौ अँगना

हुँष्ट जेत२ कोगनी घन्मटास हे

कान२ नगनी खिज२ नागन, रौन के कोगनिया

हुँष्ट गेन२ कोगनी घन्मटास हे



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जानु कानु जानु की, जोरों के कोगनिया

अहि जेत २ कोगनी घंमटास हे

जहि रौस जेर २ कोगनी

बहि जेत २ शिषया

जनु मक नयना मे लोव हे

मोले मे मेढा येर कोगनी तोवो दू पंथिया

कपे मे मेवायेर दू ठोव हे

जाहे रौस जेर २ कोगनी कन्मनु रौनस





बहि जेत२ बकतमाना के निशान हे

कोला हरतीक अरौज चर्काव ठैलसँ अरौत रूमना  
जोन..आनन्दक अरौज ।

झुदा आनन्द तँ छनि जेनी, कमिये कान पहिले ओकब नहनि  
देखि अएन छथि रँचन । मितुकें समाचार कहि डोगासी हूबि  
जोन छथि । आ आनन्द, ओ तँ रूठ भ२ मयनीहै । तखन ज  
अरौज, हरती आनन्दक । ज्रम । शैदक ज्रम । कहत बहथि  
मितुक पिता श्रीकब मीमांसक यावते बाम गग शैदमोम्त्रम् पव ।  
शैदक अर्थ हय सभ गठि जेत छी । आ जेव ज्रम मुक भ२  
जागत अछि ।



## शेर्द्धमोस्त्रम्

गर्दम गोन भेन डन ।

अणघोन मटि गोन डले । रैनाण धावमे कोला नहाने रैहन टनि  
जा बहन डन । धोरिनाघाष्ट नग कात नागन डन ।

कतेक दुवसँ आएन डन मे ले जानि । कोला रैनागव महिनाक  
नहानि डन । धोरिण नहानिके टहि गोन बहनि । गौआँके कहि  
दे डुधि ओकव नाम आ गता । गौआँ के, ओहि गामक डोमासीक  
रैचनुके । मृतकक घबमे थरैनि भेन गोन डले । एसकले एकठा  
बूढ़ । बहेन ओहि घबमे...मिठु ।

मिठुक ठेनरैना गौआँ सब नहानिके डीहगव आनि लेल डन आ  
अब मिठु ओकव दह-सँकाव कऽ देल बहनि ।



गाममे अही गगक चर्चा बहे । रैचनु रूढ़ाकेँ रूमन डहि किछ  
आब गग । छिहँ डहि ओ ओहि नहनि मखबलकेँ । नरका  
लोककेँ रैहूत बस गग ले रूमन डे ।

आनन्दक नहनि..

-आनन्द रैहूत नीक बहे । रूमनक । ओकर रैचिया सब सभ्ठा  
सुखितगब घबमे डे..रैछी सेहो रिद्वान । मित्र, आनन्दक रब  
सेहो उल्लुछै..श्रीकव गीतसिकक पत्र.. । अदा कहियो मित्र आकि  
आनन्द कोलो खगतामे ककरो आगाँ हाथ ले पसबल डहि ।

रैचनु सेहो आरै रूठ भऽ गेल डहि, मूकठ रूठ । हिनकासँ  
पैघ मात्र मित्र डहिन्ह । लोक सब दुःख गोठेकेँ रूढ़ा कहि  
रैजरे डहि ।

आ एहि रैचनु रूढ़ाकेँ रूमन डहि देब बस गग ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

.....

मिठु आ श्रीकवक रातनिग । किछु बुझिअ आ किछु ले ।

-मिठु । भासतीमे राचस्पति कहे छथि जे अरिआ जीरगव  
आश्रित अछि आ रियस रनि गेन अछि । आमेनाकाकोव नेन  
कोन रिषि श्रीकाव कवरै ? असल कथुक कावण कोना भ२  
सकत ? कोना रौद्रुक सता ओकवा सल कोना रनि देत,  
ब्रिकानमे ओकव उगहिनि कोना सिछ क२ सकत ? जे रौद्रुक  
ले तँ सल अछि आ नहिये असल आ ले अछि एहि दूनुक  
हम्राकण; सेह अछि अनिराछ । रिषा कोना रद्रु आ ओकव त्रान  
बखनिहावक शून्यक अरवाका कोना बुझ२मे आओत ?

-मिठु । क्माविन कहे छथि आयो टैतन जड अछि, जागनमे  
रौष आ सूतनमे रौधवहित ।

-मिठु । भासतीमे राचस्पति कहे छथि जे आमेनाकाकोवसँ  
बहित शोम्नमे क्मोन रात्रि सब-समाजसँ गशुरत बारहाव कलैत  
छथि, नाठी लेत अरैत रात्रिकेँ देखि भागि जाग छथि, घास  
लेत अरैत रात्रिकेँ देखि नग जागत छथि । घाले डबसँ  
घरैइ ग छथि ।



“आमेसोकाकोवसँ बहिन शोम्त्रमे कशेन रात्रि सब-सगजसँ  
पशुरत रारहाव कलेत छथि, नाठी लेत अलेत रात्रिकेँ देखि  
भाषि जाग छथि, घास लेत अलेत रात्रिकेँ देखि नग जागत  
छथि । माल डबसँ घरैड ाग छथि ।” छ गग कृदा सविया क  
बूमरौमे आन बहए हवा ।

....

आमक मास बह ।

राँसव आ रँसगदहा खेत सभकेँ धाँसल अछि आ पावा राविकेँ ।

“सभ्ठा नशि क२ देनकेँ रँचनु । रातिमे तँ नशि सुनै छै ।  
भोले-भोव कनस जा क२ देखै छै । रँसगदहा सभ्ठा हसिन  
था लेनक आरँ छै राँसव आमक पाछाँ लागल अछि ।”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

हमरा बूमन अछि जे आमक मासमे रौनव आ रौनगदहा ओहि  
रौनख एक सँग आएन छलै ।

आमक मास बहे । से मित्र ओगवरोलीमे लागत आबै । आमक  
छिफना पेय भऽ बहन छै । मटान रौनखक बहे मित्रकै ।  
हमरा सँगमे बहिये । रौन काँच कऽ अरैत बही ।

डरबा कात दऽ कऽ अरि बहन छनहुँ । भोवबरो छन ।  
अकाम मर्या नान लेख कलक पिरौडि भेल बूमना छन छन ।

-नीथ दऽ कऽ छन रौन ।

खेतक रौनमे नीथ देल आगाँ रौन भऽ लागनहुँ ।

तखन हम शोणित देखनहुँ । हमर देह शोणित देखि मर्द भऽ  
छन ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रूपा निशिस छोटनहूँ । रूसिक तीक्ष्ण पात एकठा रूसिक लथ  
आ रूहकेँ लाडलेत गेल बहे । गितुक रूसिक लाडाड ओकरा  
नागन बहे ।

गितु हाथसँ रूसि खेकि क२ ओहि रूसिका नग छलि गेल छन ।

लाबाएन आँखि ओहि रूसिक शोणित पोछि गितु ओकर  
लाडावगव मष्टि बगडि देल बहे ।

-की क२ बहन छी ।

-शोणित रूसि भ२ जाएत ।

रूसिका नीखगव आगाँ दोलि गेल छनीह ।

-की नाम छी अरुँक ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

-आनन्द ।

-कोश गायक डी ।

-अली गायक ।

-अली गायक ?

हम दूनु जोड़े सँगे रोजन बली ।

है, आनन्द नाम बहे ओकर । आ गिरुकर पहिन भैँसै रैह बहे ।

...

मटाला रैहा जेन बहए । आनन्द आनन्द हएव ले भैँसै बहए ।





मिठु प्रदेित बहए ।

-कोष ऐनक छी ओ । बहिये मिसवैठेनीक अछि, बहिये  
पडिमाठेनीक आ बहिये ठरुवैठेनीक ।

-डोमानीक बहिये तँ हम टहिये बहिये ।

-तखन कोषा अछि ओ अपन गायक । आ अपन गायक अछि तँ  
आग धरि ठैठै किए ले भेल बहए ओकवास ।

झुदा रिठेमे संयोग भेल छल । मिठुक ऐनमे झुदे भागक  
लैठोक उगमयन बह । रसकष्टी दिस गिहरीरनाकेँ रजुरेने हम  
गायक राहव चर्काव ऐन जल बली ।

-हिक भाग, हिकआ भाग ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

-आले भुवि ।

कोला रोजिकार अरौज अएन बहए । अरौज चिन्हन मन ।

-अहाँ के भु ।

-हम हिकक रौंठी । की काज अछि ?

-पिगरी नर कर एखन धरि अहाँक रारू ले पहुँचन भुवि ।  
रौंजरोन अएन भुवि ।

-तनी गुनियामे लागन भुवि ।

-अहाँक नाम की भु ?



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

तखल छै पबक नतीकै छै छैत ब्रह्म रानिका मोना आनि  
गेनि ।

-हम आनन्दा । हम अहाँकै छै छैत ब्रह्म बनी । अहाँक की नाम  
छी ?

हम तँ मर्द भेल जागत बनी । ह्रदा उतव देखाके छन ।

-रैछु ।

-आ अहाँक संगीक ।

-मित्र, पंडित श्रीकवक रैछी ।

मित्रक पिताक नाम सेहो हम आनन्दाकै रैता देखिछ । प्रभुल  
तँ ले छनि ओ ह्रदा ले जानि किअक कहि देखिछ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

तखल हिकथा पिगली जेल आरि गेल बहनि । हुनका संगे हम  
ठैलनगब आरि गेलहुँ ।

बनुामे हिकथारै पढ़निहि- आनन्दा अहाँक रैथी छथि । ह्रदा  
कहियो देखनिहि छै ।

-मामागाममे रैथी दिस बहे छलै । ह्रदा आरि चेतनगब भऽ  
गेल छै । से गाम नऽ अगल छै ।

-ह्रदामागाम कहियो जएतहि ।

-नम्रि, आरि ओ चेतनगब भऽ गेल अछि । आरि संगे बहत ।

पडितजीक रैथी मित्र, हमर संगी मित्र, ओ गगन स्त्रि की  
लेखैक ओकरा मोनगब । कैक दिससँ ओकर पढ़ावी कऽ बहन  
छन । हम सोचल बही जे भेल मामागाम छनि जए आनन्दा आ  
कलक दिसमे मित्रक पढ़ावीसँ हम राँटि जएँ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

झुदा आरै तँ आनन्दा गामेमे बहत आ पडित श्रीकवक रैषी  
मिहू..

धुव..हमरी उगुठा-धुवठा मोटि जेल डी । उहिना दु-टारि रैव  
मिहू आनन्दाक गियामे पडिबी केल अछि । तकव माले आ  
पोडरैक भेलै जे..

झुदा जे सह भेलै तखन ? ..

पडितक रैषी आ चर्कावक रैषी..

पडित श्रीकव माणताह ? ..गौआँ घरआ माणत ?

धुव । जेव हमा उगुठा-धुवठा मोटि बहन डी । पिगरी राज्ज  
मागन बहए आ नीखणव देल हमा आ मिहू, भवि ठेनक  
म्लीगण-धुवक संगे रँसिझी पहुँचि गेल बही । बस्तामे उहि  
सुनकेँ अकालेल बही । मिहू आ आनन्दाक पहिन मिनक सुनकेँ-  
कोला अराज मागन अरैत..मात्र संगीत..सुब ली ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चंस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

रैकआ रैस सतपव थप्पा द२ देल बहे आ सत रैस कठनाग  
शुक क२ देल बहथि। मडरैष्टी आगये छै। घामे-पसील  
भेल कलक मोन तोषित भेल। कसपव रैस जेल हम आ  
मिठू ओही वस्तु रिदा भेल बही..ओही नीथ देल।

...

झुदा मिठू हमरा सदिखन ठेकावा देमए आगन। कावा कोला  
काज हम एतेक देवीसँ नमिः जेल बहिँ। ओ हमर बाग बहए  
आ हम ओकव हनुमान।

माटापव एहिना एक दिन हम मिठूकेँ कहि देनिँ-

-मिठू, रिसवि जे ओकवा। कथा जेल रैदनामी कबहिँ ओकव।  
हिकआक रैष्टी छिँ आनन्दा। ओना तोहब नाम हमरासँ ओ  
पुछनक तँ हम तोहब नाम आ तोहब पिताजीक नाम सेहो कहि  
देनिँ।

-हमर पिताजीक नाम ओ पुछल बहो ?



-ले प्रभुले बरुए । झुदा..

-तखण किए कहनही ?

-आग ले कहि तँ गता आगरे कबते..

-झरिया नगिटे तहिया नगिटे..आर ओ हमबामँ कष्टत..हमब  
मेहनति तँ रैठ । देरौ..

-कोन मेहनति । तँ गडित श्रीकबक रैठे आ ओ हिरा  
चर्माबक रैठे । कथीले रैदनामी कबरिही ओकब ।

-रियाह कबरे रौ । रैदनामी किए कबरै ।

-ककवा ठके छिही ?



-ककरो ले लो ।

एहिना अणछोरुमे निर्णय लेत छन मित्र । श्रीकब मीमांसकक लेख  
मित्र लेखनिक । ओकरा घबमे तानपत्र सत पसबन बहेत  
देखल छनि । से तबोस ले भ२ बहन छन ।

-गाममे कहियो देखनि ले ओकरा ।

-तुँ गाममे बहलै कहियो । थकज्जीक पाठशाला पौकलै त  
आएन छै ।

-झुदा तूही कोन देखल बही ।

-माया गाम बहे छन ओ ।

-जेब माया गाम घुबि क२ तू ले छनि जखत ।





-ले, से थुँडि जेनिह । आरि गामेमे बहत ।

सौकरकाँ गामेमे मित्रक माएक देहासु भ२ गेन डनहि ।

श्रीकव मीमांसक सेहो खँरैताह सन भ२ गेन डनि- आ गग  
हूँकव छैनरैया सत करैत डन । तानगत सतक परिवर्तन  
कोना छत एहि मिह बासिमे ? येह छिन्ना बहहि श्रीकवक, आ  
तै ओ खँरैताह सन कवए नागन बहनि.. आहो गग हूँकव  
छैनरैया सत करैत डन ।

...

हिर्व..हिर्व... हिर्व....

डोसासिँ सुगवक पाहुँ हम आ मित्र हिर्व-हिर्व करैत चर्काव  
छैन पहुँचि जाग डी । आनन्दा रुदा सोसाँमे भेटै गेलीह ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

सुखब सगे हम आगाँ रति जाग छी । घूमे छी तँ आबदा आ  
मिठुक गग सुलेजे कास पाबै छी ।

हिर्ब..हिर्ब

एहि रौब आबदा हिर्ब कहैत अछि आ हम झुका दैत सुगबक  
आगाँ रति जाग छी ।

झा घुँसा कैक रौब भेल आ झा गग सगले पसबि गेल । हिक  
कतक रौब हमरा नग आधन बहथि ।

हीक उद्वलित बहथि नागन बहथि । हीकक पत्नी रौप्यक भाग्यक  
जेन जोहारि कबहू नगनीह ।

कए कोस माँ मदिनरा

कए कोस ब्रह्मसरी मदिनरा



कए कोस गडन दोहाग

कनी तकरो हे गाग

कए कोस गडन दोहाग

कनी तकरो हे गाग

दूग कोस मदिनरौ

टावि कोस ब्रह्मरौ मदिनरौ

पाँटे कोस गडन दोहाग

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

कशी तकरो हे माग

पाँटे कोस गडन दोहाग

कोश खुन माँ मदिनरौ

कोश खुन रौन्दी मदिनरौ

कोश खुन पब गडन दोहाग

कशी तकरो हे माग

कोश खुन पब गडन दोहाग



कनी तकरो हे गाग

एनी हुन माँ मदिनरौ

रोनी हुन ब्रह्मसरी मदिनरौ

गोन्द हुन पडन दोहाग

कनी तकरो हे गाग

गोन्द हुन पडन दोहाग

कनी तकरो हे गाग



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

हिक जोगानी आरैए लागल बहथि ।

-की हेते, कोणा हेते ।

-मृष्ट..

हम गङ्गानिहि जे हम हिक संगे श्रीकव पंडित नग जाएँ ।

आ हम हिककेँ श्रीकव मीमांसक नग न२ गेल बहथिहि । श्रीकवक पणैक मृतु गत रैबथक सिंह बाणिक रौद भ२ गेल डुबहि । आ तकर रौद हिक मीमांसक खैरताह भ२ गेल छथि- लोक कहैत डुबहि । लोक के ? रैह छैलैरैया म२ । गामक लोक, परोपञ्चाक रिद्धान लोक म२ तँ रैष्ट्र गङ्गात दै डुबहि हुँका । आँखिक देखल ग२ कहै छी..



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

“आँउ रौचु । हिक, आँउ रौचु.. । ”- गुन्या भऽ जागत छथि  
श्रीकव । पनौक मूक रौद एहिना, बहेत बहथि, बहेत बहथि  
आकि गुन्या भऽ जागत बहथि ।

“कक्का, आँगन स्रम बहेत अछि । कतेक दिन एना बहत ।  
मिठूक रियाह किए ले कवा दै छियहि” ?

“मिठू तँ रियाह ठीक कऽ जेल छथि” ।

“कतऽ ? ” -हम घरँड १गत थँडे छियहि । हिक हमरा दिस  
निश्चित भारमँ देखे छथि ।

“आनन्दमँ, समझि हिक तँ अहाँक संग आएन छथिये । ”

हम ले श्रीकव पंडित ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरित्राङ्क ISSN 2229-

547X VIDEHA

आ रौह ले गितु । पहिनेहिये रांगकेँ गठिया जेन डन । ह्रदा  
रांगपव जागत कोला ठेनरैयाक काण एहि गणकेँ अकानि जेन  
डन ।

हम सब रैसले बली आकि ओ किछु आव गोठेकेँ नर कर  
दगापव जूनि गेन डन । श्रीकव गीमांसकसँ हुनकव सबक  
मोक्षार्थ श्रुत भेल । मोक्षक काष्ठ मोक्षसँ ।

“श्रीकव, अहाँ कोन कोष्टक अधम काज कर बहन डी” ।

“कोन अधम काज” ।

“छोठ-पौघक कोला रिटाव ले बहन अहाँकेँ गीमांसक ? ”

“रिद्वान् जन । ओ छोठ-पौघ की छि ? मात्र मोक्ष । एहि  
मोक्षकेँ सुननाक पश्चात् ओकव मोक्षार्थ अहाँक साथमे एक रा  
दोसब तबहँ दुकि गेन अछि । पद रैना कर ओहिमे अपन स्वार्थ  
मिगनव कर...” ।





“माले छोट-पेघ अछि नैदार्थ मात्र । आ तकब रिहिया जे गद  
रैना क२ केनहुँ से भ२ गेल स्वार्थपवक” ।

“रिहियल ले लेख तँ ओहि पदमे सँ स्वार्थक समर्पण क२ कए  
देखु । सब भ्रम भागि जाएत” ।

“माले अहाँ गिनु आ आनन्दक रियाह कलेबाले अडिग छी” ।

“रिहियल जन । बस्तीकेँ माँग हम अली द्वारा बूने छी जे दुनुक  
पृथक अस्तित्व छै । अर्थि योकाटा क२ दुष्टा छन्दमा देखे छी तँ  
तथाला अकालिक दुष्टा रात्रिक भागमे छन्दमाकेँ प्रयोजित  
कले छी । भ्रमक कावण रियल ले समझा छै, ओना उद्धष्ट आ  
रिहियल दुनु सब छै । आ एतए सब रियलक ज्ञान सेहो आयेक  
ज्ञान ले द२ सकैए । आयेक रिहायस अहंरति- अगल रियलक  
तथक रोध एहिसेँ होगत अछि । आयो ज्ञानक कर्ता आ कर्म  
दुनु अछि । पदार्थक अर्थ समझासँ भेटैत अछि । नैद, स्वभावक  
बाद ओकव अर्थ अनुमानसँ नग होगत अछि” ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

“अहाँ शिद्दिक भ्रम उँपेल क२ बहन छी । हम सब एहिमे गिहू  
आ आनन्दक रियाहक अहाँक गछा देखै छी” ।

“संकल्प भेल गछा आ तकर पुर्ति ले हो से भेल छय” ।

“तँ आ हम सब छयने कहि बहन छी । अहाँक नजरिमे  
जातिक कोला महल ले ? ”

“देखू, आनन्द सँसृष्टसम्पन्न छथि आ हुनकर आ हमर एक जाति  
अछि आ से अछि अखरुत आ सँसृष्ट प्रत्यक्ष । ओ हमर  
धरोहरक वक्ता क२ सकतह, से हमर रियास अछि । आ आ  
हमर निर्णय अछि” ।

“आ आ हमर निर्णय अछि ।”- आ शिद्द, हमर आ हिकक कारणे  
एक रौब ले पौसन बहए । हम तँ श्रीकव आ गिहूकेँ टिहैत  
बहियहि, एहिना अखरोक निर्णय सुनराक अस्थानी भ२ गेल बनी ।  
हुदा हिक कलक कानक रौद एहि शिद्द, सबक प्रतिध्वनि सुनयहि  
जेना । हुनकर अछिन्त नजरि हमरा दिस घुमि गेल छयहि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

हरेब श्रीकव मीमांसक ओहि शोम्भार्थी सभमेसँ एक ज्योतिषी दिस  
आगुव देखलै छथि-

“ज्योतिषीजी, अहाँ एकठा नीक दिस तबू । अही शुद्धमे ज  
पारव बिराह सम्पन्न भऽ जाए । सिह बाणि आबैरैना छै, ओहिसँ  
पूरि । किनको कोना आगति ? ”

सभ मथ मुका ठाठ भऽ जाग छथि । श्रीकव मीमांसक  
बिबोधमे के ठाठ लेखत ?

“हम सभ तँ अहाँकेँ बुझबै जेन आबन छनहूँ । झुदा जखन  
अहाँ निर्णय लेये जेन छी तखन... । ”

मीमांसकजीक हाथ उठै छहि आ सभ हरेब शोभु भऽ जाग  
छथि ।

हम आ नीक सेहो ओतएँ बिदा भऽ जाग छी ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

हीन निमसि जेन बहनि, से हम अश्वतर केन बनी ।

...

अ ले जे कोना आव राधा ले आएन ।

रूपा ओ खँसताह रिदास तँ डले । से आनन्द हूकब पतौह  
रैनि गोदीह । आ हूक डखन पाणि हमर ठेन आकि गितुक  
ठेन मात्र ले सौँसे परागपंथाक रिदासक रीचमे चनए नागन ।

.....

आनन्दक लेहवमे रिराह सम्पन्न भेल डल । ओतुका गीतनाद हम  
स्वर्गल बनी, उन्मासपूर्ण, एथला मोन अडि-

परित डुपव भमरा जे सुतन,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

मानिस लेठी सुतन फुनरायि हे

ऊँरु मानिस बाखु गिबिमान हार हे

परित ऊँपर भमरा जे सुतन,

मानिस लेठी सुतन फुनरायि हे

ऊँरु मानिस बाखु गिबिमान हार हे

कोन फुन ओठरि ब्रह्मसयि के

कोन फुन पहिबल

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

कोन हुन रौखिके सिंगार हे

ऊँचु माजिन बाखु गिबिमान हार हे

रौली हुन ओठरौ रौन्दी

टमेली हुन पहिबन

अबहुन हुन ब्रकेसवि के सिंगार हे

ऊँचु माजिन पाँखु गिबिमान हार हे



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

उर्ध्व माथिली गौर्ध्व बिदेह बिदेह

....

श्रीकव मीमांसक आनन्दार्के तानपत्र सभक परिवर्द्धनक भाव द२  
निश्चित भ२ जेन बहथि । पञ्चम मूलक रौद्र रौद्रले आनन्दार्के  
बहथि ।

दैनिक चरित्र, आनन्दार्के जेना ओहि तानपत्र सभक परिवर्द्धन  
जेन आनन्दार्के बहथि हुनकव घब । अनन्दार्के..

मि० कहि देनक हमरा जे कोणा ओ श्रीकव पत्रिके पठिया  
जेन बहथि । अनन्दार्के रौद्र सवाग कठेवा आ माथिली महान्द  
रौद्रले बहथि आ तानपत्र सभमे घुन नागि जाएत..

ले घुन नागि देथि तानपत्र सभमे, आनन्दार्के आनन्दार्के एहि घब ।  
श्रीकव मीमांसक निर्णय क२ जेन बहथि ।

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मिठु तै जेना ज़रिष भवि अणन जेन एहि निर्णयक प्रति प्रतठ  
डुनीह ।

श्रीकवक आग्र जेना रैठि जेन डुनीह । श्रीकव आ आनन्दक मया  
गण होगते बहे डुन ओहि घबसे ।

आनन्दा रैजिते बहे डुनीह आ गरिते बहे डुनीह ।

रावहे रैबिस ज़रै रीतन तेवहम छठि जेन हे

रावहे रैबिस ज़रै रीतन तेवह छहवि जेन हे

ननना मान्नु मोवा कहथिन् रैघिमियाँ



ৰঙিনিয়া ঘৰমে নিকানৰ হে

ଜଜ୍ଜନା ମାନ୍ସ ଯୋବା କହନ୍ତି ରଞ୍ଜିନିଆଁ

ৰঙিনিয়াঁ ঘৰমে নিকানৰ হে

ଅଁଗନା ଜେ ରାହବ ତୋହି ଛନ୍ଦାଧିନ ବିନିଆଁ ଗେ

ଜଗନା ଗେ ଆମି ଦିୟୌ ଆକ ଧନ୍ଧୁବ ହବ ମୀମି ତମ ମୀୟର ବେ

[illegible]

ରୂପ ସେ ଶ୍ରୀମତୀ ରାଜ୍ୟମ ପରମ ଚନ୍ଦ୍ର ରୂପେ



रौब मे आउन रौबुम पनग छठि रौसन ले

ननषा ले कहि दियौ दिन केव रौत की तरै माहुव पीयरै ले

ननषा ले कहि दियौ दिन केव रौत की तरै माहुव पीयरै ले

रौबह हे रौबिस जुरै रौतन तेवह छहवि गोन ले

ननषा ले मासु मोवा कहयिष रौबिसियाँ

रौबिसिया घबसे निकानरै ले



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

मांस्र मोवा मावथि अणुप धय ननदो ठुक्क धय ले

मांस्र मोवा मावथि अणुप धय ननदो ठुक्क धय ले

ननना ले गोष्ठला थुशी घब जाउन सभ धन हमारे हेते हे

ननना ले गोष्ठल२ थुशी घब जाउन सभ धन हमारे हेते हे

टुप बछ, टुप बछ धनी की तौही मरधनी छिअ हे

टुप बछ, टुप बछ धनी की तौही मरधनी छिअ हे

धनी हे कवरौ हे तुमसी के जाग, की धन सभ ठुठा देरौ२ हे



ननना हे कवरौ मे पौथवि के जाग, की मभ धन कृषीएँ हे

श्रीकव मीमांसक हँसी कवयिनि- आनन्दा, अहाँकेँ तँ मास्र अछि ले,  
तथन ओ रेंटावी अहाँकेँ रँघिनियाँ कोना कहतीह ?

-तैँ ल गलैँ डी, मभ टीज तँ भवन-गुवन कृदा.. ।

आँथि लोवा गेल डनहि आनन्दाक । हमरा अथला मोल अछि ।

-हम अहाँकेँ दुःख देनहूँ ओ गग कहि क२ ।

-कोन दुःख ? मास्र लेँ डथि तँ मस्रव तँ डथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

श्रीकवर्क प्रसन्न देखि मित्रक आमेलोय होगछ ।

.....

आ श्रीकवर्क मीमांसकक मूलक रौदो आनन्दो तानपत्र सतमे जान  
शुकैत बहैत छनीह ।

होव मित्रक दुष्टी रौष्टी भेलहि रसभा आ मेवा ।

आनन्दक खुशी हम देखल छी । लेख गेल बहयि ओ । ओतहि  
दुष्टु जौआ रौष्टी भेल छनीह-

नाम पवी हे प्रचार पवी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मान पवी हे गुनार पवी

हे गगनपव नाटत ओद पवी

हे गुनारपव नाटत ओद पवी

आ हव भेलहि रैथी । पौव भेलापव रैथी मेघके पठरा जेन  
रैनावस पठेले बहनि मि ।

आ दिन रिठैत जेन, रैथी मभ पौव भेलहि आ दुनु रैथी,  
मेधा आ रत्नताक रियाह दास क२ निश्चित भ२ जेन दुनाह  
मि ।

रैथीक पवरविशे आ रियाह दास सेहो केनहि । मेघ रैनावसमे  
पाठन करए नगनाह । मेघ, मेधा आ रत्नता तीनु गोठे मानमे  
एक मान आरैथि धवि अरु ।



लोक रिमरि गेल मावते बास गग मत्त ।

।।

भासती प्रसन्नम्

आनन्द मित्रक पिताजीक एहि तानत्र सतक परिवर्द्धन  
मलायोगसँ क२ बहन छथि । कडगर बौद, मित्रकैँ ओहिना  
मोन छहि ।

मित्र संग जिनगी रीति गेलहि आनन्दक । आ आरि जखन ओ ले  
छथि तखन मित्रक जिरणक परिवर्द्धन कोना होएत । .. मित्र  
प्ररदनक रीटमे कतहूँ उँसिया जाग छथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

प्ररचन चलि बहन अछि । मित्र गकड पुवाँ ले सुनताह । मित्र  
मडनक अँलसिह सि सुनताह, राट्पतिक भामती सुनताह, जे  
सुनरौ कबताह तँ । जँ रँथी सतक जिद दुहिये तँ आये  
रियगपव अमाविक दर्शन सुनताह । आ सँ प्ररचन चलि बहन  
अछि ।

भ्रम । शैलक भ्रम । कहत बहनि श्रीकव मावते बाम गग  
शैलशाम्रम् गव । भामती प्रश्राम् गव । शैलक अर्थ हम गति  
लेत छी । आ हँव भ्रम गुरु भ२ जागत अछि ।

-गुरुजी । हम गुरुक मूलक बाद गोव निवासिमे छी । की छि  
अ जीरन । कतए हँवत आनन्द ।

- मित्र । धीवज बाधु । अँलसिहिक हमर अ पाठ अहाँक सत  
भ्रमक निरावण कबत । अँलसिहिमे टाबि काल्ड छै । अँल, तर्क,  
नियोग आ सिहि काल्ड । अँलकाल्डमे अँलक कपगव,  
तर्ककाल्डमे प्रमाणगव, नियोगकाल्डमे जीरक अँलसिहिक आ  
सिहिकाल्डमे उगमिदक राक्यक प्रमाणगव रिरेचन अछि ।

- मित्र । अँलसिहिक गुरुक कोला रौद्र ले अछि । अँलसिहिक  
सुग कोला लेन । माणरक अँलसिहिक कतए उगमिदक मडन ले  
केल छथि । कर्मक मडन ओ रँथेत छथि । अँलसिहिक तँ





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

झुजि ले भैठैत । झुजि-मैदक कपामे अर्थ दैत मंडन  
देखनहि । से शैकबसँ ओ एहि अर्थे तिन छुथि जे एहि झुजि  
तादामे ओ रैतत छुथि झुदा शैकब जैहसँ कम कोना तादामे  
ले माले छुथि । से मंडन शैकबसँ रैनी शुद्ध अद्वैतरादी  
भेनाह ।

-मि । मंडन झुजता आ अझुजताक एक मंग भेनागळे रिवोधी  
तन्न ले माले छुथि । ओ कथना अर्थझुजताक भेद कोगत  
अझि, झुदा ओ भेद मूल तन्न कोना भेद कोन । से ओ अझ  
सत भेदमे बहनागव सत काज कइ सकैत ।

-देखु । राट्पतिक भामती प्रस्तावक रिचाव मंडन मित्रिक  
रिचावसँ मेन आगत अझि । मंडन मित्रिक अझमिझिगव राट्पति  
तन्नमीका निखल छुथि । ओना तन्नमीका आरंभ उपादे ले छै ।

-तथन तन्न समीकाक चर्चा कोना आगत ।

-राट्पतिक भामतीमे एकव चर्चा छै ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीपिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

-झुदा मंडनक रिटाव जागरासँ पुरि हमबा मोनमे आरि बहन  
अडि जे जखन ओ शैकवाचार्यसँ हारि गेलाह तखन हुनकर हाव  
सिंहानुक्त पावासासँ हमबा मोनकेँ कोना शांति भेटैत ।

-देखियौ, मंडन हारि गेल छलाह तकर प्रमाण मंडनक लेखनीमे  
ले अडि । मंडन स्फाटैरादक समर्थक बहथि, झुदा शैकवाचार्य  
स्फाटैरादक खण्डन करैत छथि । मंडन कमालिन भुष्टक रिपवीत  
ध्यातिक समर्थक बहथि, झुदा शैकवाचार्यक जाहि शिया  
सुलेखवाचार्यकेँ लोक मंडन मित्रि बुनै छथि ओ एकब खण्डन करै  
छथि ।

-से तँ ठीके । मंडन हारि गेल बहथि तँ हुनकर दर्शन  
शैकवाचार्यक अग्रकषा कबितहि ।

-आर कहु जे जाहि सुलेखवाचार्यकेँ शैकवाचार्य त्रुंगेरी मठक  
मठाधीने बैसनहि से अरिद्याक दु तबहक हेराक रिबोधी छथि  
झुदा मंडन अपन ग्रन्थ अँरुसिद्धिमे अग्रहण आ अग्रथाग्रहण नामसँ  
अरिद्याक दुष्टा कष कहल छथि । मंडन जीरकेँ अरिद्याक अग्रिग  
आ अँरुकेँ अरिद्याक रिषय कह छथि झुदा सुलेखवाचार्य से ले  
माले छथि । शैकवाचार्यक रिटावक मंडन रिबोधी छथि झुदा  
सुलेखवाचार्य हुनकर मतक समर्थनमे छथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

.....

रौनव आ रौनगदहा खेत सभकेँ धांगल अछि आ गावा रौवीकेँ ।  
आरौ हमवा दुआरे गामक लोक महीस पोसलाग तँ ले छोड़ि  
देत । रौनव आ रौनगदहा रौष्ट लोकमान क२ बहन अछि ।

“छाबिछा रौनव कनगमे अछि । ध२ क२ आम सभकेँ दकडि  
देमक । हम गेल बही । साँस भ२ गेल तँ आरौ सभछा रौनव  
गाढक छिप्पी ध२ लेल अछि । साँस धरि दू रौनवत कनग  
उगबल बही, सभछा मारि भगेलहुँ, हृदा तखन अहाँक कनग दिस  
छलि गेल” । - हम गिऊकेँ हम कह छियहि ।

“सभछा नाश क२ देमकेँ रौचनु । बातिमे तँ नष्टि सुनै छै ।  
भोले-भोले कनग जा क२ देखे छै । रौनगदहा सभछा हंसि  
आ लेमक आरौ आ रौनव आमक पाछाँ लागल अछि । कब२ दियौ  
जखन...” ।

“रौनगदहा सभ तँ साफ क२ उगष्टि गेल छलै । ले जागि हेल  
कत२ सँ आरौ गेल छै । गजपछल गाममे जाग भेल छलै,  
उरुलेसँ बाता-बाती धाव छपा दै गेल छै” ।



“मे ले दे । ओ रैगदहा मभ धावमे भसिया क२ लगान  
दिसलसँ आएल दे । आर२ दियो जखन...” ।

“हम रौनव मभ दिया कहल बही” ।

“मे तेते” ।

“तेते भागज, तखन जाग जी” । हमरा बुझल अछि जे आमक  
माममे रौनव आ रैगदहा ओहि रैवथ एक्क सँग निगता भ२ गेल  
बहे जाहि रैवथ आनन्दा आ मितुक तेँठे भेल बहे । आ  
आनन्दाक गेलाक बाद रौनव आ रैगदहा ले जानि कत२ सँ  
होब आरि गेल दे, आनन्दाक मृतक पदलो दिह ले रीतल  
दे...

.....



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रौतनु गोनह आ मित्रक कपावगव चिन्ताक मोष्ट ककछी लेख  
हुंगव नीचाँ होमए नगनहि, हिनकोवक तबंग सन, एक दोसरागव  
आछादित होगत, पुवान तबंग नर रौलेत आ रौलेत जागत ।  
अगनामे मोव करै छथि । “रूँटी, रूँटिया । जयकव आ रिश्नाथ  
आग गाछी गोन बहए । आरि गोन अछि ल दुनु गोड़ए ।  
सुननिअ ले जे रौनव सतक उगदर भऽ गोन छै । कहिसँ ले  
जाग जागत गाछी, से कहि दियो । आग रौनव सत कनय  
आएन छन, से कहरो ले केनहूँ । कहिये कऽ की होएत  
जखन...” ।

“कहि तँ बहन छनहूँ रौरूजी झुदा अहाँ तँ अगल धूममे बहै छी,  
रौजेत झूठ दुखा गोन तँ दुग बहै गोनहूँ” ।

हँ, धूममे तँ छथिये मित्र । आ आम मेहो आनन्दक मूलक रौद  
पकनाग शुक भऽ गोन अछि । आ एतेक दिवसका रौद फेब आ  
रौनव आ रौनगदहा कोन गग मोन पावरो जेन फेबसँ जूझि  
आएन अछि ।

...



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जयकबक माए रम्यता आ मिथिलाथक माए मेधा । दुनु रैलीष  
कतेक दिनपर आएन छथि लेहव । कतेक दिनपर भेटै भेल  
छथि एक दोसरसँ । आनन्दक दुनु रैलीष आ दुनु जमाए आएन  
छथि । रम्यताक गति मिथिला आ मेधाक गति काह । मेघ अणन  
गली आ रैता सतक संगे आएन छथि ।

मिठु गलीकेँ आनन्द कहि रैजा बहन छथि । खेब मोन पटै  
छथि जे ओ आर कतुं भेटैतीह । खेब कतुं छी रम्यता,  
कतुं छी मेधा, जयकब आ मिथिलाथ कतए छथि..सोब कबए  
नाली छथि ।

रम्यता आ मेधा अरै छथि आ मिठु गीत गरै नाली छथि ।  
आनन्दक गीत । आनन्द जे गरै छनीह रम्यता आ मेधा जेन-

नान गरी हे गुनारै गरी

नान गरी हे गुनारै गरी

हे गगनपर नाचत गुरु गरी



हे गुनारिपव नाटत अद्द पवी

बकतमाना दुश्वावपव निवधन खडी

हे बकतमाना दुश्वावपव निवधन खडी

माँ हे निवधनकेँ धन येँ देल पवी

माँ हे निवधनकेँ धन जेँ देल पवी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

मान पवी हे गुनार पवी

माँ हे बकतमाना दुश्चावपव अक्खा खाडी

माँ हे अक्खाकेँ नयन दियौ जगदी

माँ हे अक्खाकेँ नयन दियौ जगदी

राग आ दुनु रैषी तोकव पाडए नछी डधि ।

...

-मिती । आनन्दक मूँ अहाँ जेन रिगदा रँमि आएन अछि । अहाँ  
जौनो जातिक आ आनन्दक चर्किमिणी । अहाँ दुनु जोठेक धेम





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

अतुलनीय । हुनकब मूँ जेन दुःखी ले होई । ईँ रीषा दुःखक  
छथि । ईँक भारकषा आनन्द छथि । से आनन्दा जेन अहाँक  
दुःखी होएँ अवृत्त । ईँ दृष्टा छथि । दृष्ट तँ परिचित  
होगत बहै, ओहिँ दृष्टाकेँ कोन सवोकाव । ओ जगत-प्रपंच  
मात्र भ्रम ले अछि, एकव रारहाविक सत्ता तँ छै । ह्रदा ओ  
रारहाविक सत्ता सब ले अछि ।

-मिर्तु । चेतन आ अचेतनक रीट अन्तुव छै ह्रदा से सब ले  
छै । जीरक कएकषा प्रकार छै, आ अरिद्याक सेहो कएकषा  
प्रकार छै । अरिद्या एकषा दोष जेन ह्रदा तकव अश्रिय ईँ  
कोना होएत, पूर्ण जीर कोना होएत । ओकव अश्रिय होएत  
एकषा अपूर्ण जीर । अरिद्या तखन सब ले अछि ह्रदा खुँ असब  
सेहो ले अछि ।

-मिर्तु । एहि अरिद्याकेँ दुब कक आ तकले मोक्ष कहन जागत  
अछि । रीह मोक्ष जे आनन्दा प्राप्त केल छथि ।

आ मिर्तुक ह्रदगव जेना शान्ति पसरि जाग छथि ।

.....



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मिठु जेना तेँठे कवरौ जेन जा बहन छथि ।

मोष पडि जाग छहि आनन्दा मग प्रेमावाग ।

-आनन्दा । अहाँसँ गप करैत-करैत हमरा कनीछा डब मोषमे  
आरि गेल अछि । पिताक सभसँ प्रमाण कमजोरी छहि हुनकब  
तानपत्र सभक परिवर्द्धन । से अ सभ मोष बाथ । पिता जे  
पुछतह जे तान पत्रक परिवर्द्धन कोना होएत तेँ कहैहि-  
पुस्तककेँ जमसँ तेनसँ आ खुन रक्कससँ रैछा क२ । डारिमे  
सुखा क२ । ३.००-३.०० पातक पोथी सभ । हम कोना दिन  
देखा देरौ । एक पात एक हाथ नाम आ चारि आंग्रव चाकव  
होए छै । डुंगर आ नीचाँ काँठक गता नागन बहे छै । राम  
भागमे छिद्र क२ स्वतवीसँ राखन बहे छै ।

-पिता मागतह ।

-ले मागतह किएक । जेनाक रैछीसँ रियाह कवारैक ओकाति  
छहि ? हम एक गोठेकेँ दुँ ठोका रैछा देल बहिये खेतिलव  
जमीन किनरी जेन । अन्दा पिता जा क२ रैछा घुवा आनन्दि ।  
एक-एक दुँ-दुँ ठोका जमा क२ बहन छथि । १०० ठोका  
नडकीरैनाकेँ देतह तखन रैछीक रिराह हेतहि आ पाँजि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

रैवतहि । आ मे लौकिकी अउतहि तँ तानपत्रक बरका  
कवतहि ?

मिठुक माएक मूढक रौद श्रीकव खँरैतारु भ२ गेन भुनारु ।  
छैनरैग्या सभ कहै छथि ।

आ हएव रौमावी अएलै, हग । गामक दूरी छैन उगटिये गेन,  
मिसवछेनी आ पछिमाछेनी । परोपष्टाक रँहूत बस गाममे कतेक  
लोक हगन मे ले जाति ।

मिठु पिताकेँ आनन्दसँ भैँछै कवा देनथिन्ह । श्रीकव तानपत्र  
परिवर्तक उगनसँ परिपूर्ण आनन्दमे ले जाति की देखि  
जेनहि ।

मिठु जूति गेन । लैग्यामिक मिठु मीमांसक श्रीकवसँ जूति गेन  
आ मीमांसक श्रीकव अगन छैनरैग्या सभकेँ पवाजित क२  
देनहि ।

आ आनन्दा आ मिठुक विराह सम्पन्न भेल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

मोष पडि जाग छहि आनन्द सग प्रेमावाप । मित्र जेना छैछ  
कबरा जेन जा बहन छथि । आनन्दक मूत्र भऽ गेल अछि ।  
रैनाममे पएव पिछडि गेलहि आनन्दक । ओहिना पिछडि  
छिहानी देखैनामे आरि बहन अछि ।

मित्र ओहि छिहानीकेँ देखै छथि आ हुनकर मोष हुनसि जाग  
छहि, पिछडि जाग छथि भारणाक हिनकोबमे..

आनन्द आ मित्रक एक दोसबान् छैछ-घाँट रैठना नागन डल,  
थेत, कलम-गाँडी, टोरी आ धावक कातक एहि सुनपर । आ  
दू गोठे पिछडि डलल, थेतमे, कलम-गाँडीमे, टोरीमे आ  
धावक कातमे सेहो ।

धावमे हाँसैत लै डलल मित्र । यएन ठगना पिछडि सुन जे  
आग-कालिक छैछ । सत रैलल अछि, से मित्रक रैनाम  
अछि । एहिपर मोष बोसैत डलल आ सुबसँ मित्र धावमे पागि  
कछैत आगाँ रैछि जागत डलल ।

“हे, कल लै पिछडि कऽ तँ देखा ।”



“मे कोन रँडका गग भेलै । ”

“देखा तखन ल रूमरै । ”

आषन्दा अहिबसँ आगाँ रँडरौक प्रियाम कबथि दूदा..हे..हे..हे..

ले बोकि सकनथि ओ अगनारै, नहिये खेतमे, नहिये कलम-  
गाडीमे, नहिये टोबीमे आ नहिये एहि धावक कातमे..

आ की कब आएन होएतीह आषन्दा एतए..जे पिछिडि गेलीह आ  
डूमि गेलीह..

कोला सृतिरै मोन गडरौ जन आएन होएतीह..

-

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

हैं आनन्दा आनन अछि रचन। देखियौ आ गीत स्रबु-

घब पडरवराँमे अबहुन हुन गडिया हे

मने-मुने ब्रूषन गाड हे

उतरे बाजसए सुगा एक आउन

लैसन सुगा अबहुन हुन गाड हे

ହବରୌ ଲେ ଖାଗ ଡ଼େ ସ୍ବଗରୌ, ହୁଗହୌ ଲେ ଖାଗ ଡ଼େ ହେ

ডাঙি-পাতি কেনক কচুণ হে

ফুলরৌ লে খাগ ড় স্বগরৌ, ফবহু লে খাগ ড় হে

ডাঙি-পাতি কেনক কচুণ হে

যব পঙ্করবরীমে রঁসি সব নতিশ্রী হে

ବୈଷମ୍ୟ ସୁଗା ଦିଅନ୍ତୁ ତେ ରମ୍ୟାଂଗ ହେ

## একসব জোড়ন সোণবিয়া

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

दुगसब जोडन हे

तेसब सब सुगा उँडि जाग हे

सुगरौ ल छिँ भगतिया

तिठिरो ल छिँ

येहो छिँ गोवैया के राहास हे

-भाग अहाँ गीत ले सुनि गारि बहन डी की ?





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

-भाग स्वर्णि बहन छी । देखियो बहन छी । आनन्दो भौजो  
छथि ।

जहिया ओ जगत छनीह तहियो स्वर्ण बनी- रएह बहथि- गालो  
बहथि-

ब्रह्मसूरी अँगना टागन घन गडिया

तहि तब कोगनी घन्टाघन हे

-मैह, भ्रम ले छन ओ ।

माँह-मोस आ मल्लबाया पुजाक बाद अगिले दिसक गग अछि ।  
ले टागन गाछ कठेल बहथि आ ले अँगना लेठेल बहथि  
आनन्दो ।



दोसर दिन ठहि छावण गाढक बीटाँ चर्कावठेनमे गौश्रॉ सत  
दुषु गोठेक नहनि देखनहि । आ गौश्रॉ शेर, गगनमे पसरि  
गेन, सौंसै गौश्रॉ स्वजनक- आनन्दक अरौजमे-

जाहे रौष जेरै२ कोगनी कनमसु रौनम

बहि जेत२ बकतमाना के निशान हे

शेर, त्रुम ले डन ओ ।

(आ कथा “शिष्टशिक्षण” श्री उमेशि मंडन गाम-रौबसा जेल । )



२

दिग्ग

१

गोमठगोमठ कएन मेरीव माउठा गोमठका शिखर, जडत  
कनीकानये । गोमठगोमठ आनि जे अवनहिहै स्वप्नजी बाधि  
देनहि नीचा ।

कनकनागत पानिये डूम द२ गोमठगोमठ आनि आनि न२ मेरीवकेँ  
गति- सङ्गति देरौ जेन । आ क२ देनहि अन्तिकेँ समर्पित ।  
हृष, काठ आ घृत ।

घृषि गेना सत । जोह, पाथव, आनि आ जन नाधि, डुरि, डेत  
मासक रैचार्केँ कोबामे जेन डलि माए, तकड़ । डोडि ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-547X**

सब घब घबैत छथि ।

२

दिह्यी ।

३५ दिससँवक बाति । आरै एक तारीख तऽ जाले । बतिका शिथलमे हम छी ।

कोरिगामँ आएन एकठाँ म्ली हमरामँ प्रुडैए, आ नर एगवपोष्ट अछि की ? हम कहै छिँ- है । आ प्रुडै छिँ- किए ?

ओ म्ली कहै- ले, हमरा नागन, किएक तँ छह मास पहिले आएन बली ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह, ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

-है पहिले छलिन दु गब अहाँ आएन हएँ, ओ नर छलिन छिँ,  
छलिन- तीन । नीक नागन अहाँकै ? - हम पुँडे छियहि ।

-रैठु नीक नागन । एगवपेछ लै, हेछन मन नागि बहन  
अछि । गडिया आर मजगुत भऽ बहन अछि । - महिना रैजै  
छथि ।

बतिका शिष्टमे हम छी । तखन गामसँ एकठा होण हमर  
मोरौगनपव अछि । हमर महिना सहकर्मी हँसी करै छथि-  
गामसँ होण आएन हेतहि, आर होब ओ मैथिलीमे गप कबत,  
हम सब भाषा बुनै लै छिँ, सीठ भाषा छै, तै हमर सबक  
थिनामो करैत हएँ तँ हमरा सबकै पता लै छनत ।

३ दिससँवक बाति छिँ । आर एक तारीख भऽ गेलै । झुदा  
दुर्घटना राबह रैजै बातिक पहिले भेल छलै । नहानिक जेरीमे  
मोरौगन बहै । तीन चारिठा अतिम रैब डायन कएन गेल होण  
नसँवपव पुनिस ओही मोरौगनसँ होण केनकै आ सुछा देनकै  
जे जकब होणसँ पुनिस होण कऽ बहन अछि, से आर ए  
दुनियाँमे लै बहन ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मया बाबि । एका-ले मशीन आ लिखन डागकेँ छोडि आँहिमसँ  
छुट्टी नऽ हम रिंदा होग छी ।

आ एगवशेष्ट रौहवसँ कोनो सजन-धजन नरकनियाँ सन नागि  
बहन अछि । बाबिमे रौहवसँ हमसँ ले देखल बलिं ए  
नरकनियाँकेँ । ठीके कहे छन ओ महिना । तेछेले नागि बहन  
अछि, प्रकाशमे चमचागत ।

गाडी आगाँ रैठि बहन अछि । दिनीक रोड एतेक टाकब कोनो  
तऽ गेलो । दिसमे तँ तीन मिष्ट प्रति किनोमिष्टवक गति बहे  
छै ए सडकपार । झुदा बाबिमे खाली बहन टाकबगब नागि बहन  
अछि ।

झुदा हेलब झुनागाव अछैए, रोड पातब होगत जागए ।  
तजनपुवा, खजुरी खास । दिसमे तँ गाडी एतऽ आरियो ले  
सकितए । रिजनी सेहो कष्ट गेल छै । सडकक दुनु कात  
गन्दा पसबन ।

गाडी गलीक कोणमे नगा कऽ आगाँ रैठे छी । गली पाव कऽ  
हिलोत सिवनी रौठे अगवज्जीक घब सैस छी । कल्लारोहठ उठन  
छै । दिनी.. गडिया, मज्जुत गडियाक बाजधानीक एहो एकठा  
गनाका अछि । कोरियन महिना एतऽ ले आरि सकत । एतुक्क



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बरकतपुर ISSN 2229-

लोक चमत्कारगत घब, अँहिस, आँ बापावक पाछाँ अछि । अँगिना  
थाँ भँ सँकेँ हँदामे बहँते.. तेँ आँसमे ।

पता छँलेँ जे नहँनि थँक तेँग रँहादुँर अँस्पतानमे बाँखन  
छँ ।

उतँ सँ रिँदा होँग छँ । रँोन भँरोस देँरो योँगा पविँद्विँति  
लेँ छँ ।

थँक तेँग रँहादुँर अँस्पतानक हँर्दघबमे योँहित रँाँक रँैँक  
नहँस उँकव बँडसँयँकीँ देँन जेँते । थँसिँ कहँल बहँ-  
पिताँ जँरित छँथिँ तँथँ दँोसवाँकेँ देँरोक रँाँते लेँ छँ, लेँ  
जँरँेत बहिँतथिँ तँथँ देँन जँाँ सँकेँ छँन- उँछ अँयानयक  
आँदमेँ छँ । पँडिँना रँैँव दँ२ देँन जँोन बँहँ आँ जँथँ अँसनी  
बँड-सँयँकीँ आँरँिँ कँ२ केँस कँ२ देँनकेँ तँ तीँसँ थँसिँरँना  
निँगँयित भँ२ गेँलेँ । आँ कँल कँन जँेँन माँनि निँअ जेँ थँसिँस  
देँयो देँत, हँदाँ डाँकँव पँोसँठमाँठमेँ लेँ कवत ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

अमोदक घबमे लवरीयो ठुँ गेलो । दिनीसँ एक रजे वातिमे  
होण आएन छै, मोहित राबूक रैथी अमर मरि गेलो । दिनीमे  
मडक दुष्टिनामे मरि गेलो ।

अमोदक होणगव होण आएन छै । अमोद मोहित राबूक  
लोणा की कहते । तत्रा-मिहव कथा क२ एक्कठा रैथी मोहित  
राबूक, चाविठा रैथीपवस । पकके रियाह भेल छलै ।

अमोद मोहित ककाक दवरञ्ज नग पहुँचै । लक दैए ।  
काकी अरै छथि । मोहित राबू गाममे छथिये लै । रहलागक  
मृदु-सँकारमे भाग लेल छल छथि । अमोदकेँ ग गप काकी  
कहै छथि ।

-मे की भेलै एतेक वातिमे ? - काकी चिन्तित भ२ पछै  
छथि ।

-लै बोवमे अरै छी । काज छल ।

अमोद मोहित राबूक घबसँ प्रभावी क२ रहवा जाग । अमोद  
आगाँ रैठि जाग ।





सबसङ्ग दबसङ्गापव जागए । हँ एकले कहि दै छिँ, काकीलै  
बोवमे कहि देतहि ।

सबसङ्ग टोकीपव सूतन अछि । अमोद ओकवा उठारैए आ सत  
गप कहैए । सबसङ्ग बोवमे काकीलै कहि देतै आ काकीलै  
सेहो बोवमे ह्वाण क२ देतै ।

बोवमे तबि गाम हाकास .... । काकी तँ रँताह भेल जाग  
छि । मोहित राँवुकै ह्वाण गेलहि जे जहिना छी तहिना आरि  
जाई, काकीक मोण रँडु खराग छि ।

मोहित राँवु गामपव एनाह तँ दोसले गप ।

दिगीमे ठेगक रँडु ओक छै, झुदा पुरिस नहस ककरो लै  
देतै । बङ्ग-सङ्गरीकै नहस भेटैतै ।

मोहित राँवु दिगी लै जेतह, सँताप देखैले लै जेतह ।



झुदा प्रुनिस नहस दोसवारुँ ले देते ।

मोहित राँवुँ पंडितजी भवाम दे छथि । उत२ के कोषा  
दाह सखाव कवते, से पञ्जीजी संगे जेतारह ।

सँममे पठनासँ दिगीक प्रेणमे बिजलेशिष त२ जेते । रिवायक  
जीसँ अमोद गप क२ जेल छथि, छकठ कठा, बिजलेशिष कवा  
क२ अमोदक भातिज छकठक संग पठना जँकशिषगव भेठेत ।  
दिगीमे पीखव रँटाक रँटा काव न२ क२ सृमिषगव अएत,  
कवोनराँगमे केकठा दोकाष छै पीखव रँटाक रँटाक । मोमे  
उत२सँ मोहित राँवुँ झुदाघव न२ अगतहि उ२...

पञ्जीजी आ मोहित राँवुँ पठनाक रँस पकटे छथि । सँममे  
दिगीक प्रेण छै । कालि भोवमे मोहित राँवुँ दिगी पहुँटि  
जेतारह आ रँटा जे कालि धरि जिमिरे वहे आ आग जे नहस  
रँगन दिगीक झुदाघवमे बाखन छै- तकव मृत शीवकेँ  
जेतारह ।



देश आशिक नगरी दिगी पहुँचैना छै, टिमिक धूआ आ  
लैकट्रीसभ खतम भेलै आ रैडका-रैडका स्टडिम प्रगति  
मैदान आ की-की आरि गेलै। मोहित राबूकेँ ए सभ रौतु  
पहिल नीक नालो छनहि। दिगी हाँठमे गमैआ रौतु सभक  
सृजनपर रैडका गाडीरना सभ उतरि क२ समाज कीले छन।  
मोहित राबूकेँ हँसी नालो छनहि। गाममे ए सभ रौतु अलले  
पडन बहे छै, कियो किमिहार ले। ए पवदेशी सभकेँ गामक  
लोक सभ एत२ अलले ठके छै।

झुदा आग ए दिगी हुनका जेन झुदाघबक पता रैनि गेल  
छहि। गुरु तेग रैनाद्व अस्पतालक झुदाघबमे हुनक रौठाक  
नहाम ओकव बडसय्यनकेँ देन जेतेक।

पिता बडसय्यन रैनि पहुँचैना छथि।

मोहित राबू झुदाघब पहुँचि जाग छथि, पहिल बुझलै ले छनहि  
जे दिगीमे सेहो झुदाघब होग छै, रिजनी-रैतीरना शेरव  
दिगीमे.....



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

३.

दिगी । के रैमेनके, कोना रैमेनके । अथेज जहिया  
कनकतुमँ दिगी बाजधानी रैमेनके रिचाव केनक तखन तँ एकेछा  
गामक लोक एत२ लै हेते ।

आ आरँ ...

मोहित रारु गहुँटि जाग छथि । हरोठेकाव भ२ काश२ नलो  
छथि । हम भवि-गाँज क२ गकडि क२ रैमि जाग छियहि ।

-गामक छोड़ू कोन ठेनक, कोन घर लोक एत२ लै छै ।  
सडक दुष्टिना सेहो भेल छै । झुदा रँटि-रँटि जाग छले ।  
अमारो रँटि जेते तँ कठ नीक होगते । अगरो भ२ क२  
बहिले तँ देखरो तँ कबिबिध । हे कमियाँकेँ आगि लै देर२  
देरौ, डेठामक रँटा छै । रँटा नीलो भ२ जाएत । लै, हमरी  
देरौ आगि.. आन देरौ कबते तँ अन्तिम दिन तँ उतवी  
कमियाँक गवामे आरिये जेते । तेँ हमरी देरौ आगि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

-एह.. एहमे रवथक तू छै, छौकी मग मेवीव छै कमियाक ।  
छाविछा भाग छै, सब एकवाम पैघ । ओकव ज़रन कोणा  
रितते । ए रूठ मेवीवम रैछाके हम कोणा पोमरै । कतरौ  
धनीक बह छै, लोकवी जेन पठरैते छै.. पीअवो रैछा तू मेहो  
पठेल छथि अगन रैछाके । ओकवम रैमी के छै धनीक  
गामये ? हमरा तू दम कछा जमीला ले प्रवत... रौ दैरै... कह  
छनिज जे हम ले जाअरै दियी..... सताप देखेजे की जाअरै ?  
रुदा कहनके जे वाशे ले देत । आ आरै आरै गेन छी तू  
हमरी देखै आगि ।

-ले मे ले हएत, राग कतो आगि देनकेहै...अहाँके  
अगमनघाछे ले जेरौक अछि । सब प्रवना गग रिसवि जाड...  
ओकव पितियोतके देखै दियो आगि... ए परिस्थितिमे प्रवान  
गग रिसवि जाड ।

-ले, मे भातिजक प्रति हमरा कोणा तेहन आन भारना ले  
अछि । ठीक छै... स्वप्नजी दो आगि ।

७



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषींह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

एकैसय शताब्दीक पहिने दशकक अन्तिम वातिक घटना, आ ओकर  
बादक बोव । झुन ले छै कोला अन्तव । पहिबारी आ  
पुनःप्राप्तके छोटि दियो । महिना तँ रहैह... ।

ए कलकत्तागत रसातल रैशी माकथ । हाडमे ठुकर जागत  
अछि । कमला कात ले यद्दनाक कात । हज्जब मागन दूव  
गामसँ आरि । गिम्बल हागत अछि खबरखरानी कारीक सैत  
रम्ह । मागठ मान पुरीक रहैह थिम्सा, रहैह समाज, मात्र  
पहिवारी रैदनि गेल, मात्र धाव रैदनि गेल ।

गोपीदास, गंगोष्ठ, माना, उज्ज्वल नर रम्ह झूठमे तुलसीदास,  
सूर्य खल, गंगाजन, कृष्ण पमावन भूमि, तुलसी गाछ नग उतव  
झूठे पोस्टमार्क कएन शिबीर आसन जागए । हरेव ओतसँ  
यद्दना कात...

कलकत्ता छै रसातले, हाडमे ठुकि जाएत आ कलकत्ता,  
पोस्टमार्क कएन शिबीर जे बाखन अछि, मातठा मोठका शिखर,  
कमला कात ले यद्दनाक कात, जडत कलकत्तामे ।

सुमनजी मेहो नर उज्ज्वल रम्ह पलीवि, जलो, उतवी पलीवि, नर  
माष्टक रैतलक जलसँ, तेकशोसँ पुर झूठे मात्र पटे छथि आ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह, ISSN 2229-

547X VIDEHA

ओहि जनसँ मृतककेँ शिद्ध करै छथि रामा हाथमे डुंक न२  
गोर्गटाक आगिसँ धधकरैत छथि तीन रैब मृतकक प्रदीक्षा क२  
झूहमे आगि अर्पित होगत अछि । नकड़ी कोना बाखन ज्ञान  
तगपव दु गोठेमे रैहमा-रैहमा भ२ बहन अछि । नलीए  
मगड़ १ भ२ जेते । पहिन गोष्ठी कहि बहन छथि- एना नकड़ी  
ही तोपन जाग छै, कतरौ घी कर्पूब देलै आगि ही धवत ।  
झुदा किछ कान आव । सातठा शिखर बाखन ओ शिखर, अग्नि  
नीलि बहन सुझाव क२ बहन । एकठा परिवार हेबसँ रैगत आ  
तीस रैथीक रौद देखरै ओकव परिणाम । ताधरि हाडमे ठुकन  
बहत आ सँद कनकनी, ए रैमातक कनकनीसँ रैष्ठ रैथी सँद ।  
सत दिग्येमे बहता, दिग्येसँ नडरौ जेन, गडियाकेँ महाशक्ति  
रैलरौ जेन, अगण प्रगतिक आशिये, अगिला खात्री जेन एतेक तँ  
रैनिदान देलैए पडत, आ सोटैत ।

कपाम, काँठ, घृत, धूम, कर्पूब, टागन कपोतरेशे मृतक ।  
पाँच-पाँचठा नकड़ी सत दैत छथि ।

कपोतक मूँ शिखरारशेय सन मासिलिड भ२ गोनागव,  
सतकटिया न२ सातरेव प्रदीक्षा क२, अबहिसँ ओहि डुंक सात  
छो सँ खल्ल क२, सातो रैङ्गनकेँ काँठ सातो सतकटिया आगिमे  
हेकि रौन-रूछकेँ आगाँ क२ एडी-दोडी रैचरैत नहागले जाग  
छथि, तिनगुलि मोड़ १-तिन-जनसँ,

बि दे हू बिदेह Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह पत्रिका, मृतकक आंगणमे द्वावणव फास जौह, पाथव,  
आगि आ पाणि स्पर्श कइ सत घब घुबि जाग छथि ।

ई वचनापव आंगण मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पव  
पठाउ ।

१. आशीय आनन्द- "सगव बाति दीप जवय" केव अन्त आ  
साहित्य अकादेमी कथा गोष्ठीक उदय २. प्रियाका सा- सगव बाति  
दीप जवय पव साहित्य अकादेमीक कटुता/ सबकारी पागणव भेल  
रौतभोज/ साहित्य अकादेमीक कथा वरीन्द्र दिग्विजय समारोह-  
वरीन्द्रक कथापव कोला चर्चा ले भेल- १७म सगवबाति दीप  
जवय छेलमे रिताबाणी म२ गेली ३. अन्तिम आनन्द- नोसागछी  
छुटके लोकार्पण





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

5

## आशीय अक्षरिहाव

“सगव बाति दीप जवय” केव अक्षर आ साहित्य अकादेमी कथा  
गोष्ठीक उदय

“सगव बाति दीप जवय” केव अक्षर आ साहित्य अकादेमी कथा  
गोष्ठीक उदय (विशेष आशीय अक्षरिहाव) २५ जुलाई २००१  
सहस्रमा “सगव बाति दीप जवय” मे जीवकांत जी मैथिलीके  
बाजबोगसँ प्रमित हेरौक सँकेत देल छलाह । आ तकरा बाद  
लेखक सभकेँ मैथिलीकेँ ए बाजबोगसँ रैछेबाँक आग्रह बमर्शद  
मा बमर्श केल छलाह । ह्रदी हमरा जलेत- ए मात्र स्वप्न-  
कष्ट भेल । काव्य ए बाजबोग आहु-आहु जीवकांत जी आ  
बमर्श जीक आर्थिक सामल मैथिलीकेँ गढाई लेलके । मैथिलीक  
ए बाजबोग रैमविश्वरूप सुकष आब रैमि ह्रदि भव कइ दिव्यक  
धवतीगव “मैथिली” द्वारा संचालित आ साहित्य अकादेमीक पाठक  
रैले ह्रदि “सगव बाति दीप जवय” मैथिली भाषाकेँ मारि  
देलक ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

२४ मार्च २०२२कें सँम धरि लोक ज़ुमामे डन जे दिहामे "सगव  
वाति दीप ज़वए" केव आयोजन भ२ बहन डै । सयोजक  
देरशिकव नरीन माना डैठेल बहयि, दूदा आगाँ एकांमि आ फेव  
मैलौवंग ले ज़ानि कत२ सँ आरि गेलै, आ अततः तखन  
भेलै जे रौदमे गता चनलै जे ओ सगव वाति ले डन ओ तँ  
"मैलौवंग" द्वावा संचालित आ साहित्य अकादेमीक पाठसँ  
आयोजित मात्र कथा गोष्ठी डन । मैलौवंग एकवा १३म "सगव  
वाति दीप ज़वए"क कगमे आयोजित कवरक मियाव केले डन  
दूदा "सगव वाति दीप ज़वए" मे आग धरि सबकारी साहित्यिक  
संस्थानसँ फंड ज़रक कोला प्रारधान ले बहै, से ज़ १३म "सगव  
वाति दीप ज़वए"क क्रम धुँष्ट गेलै आ तँ ज़ १३ कथा गोष्ठीक  
कगमे मातृता ले प्राप्त क२ सकन । पाग साहित्य अकादेमीक  
नागन डलै एकव प्रमाण ज़ेठे सभमे सहयोगक कपे " साहित्य  
अकादेमी"क नाम देखाग स्पष्ट कपे गडत । आ अकादेमीक  
परिरेकक कगमे देरद दूदाव देरमे आन डनह । साहित्य  
अकादेमी द्वावा मैथिलीक ए एकमात्र स्वागत गोष्ठीकें तोड़क  
प्रयासक साहित्य जगतमे भर्सेना कएन ज़ा बहन अडि । उना  
हम स्पष्ट कही जे बाज्वागकें हठैरक रौत कवए रौना बमर्द  
मा कमा मेहो ए कुत्रकें आरि देखनहि आ मीन सन्नाति  
देनहि । आरि टुँकि ज़ "सगव वाति दीप ज़वए" ले डन तँ  
आगुक एकव रिरेचन हम मात्र कथा गोष्ठीक कगमे कवर ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चन्द्रकान्त ISSN 2229-

547X VIDEHA

टूँकि लोकमे श्रम पैदा कएन गेल छल जे आ "सगव बाति  
दीग जवए" अछि तँए बिदेह दिससँ पौथीक स्थान नगएन जा  
बहन छल कथा सुनएव, ऊदा ओही समय "मैलावंग"केव कर्ता-  
धर्ता प्रकाशे मा द्वाबा एंगव लोक नगा देन गेलै। प्रकाशे जी  
कहनथिन्ह जे जँ ह्रीमे रँछैलै तखन स्थान सँभर रहएत। ऊदा  
हूँक रिदावकै स्थान बरसुपक आशीय टोपरी द्वाबा नकावि देन  
गेल। आ एकव विरोधमे बिदेहक संपादक गजेन्द्र ठाकुर  
कथानुसँ निकलि गेलाह। एकथा गोष्ठीक शुक्रातमे ओना हम  
अपल हेमरूँकएव घोषणा केल बही जे गज्जन आ हागकुक  
पौष्टव प्रदर्शनी कवरँ सगव बातिमे, ऊदा जखन ओ सगव बात  
छलैले लै तखन हम सभ कतए कवरँ आ ताहिगव बिदेह पौथी  
स्थानक विरोधक बाद। हमरा लोकनि एकव विरोध करैत ए  
पौष्टव प्रदर्शनीकें सुगित कइ देलौ। ए कथा गोष्ठीक आवँत  
बाँवह गोष्ट पौथीक रिमोचर्स भेल। जगमे हूँ पाँट हिन्दी-  
उर्दूक पौथी छल आ साठ्ठा मैथिलीक।

अज्जुका मल दिला रौन सगव बातिसँ पहिल हम २०००मे बहुआ  
संग्राममे भाग लेल बही। ओ हमर पहिल सगव बाति छल।  
पुवा उँसोहसँ भवन बही। ऊदा जेना जेना बाति रिँतैत गेल  
हमर उँसोह रिँतागत गेल आ अँतमे ३ रँजे बातिमे जखन  
हमरा कथा पठरौक योका भेलैत तखन हम जागन बही ओहि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

सत्रके अध्यापक गिरिधर शिरीराम ज्ञान बहथि आ दु-चाविष्ठा  
अनटिहाव लोक ज्ञान बहथि ( अनटिहाव लोक ताहि सामगर्के  
हिसारिँ उमेने मडन, जगदीश प्रसाद मडन, युन टट मित्रि बसा  
गवादि) आ रौद-रौकी तथकथित समीक्षक-आलोचक एर हलक  
सगव बातिमे अगल तौज पुरैए रौना लोक सब सुतन बहथि  
मल तावा रौरुँ नए क बगानद सा बसा धरि। ओही दिन  
हमरा अगलतर भेल जे जे कस्तुर्की सरहक रीट रोद-पाठ कवर  
तँ अगल पागक भागी रौनरँ। अतु हम ओहि कथा गोष्ठीक  
रहिष्ठाव केनहुँ आ आ कथा ले पठनहुँ। ह्रदा जखन गोष्ठीक  
कर्त-धर्ता ( संयोजक ले) कस्तुर्की धरि तखन हमर एहि  
रहिष्ठावक चर्चा केन हो। ओना ओहि कथा गोष्ठीक रहिष्ठावक  
कावा डन जे " जे समीक्षके कथा ले सुनतह तँ हम पठर  
केकरा लेन। आर अहाँ सब कहि सकैत छी जे अहाँ आम  
श्रोतार्के अगल कथा सुना सकैत डनहुँ। ग गप्प सब ह्रदा  
रौबसा छोडा हमरा कतौ आम श्रोता ले भेटेल। हम अगल  
तँ रौबसा ले बही ह्रदा ओकर रिडियो जे कि युधुर्गव छै  
ताहिमे ग स्पष्ट करै देखन जा सकै। आर आरौ दिगीक एहि  
कथा-गोष्ठीक। ग कथा-गोष्ठी अगल-आगमे कतेको  
कीर्तिमानके स्थापित केनक आ धरतु केनक। जे भावतीय  
दर्शनमे रचित आमे आ पुनर्जन्म सब छै तँ आदरणीय प्रभाव  
टोपवी जिक आमे कहव-हूकवि बहन हेतहि। ओ एहि दिनक  
कम्पना केनहो ले हेतह। एहि कथा-गोष्ठीक किड कीर्तिमान  
देखन जाए। ----



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

1) बहुधा संग्रामसँ जे मैथिली साहित्यमे लैब लौक्य दूदा  
छैलैलैछै छैतिता एनाग शुक भेल छल से एहिठाम छैछै छैल ।

कथा गोष्ठीक निश्चय छलै जे कथाकार-साहित्यकार रा श्रोता  
अपन खर्चाएव एताह-जेताह दूदा रौत जखन दिलाकैव होग तँ  
संयोजक अपन गछु सभैक लेल नीक जकाँ पाग खटा  
केलाह । एकव परिणाम कतेक भर्त्सक हेतै से सहजहि  
सोचल जा सकैए ।

दिलीसँ पहिल चलैक कथा गोष्ठीक निश्चय छलै जे " जे  
कथाकार पहुँचता से कथा पढ़ताह" । दूदा एहि लेब संयोजक  
घोषणा केलाह जे जिनका हम निम्न पढ़ै रहि सएह एताह रा  
जिनका एरौक छहि से अपन स्त्रीकार पत्र पठाँयि । भविष्यप  
एहि निश्चय सेहो प्रभाव पड़ैतै से नागि बहल अछि ।

अबु एहि एतेक कीर्तिमान स्थापित केलाक बाद जे ग गोष्ठी  
भेल आर तहिकेँ देखी---

ग कथा गोष्ठी आठ सत्रमे रँछैल छल । अर्थात् दुनाह गंगेश  
गंजन आ संचालक दुनाह अजित कुमार अज्जाद ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीक पहिल सत्रमे रिबुति आनन्द (डोहबि), मेषका मल्लिक(मनहमा) आ प्ररीण भावद्वाराजक (प्रकथावथ) कथाक पाठ भेल । कथाक समीक्षा अशोक मेहता आ बमालद मा बमाल केनहि । अशोक मेहता कहनहि जे रिबुति आनन्दक कथामे किछु शैलीक प्रयोग छैकन । मेषका मल्लिकक भाषाक समझमे ओ कहनहि जे एतेक दिससँ रंगमंचमे बहनाक बादो हुनकर भाषा अखला दबडगा, मधुरनीयेक छै । प्ररीण भावद्वाराजक कथाक समझमे ओ कहनहि जे कथाक नव छवि से तेहि सारै हुनकर कथा नीक छै । बमालद मा बमाल रिबुति आनन्दक कथामे हिन्दी शैलीक रीतिरूपक चित्रा राख केनहि । मेषका मल्लिकक कथाक समझमे ओ कहनहि जे महिना लेखन आगाँ रूढ छै । प्ररीण भावद्वाराजक कथाक भाषाक ओ लेखन कहनहि आ आशा केनहि जे आगाँ जा कइ हुनकर भाषा ठीक भइ जेतहि । तकर बाद त्रिताक रंग आनन्द, सौम्या मा रिबुति आनन्दक कथाकें अगुनी, ओग गलाकसँ कठिन नगनह दूदा ओ कहनहि जे हुनका ओ कथा नीक नगनहि दूदा एमे कमी छै, देखैकब नरीण रिबुति आनन्दक पक्षमे रीट रीटारमे ( ! ! ! ) एनाह दूदा सौम्या मा अगल रीतकब अडिग बहनीह । आशीय अल्लिखार रिबुति आनन्दसँ हुनकर कथाक एकठाँ छैकिकन शैली, "अल्लिखार मिस कान"क अर्थ पुछनहि त देखैकब नरीण राजकमानक कोला कथाक असमझित तथेकब २० मिनट धरि रिबुति आनन्दक पक्षमे रीट रीटार करैत बहना ( ! ! ! ), अल्लिखार: रिबुति आनन्द त्रिताक प्रश्नक उत्तर ले देनहि । दोसर सत्रमे रिता बानीक कथा सगलकें ले भवसाँ, रिनीत उपेकक कथा मित्रिणी, आ दुखमोचन माक छैत सखाक पाठ भेल । रिता बानीक कथा कब समीक्षा करैत मरगिया



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरी सिंह सम्पादक, ISSN 2229-

547X VIDEHA

एकवा रौन्ड कथा कहलन्हि, सारंग हमाव कथोपकथनकेँ छोट  
कवरी लेल कहलन्हि, कमल कान्त या एकवा अन्तर्गत कथा  
कहलन्हि आ कहलन्हि जे माथ रौन्डक अरहेलगा ले क२ सकैए,  
झुदा श्रीधर कहलन्हि जे जू रौन्डक चरित्र रैदलते तँ माथोक  
चरित्र रैदलते । कमल मोहन दूध कहलन्हि जे जू कथा  
घबराहव से प्रकाशित अछि । आयोजक कहलन्हि जे रिता  
बालीक कथा संगलकेँ ले भवमाँ केँ ए गोष्ठीसँ राहव कएन जा  
बहन अछि । रिनीत उषेनक कथा निर्माण पर मर्गिया जूक  
रिटाव डन जे जू उषेनक हिमारे प्रेमकथा अछि । सारंग  
हमाव एकवा महानगरीय कथा कहलन्हि झुदा एकव गठमकेँ  
मजगुत कवरौक आरम्भकता अछि, कहलन्हि । श्रीधर ए कथासे  
लेखकीय ज्ञानदावी देखलन्हि झुदा एकव पुनर्लेखक  
आरम्भकतापर जेव देलन्हि । लीलेन्द्रकेँ जू कथा पुनर्लेखक  
कथा मोष पाड़लन्हि झुदा प्रदीप रिहारी लीलेन्द्रक गप्प सहाय  
ले बहल । ओ एकवा आग कालिक खाटीक कथा  
कहलन्हि । दुधमोहन साक छुटैत संकावपर मर्गिया जू किछ ले  
रैजना, ओ कहलन्हि जे ओ जू कथा ले सुनलन्हि । सारंग हमाव  
एकवा लेखक कहलन्हि । कमलकान्त सारकेँ जू संकावी कथा  
नगलन्हि । श्रीधरकेँ आवस्य नीक आ अन्त खवाग नगलन्हि ।  
शुभेन्द्र मोथरकेँ जेलेलेख लेख सन नगलन्हि आ कमल मोहन  
दूधकेँ जू यात्रा वृत्तान्त नगलन्हि । दोसर सत्रमे श्रोताक  
सहभागिया शून्य जकाँ बहन ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

सब सत्रक रौद भोजन भेल । भोजनमे भात-दालि  
तबकावी, तुजिया-पापड़, दही आ टिनी रोसी रैना बसगुला भेल ।  
आ भोजनक रौद शुभकाल । शुभकाल केव मास जे भोजन  
कक आ कथा सुनकेँ शुभ कक । ह्रदा अमिकारी भनाहे आ किछ  
जोनाकी रिभुति आनंद शुभमे रिनीन भऽ गेल भला ।

(शुभमे रिनीन रिभुति आनंद, महेश्वर मर्गिया आ बामनद मा  
बमा)

शुभ कालक दोबाण लीलेन्द्र हमार मा द्वारा मैथिलीमे रौन  
साहित्यकेव विकासक रौत बाखन गेल । ओ जोब देनहि जे रौन  
साहित्य ह्रदयतमे रौन जेरौक छली । किछ गोठेँ ए रौतपव  
जोब देनहि जे भरियामे जे सगव बाति हएत ओगमे सँ  
कोला एकठा आयोजन पूवा-पूवी रौनकथा पव हेरौक छली ।  
ह्रदा अमिकारी रिथय आ बहन जे देरनैकव नरीन" गैबलए  
पव रिदेहक माधामे आरौत रौन साहित्यकेँ रिसवि गेलह जखन  
की ओ गैबलएक गतिरिसि पविटित छथि । ओही एवामे आशीय  
अनछिहारा द्वारा लीलेन्द्र जीकेँ ह्रदयत डाङनलोड ग्रफिया रौतएन  
गेल । ह्रदा नतीजा एएह- जलैत-रुनैत गैबलएपव सुनत  
रौन साहित्यकेँ एकठा सुनियोजित तबीकामँ कात कएन गेल ।  
रौत जखन हनेक रिथामे रौन साहित्य निखरौ पव आएन तखन  
पहिल रौव आशीय अनछिहारा द्वारा मैथिलीमे "रौन गजन" केव  
परिकल्पना देन गेल । ह्रदा एकठा रौत लोचक जे रौन  
साहित्यकेव छटा पवकावक रौत पव अछि गेली । किनको आ  
208





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

दूध डुबहि जे आरु हमर सरलक उग्र रीति गेल तखन ओ शुक  
भेल । उ किनको ओ दूध डुबहि जे अरु अगल कनियाँ केव  
नामसँ रातमे लागल छथि । ए रेलसक दोबान अरिनामि जी ए  
रातपर जोब देलहि जे "रात कथा"क तर्ज पर "रात कथा"  
सेहो हेराक चाली । ओ जे पछिला सगल बातमे सहभागी  
हेतल से अरिनामि जीसँ नीक जकाँ परिचित हेतल से उन्हाद  
अछि ।

धनाकर जीक वंशीन जनपर बिप्लव कएक ठाम अछि (बिदेह  
फेसबुक आ घर रातमे सेहो) ।

शुक्राक्षरक बाद तेसर त्रुव शुक भेल- ओ रिशुद्ध कपे रिहनि  
कथापर आधारित छल । एमे अरु जी चम्पा, मेरक आ  
कष्टवर्षी नामक तीन ठाँ रिहनि कथा पठलहि । अरिनामि ठाँकर  
दुगोष्ट रिहनि कथा-दाम आ अगम-अगोचर पठलहि । प्रदीप  
रिहनि रूँडि नामक रिहनि कथा पठलहि । ए सबक अरु रात  
ओ बहल जे अरु जी नयकथा ले रूँडि रिहनि कथा कहल पब  
जोब देलहि अरु हलक उन्हा अरु मेहता कहलहि जे  
नयकथा नाम ठीक छै । ए सबमे अरु जी सगल बातकेव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

कोला एकठा आयोजन बिहनि कथापब कबरा पब जोव  
देवहि । श्रोतामेसँ आशीय अर्धचिह्नार दूना जीक बिहनि कथा  
"छा" केँ आधुनिक जीवनेमे पबनेत नकरी मरेदनाकेँ देखाव  
कबैत कथा कहनिहि । एम् पबिह देरनेकब नरीन जी समाजमे  
पमनेत अमरेदनाकेँ बेथाकित केन डनाह अपन रकठारामे ।  
अर्धचिह्नार मरेदनाक एह पक्षपब नरीन जीकेँ पेशा  
देवनिहि । ए बिहनि कथा सभपब अलक छप्पाणी सभ  
आएन । दूदा एह जे नीक नागन, रैष्ट नीक आदि हर्मैठेमे ।

टाकिम सत्रमे लीलेन्द कमाव नाक दीर्घकथा " एकठा डन गाम"  
आ पकज सत्र केव कथा " एकठा बिस्मिक टिप्टी" आएन ।  
एकठा डन गाम पब दूना जी कहनिहि जे कथा रैनी नमबन  
अडि दूना कथा नीक अडि । श्री धवम जी दूना जीक आलोचनासँ  
सहमत डनाह । संगे संग दूना जी कहनिहि जे एमे गामक  
टिता नीक जकाँ आएन अडि । आ श्रीधवम कहनिहि जे दमित  
उभाव जँ एकथामे अरिठे तँ आव नीक बहिठे । श्रोता रङ्गसँ  
आशीय अर्धचिह्नार दूना कमाव मोहन दूना जीकेँ कहन गेवहि जे  
या तँ ओ जगदीश प्रनाद मडनक कथा ले पठल डुथि रा रिसनि  
गेव डुथि । जँ दूना जी जगदीश मडन जीक कथामे अरिठे  
गामक टिताक रौठे लीलेन्द जीक गामक टिप्टी देखथि तँ ओ  
आवो नीक जकाँ आलोचना क२ सकै डनाह । हमर ए रौत पब  
आयोजकक एकठा पबम लोकारादी सदस्य कहनाह जे अहाँ  
जगदीश मडन जीक कथाक उदाहरण दिअ हम देरैए नेन  
तेगाव डनहुँ दूना मडनक ओग लोकारादी सदस्यकेँ रैतकष्टीनि  
कबरसँ बोकि देवनिहि । ए सत्रक आन आलोचक सभ प्रदीप  
बिहारी, अरिनाथि, वमा कमाव मिह आदि डनाह ।



पाँचम सत्रमे दीनरैवु जीक कथा "अपराधी", रिषयमोहन जगदीश  
जी "सकम्पक रत्न" आ आशीय अर्चिहावक "काठन कथा" पठन  
छोन । आशीय अर्चिहावक कथा पब छुनु जी कहनाह जे शिंप  
क तौव पब आ असहज कथा अछि संगे संग कोन रात कतए  
छे से स्पष्ट ले छे । पाँचम कम्पक छे भन्ना जगत छथि ।  
एरातकेँ आव रिताव दैत कमजोरे किमोव मा कहनथिह जे ए  
कथामे सेन्ट्रल प्लॉट केव अतार छे । कहने मा कहनथिह  
जे अर्चिहाव जीकेँ कोला डाकठेव ले कहल छथिह जे अहाँ  
कथा नीथु । तेनाहिने आशीय मा( पति रुद्रद मिह) कहनथिह  
जे हमरा आधा बुझाएन आधा ले बुझाएन आ कथा छन की  
बिपोछे से ले पता । रिषयमोहन जगदीश जी पब छुनु जी  
कहनथिह जे कथामे बनाव रैमी छे । आ लोकनि दीनरैवु जीक  
कथाक सेहो आलोचना केनहि रुद्रा चर्चत स्थापनमे ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

डुठम सत्रमे काष्ठप कमल जीक दीर्घकथा- भेष्ट, कमलेशे  
किशोर नाक -गुदबिया पठन छल । निष्ठमे तँ केशिन नाक  
आय नायक कथा सेहो डन दूदा पठरौ कान धरि ओ सुन पब  
ले डवाह । भेष्ट कथा पब दूदा जीक कहर डवहि जे हँसी  
सुतल लोककेँ जगा देनक ई कथा । कमलेशे जीक कथा सेहो  
बीक डन दूदा रएह चर्चत आलोचना ।

सातम सत्रमे अशोक कुमार मेहता-"रौंछ", कमलकांत मा -  
"रिद्धति" आ महेंद्र मर्गिया जीक कथा- नट (राटन प्रकाश  
मा) आएल । लीलेन्द्र मा मेहता जीक कथाकेँ कमलेशे पठनिक  
माणवहि । कमलकांत जीक कथाकेँ सुन्दर रचियामेक खास क२  
रँस रँगा प्रसंग केँ बीक कहवथिह । मर्गिया जीक कथाकेँ बीक  
तँ कहवथिह दूदा ओहो कहवथिह जे अत एकव कमलेशे  
छे । दूदा जी रौंछ कथाक पठनिकेँ कमलेशे पठनिक आ  
कमलकांत आ मर्गिया जीक कथाकेँ अगवायिक पृष्ठभूमि रँगा  
माणवहि ।



आठम सत्र अक्षाक्षरीय भाषा आ हूणक शीर्षक छीन मौखिक कथासँ  
समाप्त भेल । एतेक भेनाकेँ रौद अगिला सगव बाति ( ले  
जानए जे खेब कथा गोष्ठी)क संयोजक केव खोज शुरू  
भेल । पहिल प्रश्नार अवलोकन ठाँवक सुपौन लेन देनथिह आ  
दोसब रितावानी लेन लेन । आ तेसब प्रश्नार दिखीसँ तरेने  
बंदन छीक छनहि । सभसँ बाय गुठन गले । रँहूत गोष्ठे  
लेनक पक्षमे एनाह । अतः १७म "सगव बाति दीप जवय"क  
रितावानीकेँ कगमे एकठाँ मलिना संयोजक सगव बातिकेँ छेठना

२

प्रियाका सा

सगव बाति दीप जवय गव माहिल अकादेमीक कट्टा/ सबकारी  
पागपाव लेन रँभनभोज/ माहिल अकादेमीक कथा बरीन्द

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

दिल्लीमे समाप्त- बरीन्द्रक कथापब कोला छटा ले भेल- १७म  
सगबराति दीप ज्वय छेल्लेमे रितावानी न२ जेली

(स्रोत: समदिया)

-साहित्य अकादेमीक कथा बरीन्द्र दिल्लीमे समाप्त

-बरीन्द्रक कथापब कोला छटा ले भेल

-बरीन्द्रनाथ ठैगोबक १३.००म जयन्तीपब साहित्य अकादेमीसँ फल  
जेली जेल मात नाम "कथा बरीन्द्र" बाखन जेल

-समाप्ति कानमे संयोजककेँ गमतीक भाष भेलन्हि, तखन  
बरीन्द्रनाथ ठैगोबक एकठा करितक दु पाँतीक हिन्दी अखबार  
देखैकब नरीष पठनहि



-मात्र १+ ठी कथाक पाठ भेल

-१७म सगववाति दीप ज्वय चेलैये रितावाणी न२ गेली, गुला अ  
११म आयोजन होगतए ह्दा किएक ठै साहित्य अकादेमीक फंडसँ  
संचालित कथा बरीन्द्र प्रताप ह्माव टोपवीक श्रुत कएन "सगव  
वाति दीप ज्वय" क भारणाक अग्रमाण क२ साहित्य अकादेमीक  
थिरोणा रैनि गेल ठै एकवा "सगव वाति दीप ज्वय"क माग्यता  
ले देन जा सकन ।

-एकठा मैथिली युज पोर्टनक महिना संचालकक गति द्वाक पीरि  
क२ अएन बहथि आ भोजनकारोमे ह्मकव ह्म भुक्त  
हुनहि । १३म सगव वाति दीप ज्वयमे द्वाक पीरोंपव धनाकव  
ठाह्व ज्जीक रिबोधक रौद कथा बरीन्द्र मे मेहो ए तवहक  
घटना भेलापव साहित्य जगतमे आह्वानि अछि ।

-भोजनक उपवास कथाहुन खानी भ२ गेल आ अहिकशि रविष्टा  
कथाकाव सुतन देखन गेलह, प्रताप ह्माव टोपवीक कथा जेल  
भवि वातिक जगवणा एकठा मथोन रैनि क२ बहि गेल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

-आयोजक स्वर्ण ए गोष्ठीके रत्नभोजक मंडा देल बहनि आ  
अनुतः सह सिद्ध भेल ।

-आ गोष्ठी सगब बाति दीप ज्वयक अनु आ साहित्य अकादेमीक  
गोष्ठीक प्रावन्त रूपमे देखल जा बहन अछि । "सगब बाति  
दीप ज्वय" आर साहित्य अकादेमी संपादित भऽ गेल आ ओकर  
गोष्ठीक हिन्दीक लोकक कट्ठा भऽ गेल, जगमे हिन्दीक  
गोष्ठीक लोकार्थी नऽ कऽ बरिन्द्रक करिताक हिन्दी अनुवादक  
दू पाठक पाठ धरि समितित बहन ।

-पी.ए., डी.ए. आदिक पत्रिकाक घृणित आवन्त साहित्य अकादेमीक  
फण्डसँ भेल, आ एमँ सगब बाति दीप ज्वयक अनुक प्रावन्त  
मानल जा बहन अछि । हुदा साहित्य अकादेमी द्वारा संपादित  
करि-समाग आ सेवावमे पी.ए., डी.ए. मल करि निरन्तरकाले  
देन जाग छहि हुदा एतऽ किछु गोष्ठेकेँ आ सेवाग्य प्राप्ति  
भेल ।

-पी.ए., डी.ए. लेल रितावाणीक सेहो जेब देन गेल हुदा  
ओ कहलहि जे हुनकर आयोजन राष्ट्रियत बहतहि तै पी.ए.,  
डी.ए. देर हुनका लेल समुद्र ले, जँ कथाकार लोकनि छेने गिला  
पी.ए. डी.ए. लेल ले जेता तँ ओ ए कार्यक्रमकेँ करी लेन  
गछुक ले छथि । अजित आजाद कहलहि जे हुनका पी.ए.,  
डी.ए.भेटैतहि तखन ओ जेता । कमल मोहन दू अनु अजित  
आजादक समर्थन केनहि । हुदा पी.ए., डी.ए. आदिक पत्रिका





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

घृणित आबन्धक विरोध आशीय अन्तिमता केनहि तथै ज्ञा क२  
माहिना स्वप्नमन ।

-बिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनीक सभ मैथिली कथा गोष्ठी,  
समीक्षावमे लोग भुन भुन सहि अकादेमीक फण्डिंगक  
शुक्रातक रौद्र "कथा बरीन्द्र"मे बिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनीक  
अन्तिमति ले देरौक पाडाँ फण्ड देनिहार सहि अकादेमीक  
स्वविभाजनक दरौरि भ२ सकैए, से सहिहार लोकनिक रीटमे  
टर्छ अछि ।

[—सहि अकादेमीक कथा गोष्ठी दिल्लीमे शुक्र भेन/ १२ ठी  
पोथीक लोकार्पण भेन जगमे ४ ठी हिन्दीक पोथी भुन ! !

-कथा बरीन्द्र क कगमे सहि अकादेमी द्वारा मैथिली कथा  
गोष्ठीक आबन्ध, संयोजक अछि मैथिलीक, देरौकक नरीन आ  
प्रकाश



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

- मैथिलीय एकवचन १७म "सगव बाति दीप जवय" क कथामे  
आयोजित कवयोंक मियाव केल छल ह्यदा "सगव बाति दीप  
जवय" मे आग धरि सबकारी साहित्यिक संस्थाँ हस्त लेखक  
कोला प्रारक्षण ले बहे, मे १७म "सगव बाति दीप जवय" क  
कथामे मातृता ले प्राप्त क२ सकल ।

-साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक ए मातृता गोष्ठीकेँ तैयारीक  
प्रयासक साहित्य जगतमे भर्षेना कएल जा बहल अछि ।

-आशीय टोपरी बिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी लेल पोथी जखन  
पुनः नगलाह तँ साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीक (कवयोंक  
छल जे १७म "सगव बाति दीप जवय" क आयोजन भेल छल  
जे एत२ एनाक बाद पता नागल जे १७म साहित्य अकादेमीक कथा  
गोष्ठीक कथामे लेक क२ लेल गेल अछि । ) एकठाँ संयोजक  
प्रकाश मे तकर अवसति ले देलथिन्ह, जखन कि एकवचन  
दोसर संयोजक देवरीक वरीयकेँ द२ देल गेल छल । प्रकाश  
मे आशीय टोपरीकेँ कहलथिन्ह जे जँ मंगलमे पोथी रैथी तँ  
तकर अवसति देल जा सकैए, ह्यदा तकर कोला सम्भारणसँ  
आशीय टोपरी मना केनहि । तकर बाद आशीय टोपरी  
बिदेहक सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक संग अपन पोथी न२ क२  
उत२ सँ रैहवा गेलाह । ए कारणाँ किछ मैथिली पोथीक  
लोकार्पण ले लेल (जे १७म "सगव बाति दीप जवय"मे  
लोकार्पण लेल आएल छल साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठी लेल  
ले । ) । १७म पत्रिका लेल अछि जखन कोला मैथिली गोष्ठीमे  
मैथिली पोथी लेखककेँ अवसति ले देल गेल, हँ कलाबोले  
लोगत बहे जे मैथिलीमे पोथी ले लिखाए । साहित्य



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

जगतमे ए तबहक जातिरादी गोष्ठी द्वारा कएन जा बहन  
सबकारी हस्तक मैथिलीक नामपर दूकगयोगपर चिन्ता राख कएन  
जा बहन अछि ।

-गजेन्द्र ठाकुर लेखकपर निखनि- जगदीश प्रसाद मंडन,  
रौचन ठाकुर, कपिलेश्वर बाईत, राजदेव मंडन, उमेश पासराज,  
अनुरागशर्मा, दुर्गाशर्मा मंडन आदि श्रेष्ठ कथाकार लोकनि  
एकठा पोस्टकार्डो ले देरीक आयोजन मंडनक निर्णय अछि  
अछि, ओना ते सँ ए लेखक सबक सृष्टिपर कोना हर्क ले  
पड़तहि । भ२ सकेए १३.५ गोष्ठीक आयोजक अमोहक आ  
कमलमोहन दूध रतमान आयोजकले हककर सबक पता माग  
रा अगाम ले देल हेथि आ रतमान आयोजक ले मे  
सुरिवाजक माग हेतहि । जगदीश प्रसाद मंडनजीक  
आयोजनमे सब पोश्चपोतीदारी आ चन्दन टीका पाग धारी  
बोझ था अएन छथि, हृदा रंजनी कानमे अपन आयोजनले  
रंजनबोझ रंजनपर रित छथि । ..ओना ए आयोजन सहि  
अकादेमिक हस्तसँ आयोजित भ२ बहन अछि आ एकटा सहि  
अकादेमिक कथा गोष्ठी मात्र मान जअ । मैथिली सहि  
गतिहासमे १७ म सगब बाति दीप जवक कपमे ए जातिरादी  
गोष्ठीले मानता ले देन जा सकत । सहि अकादेमिक मैथिली  
विभागक जातिरादी देखा एक लेख लेख मोसाँ अएन अछि  
जखन ओ मैथिलीक एकमात्र स्वागत गोष्ठीले तोड़ि देनक ।  
परन हमाव सह निखनि-कहि धरि सगब बातिक आयोजक  
कोना संस्था ले होग छन । हृदा आरं ए रंजन छुटि गेल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

-साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीक पहिल सत्रमे रिभूति आनन्द (ढाहवि), मेणका मल्लिक (मनहम) आ प्ररीषा भावद्वाजक (पुनःस्थापना) कथाक पाठ भेल ।

-साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठी अन्त्यमे गंगेशि गुंजन क२ बहन छथि ।

-कथापत्र समीक्षा अंशक मेहता आ वमानन्द मा वमा केनहि । अंशक मेहता केनहि जे रिभूति आनन्दक कथामे किछु शैक्षिक प्रयोग छैकन । मेणका मल्लिकक भाषाक सम्दर्भमे ओ केनहि जे एतेक दिससँ रँगुसवायमे बहनाक रौदो हुनकर भाषा अथवा दबडंगा, मधुरनीयक छै । प्ररीषा भावद्वाजक कथाक सम्दर्भमे ओ केनहि जे कथाकार नर छथि से ते हिसारो हुनकर कथा नीक छै ।

-वमानन्द मा वमा रिभूति आनन्दक कथामे हिन्दी शैक्षिक रौदोपत्रक चिन्ता राख केनहि । मेणका मल्लिकक कथाक सम्दर्भमे ओ केनहि जे महिना जेखन आगाँ रौदो छै । प्ररीषा भावद्वाजक कथाक भाषाकेँ ओ लेखिक केनहि आ आशा केनहि जे आगाँ जा क२ हुनकर भाषा ठीक भ२ जेतहि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ई पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

-तकब रौद श्रोताक रौब आएन, सौम्या सा रिभुति आनन्दक  
कथालेँ अपूर्ण कहनहि, ह्रदा हृणका ए कथा नीक नगनहि ।  
आशीय अनटिहाव रिभुति आनन्दसँ हृणकब कथाक एकठा ठैकिकन  
नैद, "अभद्र मिस कान"क अर्थ पुढनहि तँ देरशिकब नरीन  
बाजकमानक कोला कथाक असन्दर्भित तथापव २० फिष्ट धवि  
रिभुति आनन्द जौक रौदर करैत बहना, अनन्तः रिभुति आनन्द  
श्रोताक प्रेमक उतव ले देनहि ।

-दोसब सत्रमे रिभा बाणीक कथा सगनलेँ ले भवमाड, रिनीत  
उपेनक कथा मित्रिण, आ दुखमोचन साक छुटैत सञ्चारक पाठ  
भेन । रिभा बाणीक कथा पब समीक्षा करैत मर्गगिया एकवा  
रौलेड कथा कहनहि, सार्वगर्माव कथोपकथनलेँ छेष्ट कवरौ लेन  
कहनहि, कमान कान्त सा एकवा अन्तरात्रिक कथा कहनहि आ  
कहनहि जे माए रौथोक अरहेनगा ले क२ सकेए, ह्रदा शीधवम  
कहनहि जे जौ रौथोक चरित्र रौदनते तँ माथोक चरित्र  
रौदनते । कमान मोहन दृष्ट कहनहि जे ए कथा घवरौलेव मे  
प्रकाशित अछि । आयोजक कहनहि जे रिभा बाणीक कथा  
सगनलेँ ले भवमाड लेँ ए गोष्ठीसँ रौलेव कएन जा बहन अछि ।

रिनीत उपेनक कथा मित्रिण पब मर्गगिया जौक रिदर छन जे  
ए उमेवक हिमारेँ प्रेमकथा अछि । सार्वगर्माव एकवा  
महापगरीय कथा कहनहि ह्रदा एकव गठनलेँ मजगुत कवरौक  
आरंभकता अछि, कहनहि । शीधवम ए कथामे लेखकीय  
गमाणदावी देखनहि ह्रदा एकव प्रनर्लेखनक आरंभकतापव जेव  
देनहि । हीरेन्द्रलेँ ए कथा प्रनर्लेखनक कथा मोन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

पाड़नकहि रूदा प्रदीप बिहारी हीरेन्द्रक गप्स सहात ले  
बहनि । ओ एकबा आग कालिक खाडी क कथा  
कहनि । दुधमोचन नाक डुठैत सयावगव मर्गगिया ज़ी किडु ले  
रैजना, ओ कहनि जे ओ आ कथा ले सुननि । सारंग क्माव  
एकबा बेखाटि कहनि । कमनकासु नाकै आ सयावी कथा  
नगनि । शीधकमकै आवसु नीक आ अस्तु खवाग नगनि ।  
शुभेन्दु मैथवकै जेनबेनेन लैग सन नगनि आ कमल मोहन  
दुम्कै आ गत्रा वृत्तास्तु नगनि । दोसब सत्रमे श्रिताक  
सहभागिता शुभ बहन । ..आशीय अनटिहा

३

सुमित आनन्द

सोमा गप्पी धुडेक लोकार्ग

সভাকৈ সম্বোধিত করিত এহি শৌধ্ পত্রিকাক এডিটৰ এৰু প্ৰখ্যাত সমাজশাস্ত্ৰী ডা. বিশ্বেশাখ সান্না, প্ৰাচাৰ্য্য এৰু অধ্যক্ষ, সমাজশাস্ত্ৰ বিভাগ, সী. এম. কলেজ, দৰভংগা, গাটগৰ ওপস্থিত এহি শৌধ্ পত্রিকাক মৌলজিগ এডিটৰ শ্ৰী স্মৃতি আনন্দ কৈ ধন্যবাদ দৈত বঁজনাহ জে একব প্ৰকাশনিক পূৰ্ণ শ্ৰেয় এলী প্ৰতিভাৱান কৰ্মীত হৰক কৈ ভূমি জনিক সতপ্ৰয়াসম্ ও অক বজিম্বেশেন নগ্নবক সৰ্গ প্ৰকাশিত ভূ সৰু। কাৰ্য্যক্ৰম শূভাবস্থ জয়-জয়

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ভৈবরি সঁ ভৈন জখনকি, কার্যক্রমক সঁচানন থত্তন মিহ  
কয়ননি ।

এ বচনাগব অগন মতিরা ggaj endr a@vi deha.com গব  
পঠাউ ।

१.जगदीशे प्रसाद माडनक कथा-यात्रा २.अनुजेश्वर- माझुभाया  
दिरस क रँहल

१.





## जगदीशे प्रसाद माडनक कथा-

हवागु

कौआ डकैमँ पहिल कतौ-कतौ गाछगव पककिक रौन फुँठन  
कि बघुनी रौरौक नील छुँठननि । जलिया अछि-छेत अरमथामे  
किछ रँजा जागत तलिया दूँहमँ निकनननि-

“आग फगुआ डी । बाति भविक हँमैत टान सृजक लालिया धवि  
अविश्रान्ति आरि टुकन अछि । कते सुखव बाति-दिलक मंग छिनि  
बहन अछि । जे जरीए मे खेनए हवागु”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रैजैत-रैजैत चेतना चेत गेलनि । चेतते मल  
दोहबोनकनि-

“जे जैरै सै तेज सै ॥”

रूढ़ि जैरैत-मृत्युकर रीच एहेन जैरैत-पञ्ची अछि जे के मरण  
के जैरैत, रिनगाएँ कर्तल अछि । कियो जैरैत-मृत्युकर रूढ़ि  
ले करैत तँ कियो रूढ़िमे मानैत ले करैत । कियो जै  
रूढ़िमे करैत तँ काते हथौल बहैत । शिरजैक सीमा थिचै  
कर्तल अछि । पौरुष हथौते जल्लि स्वर्जक आगमन हुअ गेलैत  
तल्लि बघुनी रौराक अलिसाएन मल जल्लि दिसि नजबि  
उठौनकनि ।

जल्लि कोला रिग्यार्थीक पहिने कम कोला प्रथमे अछि  
जागत तल्लि बघुनी रौराक मल अछि गेलनि । उठौनकनि  
पड़ने-पड़ने कब (कबोठ) घुमल । मलमे उठौनकनि,  
अनाछि यो-धुआँ यो कोदकिसँ पवती खेत तामि नग ।  
कहाँ ओकरा हब जहाँ नुनि मिथै पड़ै छै । रूढ़ि रीति नुनिये



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

तँ कोनविषयो ले पावत जा सकैए । अँकन मनमे उठनि,  
किछ नुनि देखियो क२ त२ जागत, किछ हाथ पकड़ि सिखाउन  
जागत आ किछ बगड़ि-बगड़ि क२ सिखए पड़ैत छै ।  
ठामनह । पुनः मोनमे उठनि, जल्मि पाणि माथिक दुपव  
डिडलि धारा रनि आगु रँढैत, तल्लि तँ सृजौक किनि  
डिडलैत पुरैसँ पडिम चलैत अछि । अँकै कहाँ अछि । हँ  
अँकैए । थामिमे पाणि अँकैए, तामन खेतक गोनामे सृजक  
किनि अँकैए । मोनमे मँटाव भेलनि । दिसक सगुन उछाड़  
नगनह । फगुआक दिस छी । फगुआक रिदाग सेहो छी ।  
आगये बातिमे टैतक आगमन सेहो छैत । मोन मधुननि ।  
पारनिक दिस छी । रसन्ती पारनि । पुआ-मानपुआ थाएरै, वंग-  
अरीव खेनरै, होलीक रंग रिवहा रसन्त, ठोन-डमलक रंग  
गेरौ कवरै आ नचरौ कवरै । मोन पसीज गेलनि ।

“एक दिसक भोजे की आ एक दिसक बाजे की ।”

ठामन मोन पाछु रँढनि । रसन्तक मध्य, होली पारनि ।  
मायक गजोबिया पछी होलीसँ एक मास रीस दिस पुरै रसन्तक  
जन्म भेल । ह्रदा टैत-रैमिथलै रसन्त मानल तँ पुरै पम्फे  
हेवा जागत अछि । जँ मध्य मानरै तैयो पटाम-माथिक दुबरी  
रनि जागत अछि । गुमवाहन मोन ह्रदछि क२ तुड़ छि  
गेलनि । भल दस रँथसँ होली मनएरै छोड़ि देल छी । न२  
द२ क२ भाजल छी मेय रँछै । सेहो दिसक फन छी ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

झुदा फलौ तँ कश्च तबहक होगए- मिठो होगए, थंझा होगए  
आ यष्ट-मरुव सेहो होगए। तीनु सँजो बहए आ अमजो-  
अमजो बहए। जामाँतो प्रकावक भोजनमे तीनुक अण-अण  
महत छै। भोजनमे जएह अचाव अण विशेष मतह रँलोल  
अछि, एह अमगवमे दौतकेँ कोतिया कात क२ दैत अछि।  
जे काज करैलँ लण्डिन कबए गेलौए। मोनकेँ घुमिने  
उपकननि, रमन्तक आगमनक दिन। आगये सबसँरती पूजा  
सेहो छी आ हवराँह गृहन्तक हव पवतीपर ठाढ़ कबत।  
ठाढ़ ले कबत अछि १० मोड़ घुमरौ कबत। अछि १०ये  
मोड़क रौगनियो तल्लि। सब पवानी थेरौ कबत आ जते  
धानसँ हवक नशि डुमते तते लैयो जएत। पमावी भाथीक  
आगिमे धान-मकआ नारौ हगाँडि मानक समए थनत। झुदा  
सेहो होग कलँ छै ? हेरौ केना कबते, गाए-महिमिक मास  
एकैस-राँगस दिनक होग छै आ मरुक्थक भ२ जाग छै तीस  
दिनक। जहण कि दुनु सँगे बहए। सँगे नक्ष्मी रँलए, सँगे  
एवारत। वघुनी राँराक मोनमे उठननि- अलले कोन छेड़मे  
पड़ छी। पारमिक दिन छी हँसी-थुनीसँ उठैर थाएर-पीर  
मोज-मन्ती कबर। जे गति सरहक से गति हमरो।  
तगले अलले एते मगज-मावी करैक कोन जकबति। वाम-  
श्याम करैत वघुनी राँरा उडागसँ उठैक रिटाव केननि।  
तखन गाम दिसिँ पीह-पाहक अराज काणमे पड़ननि।  
भोवहवराँ नटाँ याक अराज जकाँ अकाण नगनाह जे कि कह  
छै।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

बघूनी राँरौक मोनमे उठननि, ठर, अलले पारनि छोड़लौ।  
जारेँ जिरैँ छी तारेँए ल। मरि जएँ तैँ के देखत आ  
ककरो देखैँ। मोनमे हेरि उंपकननि, किअए ले पारनि  
छोड़ि ? जग होनी पारनिक नाँउपव गज्जत-आँकक, धन-  
सम्पतिक नुष्ट हूअ ओ पारनि किअए कवरैँ। ह्रदा तताहि गाढ  
बुँमि कियो आमक गाढ तब जएँ छोड़ि देत तैँ आम केना  
थाएत ? जाहूँपव सहजहि जम रैसलै अछि। रैन फड़ाहि  
लौआँकेँ की ? खैव जानह जओ जानह जाँत। गामक रात  
छौआँ जानह। ह्रदा परिवार तैँ अगल छी। परिवारक नीक-  
रैजएक तैँ जरौँ दिअ पड़त। ह्रदो छोवा क२ बहरैँ नीक  
ले। कते दिन जिरैँ कवरैँ। आगसँ हेरि हगुआ खेनरैँ।  
ह्रदा खेनरैँ कतए ? परिवारक संग खेनरैँ...

बघूनी राँरौक मोन नीक जकाँ असथियो ले भेल डननि आकि  
दादी आरि ठैकनकनि-

“सौमे गामक लोक हब-रिडि। करैए आ अहाँले तोरो ल  
भेल। आरौँ उठरैँ कि सुतले बहरैँ ? ”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

जहना लोणगव रिसफुठ खेनागव चाह पीरैक मोन होगत  
तहिना बघुनी रौरौर मोन भेननि । योकचन भौहूक रीचक  
करिया तीव तलेत रैजनाह-

“जखन अहाँ आरिये गेलौ तखन किअए ल गाढक जड़ि येमे  
पानि ठारी जे डारि-पात संगतनि पहुँछते । अही संग फगुआ  
खेनरै । ”

रौरौर रात दादीक छन्दैकेँ रैनि देनकनि । छठपछागत उतव  
देनथि-

“अखन जे तीस-पैंगतीस गोलक फुनराड़ि नगन अछि ओ  
केकब छि ? जहना प्रया रून्दारणमे फगुआ खेनागत छनाह  
तगसँ कि कम हय अछि । ”

रूमकी दैत बघुनी रौरौर कहनथि-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

“अथला धरि मोनमे रैगगानी अडिये जे अगन कहनिं आ  
हमर जोड़ि देनिं ? ”

अछहुनक कनी सदृश तीव सानि दादी दगननि-

“अहाँकेँ आन रूनेो डी जे हूँठी क२ कहितो । ”

“अछडा जोड़ु ए सतकेँ । परिवारमे सतकेँ कहि दियो जे  
दुगहव तक सत कियो नहा-था तैयाव भ२ ज३ । रैक पहव  
दुनु गोले लेना जूझानी गितेनो मे सौमे परिवारकेँ सुना  
देले । ”

राँराक रात सुनिते दादीक आँखि मबुआ गेलनि । रँजनीह-

“आरँक लोककेँ निमहते । मन अछि कि ले जे दुवागमक  
तेसले दिस पछुआ कष्टए पु-भव गेल बही । । एँठाम रौंदी  
भ२ गेल बहे आ डेठ रँथक गछाति आएन बही । ”



दादीक रात सुनिते बघुनी राँरा उँठ क२ रैसैत रैजवाह-

“अम्का लोकक मल रैदनि गेल अछि । जेकर दैखा-दैखीसँ  
राँरा-रैछा प्रभावित भ२ बहल अछि ।”

रैजैत-रैजैत जहिना दादी-दुनियाँ रिसवि गेली तहिना सुलैत-  
सुलैत कथा-रक्ता-श्रीता जकाँ बघुनी राँरा जिनगीक रौनमे  
रौना गेली । एक मल गुलाब नगननि उँ दौसब मल गारैए  
नगननि-

“सदा आनन्द बहे अही दुआले मोहन थेलै होबी हो ।”

दादी दवरैज्जामँ आगल दिसि गुनगुनागत रैठलीह-

“कियो बूछारैए आगल महिना ।”





जुआनीक बगमे बगि बगुनी रौरौ गाम दिसि रिदा भेला ।  
दबरैज्जाक रौठ ठपि गामक रौठगव गहुँछते मोनमे उठननि-  
देखा चाली, कत भरतुविया सत देहगव बग हेलैथ आ कत  
जुआन-जुआन अकसमँ अरौव उडरौथ । अदा नगले मोनमे उठ  
गोननि, लोकौ नज तू छी । मिया-पुता केना बग देत ?  
किअ ल देत, खेनछत तू अगनामे, अदा छिछा उडि जे  
पडत आकेवा कि कहलै ।

एका-एकी दादी परिवारक सतकेँ अगले अहँ कहनि । रौरौक  
समाद दादी भवि मोन रौठनि । नीक-रैज्जा दुलुक संगीछा  
हुअ नगल । अन्त-अन्त यएह सत रूमनक जे कहियो ल  
से पारनि दिस । रूठ-पुवानक हुअ छिनि, तँ यादि सरकप  
अनि जेर नीके छत । के कहनक अगिना होनी देखता अकि  
ले । जँ देखरौ कवताह तँ के कहनक जे पाँथि तोडि क  
देखताह अकि उडागल खेल देखताह तेकव कोन ठेका ।  
अदा अहो रौत मोल-मोल उठैत जे रएह देखताह हमरी ले  
देखि । कसँ कस तँ अ छत किल जे सौँसे परिवार  
एकठाम रैनि परनि दिस रिताए । दादीकेँ पोती कहियो  
देनकनि जे आग भानमो तोले कव पडतौ ।



समैसँ किछ पछिहि परिवारक सभ कियो दवरैज्जापव  
पहुँचन । राँरा-दादीक राँत उँ मलदर-पारितीक हाथ सँरहक  
मोममे घुमेत सँरहक झूँत रँग । सभ राँरा-दादीक राँत सुलेजे  
काश पाथि नजबि अँठकोल । बघुनी राँराक मोममे उँठननि जे  
तिन-तण्डून जँ हँठि ज्ञा तँ रिनगाएन ज्ञा सकेए झुदा जेँ  
पानि-माँठि हँठि ज्ञात तखन केना रिनगाउन ज्ञात । तीन  
थाड़ि राँत परिवार अछि । सँरहक अगल-अगल सतब अछि,  
अगल-अगल जिनगी अछि । जिनगियेमे खुशियो अँरैत जागत  
बैत अछि । झुदा ज्ञिना लोक अगला नीक जेन सभ किछ  
कलेए तज्ञि ल परिवारो जेन करैए । भनहि परिवार पौघसँ  
जोठे किअए ल भ२ जेन हुअए । फगुआ दिक उमकीमे मोम  
उमकि जेननि । ज्ञिना रँथी पानिमे मिया-पुता उमकेए तज्ञि  
राँरा-दादीक मोम उमकए नगननि । दादीकेँ राँरा ठीग देनथि-

“जग मान दुवागमन जेन बहए आ पवदेशे जेन बली, से मोम  
अछि आ कि रिसवि जेरो ? ”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

राँरौक प्रेमक उतव दानी लेना ले देखि । राँरौक ले लोच  
(धाँध) झुँदा परिवारक तँ गावजले । मिचमाँ उँगव छिहे ।  
मिलमा कनाकाव जकाँ दानी पोजमे रँजनीह-

“लोक सुख रिसवि जाग छै, दुख मोल बहे छै । किअए ले  
मोल बहत ।”

दानीक पोज देखि छोटकी पव-प्रतोह अगल हावक द्वागमल  
रूमि राँरौक प्रेमपव जेव देनक । प्रतोहक छँछ रौली सुनि  
दानीक मोलमे उँठननि जे झूँहजोव प्रतोह अछि एकठाँ उँतव  
देखै तँ दोसव दोहवा देत । झूँह लोचि क२ थाँ जाएत ।  
तगसँ नीक जे अगल झूँहे कह्य दियनि ।

दानीकेँ हाँसि मालेत रूमि बघुनी राँरौ नपकि प्रेम पकड़ि राजए  
नगनाह-

“कनिसाँ, नर-करबिये बही । मोड-दाढ़ीक पम्ह अरिते  
बहए । तीस माससँ पवदेशे खँछैत बही । जेठ मास द्वागमल  
भेले बहए । द्वागमलक तेसले दिस मेछि या सब पु-भव  
जेरौक सम्र रँलोनक । अगला घबमे छुड़ १-तुसरी बहरै कबए



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

रैखवा न जे लै। भाड़ १-२३ १ जे गोवर्गगोवर्ग कपेया  
बहलै कब। तेसवा दिन छलै जे लै।”

जिज्जामा करैत प्रतोह प्रदुनकन-

“पएले जेनखि आ कि गाड़ १-सराबीस।”

जना प्रदु घोरस पीछ निकलै कान सुखस पड़ डै तल्लि  
बाँबाक मोनमे सेहो भेल। बिहल होगत रैजनाह-

“कनियाँ, निवमली तक लेनगाड़ १स जे लै। तेकब बाद पूर  
दिसक बस्ता थेल कोसी घाँव पड़लै।”

“पाव केना छैनखि ? ”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

“कनियाँ, जेहूँ सभ बहे । धावक पोछे खाली भऽ गेल बहे  
झुदा तेथो अगम पानि तँ बहरै करै । गुना हुनागक सभ  
भऽ गेल बहे झुदा हुनाग ले बहे । रैसी नार भदरबियामे  
झुमे । एकरोव एहिना भेल जे अगल गौशूँक मेड़ि या  
घुमेकान झुमि गेलै । ”

ऊँसुक होगत प्रतोह् पृष्ठनकनि-

“कते गोल बहनि ? ”

“तेबह-टोदह गोल अगल गामक बहनि आव गोछे आन-आन  
गामक । टाजिस-पेगताजिस गोल नारगव छठन बहनि । ”

“कते दिस पु-भव कमाग ले गेलथि ? ”

मोन पाड़ैत बघुनी राँराँ रँजनाह-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

“तेकर ठेका अछि । ह्मदा तेयो रीस-पट्टिस रीथ तँ गेलै  
हएँ ।”

“कअए दल गहुँटे छैनथि ?”

“आग लौव तीनिये दिये बैलौली गहुँटे गेलौ । रज्जाक  
खोड़ै छै क२ पकड़ । गेल । छिनहबै गिबहत बहए ।”

“जौँ ओगटीस काज ले पकड़-तनि तखन कि करितथि ?”

प्रतोहुक प्रम सुनि बघुनी रौराक झुआली मोनमे उठननि ।  
जोशमे रज्जवाह-

“की करितथि ! कोला कि ओतरे देखन-सुनन बहए । मोवगमे  
ले काज भेटैतए तँ आगु रैदु जेतथि । सिनीग्रुड १ अमास,  
ठाका तक ठेका दैतथि । ह्मदा काज केल रिषा ले  
अरितथि ।”



“कोन काज करै छैनथि ? ”

काजक नाँउ सुनि रौराक मोन रौरा मोननि । रौजनाह-

“कनियाँ, काजक कोना ठेकाथि अछि । गिवहसतौआ सब काजक  
बुनि अछि । ओना धन योगनी-कठनी आ पट्टा कठैले जाग  
छलौ । ”

“कते दिन बहे छैनथि ? ”

“सावमे दु-रौब जाग छलौ । घुमा-हिला क२ डउ मास नगि  
जाग छनए । धन कठनीमे तँ एक-नगना काज बहे छनए ।  
झुदा पट्टा समेमे काज छिड़ि या जाग छनए । ”

झूहगव एकठा आगव लेत पतौह पढवकनि-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

“एक-गणना काज केकवा कहे छथि ? ”

प्रतोहक प्रेम सुनि बघूनी रौराक प्रकल्प जाणि उठननि ।  
नजबिगब नजबि दैत कहए नगनथि-

“एक-गणना काज ओ तेन जे फेरबद्ध छलै । एकक रौद एक काज अछै । जेना भास कबै कान छुनि गजबि रबतन छठरै छी । अदहन दग छि । पाणि गवम होखै तखन सिद्धा नगरै छी । गएह फेरा एक-गणना तेन । दूदा जखन बोष्टियो पकथै बहत, तबकारियो रैथारै बहत आ भातो बाण्हरै बहत तखन ओ काज छिडि या जखत । छिडि आएन काजमे अरि क भनमियो आ छुनियो क जकबति पडि जाग छै । ले जू भनमियो असगकआ बहन तँ छिगडि तानमे पडि जेन ।”

“एक-गणना काज केना कबै छैनथि ? ”

“गठुं कली छी । पहिल ओकवा कठलौ । काष्टि क२ जमा क२ देखि । ती-चारि दिनमे पत्रा मरि जाग छलै । तखन





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषिंह चन्द्रिका ISSN 2229-

उकवा अष्टमाहा रौम रौनरौ डलौ। पाणि ठेकिना उँयि क२ न२  
जाग डलौ। पाणिमे रौमक खुँडी पाँठि क२, तीन-टावि डुग्री  
नगा दग डेलौ एक-दोसवारौ दरौरौ केनक आ डुगबसँ माँठिक  
टोका चठ । दग डलौ। पाणिक तबमे सब डुगि जाग डले।  
गोबनाक रौम-पट्टीस दिनमे सीस जाग डले। तखन उकवा  
रुंगरीसँ माँछा-माँछा माह कले डलौ।”

“पट्टीसमे भविष्य काज की होग डे ?”

प्रथम सुनि वगुनी रौरौक आँथि ठरैठरौ गेननि। आँथि  
ठरैठरौगते पाणि पडन खजूरी जकाँ मरुव भ२ गेननि।  
कहनि-

“कनियाँ, अखन अहाँ रौन-रौध डी। दुनियाँक तीत-मीठ ले  
रुमलिअँ रुदा कहे डी। काजे जिनगी डी। तँए काजसँ  
मठरौक कोनिक हवदम कवी। हवदम करैक मतनरै गे ले जे  
भवि दिन देहे धुनी। जहिला बाजमिल्ली मकानक नकुशा रौना  
मकान रौनरौए तहिला काजोक डे। डोठे-काज नमहव नग न२  
जाग डे आ आगु रुँहे डुमिकियेरौ कले डे।”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

“प्रश्न छुट्टि गेननि रौरी ? ”

“कनियाँ, की कहँ ? तबकारी तँ ओना छी जे गाढमे एकठो  
होगए, जा क२ थै दे उँखाड़ि जेँ । उँखाड़िमे जते समय  
नागन ओगँ कम समयमे सजमनि तौड़न जा सकैए । झुदा  
सकड़ । झुदनिहार सजमनि रिसा देखल-सुनल छैरि केना सकै  
छी । छैरि असाव काज तँ ले । मेषमे दूधक तुलना कवर  
छी । तहमे किछ एहेन होगत जे कमे उँमेवमे झुझुझा क२  
नमन भ२ जागत आ किछ झुझुझा क२ रौरी भ२ जागत ।  
जँ छुट्टि जागि, छुट्टि जागै तँ ओ तनेतव झुझा जागत,  
मेहनति दुमि जागत । तँ हननको काज भारी होगए । ”

“रौरी, हेव भसिया गेननि ? ”

“ले कनियाँ, भसियाग कहाँ छी । होगए जे झुझुझा झुझा  
सभक रीट छिड़ि या दी आ अहाँ सभ तितिव जकाँ सभ पीरि  
ली । मर्द रँगि जखन काज कवए निकनलौ, तखन भविष की  
आ हनन की । झुदा एकठो रात रिसागमे जकव बाथक चली  
जे कोन काजमे कते जोखिम उँठै पड़त । जग काजमे  
जते जोखिम होय ओगमे ओते सतर्क बनी । तर्के वास्ता  
रँगै । पछुआ काजमे सभसँ भविष अछि पछुआ मारि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुरीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

सोम रौलीगा। जहिला एक-दोसर जिलागी पौरैत तहिला डाँड़  
भरि सड़न पाणिमे जगमे जौक-ठेगीक संग रियेना साँग सेहो  
बैत। चाणिगव छैछैलेशा रौद, निछा डाँड़ भरि पाणि।  
सर्द-गर्मीक रीच शीवी। तगगव एक-नगना ठाठ भ२ कथला  
एकठगा ठहूँ रौना पछुँ जहिला जौद जगगत, तँ कथला रामा  
हाथमे ठाँ दहिला हाथे दूगवीसँ साड़न जगगत। माझी-  
मछुडक तँ ठेकाल कोन।”

मिलहामिक तोगत पुरोह पञ्चनकनि-

“कते दिक पडाति घुड़नथि ?”

“छेठ रौनगव घुमौ। आ ग सान रौदी भ२ गेन बै।  
कपेया पठा दिं आ अगल कमाय।”

“अनदिला, रिला मिजक सयैमे कोन काज करै छैनथि ?”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

“कनियाँ, रूह समान सब जेना- पछुआ, तैवी, धान गत्यादि  
देहातमे उगजे आ तैयाव भऽ कऽ रैजाव अछि-छले ।  
रैजारोमे काज रैठा जाग छले । उठा काज कले छलौ ।”

२

अतन्त्रेय

मातृभाषा दिस क रैहल

हेमामे मातृभाषा दिस भन, विभिन्न भाषा भाषी लोकनि अपन  
मातृभाषाक प्रति अन्वेषण ओकब विकास , अपेक्षा आ उम्पेक्षा  
पब टितन कयल होयताह । हमहुँ संयोग सँ जनकपुर (   
लपान) गेल बही । जाणकी मंदिरक परिसरमे मैथिली भाषी  
लोकनि मातृभाषा दिस मना बहन छलाह , सभाके मातृभाषा  
महेश्वर मर्मणिआ, का. शिवन मा, प्रा. पबमेश्वर कागर्जा , प्रा.  
श्याम सुन्दर शशि आदि मैथिलीक विद्वान आ टितन लोकनि  
उपस्थिति छलाह । कार्यक्रमक रूप एकदम जनतन्त्रिय छन काका  
कार्यक्रम कोला सभागाव मे बहि त जाणकी मंदिरक प्रांगण मे  
त बहन छन , जेकर काका जनमानसक संस्था अधिक सँ अधिक  
छन , मोनमे जनमानसक उमोहकेँ देखि उमोह भेल । काका



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

देखन जागत अछि जे रूतौ खर्च होएरौक पश्चातो  
जगमानसक सहभागिता कम देखन जागत अछि, झुदा एतए एहन  
स्थिति नहि छन । कावण माहताया दिसस क महत्त्व भाया धरि  
सीमित नहि अछि ओकर महत्त्वक एकठाँ राखकताक अछि ।

बिभिन्न रङ्गक भाषा सुननाक पश्चात किछु मोटरौक लेन राधा  
कयनक आथिब कियो ए कियो नहि कहि सकनाह जे एकठाँ  
भाषिक आन्दोलनक होएरौक छहि मात्र एतएरहि कहि बहन छुनाह  
जे हमरा सभकेँ अधिकार भेटैरौक छहि आथिब हूँका ए  
कियो नहि बुझय ये आरि बहन छन जे अथनि धरि मैथिलीक  
लेन कोणा भाषिक आन्दोलन नहि लेन अछि आ जे लेन अछि  
ओ जगमानस सँ कष्ट क । कावण अथनि धरि हम सभ  
मानकीकवाँ आ मैथिली बोलै आ कायस्थ फूँ रोजैत छथि एहिक  
नङ्ग गे ये लागन छी, जेकर कावण भ बहन अछि मैथिली आग  
अपन फेद धरि नहि रैछा पारि बहन अछि , जाहि जिनक  
मैथिलीकेँ मानक मैथिली कहैत छियेक ओतुका जगता ये ए  
अम छैक जे हम सभ जे मैथिली रोजैत छी ए अगुछ अछि ।  
एहि रियय पब कियो नहि मोटि बहन छथि जे आथिब ए  
धावणाक जग कोणा लेन यदि लेन हम सभ ओकरा निकषा  
कवरौक लेन कि कहि बहन छी । मैथिलीक प्रति अपन मोटि  
सकेत छी जे हमसभ जे जे सारि अकादमी प्रकाशक  
घोषणा रिनस सँ लेन एहि स्थितिक लेन मैथिलीक टितक  
बुझनाह लोकनि किछु नहि रोजि सकनाह सभ कियो एहि  
दुखले छुँ बहनाह जे कहि ए पुआ हमले भेटै जाय । एहि  
ठाम ए तथा उठैरौक हमर मात्र ए नियति छन जे हमर  
सभक मानसिकता केहन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

अछि । भाषाक लेन सब कियो कहताह जे हम अ क बहन  
झी ह्रदा ह्रका भाषाक सेरा लेन जे पाकिशानिको भेटैत छनि  
ओहि संस्थाक अ स्थिति अछि जे ओतय गेनाक बाद अगलक  
बुझायत जे हम कि मोटि आयन छनहुँ हम कि देखि बहन झी  
। आथिब कियोक ? अगल देखि सकैत झी मैथिली साहित्यक  
आ टितक लोकनि एतेक निम्न स्तरक चरित्रक छथि जे एक दिने  
कहतह जे हर्ना महमिय मैथिली आ मैथिलीक साहित्यकमे  
भेदभावरक स्थापना क बहन छथि आ हम एहि धाकाके  
मेठैराक प्रयास क बहन झी आ जखनि अहाँ ह्रक धाका  
देखै तँ ओ उल्लेख छनाह आ अ रीस भ गेन छथि , हम नाम  
लेरैए एहि दूधाले नहि छहैत झी जे लेकाव केँ ओ लोकनि  
प्रसिद्ध पारि जेतह ह्रदा बुझैराक हेतनि बुझि जयताह ।  
तैए एहि रीट एकठा मित्र साहित्यक कहनि जे मैथिली आ  
मिथिला मे सब नागनाथ आ साँगनाथ छथि तैए किनको राले  
लेमी निक रा लेजायक प्रयास नहि द सकैत झी ।

रहूत उल्लेखक स्थितिक रीट , साहित्य अकादेमी अगल छेव  
पेठैबी खोजनक । आदरणीय उदय चन्द्र मा रिलाद केँ ह्रक  
करिता संग्रह अक्षर आ डा. खुशीमान माके ह्रका अग्रद  
प्रवक्ता सँ सम्मानित कयन गेन दुनु महान्वार केँ शुभकामना  
। ओना रिलाद जीकेँ मैथिल टिहैत छहि काका ओ मैथिली आ  
मिथिलाक ह्रदा सँ जुड़न छथि ह्रदा प्रेम ठाठ भ गेन रिलाद  
जीक प्रवक्ता सम्मान सँ नहि अ रिनग्रस । आथिब अ कोन  
दरौरे छन जे प्रवक्ता मे देवी भेन । रा प्रनः उएह थिम्सा  
दोहवाओन गेन जे एहि लेव रिलाद जीकेँ द दियौन्ह रहूत  
आनि कयल छथि कि कोला दोसब हर्मुना । आनन्द क्रमाव  
माजी जिनाक हरा साहित्य अकादेमी प्रवक्ता भेटैत , ओ उटितो  
जे पहिन लेव मैथिली मे कोला हरा लेन प्रवक्ता भेटैत आ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

ও হুণকা ভেঠেনহি এহি জেন হুণকা শ্রুতকামনা । ওণা হুণকা  
জলিত হুণকা সঁ নিক নিক লিখনিহাব মৈথিলীয়ে হুণা সাহিত্যকাব  
ভুখি নাম জের উচিত নহি হুদা প্রাণ উঠন জে কোণ কাবা অছি  
এহি জেব সত প্রবন্ধাব একটা রঙ্গা মে সীতিত বহি জেন কাবা  
বচনা তুবীয় অছি তঁ কিয়াক মৈথিলী একগোষ্ঠ প্রসিদ্ধ আলোচক  
সঁ শ্রুতন জে হুণা প্রবন্ধাব জিনকা ভেঠেনহি অছি ওহি পব কি  
কহর অছি ও কহনহি জে ঠীকে ঠীকে কম সঁ কম গাগ তঁ ভেঠে  
জেনহি । আ হুণকা নাগন জে ঠীকে সাহিত্য মেহো আর রীজাবক  
টিজ বঁশয় জা বহন অছি ওকব অর্থ , ওকব মহতা ওকব  
সামর্থ্য ক্ষিণ ভ২ বহন অছি ।

এহি রীচ হোবী সমাপ্ত ভেন আর মিথিনাক গায় সভমে ফাগু  
নহি গায়ন জাগত অছি , গায় সরেদললিষ ভ জেন অছি ।  
সাক্ষাতিক টিগ পব অসমক একটা বিদ্রাণক লেখ মোণ পড়ত  
অছি হুণক নাম ওতেক মোণ নহি অছি কিন্তু ও সাক্ষাতিক  
পবস্বাব পব জে গঙ্গা কহল ভনাহ মে মোণ অছি । হুণক  
টিগ অসমক পবস্বাবক বিযয় মে ভন জে এক দিল অসম মে  
এহন স্থিতি আওত জে বিন্ সঁগ্রহানয় আ মটক রত্ন ভ জায়ত  
। ওভুকা কি স্থিতি ঠীকে মে কহি নহি সের কাবা ওতয়  
কিহ সাক্ষাতিক চেতনা বঁকী ঠীকে মে হু দেখন , হুদা  
মিথিনামে ও ঠীকে বঁগমটক থেকা গৃহক রত্ন ভ জেন অছি  
সঁগ্রহানয় মে বাখন জাএ হুদা মিথিনা মে অখনি ধবি বিন্দুত  
সঁগ্রহানয় নহি অছি । এ প্রাণ এহি দুখাবে হু কহি বহন ভী জে  
একটা প্রাণে হকাব পাঁতি ক আয়ন ভন ওহি মে অগন  
সাক্ষাতিক চেতনারে বঁচসরীক জেন কহন জেন অছি আ জেকব  
কাবা ও জোকনি ফাগু মহোমের মনা বহন ভুখি , হুদা তঁ জে  
কলৈ ভী মে ঠীকে হুদা কি একব দুবগামী প্রভার হোয়ত রা

बि दे रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

झरुनिक कानि वंगकर्म अ ठ नहि मोटि क जयतान जे निक  
तेयारी आ प्रभुति सँ पोष प्रवक्तार भेटै जाय ? अस्तु ये  
रामती नरवान आ वामनरमीके सम्पूर्ण मिथिलारामीके मंगलमा  
शुभकामना ।

ए बढागव अगल मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पव  
पठाउ ।

### ३. पद

३.१.१. निर कमाव ना 'ष्टन' २. न. नमन प्रसाद ठाकुर ३. प्रामन  
सुमन



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

३.२.१. उमशकशि ना २. कमल मोहन दूध ३. प्रेमचन्द पीकड ४. करी ना

३.३.१. अशित शिरी २. गिरिव ना ३. उमेशि पामराण

३.४.१. जगदीश प्रसाद माडन २. अशित मल्लिक ३. कसम ठाकुर

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह संस्कृतम् **ISSN 2229-**

३.३.१. टिप्पणी कमाव ना २. गणन कमाव माह

३.३.१. श्रीराम कमाव ना २. निशान्त ना

३.१.३. निशान्त कमाव



३.५.५.बाग बिनाम साह २. प्रभात बाग भट्ट

५.शिर फगाव मा 'छिन्नु' २.ब. नमन प्रसाद ठाकुर ३.प्रियाज स्वप्न

५.

शिर फगाव मा 'छिन्नु'

करिता-

मगव बाति दीप जवग-

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

बाति माल काबी गहव

गत-गत शीत

जीर अजीर आफत

बजलीक दीनाम

अफिक रैटराक लेन

लोक जबरैड दीप

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

संज्ञातक विकासक र्ग-र्ग

मन्त्रकथ चेतनशील होगत होत

पहिल गजोतक जेन...

खव-पुष्पाव जावनि

नन्दा बुन्ना हम्प

सुत छोडि कग्याक राती

ठिरैड ीक रैदना जेम्प

रैहकैत बोशिलाये गरैत पवाती

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बुद्धिक विकास भेल...

बिदेह तबंगमे

लोकक उमंगमे

बिदेहक जय भेल गेल...

सब ठाम गेलोत

हृदा ! रौदेहक घब अन्हाव

मात्र निखते बहरै



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

ककरोन लो कहरो

ले बूमत कथाक विकास

ककरोन लो डन आभास

दधीटि रैनि साङर लेल

आरि गेलनि

मैथिली कथा जगतमे प्रभाव

सुरज नि भवि अगल

करेजकेँ जड १ क२

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

ले मेठी सकल

ए रसुलबागव सँ

रिगलित मागुयक प्रवृत्ति

प्रताप दीप रावि

अगल ककश्रावि सम्लवि

कथा मागवक जमल तबंगमे

दिश्व नगलनि लिनकोव...





समाज जागत- अ ठन बिस्वास

रूदा ले आदि भेठवनि

ले भेठवनि डोव...

किनडेविगव अगमिगत

कथाकाव नर लेननि निरर्षि

जागवणक आगिमे

कहियो तँ सुखतनि

रैदेहीक नहलैत लाव...

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

चलि गेना अभिनाया जेन

उत्तराधिकारी सभ खेनागत छथि

अष्टौ रज्ज्वर करिया-मूमरि

उद्यत छथि अस्मिकाव लवरौक जेन

पाग पहिबरौक जेन

सगव बाति दीग जवय...

बग्या-रिबुति गोकथा

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्हीक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पाल्हीक ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह **ISSN 2229-**

गव अर्गोले डुथि

महेन्द्र मसणद पजिठले डुथि

समालोचक- उद्वयक सुतय

मात्र राचक मी टिकवय...

कहेत डुथि बुठ डी

तखन गोथीमे आरि

नाटक कवरौक कोन आयोजन ?

दीप रारि दुआवि ले जवाउ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जे जगदीश जगन बहत

उकव गामक जिनगी के स्मृत ?

उ अडि समाजक कात

कहियो होमए देरै

उकव साहित्य साधनाक प्रभाव

किएक तँ उ थिक त्रैसात्र

जग माथिक अन्वेषक



उ केना हठत माष्टिक दीपक रैन... ?

जौ दृष्टिकोणमे बहत छल

तँ बिरल केना निर्माण ?

उग कठकोकालि सरहक रीट

मैथिली छथि दूरकल

सगल बाति दीप जलल

अन्धकार सब संसार सङ्ग

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

कथामँ केना पावस शिकसय... ?

२

स्र. जल्लष प्रसाद ठाकुर

"हे ले चन्दा"

हे ले चन्दा जेले जेले सल्लस पिया पवदेशे ले.....

.चन्दा.... ।



तोहे ल उल्लो ड आसब बाति  
रिसबन बहे डी पिया केव पाति  
तोहे जाँ उल्लो ड दीया राती दीया राती  
होअये मोन ये कजने ले .....  
चन्दा..... ।

हन्व दूःख केयो ल रूनेया  
कोना ओ बहे डधि केयो ल कहैया  
कहियोन्ह बिकन डैह हूकब दासी हूकब दासी  
कसन किए डधि गहने ले .....  
चन्दा..... ।

पाति हूके आजू गारैय डी  
डरि मे हूके जीन बहय डी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

बैरि नहि आरि रैसन उदासी रैसन उदासी

नहि अछि कोला उदेशे ले.....

.चन्दा ले.....

रैहूत जतन मँ जादया के रूमेनहू

नहि दोसर के हम किछ कहनहू

आस रैसन अछि नहि हम रिसवि नहि हम रिसवि

टाहि एतरेहि, नय किछउ रिशेय ले.....

..चन्दा

जहिया मँगनहू एतरे मँगनहू

सँग बही रैस एतरे टाहनहू

जन्म भवक दुःख कही केकवा मँ कही केकवा मँ

जालेथ ओ एलेन रिदेशे ले.....

.चन्दा





३

प्रोगन न्रम

गजन

५

नागन एतेन बिराज रिसवन्हुँ

अप्पन अप्पन काज रिसवन्हुँ

सट गुडु त२ नाज रिसवन्हुँ

सिखन्हुँ नुँ बि जीरैय के जतय



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

किसे ओहने समाज रिसवनेह

हुँठन अविगन, मोहन सरे किड

नागन एहेन बिराज रिसवनेह

मासुव मे डन खुरे बङ्गासी

घब मे नखवा-नाज रिसवनेह

मम गारैय डन गीत गिनन के

सुव के सँग मे साज रिसवनेह

संकाव के रात कबी नित

जीरैय के अन्दाज रिसवनेह

हम डी बाजा, रौकी पवजा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रूदा अरुण के तज बिबनहुँ

२

ठैहूँ छै प्रणाम देखय छी

रैहूँ दुब, पब गाम देखय छी

भेन रैहूँ रैदलाम देखय छी

कानी-पूजा, हथुआ छैठन

दाक के परिणाम देखय छी

रागक काहूँ कोदारी सदरिखन

रौंछी केव आबाम देखय छी



कछु मूक्य मे नरतुविया केँ

तेहूँ छी प्रीति देखय छी

अपनापन के रीत निगता

घर घर मे संग्राम देखय छी

धन के अर्जन घुमथोरी सँ

हूँके रौंका नाम देखय छी

स्वप्न स्वावक आनी छुँछन

तखनहि केरन बाग देखय छी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रार्थक रात कवय डी

किये अहाँ कहलहुँ, अही नर मय डी ।

अहाँ, रार्थक रात कवय डी । ।

आम नगेनहुँ, कप सजेनहुँ, लेकिन तखनहुँ अहाँ नहि एतेहुँ ।

काज कवय मै दिन कठैया, कहवि कहविकय राति रितेनहुँ ।

पेठक कावा, अहाँ रिष सज्जन, जहिना तहिना बहय डी ।

अहाँ, रार्थक रात कवय डी । ।



सबै सखियाँ के साजस आसन, सभहक घर मे रोजय पासन ।

उठै जेना डी हँसी फूल पव, जेकिन तीतव सँ डी घासन ।

बिबलन के दुख, लोक बुझत की, तरे तब जवय डी ।

अहाँ, रार्थक रात कवय डी । ।

पीड़ । मन के, बिग्न रँगन के, ककवा कहँय दुख जरीन के ।

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

किछु नय किछु मजबूती सरके, ताकु अरसब स्वप्न मिनष के ।

आर्थिक लाव सुखन पव भीतव लावक रंग रहय छी ।

अहाँ, रार्थिक रीत कवय छी । ।

ई बचनापव अगल मतिरा ggajendr a@videha.com पव पठाउ ।

१.उमप्रकाश मा २.कमल मोहन छुम् ३.प्रेमचन्द्र पंकज ४.करी मा

१.

उमप्रकाश मा

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

गजल

१

मोक्षक आस सदिखन रनि कइ छैत अछि ।

किछु एना कइ जिनगी हमर रीतेत अछि ।

मेघक घेब मे भेलै स्वकजो मनि,





ए पव खुनि भ२ देखु मेघ गवजैत अछि ।

हम कोना क२ रिसवरै मरुव गिननक घडी,

बहि-बहि यादि आरै, मोन तडपैत अछि ।

देथै छी कते प्रनाग रिन मतनरैक,

दुप अछि ठोठ, राजै जेन कहबैत अछि ।



झुंझी मे धरौ छी आनि दिन-बाति हम

जिद मे अगम, "उमक हाथ सबकैत अछि ।

(रहने-करौब)

२

जीनाग भेलौ महुँग, एतय मवरौ सतु छै ।

महुँगीक टाँगव गडन, जेरौ सतक गतु छै ।



जनता दुले भाँड मे, चिन्ता चुनारक रँगन,

झुर्दा रँगन लोक, लता मरै कते मनु डै ।

किछु ले कियो राजि बहलै नगछे नाच गब,

रौमाव डै छैन, नाली पीनिया अन्तु डै ।

थमि बहन देरौन लेतिकताक मित राछे मे,

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

आषाढ कल, लोक अपल मोट मे गनु छै ।

छाकत कपीबक सुकजो, आस पूबत सभक,

छिन्ति कियो "ओम" कहते, भेल ले अन्त छै ।

(बैरह-बैरह)

२



कमल मोहन दूध

गजान

1

कगनीए पव नाह नलीए, रौजू नहि ?

आँठ-सगाँठक धाह नलीए, रौजू नहि ?

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-547X

मोमि-कनम-कागत धेल गबोपष्टामे,

एकहू नहि प्रवखत नछै, रोजू नहि ?

भवन-प्रवन दवरैछाँ आँगन सरैजनिगाँ,

दोगे-दोग अरौत नछै, रोजू नहि ?



कोश रसोत सिहकले जगमावा गढवा,

गामक-गाम रोगाह नछैए, रोजू नहि ?

जाहि आथिमे भवि जिगगी रौहियगतहू हम,

पेनी तकव अथाह नछैए, रोजू नहि ?

रोगात बहत एहिना मरनहरा ग्वमिष्टी,

लोक नहि अवथाह नछैए, रोजू नहि ?

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

गीका-मथगमे उज्जमहन धर्मज्जी,

लत उकव मथगह नलीए, रोजू नहि ?

हज्जी-गुदा केव हरीका- सौजममे,

कफरो आग घराह नलीए, रोजू नहि ?





पाहुँ जँ बलि अक तँ एसकब स्वप्ना की ?

काषक रौतले मोना की नूननून की ?

जीवा अए जेनहाव जाणकीक लेहव केव,

पोथरि महुवाह तँ बोहू की तन्ना की ?

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

मिथिल अर्थो नए बकलन- ब्रधकन भगिषमाण

तकव जज्जातक ँपजा की मबहमा की ?

भङ्गोष्टिनाम अकछि लोक ररुनक द्दष्टी

तँ दवरौबक कोष्ट-काषुषक ज्जमा की ?

पथलौष्टी डिहराव डातियो पाथव के,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

तकब गोरिया ग्रन्थन की अर्थिज्ञा की ?

धातुक रौमन दुष्टजोगव रौमियागत अछि,

मैथिल रौमन सारुत की सकटूना की ?

ऊँची मावध जे रौमन सप्पात था क२

तकबा नए छै गाँधी की आ अन्ना की ?

बि एन रु मिहै *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पारिषद अ पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

( दुनु गज्जन बिना रैलवक अछि-सम्पादक)

३

प्रेमचन्द गज्ज

गज्ज

५

हम रात अही केव गीत कहै, नहि गज्ज कहै



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बैक कहै मीठ नहि, तीत कहै, नहि गजन कहै

टाढ़ुव अपन पमावि बहन अछि माथापव सय्यकक रौज

कोन बिधि रौटत ग्रीत कहै, नहि गजन कहै

कतरौ माँछि सँघाएँ ठेठ नहि मानै हम अप्पन हावि

टाक नान गढाडि अपन हम जीत कवरै नहि गजन कहै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

गगनक झूठकेँ चुपचा कतरौ ठाठ खन केव शीसमहन

रैस कथनहुँ रौबुक भीत कवरै नहि गजम कहै

हाथ पमावरै बहत पमवने, झूठे छैठ कवरै तँ की

कमि दुमि झूठ रिगवीत चमरै, नहि गजम कहै

२

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह* १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

गजमक ररुह्य हय अंगन- घब- दुआवि लिखर

ररुह-ररुह- कनगररुह-ररुह ररुहररुह लिखर

माँठ छैक छुष्टा आ गाड़ । मरुथरुह कठैक

ररुहिन हर्मिनकेव सुवजाक वरुहररुह लिखर

थारुहमे ढाँष्ट तेनि वरुह्याक हारुहरोम-

सुवमिहारुह केउ ढरुह तकले गुरुह्या लिखर

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

बाबन खेजोबास, पोथीसँ दूब कएल

जिखगीक रौम उयेत लणक भोकावि निखै

बाटि बहन लोक आग असनी नटनिग सत

नटा बहन पबदसँ केउ पबतारि निखै



289



तबहथी दीप जवा हम ठाले डलौ ,

अहलक प्रतिष्ठा मदा हम ठाले डलौ ,

अहाँ आँखँ एहि राँठे हूँ गमे डलौ ,

जेलाँ किँ हथो जवा हम ठाले डलौ ,

डी अहाँ कठोव देखन ले आँखि लाव ,

रुदा कानि आँखि हूँ हमा हम ठाले डलौ ,

हमर दर्दक मोन ले जानन अहाँ ,

कलेँ रूमितहूँ राखा हम ठाले डलौ ,

अली केव आँखि मे जौँ मरै कहियो ,

ले आँखर नामो कदा हम ठाले डलौ ,



रौदरी अहाँ दर्द रूसरौ की हगव,  
रूदा रार्थ पीड़ । रौता हग ठाले डलौ

२

--- गजल---

जग मे रौंटी केँ सन्मान भेटै कहियो,  
माग रौंगक अतिमान भेटै कहियो,

माँ केव कोथ सँ लेलै दुःख जन्म,  
रूदा अरिकाव सगल भेटै कहियो,

भवि देगे केँ आग सस्कावले छै रौंटी,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

अपण समाजो मे माण भेठै कहियो,

गहुँट गोलै रौंठी अतिरिक्त अखण,

रसुंधवा पब सभाष भेठै कहियो,

भेन टोपठ मिथिला दहेज प्रथा सँ,

दहेज रीष रवदान भेठै कहियो,

घुँटि मले "करी" पृथक्क समाज मे,

एको दिन नावी प्रधान भेठै कहियो.. ! ! !

३

गज्जन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

गजरे बिशी हूक अथिमे

अजरे कथा हूक अथिमे

हम रैनन जाग मदिथन

भवन रौथा हूक अथिमे

भिजन हम अथिक अलोते

कावी घटा हूक अथिमे

समाहित भ२ गेनहूँ कथला हम

दरैन दु रवा हूक अथिमे

कोयना भै गेनहूँ जवि जवि हम

जवन ज्ञाना हूक अथिमे



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रौहोशे तँ छी अखन धरि हम

अजरो निशो हुनक आँखिमे

४

हे ये मोना, अहाँक कप नली मोना जेकाँ

गोब गान पब तीन कोला जादू ठेना जेकाँ,

केशि मेघो सन कारी गोब गवदन शोभैए,

जुँझी अएनचन अहाँक नाग फेना जेकाँ

टितरण टटन एहन नाछैए हिनगी तेहन

ताहु पब काजब मशीन भौ कमाण जेकाँ,



ठोव पातव एहन पाणक पोष्टिया जेहन

नानी नगरैए छी जखन नली स्वगा जेकाँ,

देह डुबहव एहन पाडु कमियावक तेहन

बस भवन पोले-पोव टीनी रसना जेकाँ,

अहाँ जखन टीनी रौष्ट मोन होए उटै

गाम गाम गमकी एहन हुनक दोना जेकाँ ।

३.

सगरो नगरी मे कतेक, मोव भऽ गेलए

बि देह बिदेह Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अग्रेल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

हुषक कपक गजोत मँ , भोव भऽ गेअ

चौरैण केव रौद चम-चम चमके एषा

बहा गजोबिया, बसिक चकोव भऽ गेअ

केखला गदवी जौँ हाठन, जेठोह पहीव

देह हुषकव मजन , पछेव भऽ गेअ

अनुगम सुनैव नगौत जेना ओ अल्लावा

मेषकाक कप जेना कोला थाव भऽ गेअ

ओ जेठोण अगवाग, कनेज रूठरौ गिष्टे

जोवा देखेक जेन तहनथोव भऽ गेअ





ई बढागब अपन मतरा ggaj endr a@vi deha.com पब  
पठाड ।

१.अमित मिश्र २.मिहिर सा ३.उमेश पासराण

१

अमित मिश्र

पहिल छिफना

मञ्जवक दिन सँ पसवत स्वर्ग ,  
हर्षित मोन स्वर्ग मातन गंध ,  
हुमिये कहे छी कोयनक गीत सुन जाग भूयो ,  
सट कहौ रँडेत छिफनाक दर्शन कब जाग भूयो ,



डाँठि - पात बुरैधन हवियब छफना ,  
पौघ-छोष्ट , राह ! केहन कप दैरै बटना ,  
गहिन छफना सँ चठनी थारी सज्जन ,  
मान भवि के रौद झूठक झुद रौदजन ,  
एथल सँ मीठ बाजा नागि बहन ,  
रैयँग मानदह डकि क थोरै आशि नागन ,  
धन्य भेन जिणगी देख गहिन छफना ,  
"अशित" बमानक धान मे रैनन रैगना . . . । ।

२

ओकब मुँह नालीए कते म्हास सन ,  
कत गोजी चमक ओ गुनग के टास सन ,



मौनगत प्रनरिक ठोव ओकब किअ ,

लौवाएन कावी लेन , जे राग सन ,

कैमो ले प्रहन पसवन धवा पव किअ ,

देन पौठफुनियोँ भेल अगमान सन ,

ठैना कोन डागन केनके आग यो ,

झुकी गेल केवा कोयनक गाँ सन ,

दिन मे आगि नागन छै रिबह के "अमित" ,

पवदेशी पिया भेला अगन ज्ञान सन . . . । ।

2221-2221-2212

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili*  
*Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह - करीव

२

बिदेह मा

हागकु

टी टी कलेत

बिगडा केव बिगडा

ताकय पानि

कावी बिगडा

बीट दुगहबिया

बिगडा बिगडा

300



दावा पाणि ल

माय रौग रौहव

बीटा रिनाडी

एहि बौद मे

रिग पाथि, निर्जन

हवि रौटाँ

१

स्रज्जक नाम जपेत् सगले बर्क पसवण डै

साधूक तेय धरि सगले बारा अवबन डै



सबै छै घिछल नक्काण लेखी अपन टाक कात

जका दलन केव नाम पब सबै समबल छै

कग गेलौ रैदलि जमाना संग राखबोक आरै

हनुमानक स्थान पब आरै मारीच भबल छै

नियमरैछ हेलैर नष्टी आरै करैना सौ तीत

एहि रात पब सगले आरै आगि धधकन छै

२

कसौदा - ए - बिदेह



जग घुमन सर्वत्र रुद्रा त्राण पावन रिदेह पव

सरै गाम झुद टिथि टिथि लोक आवन रिदेह पव

गज्जन कता करौंग लंगकु दुन्द करिता रा हो लोना

मातृभाषा मे निखन देखि त्राण रोजन रिदेह पव

सरै जाति धर्म के मैथिल जे एकत्र भेना एक ठाम

अपण मोक्षक तार कहि धूम जमान रिदेह पव

बगडा मगड । आदर मान डिक अपण लोक जेका

शुभाचरित सहित रिधा के सौसे देखन रिदेह पव

दूर्जित छथि जे गुरुजन अग्रथा, त्राण भेटैक नहि

पारि माझदर्शन करिगन नित रैनन रिदेह पव



देशे बिदेसे गुज्जन गान गाय मिथिला भेनी प्रमल

गुज्जन नतमस्तक भेन मिथिला मज्जन बिदेह पव

हुम्ल सहित प्रमल पिछुडि लोक केनक रहियार

समागतव अकडमी छे गोन रैनन बिदेह पव

३

कसीदा - ए - रौदेही

मुन्य रूमि गार्ष्टिक अर्न जग्न खेते जेनह् रौदेही

नारी गान रौतारैय जेन स्त्री कप प्रेमह् रौदेही

धन्य उठा नीपेत पोछित अर्न गुज्जन भोजन के





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

उही धन्य न के अहाँ स्मरण केनहु रौदेही

देशे बिदेशीक बाज्जा आयन देखौँ अगन जेब

देखि बास के दूरे से अग्निर अहाँ पौनहु रौदेही

कमाना कोशी रौगमती तजि लह भेल सबजु सौ

आय अयोध्या भेल धन्य एत अहाँ एनहु रौदेही

सम्बर महायो अग्निर बास सम्बर रौनन धाम

तीन मास दियब संग पूर्ण अहाँ भेलहु रौदेही

पिता रचन के बाधि माण देशे तजि चला बास

संकाव के पाठ गलेत संगे अहाँ गेलहु रौदेही

निष्ठता के नाभ उठाव वारु ठकरी आयन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

देखि जठाय पखलीन डडे लाव देनहु रैदेही

भोव सम न प्राय निरदल बारण आरौ लोख

पव प्रकथ राजू कोना, त्रिष ठोठ पेनहु रैदेही

अग्निगर्विका देन तखला धोरिया भवनक काण

मिथा आलाप रूमितो पतिक मान केनहु रैदेही

जीरण छोडि कटरा जन गोलौ जंगन कष्टिया

सूर्य समाप्त दुहु पुत के कोना पेमनहु रैदेही

कतेक रैड्या भौकन कनेज ओव कतेक छै राकी

प्रवर्णविका देखि सोसा धवती पेमनहु रैदेही

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

३

उमेरी पारिषद ३ दर्जन करिता-

३६ हात-छात

रैड रैवारै छै हात

एठासक हात छै गाना-गान

लोड-सड़कलै देखियौ तँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

कदरौ गज्जब सन छै थान

ए झूठमोसा लता सभकेँ

कोण ले किछ कहै छै

भवि रँवसात

साँप-किछ एक डबस

साँसे घब घड़ छै

एक-दोसबसे एकता ले छै



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

## 547X VIDEHA

যএহু ঙ্খিএ কাল

ৰঙকা লতা-মণী ছিঁ ট একব মতনৰ কী

କତେକ ରୈଖିକ ରୈଖିକ ପାଠ୍ୟ ଓକବା

## কেনা কং গনটে বাজনাতিক দাতি

মাস্থম জনতাক সংগে

চলৈ ড়ৈ চতুৰ সিখিবক চালি

ଏ ରିଏ ଦେକ ସମୟ ହେ ଶତା

## ଭିଜନ ସିନାଥ ମନ ହେତୁ ହାତ

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक ए पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

अथन तँ खानी पागये स्वमाग छै

सगत गिछै छै विकासक डका

रूपा घबक आगाँये

सँवे रँग कोकिआग छै

कले छै कोला काज जेना कछुआक टालि

रैड खवाग छै हान

अँठासक लता छै याना-यान

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

रोड-सड़कलेँ देखियौ

कदरौ गज्जाव सन डै थान

जहना गण्डिया तहना लगान ।

35 पथ ग केहेन

गुज-गुज अणहबियामे

केना हेवा गेल हमर मोन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

आरंभ सम्हावर केल

अपगम ज्ञान

ले पाडाँ डोडै

महपाष दक-शेवारी

ले पाडाँ डोडै संगतक लक्ष्मण

जेम्बेव जाग डी सगले गुणाग डी

पथ ग केल





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

जगपति चलेत पदताग छी

आग मवनामन भ२ गेल हमर अरम्भा

कयष्टक मवत छठपठाग छी

केहेन कठिन ग वस्ता

अगल प्रमन हम गुमवाग छी

दोसबकेँ सँदेशे कि देरै

ल जिउँ छी आ ल मले छी

कवलीक हन भोगि बहन छी

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह ISSN 2229-

अगल सभ कक रिटाव

बनोदकृत रैली देशे ओ संसार ।

34 गृहस्थ सरहक लाल

सभ किसान

भेन अडि पवेशिण



समयपर रवथा ले भ२ बहन अछि

कैना लोपाएन धान

रिति गेन श्रोक मस

थेतमे गिवाएन रिखा

अथि क२ भ२ बहन अछि नशि ।

जोतन थेतमे गवदा-धून उछि बहन अछि

किमाण सभकेँ एरेव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

थेतीसँ आस ठूँठ बहन अछि

अखन धरि ले तेन गानि

सभ गिबहत मेघ दिस देखि बहन अछि

गद्दे भगवान किअक भ२ गेल नवाज ले जानि ।

सभ किमान तेन अछि पकेमान

समेगब रूखी ले भ२ बहन अछि

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

केना बोपाएत धाव ।

पढिना मान रौठि मे नशि भ२ गेन धाव

हम किमान खेतीपव निर्भर छी

ऐरैव सुखाव भ२ गेन किमानक ज्ञा बहन अछि ज्ञाव

सभ किमान भेन अछि पकेमान

समैपव रूखी ले भ२ बहन अछि

केना बोपाएत धाव ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

33 मिथिला महान

ठाठगव

नतवत तिनकोव पोथविमे मथान

अथार मासमे

मुनि-मुनि क२ किसान बोसोए धान



जगमे सभसँ सुन्दर अछि हमर मिथिला धाम

भाषा आ सभसँ देहि जोडाएन श्रीराम

रौबिमे भेटैए पाष

दुड १-दहीक जव-जनपाष

मैथिल मिथिला महान

हबक पाछाँ रंगना घुमैए

हबरौहा जोबसँ

रबदकेँ राबू भैया कहि छैए

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह संस्कृतम् **ISSN 2229-**

आविषय रैसन बिबुधतरा

थुशीसँ दगए अस्काण ।

हमर सब सुन्दर मिथिला गाम

मैथिल मिथिला महान ।

माता-रैलिन सब खेतमे गरैए मोहब-समादौल

घुमलैत मेघ देखि करिकै हर्षित होए मोन



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

हवरील जलथेमे थागए

मकआ लोठीगव स्वकथन नून

बैहए पढरौ हरा

पानि पड़ैए सम-सम

रयाँक मठकसँ छुँछैए आसगाँ

सभसँ स्वन्दव हमार मैथिल मिथिला महान ।

32 लेखन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

जिन्गीक सङ्ग्रहमे

जिन्गी जिन्गी

हम बिन्नी गोजो

कि हमर हेबान

कि हमरा बेठन

सङ्ग्रहक बास्ताने



हम बिदेह बिदेह

महो बिदेह बिदेह

कहि बिदेह बिदेह

पगडीम बिदेह बिदेह

निकलि बिदेह बिदेह

दुकि बिदेह बिदेह

महो बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बिदेह बिदेह

माथिली बिदेह

धर्म ह्य ले मिता सकलौ

जागत धर्म छुट-बीटक

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

अखन कमी महसूस होखै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

ए सब रातक

कि कबर और तू जिन्गी

अहिना गजबि गेन

जिन्गीक सफबमे

जिन्गी जिन्गी

हम रिसबि गेलौ।

31 दुब

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

महिगागक द्वावरै

श्रीमगाग चर्चा गेन

सभ भाड

एतए गवरीरपव गडि गेन

कियो भ२ गेन

खबरपति कियो भ२ गेन खबरपति

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

कियो बूढ लोकी

जेन मरि गेल

टलेए अ शिनिनि

एतए अलि जलि तलि

कियो सामनक गद्दीपव

लेस बाज करैए

लेकरो लेली-लेली

डाकूबी तँ अजिनिनिग पढ़ैए

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

ककरो रैछी

घलेनु लोकब रैनि घबक काज करैए

बोज मेहनति

मजदूरी करि क२

जीरण रितरैए

गवीरक रैछी

छन्गीठनमे कपैया रिय



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह ISSN 2229-

अनुसूचित जाति मरि गेल

महंगाईक दान

आसमान छटि गेल ।

30 रिडमरणा

कतेक निथर

दलितक रैथी

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम यैथनी पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय संस्कृति ISSN 2229-

सनहमे गायक सँदेशे

कतेक निथरै

समाजक रिडम्रणा

आर्थिक लाव न्वथि ठान

दर्द ले लोख कग

ले बूमत कि अछि मूठ

कि अछि साँट

बि दे रु मिहे Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-

ठकमे ठक जोरि बहे

बुमोए अगलके रडका

खुद ओ अगल भितरन कारी अडि

दुमेल रगत तडका

रड-रड करैए नाट

दलितक प्रगतिन

जनक गलैए लिका आट

कतेक लिखै

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

दलितक लेखा

सनहमे गायक सँदेने ।

29 दियाने राँठ

अगबहि घबमे

हेबाएन डी हम

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

बिदेह हिस्सा

बिदेह बिदेह क२ बिदेह बिदेह

पञ्चम अंक

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

दलित अस्फोप कहि क२

कबल अछि

एकत हगवा

उली एकतसँ

छलि कब आएन छी हग

सहजो सत किछ

सनहेशक सताष बहिलो



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

अहिल्या तक दुषा बहलौ

आग आगि

हारा क२ देथि बहन अछि

उ हारा

अरौ अगुण बिस्माक

रौत क२ बहन डी हम

अगुणहि घरमे

हेबाएन डी हम ।

बि एच् रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पार्श्विक ए पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह संस्कृतम् **ISSN 2229-**

28 पूर्णिमा

श्रुतिमाक बातिमे

टाँद केव दुप चाप

घबतीपव

उतरीत देखलौ

336



बि दे रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

घासगव गिवन

उस केव रूममे

अगुण चेरवा देखि

टाँदकेँ थिनथिनएन

हँसत देखलौ

नर यौरन

कोगन हमीन सबत

टाँदकेँ गुवा झुखड । देखलौ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

घबतीपव प्रकृतिक सृष्टीक

मनमोहन दृष्टि देखि

गाढ-वृक्षक संग

टाँदकेँ नटेत देखलौ

टाँदकेँ लोग भुन

किछ रात धीलेसँ रौजू

अंगण कग-बंग

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

घन-संगतिक भाँउ ले तौनु

टाँदकेँ लोकक जन

यएह सँदेशे लिखि क२

जागत देखलौ

धर्मिक बातिमे

टाँद केव छुग-छाग... ।

27 बिज्ञा

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पारिषदक ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

हंसत-रथलोत

हमर जिनगी डनए

रसत भृत जकाँ

जागत डनिषं खनग

रुदा दोस डनए पक्रा

भेदभारो ले

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

जेना मानामे गथेन

बैग-बैगक शून जकाँ

हूकब शूनीमे

हँसत-डले

दूध:मे कले डले

संग-संग

चले डले

बदिक दू किशो जकाँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

दुनु गोठैमे

मिहता डन

सुदामा ठुव प्रया जकाँ

लोक देखि क२ जड़ डन

धधकन फनाह जकाँ

दोस्तीमे जहव घोबि देनक

दुधमे खीग जकाँ



लोक अग्रणी बाम्ताक दिवाव जकाँ

हमैत थोलेत...

26 अठ्ठाली

कम हुन किचबमे

हुनाग डै जखन

मग दग डै पानियो

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम यैथिनी पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

आथि कृति क२

किएक रँगन डी अरुवाणी यो

छेठै तँ लोक

कर्मिँ लोग छै

रुदा रुगव किएक छै

आग दूथ: भवन कलानी यो

देहमँ देह





किअक ले चलेए

हमरा डबोरा पाणि यो

कोन जूबुआक सजा

हमरा द२ बहन डी

किअक बुनो डी

हमरा अपमानी यो

जिअर हमरा केना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुवीविह संस्कृतम् ISSN 2229-

रिंतते भेद-भार

डूट-मिटर

भारता समाजक

मनस कलिया मिछैते

केहन अहाँ छी अडानी यो ।

25 कली देखू



हे रौनार माता

कनी देखु

अहाँ हमर ओव

आँखिँ स्रखन लोव

तुखँ स्रखन ठोव

घबमे ले अछि

कि कहु रौनार

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

सभ नर गेलै रौठि मे

दहा कर दक्षिण अ ठेव

कलैत-कलैत

कलेज फाँटे

लेना अहाँ देलौ हमरा

सकलौड़ी

दासा-दासाक जेन



बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

अनजानमे जौ

कोला गनती भेल

तँ माथ कबरँ

हाथ जोड़ि गेलो छी गोब

हे रँगाण माता

कनी देखु... ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय बिदेह बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

24 मासिक बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

कबैए हनुना-गुनुना

मासुव माहेर द२ वहन अछि ठाका

पठ १३-लिखाग

के कबैए

देथियो केना उठैए

सबकारी ठाका

अखाव मासमे रौबह रैजे





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

दिन तक थेतमे

कदरौ-गजाव करैए सब

एक रोजे सुकन अरैए सब

थेनीमे नगरैए छै

शिखारै बखल अछि ताथगव

मगनीमे उठैए लै

सुकनक घेडयोकेँ देखियो

ओहो कम लै छथि

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

जेकीक बिपिस्टिक नगेल मैडम

बैरकठ केशी गनवरैए

गतव छिठ क२ गमकरैए

पर्सन निकागन क२ अगला

बहि-बहि झूठ निडहारैए

मोरौगले करैए हेनलो

मगए केशी रितरैए

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

देखियो-देखियो

सबकारी सोना केना उठैए

करौ अडि, जेहल गाम सहरौ

तेहल ठोकरिया

बिद्याथीक गार्जियन

भवि दिन मिया-पुतसँ

गाए-महीस चबैरैए

देखिये-देखियो

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बिचरी खाग लेबमे

सकुल लेना पठैए ।

23 हाथलेमे

अगले

बृजगोपाला

356

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

रसंतक भृत्य गङ्गासक मोसम

हृदयानी हरामे

हम उवाचै वंग अरिब

तोहे प्रेम

सुधा केव

वंग रवसै

मोहे

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

बिदेह बिदेह अंग्रेजी अंग्रेजी

हमारे बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

22 शिवालय मोह

शोभात हय तौरा

तारी जेन

हेरा गोन हयव

प्रयण कन्हैया

360





बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

सखी हे किड

रौजत ले तौव

बृषदारण

सम्भारत

गणघण्टाव कदम्बा पोड

सुखा लागली

प्रेम लिखा

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

कबत और के हब

सखी हे किड

राजत ही तौव

रैड । नष्ट

देव डरिनी

चित्तम धितम केव

केश्वरी होरै

घुघवाएन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

मोव मकुन्दन सबपो

मथी हे किड

रौजत ली तौर ।

21 जीतक नईडा

जले जाँड

रतन केव दुर्गम

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

आणि स्वर्णगाथा कक

ज्जीत केव संडा

वरुवाएन कक

मोममे बाथि क२ उमंग

गीत देशे भक्तिक

गाएन कक

हिमालय सन उँच

छन्दए अछि हमार

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

प्रेमक युग विनायक कक

श्रद्धा गांधीक देशे अ

गंगा-यमुना पारण नदि

दशम संगमक सन्देशे अतए

तिनक, शैलेश, अमरेशक अतए

रिव भगत सिंह

चन्द्रशेखर, सन्तान रीव अतए

बि दे हू बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

भैरव सूर्यक कथा जतए

माथिलीह अप्पण

भावत माता केव

गुण गणन कक

जरी जाँ

रतनक दुर्गम

आणि स्वर्गगणन कक ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

20 हरा

बहै हारलै

डुंगि मोनमे

जौ

पहाड़नै नरै जेह हरा

मरघरक जिरण

368





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

अहिना चलेते

जीवनक अतिम

समयमे

किछु कए जेबै हम

जोमे जतए कम ले हूअए

परिस्थिति सात सङ्गद

पाव कए जेबै हम

हमरा ले बोक्क कियो

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

दलितक दबदकेँ

हब सँभर कम क२ जेई हय

नइए किएक ल पड़ए हमरा

दुःखक भाती छैव क२

देखा देई हय

रैहूत सतेल अछि

हमरा समाजकेँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

पठि कइ देखा देरै हम

दुप ले बह

सब हकक नइ गक लेन

आगु रैठू

बैठै हराकेँ

उमंग मोनमे ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

19 हम हरा

जाति-धर्म

मजहूर केव नाउंगव

यडगाँव बटेँ कियो

हमर देशकेँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

बिदेह बिदेह

आतंकवादक

गाढ बोधै किथो

भावतरासी शैव डी

शैवकेँ मादमे

आरि क२ जगलै किथो

दुःखक थाह ले

ए रातक

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

हम हरा

हम मोड़गव ठार डी

श्रुत करेले

सदिखन ए दानरक लेन तैयार डी

हम डी गोनी, हम डी रौकद

हमली खंजव तनराव डी

तिवंगक तिलू वंग



जौ दौमतीक जेन हाथ रैठ एरै तै

हमनी खुनक मानी

गना केव हाव डी

सँदेशे दग डी शान्ति केव

हमनी महामा गाँधी, गौतम बुद्धक

खरताव डी

जौ कहियो एक बुद्ध

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

मोमिता गिबन ए धवतीपव

तु हामी रीव भगत सिंह

चन्द्रशेखर आजाद जी

जाति-धर्म ओ मजदूर केव बाँटपव ।

18 पत्रिका



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

हम पत्रिका छी

जीवन केव

जीवन बिदेह

मिथिली कवि

मध्यम रीति क२

दोख हमरा छुगव

ले भाषा कोला

ले गवती हूँ हव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

हम पत्रिका डी

जीवनक

मानवक तन भेठन हमरा

मानव धर्म निभाएँ

मानव मेरा कवर

जीवन प्रगते

टन डगव

378

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

मोहनी मायाक रसमे

ले ओमबान्ने लेख

हम पत्रिका छी

जीवनक

गोवि देवो हम

मम जीवक मंडा

अपना मोनमे

अरिबन समया

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

कर्तृक गवीका

किएक ले हूँ ज़ीरगमे

गाढु उन्नि क२

ले देखै हव

हम पथिक डी

ज़ीरग केव ।

बि एन रु मिडेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली मिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

17 रुन्छ कले डी

झरियाँ

रुम अहाँके ले

देखि बहन डी

माँस-बिना

एक लाव कले डी ।

कतए छनि गेलै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

अगल जोड़ा क२ हमरा

एतए असगर

आगुक दुनियाँ हम

अहले देखे जी ।

सब पढ़ेए अहाँक बालेमे

कियो अ ह करेए हे भगवान

केना भ२ गेलै



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X **VIDEHA**  
बीक लोकके

कियो कलेए अहाँक रँवाग

कहु कतए टगि गेलौ

हमबा छोटि क२ आग

हमरू कले डी

लौउ कलेए

मागक आथिअ

मदिथन लाव सहलेए

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जखन किछ

सोटे छी श्रीक

यादि अरैए

जहियाँ

हम अहाँकेँ ले

देखि बहन छी ।



बि एच् रु मिडेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

16 एषा किअक

अखला छलै छै

समाजमे

छगबिछा

छगबिछाक खान

हुँगवसँ बुबु लौखा

भितर-भितर

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

कहेए रिकलेन

रैखेसँ देखि बहन छी

हब तबहसँ

दलितक उपेक्षा

कएन गेल

कछु किअक

मैथिली छी हम

बि दे रु मिदे *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

मिथिलारानी डी

तग जेन ?

ए तबहक मिश्रम

रैलामिहव अगल

जो हमबामे

कमी थोजे डी उ

अगला समाजक चेहवा देखु

किएक ले

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

हुनको संग

अहिना कएल गेल

ए प्रश्निक जखौँ दिअ

समाजक जाति-पातिक

नाउंगव रैछिनिहव अहाँकेँ

कछ दलितकेँ

हव तबहसँ उपेक्षित

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

किएक कएन गेल

काँ रन ले बूझु अपनारै

अपन भौ बँकलन

अथला छलै छै

समाजमे

अंगिछा

अंगिछाक लेख ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

15 जितिया

जो देया

गितिया

माए गोन डौ

पोखरिमे नहागले

पारनि डै जितिया

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

होम डे रड भारी

तीन दिन धरि

महन बहए पड़ै डै

अथल डै तू अलावी

क२ ले घब-अंगना

माथिली अथवा

दुल्लि-टोका नीग पोति ले

देथेमे लगतो नीमल

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

आग रैषरिहै

मकआक बोधी

माहुक तीम

जितीया पारमि

सभ मिनाणी करै डै

बोल-बैछा

घब-परिवारक





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

दूथः कलेशे दूर होग छै

रौठ छै उमेव

पौखरिमे घेबाकेँ पातपव

खेब-तेन चढ़ छै

थुनि होग छै देर पितव भगवान

भोले मत खाग छै

आमक अमोष्ट

दुड़ क जव जनपाव

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जे दगाया गितिया ।

14 डगव

जिखगीक

उग योडगव

हम रैमन डी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

जतए देखै छी

हलैक तबहक जौलै

जे अलग-अलग

डगवगव छलैए

कियो हुंगव छटि गेल

कियो रीच रौंछमे

अछि गेल

कियो असह्यताक डबसँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

पाठु बहि गेल

शोभाद एकव

जिखगी कहैत छै

हम अखल धरि

असमाजसमे पड़ल छी

कि कक किछ लै हुवागए

तग लेल एतु रैसन छी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

बिदेह बिदेह

पञ्चमी बिदेह

हमरो बिदेह एतएँ

चलए पड़त

कोन डगव चली

कोन दिशा चली

अपूरा शक्ति देखि

बिदेह पकड़ए पड़त

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

जिबिगीक

उग मोड़गव ।

13 बमल डी

बामम धुममे

बमल डी हम

398

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

संतक मेराये

जुष्टन डी ह्य

नातिक संदेशे

राष्ट्रिये नागन डी ह्य

गाए बसा करैक

नेपथ खेल डी ह्य

लेद पुराण

धर्म मोक्ष पढ़ा क२

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

अपुन ज़रिषमे

उतावरौक कोशिषिमे

मागन डी हमा

नीज मरार्थ त्वागी केव

लोकहित काममे

मागन डी हमा

जग रौषाव



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

चनन महात्मा गाँधी

महात्मा बुद्ध रथन

बौद्ध चनन डी हय

बाम केव धुममे

बमन डी हय ।

12 संत

बि एच ए विदेह Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम यैथिनी पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

बदिमे

भसिआन रुदी

भोतटितु भ२ क२

पानिपव गङ्ग अछि

एकव ले नाँ अछि

ले कोला पता

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

पारिषद बिदेह

अन्यथा पत्रिका

चलन अर्थ

कतौ पारिषद बिदेह

सकलपत्रिका त कतौ

सारीसै हसि क२

निकलौक प्रसार क२

कतौ नदिक किशुबिसै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

ठकवा कर चलेए

गानि धार सगे

उंथन-पुंथन होगए

लौद-रैसात सहेए

उल्लेख तँ दुसरेए

सहबक एकेवा कोला

ठेकाष ले

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बिदेह पत्रिका बिदेह

बिदेह पत्रिका

बिदेह पत्रिका- बिदेह पत्रिका

बिदेह पत्रिका बिदेह पत्रिका

बिदेह पत्रिका

बिदेह पत्रिका बिदेह पत्रिका

11 बिदेह पत्रिका

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

दुपि घबक

किड कहैत डी

अ केहेन अजरै मण

ष्टिम हमार दिनमे होगत अडि

जेना नलीए

दुख केव नदिलै रौटि कर हम निकसन डी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

श्रीमै टिड जकाँ

उँड जेन टहि डी हय

रूदा पएवमे नागन अछि

अ लेबिया रँगलक

उकवा थोलेले टहि डी हय

एगो बून भ२ जेन हवा बूनसँ

उ बूनकेँ बूनेमे

खुद अगनाकेँ बूनि जेन डी हय

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

आर्य हमर अगला डाँह

दोसबकै नछै आ खुदकै

थोड़ैले निकनन डी हम ।

10 संघर्ष ज़ावी बथरै

समस्या ठुँव

रैठाँ गोन



बि दे रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

सहब अथवा बहि गेल

जीत केव हारि

गेलौ हय

हलक कोशिनि नाकाम भ२ गेल

तथला अप्पन होमना

ले हावले छी हय

हब डेग सघर्य जारि बथर

अनजान अनभिज्ञ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

अ समग्र कठे

तक मज्जागए हमरा

बिबह केव भीबसँ

रूदा एकव डव ले अछि

मड़ैत बहरै

अपूगल समाजक

अधिकारक जेन

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

बोग हमार काम देखि हैसै हमारगव

लकिग कहै डव हमा

एहेन जीनगी जिनागसँ

कोन हागदा जगमे

संघर्ष ले अछि

एतए सब अगुना-अगुना जेन जिरैए

जीन तँ अ कवा

कहन जागए जे

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

समाज कल्याणक

लेख जेठैए

सबनाक रौदो

सदितन हूकब

प्रति जिरित बैए

अछु ओ अही डगवगव

हमज्जै टनन डी ।



## 9 भवद्वितीया

आग बिहूँ सुकवाती

गे नृनिग्या

दिश्वारी डिनिग्यामे

कव तू तेन एम्हव आउँतो मँगना

हूका-रौती खेन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

अ पारमि त्रयोहार डै

मेन गिनाग करैक

सभ संग क२ ले मेन

प्रेमसँ बहेमे ले

होगा डै कोला परेशोनी

दीग जवा

हूका जवा-रौती खेन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

केनह बिहाल

दश्याक मासुव जलीमे

भवदुतिमा पारिषद डे

न्योत निहै

देतो हाथमे पाष-सुगारी

आमिबराद निहै

देथिहै ह्वा-दुवीक पलनमानी

यष्टाका-यष्टकीक ले कब फेन

बि एच् रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक ए पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह संस्कृतम् **ISSN 2229-**

आग बिदेह संस्कृतम्

एग बिदेह संस्कृतम् ।

४ गरहा संस्कृतम्

बिदेह संस्कृतम्

गृहसूत संस्कृतम्



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

अप्रैल

पेठेमे लगाई खर्चा

मेहनति-मजदूरी

सब रीति क छपेटिमे

छलि गेल

पारसि-तिहायमे

मेहनता अगले

बहि गेल

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-547X**

आजुक दिन गरनसफाति अछि

अन्न-धनक घरमे

कमी देखै छी

केना क२ अहीरैव

थेतक आछि पब जा क२

कहै मेव-बोरोबि

उथेव सन रीठ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

समाप्त सप्त सप्त

जेम्बुव देवे छी

खाली खेत खसल अछि

टाक दिस

प्रश्न क२ बहन अछि हमरासँ

खेतक आर्डा आ मेव

खेतमे अगरे अछि

बौद्धिक ठेव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-547X**

कैला क२ गुजब चनत

उपजा क२ काम-पठैव

रैड अगटित भेल

गृहस्त सरैक संग

ऐलैव ।

7 किमती भेलै



हलक पाँट रैथिपव

जग प्रतिनिधि हम सब

टूले डी

बाज्य सभासँ

संसद धरि पहुँचावै डी

अगल किमती भोष्ट

द२ क२ जितारै डी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

दुसरक भाव

हम जगत सभ ठाँवे छी

रूदा ज्ञीत जेनाक बाद

अ लता-मन्त्री अपनारै

बुनैए महान

कहु रिवासशील देशक श्रेणीमे बहल

रिक्तित कहिया रैलत हिन्दुस्तान

मानुषीमिह संस्कृतम्, ISSN 2229-

## লোকতত্ত্বক শ্লিকা

দেশেକ বিকାশକ হিহকা চাহ তে

## সামান্যতরাদী সন

বহৌএ ঞ্চপান সোচ

ফল-মোতারিক কৰৈএ বিকাশক

কপৈয়া কেব খট

## মাননীয় শিক্ষা কেন্দ্র কলী

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

एक कथावक अछि

७ टाग्लस रोजगार

कछु विकासशील देशक श्रेणीमे बहल

विकासित कहिया रगत हिन्दुस्तान

एक दिन बिदेह रैकस

कछु नर बहल अछि

दोसर दिन धार्मिक कपेया



बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बिदेहमे जमा क२ बहन अछि

देशिक केल तबह

कमजोब रैना बहन अछि

लोकतंत्रकेँ क२ बहन अछि अपमान

कछु बिकसित देशिक श्रेणीमे बहन

बिकसित कहिया रैनात हिन्दुस्तान ।

6 असली-नकली

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-547X**

मोश जेँ चोखबाएत

तखन की कबले

कनहग अडि कड भ२ सकैत अडि

अमली-नकलीमे हक कोश

की सुठ की साँट तर्क कोश

सब एक सिबहल पड़न अडि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

आगत पत्रिका

नीक कही तखला गेलौ

लैखल कही तैयो गेलौ

तग दुखलै रग अह नैकेलै डी

कथन की भ२ जाएत

मे कोला ठीक ले

सब किछु देखि कर आँखि मुनि जेर

झुदा छुग बहरै मेहो ठीक ले

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह ISSN 2229-

समय सब दिन अलिशा पोडै बहते

हलैक प्रशिक जराँ जकर भेटै

मौन जौं देखैबत

तखन की कबलै ।

5 कोसी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

मागहे कतेक

हम कनलो-थिजलो

कतेक लाव रैहेलो

सगल-पटुआ काम-गठैव

अकुआ-मकआ उंगजा क२

गजब-रैसब हम केलो

सहलो रैड-रैड कयै

रौठा मे घब-दुब बहिन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-547X**

टैम-बिरेके हम बहलौ

मोचि-मोचि क२ क१ गलेथि

समय बितेलौ बगर्थ-बिजुल

क२ देलै मिथिलाके दु-भागमे

पूरमे मरबसा-अपौल

पडिगमे मधुबनी-दबडंगा

बिचमे अगरे बाबू आ धुल

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

कहु और कतेक चुप बहुरै

ऐरैव हम रैना देलौ पन

लोजी-लौकी अरसब भैलन

हैम डल जे दुनियाँ और हमरा देखत

शिक्षाक नर-ज्योति जगत

जाएत पढ़ल रैल-रैल कउलज-मुकुन

मागहे कतेक

हम कलौ-थिजलौ

बिहारी मिह Vidaha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

कतेक लाव रैलेलौ ।

4 मद्भब बाणी

सुनसल बातिसे

दुपटाग

नगे पएव



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मग अरौए

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

भन-भन करैत

छोट-नछोट स्वर्णगोरी

प्याली-दूनी

मछुब बाणी

छोट लोकिना

नयन कष्टना

अडि रौड़ सिगानी

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

उंघाव देह देथि क२

करैए हमरा संग छेड़खानी

कखला गान-टूमेए

कखला खून टूमेए

प्यास ले नलेए जेना

कहाँ पिरैए गानि

भवि बाति ज्ञानि क२

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

हम एकवा संगे

बाति रितरै छी

होगै रैड पलेसानी

आरै एकवास

रैछरौक कवरै उगाग

बोजे बाति क२ नगाएरै मच्छबदानी

सुनसान बातिमे

छप-टाप

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

नंगे पत्र

नग अत्रैए ।

3 हविजन

हिन्दु धर्मनिग

निथ ज्ञानाग

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

सबके के छी

सबके के छी

किएक लेख

दू बैगक मोल

हम दलित छी

मेहनति-माजदूरी

कए कर रितरे छी

अपन जीवन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

तेयो जलेत अछि

लोक देखि क२

जले केकरो तब

करे अछि

डूँडा-डूँडाक भेद-भार

मदिर गुजायब

जेरौन करेत अछि

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

बिदेह एथला

एकेसम सदीमे

हविजनक संग

किएक क२ बहन डी

अहाँ सब अतिथि

हिन्दू-मुस्लिम-सिख आमाग ।

2 रुम डी मैथिली

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

हम भी मैथिल

जे रोजे भी

रएह लिखे भी

जे देखे भी

रएह कहे भी

सर्ग दलित भी





किड रूयकृतिक

किबदागीसँ टकित डी

दलित भ२ क२ ओ

रूयकृति अगला सगजकेँ

रिसवि गेल

अगुण भाया-भेय छोटि क२

दोसबक वंग-ठंगमे ठलि गेल

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

बाँटो माथिली दलित

कर्मि रक्षकलिया

बैमि गोल

माथिली जे समाजक

आगला माथिली जेग

ओहमे अप्पन

नामक थातिव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

अंगण लौकी-भाया

तक बिमबि गेन

तग दूआले दलितक स्थिति

जम-के-तम बहि गेन

हम डी मैथिल ।

1 लौकी

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

मणि-टांगि क२ लौकी

जीवन अगल रीतरेए

कोग दग रोगस बात-बाटी

कोग दग फाटन-धुवान रम्व

उग फाटन रम्वस

साँगल अगल तन

रोगमाल भेन अछि

बि दे हू बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्हीक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पाल्हीक ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अगस्त



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

लोकक नजबिमे

उजबन-पुजबन अछि

दुष्टनघब

रसन अछि ओ गायक कातमे

जिन्गीक हिकिब ले

गज्जतिक डै डब

सोसल अछि दुगो सुगब

जे भागन हिलैए

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह ISSN 2229-547X

गाडी-गाडी-रामे-रामे

चबै ते जागै

दिन-दुगल

दुनियाँ अछि ओ रैखैव

मागि-टागि क२ लौकी

जीवन अगल रितैव ।

बि दे रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ई बचनपत्र अगुन मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पत्र  
पठाई ।

१. जगदीश प्रसाद मण्डन २. अमिन मल्लिक ३. कस्म ठाकुर

१

जगदीश प्रसाद मण्डनक गीत

गीत-१

गीत चौ, गृहणीक गारि सुले छी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

मीत यो गृहणीक गग न्वले छी ।

गाय-गाय श्री गृह-गृहमे

गमन गीवर देथे छी

मीत यो, श्रीष्टी कहे छी

मीत यो गृहणीक कथा कहे छी ।

गीवरक रीट गृही ग्रहण छै

गृह रीट जूझी समाधन छै

देथि-देथि टट्टिआग छै,





गीत यो, देथि-देथि छै आगि छी

अछिछी कहै छी, गीत यो

गृहपति सब रैष छै छै

ले गारि घुड़-मोड़ कहै छै ।

घुड़-मोड़सँ घुबिया घुले छै

अछिछी कहै छी, गीत यो

गृहणीक गारि अले छी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

बाजे-बाक गले छी, गीत यो

अछिछी कहे छी ।

गीत-2

हे रँलिया, हे रँलिया

जीवन संग जिनगी रँदले छै ।

अगल रँदलि किछ, किछ रँदलेयो गढ़ छै

450



किछ अगल स्वधरि, किछ स्वधारेयो पड़ै छै ।

जीरण संग जिनगी रँदलै छै । हे रँलिना

हे रँलिनी, जीरण....

संगे-संग गिनि खेनलौ-धुंगलौ

संग-संग बहि संगी कहलौ ।

पकड़ि रँहि रँलिना कहलौ

हुन-प्रीत रँनि मासुव रँसलौ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

हमसि-हमसि मस हँसि छै

जीवन संग जिनगी रँदलै छै

हे रँलिया, हे रँलिया

एक रँलिया उदक कहलै छै

महारा मगज गढ़ छै ।

रँलियाँ दीदी, दीदीँ दादी

हँसि हँसि मस तड़पै छै ।

हे रँलिया, हे दीदगव

452



जीरन संग जिनगी छलै छै ।

छलि-छलि बग रौदलै छै

हे रौलिना, हे रौलिनी

जीरन संग जिनगी रौदलै छै ।

गीत-3



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X **VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

हे रँल्लिा, हे दीदी, हे दादी

सुवति केना रँदलते हे...

धीतिक बीति क्वीत रँल्लन छै

बीति-सुवति केना पौलै

थान-थिटाव घब-द्वार रँनि

फल बृक्ष कल्प कलिया देखलै ।

हे रँल्लिा हे रँगी, हे प्रेमी

सुवति केना रँदलते हे....



जहना जहना तहना हूँकार

नाग, गहना उमैत बहे छै ।

कबम-भाग मतव जपि-जपि

अग्रश्रा-गडश्रा धरैत बहे छै ।

हे प्रीतिया हे बीतिया

नीक हल कलिया देखै

हे नीक हल कलिया देखै ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जगदीशे प्रसाद माडनक कविता-

अलकक्षा रण

जुग-जुगसँ जनमेत एते

जगन रण नलैत जालै ।

गुप्त-अरगुप्त रिव रिनगोल





संग-संग सहजति गेलै ।

जे जेना-जेना जलौत उठल

से तेना-तेना जगजिआ नगल

जे जेना-जेना गढुआ उठल

से तेना-तेना गढुआ नगल ।

रुदा ले, आला किछु भेल ?

आग्रउ उगल गढुआ नगल

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

पाठ्य उगल अग्रणी नगल ।

ल सरेहक कद-काठी सगल

ल सृजक दिन-वातिक माग ।

माण-माण सगतन बिग

किडु दलि किडु हृष्टाण ।

काण्ह मिना देखि-सृनि

तबनि-तबनि सृष्टाण नगल ।

तलिना सृष्टाण रीट रण

458

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-547X**

बिग-बिग चतवन अछि ।

दुति-नती हुंगव गेड गमरि

तँ नतिगो गढाई चतवन अछि ।

हँसरी

हँसरी नगा धड़न नछकलौ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

पितामह मम मभ किड केलौ ।

हँसवी जखन रैमन गवदनि

मम गड़न दोसव गवदनि ।

सुख-दुख गवदनि जलमारैए

मगे दुनु कात छैरैए ।

आद एक बहिनो दुनु

एक दोसवकेँ दुव भगारै ।

नगन हँसवी जहाँ तनएन



दम श्रुति देहो कर्तृश्रुति ।

गवदनि गकड़ि पोथरि जहनि

हँसि-हँसि हवद रँजराँएन ।

जेना-जेना गीवह कसैत गेन

तहिना जिनगी मल पड़ैत गेन ।

छफ छलैत देखि-देखि जिनगी

तड़तड़ १-तड़तड़ १ खसैत गेन ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ए म नीक ठै फाँसी होग छै

किछ कर धर कर तगपव छठ छै ।

घबक हाँसवी अतवी दूह छै

हाव बस सुधि मराण गरै छै ।

२

अमिल मक्षिक

गज्जल

462



अहाँ के देखै कोना आरि हम, अछि हमर भाग जडन

अहाँ माँ भेटै कोना आरि हम, अछि हमर भाग यठन

मँगे चनरै जीरन भवि रँचन ग, जे अहाँ तोडि देनिऐ

समेटै कहु कोना आरि हम, स्रग्वि हमर भाग रँचन

अहाँ जेन खेन डन किछु दिन के, की कोना मजबूरी डन

सुनलौ ल किया किछु हमर, मोल मे हमर रौत बहन

रँद अछि दृष्टी मे खुसी हमर, ग केहन भवम मे डलौ

सुखन रौत जकाँ जे समवन, खाली हमर हाथ बहन

फँसैत झाली न देखैत बहलौ, घुबि कहु अहाँ तकलौ कलौ

देह के बाखु कतेक दिन हम, देखु हमर ज्ञान चनन



बाति जे छुत पव छुलौ देव तक, कारी असमान तकैत

जेना रौदन हम छुलौ ठहरन, ओ हमर दास जनन

जागन छी रौतुत दिन माँ आर, अतिरौत हम टिब निद्रा मे

निद्रा आरौत कहाँ कहियो जेना, आँखि मे हमर कष्ट गउन ---  
--

(सबन रौत २२)

३

असमान ठाँवर

हागकु





समूह भाषा

मैथिली मिथिलाक

जागत हेवा

बाज हागछ

बाजरी कोषा भाषा

पठन हय

दोयारोपण

लता अतिभारक

बहि कर्तव्य

देशीक लता

बहि जगत केव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

स्वार्थे दुर्जन

कक जाँ झर

माँ आ माहि भाया मँ

मकम्प निग

आरौ तऽ जागु

मिथिना केव नान

प्रयास कक

अरौव भेन

तेयो रिटाव कक

अडि मन्दरी

बिन्दु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

ई बचलापब अगल मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पब  
पठाई ।

१.टंढल कमाव मा २.परल कमाव मा

१

टंढल कमाव मा

सबबा, मदलेश्वर आन, मधुबनी, बिहार

बि एन ए स्मिथ *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

हाङ्गक

टैतक मास

पडुरी हन-हन

मान चलेए ।

पडुर पीठ

रैगना रैगना

अन हँकेए ।

रूँ मठव

उवला मोहगव

झूँह पलेए ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

आम्र मञ्जवे

ष्टिकना ब्रधकन

ब्रवथी थागए ।

झूड-शीतन

कठलव के रँव

रँड १ पत्तेए ।

हर्षित मोष

कोशलीक रौजरी

गीत नलैए ।

(1.)-भूथ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

भूख निज-माषक जमाणा मे केहन पसबन,

लोक दोसबाक सनमाष कबरैहू रिसबन । ।

अनका नीच देखैरौ मे रूमय अपन श्रेष्ठता,

सभ सँ श्रेष्ठ अणसा के छै सभ रूमि बहन ।

निज-स्वार्थ स्वरौ मे बहय हवदया नागन ,



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

श्रवत तीत,

हृदयत । वरुन भुन प्राप्ति ।

पसवत भुन रीतारवती ये,

सभतवि सग्राष्टी ।

रूदा-

पौखरिक मोहाव पवहूक,





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

ताबक गाढक कताब,

आ टोरेष्टिया गवहक,

बिमान रष्ट्रक मात,

कवा बहन डन,

अपन श्रेष्ठता एरम्

बिमानताक आभास कमिः,

जना बहन हो जग,

अपन सम्राज्यक रिताव कै ।

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

आ कि-

उत्तम अर्द्ध प्रश्न-प्राप्त,

प्रश्न-कामगारी के ,

रश्म-उद्घाटन के भाती टिप्पणी रिड । ।

अर्द्धादि ये मति जागड़ प्रश्न,

अर्द्धा-अर्द्धा खसम नलोड,

अभिमान सँ उठन तावक मुड़ि,

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

आ सब समेत उपरि,

थसत अछि रचबुझा हवि,

एहल होगछ बिहारी ।

२

परन कथाव साह लोक पद्य-

गीत-

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह ISSN 2229-547X

अहाँ बिदेह हम केना बहरै

हमरा रँता दिख

अहाँ बिदेह हम जौअरै कि मबरै

हमरा रँता दिख

अहाँ बिदेह.....

अही टैल छी हमरा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

अही तँ निहिया

अथ-दुख हयव

अही तँ मज्जिया

अही ज़रिय हयव

अही तँ गविया

मभ किछु छी हयव

अही तँ मज्जिया

मज्जिया रिह्य हय केशा बहरै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह ISSN 2229-

हमरा रीता दिख

अहाँ बिबि.....

देखु हमर चेहवा

केहेन भ२ गेलए

मिलेक बिबि अहाँसँ झुर्मा गेलए

सुबति अहाँक

हमर जीगबमे गछि गेलए

बि दे रु मिदे *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

मालिक लेख दिव

तछमि क२ बहि गेलए

अहमँ हम केना गिनरै

हमवा रँता दिख

अहँ बिब्र..... ।

बिन्दु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

ई बटोनापव अपन मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पव  
पठाउ ।

१. आनन्द कमाव सा २. निशोभु सा

१

आनन्द कमाव सा

मैया अहाँ रसै छी

मैया अहाँ रसै छी

मिथिला नगरीक माँछमे

480





प्रभातमे उठैये ना

कथला काली रैन अहाँ एलौ

कथला दुर्गा अहाँ रैन गेलौ

कथला सीता रैन क२

अहाँ भेटै छिथं खेतमे

मिथिला नगरीक माँटेमे ना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

मैथिली अहाँ...

मल्लिक भावती मेरनमि धाम

बखलिअनि हूँको अहाँ शीत

कानिदामक आस भूलेनिअनि

एकहि बातिमे

गुणभूमि उटैठमे ना

मैथिली अहाँ...



जे किउ जगनि अहाँ केव नाम

प्रवित कए देलखनि सब माँग

एहि रौब रौबी अछि

आषाढक एहि पाँतिमे

प्रभातुनि उटैठमे ना

सैया अहाँ...

बि एच् रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम यैथिनी पारिषदक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

२

निशोष्ठ सा

१

हमरा संगे छत पव आबू  
देखू रैहना ले रैहारू  
टास क माथ दूथागत अछि  
हमरा संगे ओकर माथ समाक  
देखू रैहना जूनि रैहारू

484



टाढ क माथ सेहो हम्क हेत  
आव हमर आगुव अहाँक  
आगुव सँ ड जगत  
टाढ केँ आ हमरा सेहो  
नीक नीद अगत  
आरँ टनियो आरु  
देखु रँहमा जूनि रँगारु .....

२

कए मानसँ स्वलेत आरि बहन डी,  
रौंठी तँ पवाया धन होगत अडि ,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जकबा हम सहैजे छी, मराले छी ,

अपन ज्ञान सँ लेसी मालेत छी ,

आ हएव छल ज्ञागत अछि ओ एक दिन,

अपन तथाकथित स्वामी नग ।

रूढ़ा एक रातक उतुव देता कियो हमरा ,

तना किएक कियो अपन धन केँ ,

आपन जेमे सेहो धन माँछैत अछि ,

रा हएव अपन धनकेँ अलेहते ,

जबलेत अछि आकि घबसँ निकलि राहव कलेत अछि ।

जँ ले तँ किएक दहेजक आगिमे,

जलेत अछि हजारो रैणी,

आकि दर दर ठोकव खाग जेन मजदूरव अछि ,

अपन रौद्रक ओ बाजदुगारी,

बि दे रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

दोष नियतिक अछि आकि अछि समाजक,

की यमोदा सेहो आन बूमनक,

आ देरकी सेहो ले अगलनका

ई बढागब अगल मतिरा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाई ।

डा. नैशिवर काम, एम.डी.(आय.) कायचिकिसो, कालेज ऑफ  
आयर्नेट एन्ड डिजिटल मेडिसिन, गिगडी प्राधिकरण, गुणा (महाराष्ट्र)  
४११०४४

बि एच् रु मिडे *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-547X

कोयली काणय बोवहि सँ

(करिता)

याद अरिष्ठ गुरुदेव वरिष्ठक, \*

कोयली काणय बोवहि सँ ।





मिथिला केव गतिहाम निखायन,

सभदिन अगरो लावहि सँ । ।

मागन कोष कहैस लैए नहि,

सूर्य अस्त छथि भोवहि सँ ।

मिथिला मैथिल केव दुःश्रुति,

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

देखि बिद्यापति ओबहि सँ । ।

जगन्नाथ जगन्नाथ ओ भाया,

बिसरि गेलह रँठा स्रज्जह सँ ।

हे मैथिल ! बिराब धिकह,

जिगगी रँतव डह बर्कह सँ । ।



नाज होगछ निज जिनगी पब,

हमसत रँतव डी ढोवहि सँ ।

निपथ जेत डी, हम नडरै,

जत होयत हमबा जेवहि सँ । ।

तम मन धन जत भाग हमर,

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

मिथिला - मैथिली नए अर्पित अछि ।

हमर लेखनीक हलक मोड़,

मिज भाषा नए संकल्पित अछि । ।

आशीय दियः हे माथ मैथिली,

पुर्ण करी मिज गछा हम ।

तोड़ि सकी हब एक बूह कै,



कबी शिबू केव देखा उंग । ।

\* गुरुदेव वरिन्द = मैथिलीक सुप्रसिद्ध कवि र लेखक श्री वरिन्द नाथ ठाकुर (नमः कि रौशनीक स्र. वरिन्दनाथ ठेठोवा)  
। लणगणहि सँ हमर कास मे जे पहिने मैथिली गीत गुँजन  
आ हमर सृति पठन पब मैथिली साहित्यक प्रति अछिष्ट सिलाह ओ  
मिथ्या जगउमक से छन श्री वरिन्द नाथ ठाकुर ओ श्री जगदीश  
चन्द्र ठाकुर 'अमिन' जिक गीत सभ । ओहि समय मे हिनक  
गीत सभ ततेक ल प्रसिद्ध छन जे गाम सँ पठना धरि हरेक  
ठोठेक ठोव पब अनायासहि अरैत बहैत छन । मरु पब श्री  
वरिन्दजी आ स्र. महेंद्रजीकेँ सुनराक सौभाग्य रहैत रौद मे  
पठनाक विद्यापति सृति परि समारोह मे बैठैत आ बैठैत  
बहन पवथ गाम घर मे रहैत लणगणहि सँ हव रसममूक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

लोक सभ सँ सुनल हुनिक गीत सभ हमरा प्रेरित करैत बहल । ताछु मे त्री बरिन्दजीक गीत “की धिक मिथिला, के छु मिथिल” हमर मोन मज्जि केँ हमेशा सकसोड़त बहल आ एखनहुँ सकसोड़त बहैत अछि, एहि प्रेमक सही उतब तकरीक लेल रैब रैब प्रेरित करैत बहैत अछि आ शायद आजीवन करैत बहल । तैँ ओ लोकनि हमर मैथिली साहित्यक क्षेत्र मे गूढ भेलाह ।

तना तँ हमर ई गीत २३. ०३ - १९९५ क२ लिखल गेल छल । पब गूढदेर त्री बरिन्द नाथ ठाकुरजीक हुनक उगम जन्मदिनक अरसवि पब हुनका प्रति आदर राख करैत आग ई गीत प्रकाशित कए बहल छी । हुनिक जन्म ०१ अगस्त १९३३ ई. क२ पूर्णियाँ जिलाक धमदाला गाँव (दक्षिणपूर्व ठेग) मे भेल छल ।



तीन तिबहुतिया, तेवर पाक

(गीत)

तीन तिबहुतिया, तेवर पाक ।

अपान ठोकर, अपनहि थाप ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

देतह आरहु, नहिः तै खेबहु,

होयतह ओह, ठाकक तीस पात ।

तीस तिवहुतिया, तेबह पाक । ।

एक दोसबा सँ छकि क२ गड़नह,

खुरि गवल्पर छँग तौ मिकनह ।

मोति असोति आ रँडका छेष्टका,





जानि ल की की आओरो रैठनह ।

उतबाना दक्षिणा कथनह,

आओव प्रबिया पडरबिया ।

जानि रैठ पव रोज छै डह,

थानि जेनह ओह पव थनिया ।

कानीदस सतहि प्रवथा,

की काष्टि बहन डह, नमिः डह भाथ ।

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

तीन तिबहुतिया, तेबह पाक । ।

अपना रीट तेहना पौसनह,

कमजोरी तौर भाँपि ओ ज्ञानह ।

परिकर भेदिया, कयन हिमरि,

तेबह, डर्रिस हो रँड भाग ।

भर - भर परिभाषा गठनक,



माँट हामिछिब मन ओ रँजवक ।

अंग - रँजि - मिथिला मे भेद,

तिवहुत कोसी सीमा देशे ।

करवक काँच नऽ कोशी भागव,

काँच के देखै ? कोशी तक ।

तीन तिवहुतिया, तेवर पाक । ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

मैथिली हलबनक, मिथिला डालनक,

मैथिलीक सेहो टिता सज्जनक ।

भाँग पिया, भङ्गजनक सत केँ,

सत मैथिल केव रूँछि हेबजनक ।

अपनहि “उ” अदृष्ट रँगन डन,

झकथ मैथिलहि डुक डुँठजनक ।

भाँग पीरि रँगन नछै डन,

नीक रँगन, ले रूमि सके डन ।



एतरो मे किछ मैथिलजन केँ,

बडवाँक भेलाह आतास । \*

तीन तिवहूँतिया, तेबह पाक । ।

किछ मैथिलजन सजग भेलाह, \*

जबराँक गङ्ग टिहूँ नगलाह ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ठीगली चग्या जे हकनहि तँ,

अगनहि मरन जलेत देखनाह ।

मैथिल अगनहि फागि बरन भन,

अगनहि अगनहि ठागि बरन भन ।

पागि के नाओत, आगि मेमाओत ?

भेदियेक रौत ग्दगि बरन भन ।

तगयो सज्जग सचेत धीवमति, \*

मानन नम्रः भेदिया सँ हारि ।



तीन तिवहुतिया, तेबह पाक । ।

अपना घन्व मे मेव रैनथि,

आ रौहव डन्ने नक धवथि ।

मेथिन केँ भेटैत हुन शोप,

पर कहिया धरि तकव प्रताप ?

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद् ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद् ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

हरेक छेड़ केव नोगतछि अछि,

की एहि शोषक नष्टि अरक्षि ?

बाँट ल तबू - अउताह बाग,

अगलहि हाथ, अगल सन्धान ।

रुष्टी भवि ओहि सजग गूत केव, \*\*

बार्थ ल जायत अथक प्रयास ।

तीन तिवहूतिया, तेबह पाक । ।





\* मिथिलाक ओ सगुत लोकनि से मिथिला, मैथिली ओ मैथिलक  
ऊँखोन हेतु कोनहुँ प्रकारक सार्थक प्रयास कएलहि रा योगदान  
देनहि चाहे ओ कोनहुँ जाति, धर्म रा रक्षा विशेषक होथि ।  
सगहि ओहो सगुत लोकनि जे मैथिल बहिष्कार बहेत मिथिला आ  
मैथिलीक विकास मे अपन सार्थक योगदान देनहि ।

\*\* ओना नारि मिथिल जखन तँ एहि सगुत लोकनिक संख्या बहुत  
बहुन जायत पर समस्त मैथिलीगण केव संख्याक अनुपात मे ओ  
नारि सब मात्र “द्वितीय श्रेणी” गणन जखन ।

बि एच् रु मिडेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक ए पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीमिह संस्कृतम् **ISSN 2229-**

बिदेह पत्र एकहूँ ठी लीखल

(गीत)

पहूँ गोलारु पवदेमो सखी ।

दिल - मास कतेकहूँ रीतल ।

बिदेह पत्र एकहूँ ठी लीखल । \*



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह बिदेह एकद्वितीय मीथिल । ।

सगव पहव हूँकिहि डरि मसमे,

हूँकिहि गव ज़ी ठाँगन ।

गव नमिः सथि हूँकिहि सुनि कनिअग,

हम डी केहेन अभागनि ।

बिबह रौदना केहेन सथि,

बिहारी मिह Vidaha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

से हस्य एली लेव सीखन ।

बन्धिः पत्र एकहूँ ठी नीखन । ।

दिन ये हुनिकहि याद अरौतछि,

बाति ये हुनिकहि सगला ।

कौश्या कचवय अहन भोव सँ,



तदपि लै आरंभि सज्जना ।

भेन रैसुतु सखी पतसुड,

मि त लैष बहेतुडि तीतन ।

मप्रिः पत्र एकहु ठी लीखन । ।

प्रियातम जेणे दूबहि बहताह,

की होगत बहि भवि अरुणा ?

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

ककवा नए शिगाव कबरै,

ककवा नए पहिबै कर्षणा ?

टाग कठोव बहेड रुदा,

नगगत अडि अतिमैय शीतन ।

बन्निः पत्र एकहु ठी नीखन । ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

\* ई गीत आग सँ १० - १३. मान पहिलक सन्दर्भ मे लिखल  
जोन छल, जखन कि गुवा गरि या परोपस्था मे कतहु कतहु  
कोला एक छोटे छेनीछेनी रूथ होगत छल । आ ओहि  
छेनीछेनी रूथ पब वाति मे अरुक समय सँ अरुक समय धरि  
STD कान केब पाग आधा, अरुक समय सँ अरुक समय धरि  
तेहाग आ अरुक समय सँ अरुक समय धरि दोथाग पाग  
मलौत छल । एहिना स्थिति मे कमिअग रूथिया लोकनि केँ  
पबदेशे मे काज कएनिहार अगन - अगन प्रियतम सँ सीधा  
रात कवरि समुद्र नद्य होगत छल ।

ओना योरागन केब छनती सँ रूथ आरु ई स्थिति नद्य अछि  
तथापि मिथिला मे एखनहु एहि गीतक सन्दर्भ किछु हद तक  
प्रामाणिक अछि ।

ई वचनापब अगन मतिर ggaj endr a@vi deha.com पब  
पठाई ।

१. वाम रिनास माह २. प्रभात बाय भुष्ट

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

१.

बाम बिनास माह् जिक दु दर्जन करिता-

गजल- 24

बैठ-बैठ ग्रव गजल सहै

मिथी नाठ धड़लै

512





कसौठी बगडाँ चमकेए

दोदरु रबथ रण घुमैत

रणरानी जिनगी रितरैत

प्रकरोतम बाम कहैए

कैकवा कहैए सुथ-दुथ

दुथसँ उगजए सुथ

दुथियाक सावथी भगवान रलैत

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथनी पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

अधिया गङ्गा सहेत

अद्वैत राम काँटेत गाँउर

नित हवि दर्शन कलेत

अधियाक साथी सत रलेए

दधियाकेँ ल लोग

दूधक अत एक दिन लोग

अधिसँ सकल रदए

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

बैठ-बैठ गव गजल सहे

मिथी नाठ धड़ैए ।

कर्मिक फल- 23

कर्मिक फल अरुण मिठे डै

जानि-बुझि जेँ करे डै हानि

होगा डै धन जन अतिमात्रक हानि

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

सभ तबह होग डै नकिहनि

काज ले होग डै छोट-पेय

कर्मि लोक होग डै छोट-पेय

जेहेन मोट ओहेन काज होग डै

भारणाक संग भार नदी सभ रैह डै

सभकेँ सुख मित्र, दुखक अंत होग डै

कर्ता प्रत्येक पूजा सभ करै डै



कर्म पुजा कर्म महात्म

जगतमे होग छै अमर नाम

सूतन जागनमे हक होग छै

सूतनमे भाग्यक निशानि होग छै

जागन प्रकयकेँ नामि ले होग छै

कर्मिक फल अरुणै गिले छै

जानि-बुझि जेँ करे छै हानि ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

प्रेमक रान्ह- 22

आशा-निवाशा भेन पिआ

कतेक दिन बहरै अहाँ पबदेमो

आँखि लोव रँछ दिन-राति

सबुव रान्हि जीरै छी कहूना



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

दिन धक्-धक् करैए अहिना

बैरै धुँधुँ गेल हमर कबस झुँधुँ गेल

मोगमे लोग रैठि बहैए

तन धक्केए मोन रैबसैए

आँखि-आँखि रैठि निवतव लोव

किएक तबसलै छी दिन हमर

डन-डन रिठैए जिगगी अगमोन

कि बाखन छै गवदेमैमे

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

आउं मिलि बहरै अगल घबमे

बाबी-प्रकय जिनगीक दुगहिया डी

दू मिलि गाड़ि समकप चले डे

परिवार समाजक निर्माण होग डे

देशेक प्रगति दिन-राति होग डे

जन्मसँ लोठे अगल दमे

सब दिन काज ले दैत पबदमे



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

कतेक सूरुव रौनहरै हय

दिनक अवसान सत दूव भन गेल ।

रिग्न प्रेम जिनगी रौकाव अछि

प्रेमक रौनह सत रौनहसँ मजगुत

ले तोड़ि सकै छै कोना कान

जहिया तक संसार बहत

सुख-दुख गरौह बहत

प्रेम अकिसी अरब बहत ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जीलित चन्- 21

जीलित चन्

खाति-पिअत चलित बद्ध

सहायक बाह पकड़ित चन्

जिन्गी अमर ले होग डे

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

बीक काज करैत छु

जीरैत छु।

कर्म अगव होग छै

जिनगी ओहीने मिलै छै

सत्यक रीति-पब

ठाकैव रीति नहो छै

पिछित-गछित छलैत बह

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जीर्णत चतु ।

जाधवि मास चलेत बहत

समावक जात रैठेत बहत

माया माता दुवसँ बह

अनकव धनसँ पबहेज कक

जीर्णत चतु ।



जिन्गी जीराक जेन ले

गीक काज जेन होग डै

कर्म-सुकर्म मंली जाग डै

मभ किछु अलीठाम बहि जाग डै

कर्मिक फल राँष्टैत चनु

मरहक नीत कलैत चनु

किछु कलैत चनु

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पार्श्विक ए पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय संस्कृति ISSN 2229-

जीर्णत चव ।

रिसवत गीत- 20

लोगनी लेखन

आगत डविगत

मूलि-मूलि गारैए



सुतनमे जगई नील

मधुब गीतक सब सुनि

मोष भेल बिबोव

रैव-रैव कोगनी

सुनई दुख भवत मलम

बिदेह प्रेमक मिलाव

दिनक दबद बहि-बहि जगई

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

पिआम कलिया हएत तेँ

रिसवन गीत

मोनाएन मोन

सुकथन तन

जेना उँजवन रन

कलिया हबिखब हएत

अ प्रेमक रीधन



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

कोशी सुनैए रौब-रौब

बिदेह गीत ।

जड़ित दीप-19

आगिँ आगि जड़ित

आगिँ मेठैत शिखर

दीप जड़ित आगिँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

हरा दग डै क्रमाए

जडैत दीग अगन ज्योतिमै

जगमग करैत जगत

घुबक आगि बसे-बसे स्रगणि

हरामै ले क्रमाए

जौ क्रमारैए हरा घुबकै

स्रगणि जबरैए जगत

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

आगि ले जाणए भेद

सबकेँ जबरैए एक्क संग

जिणगी अछि दु-टावि दिनक

खेब लएत अलखिया बाति त

कर्तव्य-धर्मक पोषण करैत

पथपर चल् दिग-बाति

छलैत बह जाधरि अछि जिणगी

जल्मि दीग जड़ डै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

ताधरि तेन बहे छै राती संग

अपन जिनगीक अनहबियामे

दोसबकेँ बांधै गजोबियामे

तहिना मागर, मागर जेन

उंगकाव करैत जड़ित बद्ध

जाधरि नद्ध अछि अहाँ संगे ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

गामक नावी-18

मन्द मन्द तरा मिहकए

भुलक पखूरी सवि-सवि गिरए

हुल-हुल योमया रँदलए

कथला रौद कथला डार पड़ए

रिग्न रसन्त रँहाव रँगए

थेतक आँछि गव गामक नावी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

कन्या-बैकुंथि नरतुविश्व

हाँठ रौनहि थोतमे काज कबए

भुलन-बिसबन मोहब-मगदोष

बिबला-बिदेहिया गीत गाँव

बैठ-बैठेली अमि-अमि

बैठ भूति नजाग भले

कहेत बैठ चलेत भले

बि एच् रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

गोपक बाबी-

देशिक डी हितकारी

देशिक निर्माणमे

कवित अछि सामेन्द्रावी ।

श्रीमान धवती-17

श्रीमान धवती तछि बहन अछि

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

कान-काठबीमे छिपन रँदसिया

धवती सुथि दड़ ारि गड़न अछि

सुथि दूँरैक कमजोब गड़न अछि

गबनीसँ हाहाकार मटैए

टिङ्-टुङ्गन झूठ खोनि रौसन अछि

घास-पात सुथि जड़ैत अछि

टास जड़ैक देखि खेतिहब





बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

गवजैत-रैवसैत काबीमेघ डुमरन

गामि रैविसन घन-घोब

भारत दरभंगा-

रैवगक रैवियाती मजि निकलि गइन

मभरगा गीत उडुलि-रुदि गारैए नगन

काबी मेघ सुधि-सुधि रैवसि बहन अछि

धवतीक पित्रास मवि बहन अछि



टिता-टिता-16

आगि जड़ित सब देखे छै

दिन जड़ित ल देखे कोण

टिता-टितामे अन्तर छै

टितापर मरन जड़ित छै



टितामे ज़रिरे ज़रिरे ठे

मरुद उरिगागत मरुद देथे ठे

मरुद उरिगागत ल देथे कोग

मरुद १ ज़रिरे कोगना रैले ठे

कोगनामे मीरा थोड़े ठे

टिता ज़रिरे मरुदगति मिले ठे

टितामे ज़रिरे मीरा थोड़े ठे

ଦିନ ଉଡ଼ିତ ଥା ଦେଖିତ କୋଖ ।

बिहारी मिह Vidaha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

माथिलीह-15

हमर माथिलीह

जानसँ अछि प्यावी

खुनसँ भीजन धवती

परिव्र भूमि सजन रण

उज्जाला राँठे डी क्वावी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

हमर माथिली

धन सम्पत्ति भवन-पद

नीत दिन मोना उगले

थाए-पीर कइ मुले-हउ डी

हम सब मिलि ओकरे बिसास करै डी

हमर माथिली

जानसँ अछि प्यारी

निरावण ले उजाड़न डी

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

बिनामक काव्य रम्य सभ छी

अपन मातृभूमिकेँ

अपनसँ रिगाड़ि छी

कि कर्ति भूमि हरा-गानि

अप्राप्तिक बचनकेँ रिगाड़ि छी

मातृभूमि रैचरैक जेन

अपन भूमिकेँ बस्ना-सुबस्नाक



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

मिथुन कक तैयारी रैषु पूजावी

हमर मातृभूमि

जानसँ अडि प्यावी ।

मिथिलाक अलिङ्गन-14

गीत भोले सुकज करए

मिथिलाकेँ अलिङ्गन

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका* बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

माँस करे छै तलेगन-टाग

भरि बाति जगि-जगि

भगजोगिणी करे अलिन्दन

मिथिलाक भूमि महान

माँस-पाणि अमृत समान

भोले पुरी माँस पछिया

करे छै मिथिलाक अलिन्दन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X **VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

मिथिला सन गौरव धवती

ले डेक दुनियामे आला ठाम

डेग-डेगव पारिषद खान

पोखरि-माखरि नदी डे अमराव

कोसी-कमला-तिनहागा

गडक-रौगमती-भूतली-रौगम

गाम-गाम अडि दलाव

अमर-जन-हमसँ भवत

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

घब-घबमे अतिथि मेरुमान

म्रागत होग छै देरता समाप्त

तीनु लोकमे होग छै ग्रागण

मिथिला अछि महान

बग-बिबगक हुनगव

भौवा कले छै ग्रागण

रगिया-रगिया कोगनी कहकेए

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

मोड़-गंगा-मेला-बूढ़बूढ़

अदकि-छकि अरुण मिठि रौन

मठि नीत-दिन अति-उठि

माथिली नगरिण माथिली टंदन

मिथिलाकेँ करै रंदन

मिथिलाकेँ अतिरंदन ।

अ की केरौ अहँ-13

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

अ की केलौ अहाँ ?

अपन बहिनो रिबान भेलौ अहाँ

जीरैत डलौ जिनगी जड़ । देलौ अहाँ

अ की केलौ अहाँ ?

नामी डलौ रदनाम केलौ अहाँ

गम बनलै खातिर डिग-डिग मिले डलौ अहाँ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

अ की केलौ अहाँ ?

अ हानति हमर किअ केलौ अहाँ

जीरैतेमे हमरा जड़ । देलौ अहाँ

अ की केलौ अहाँ ?

दिनक दर्शामे साकि-साकि देखू अहाँ

हम कष-कषमे समाएन छी नछ जेना

अ की केलौ अहाँ ?

मोक सागवमे डूमन छलौ कहूना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

बागीन रीति हमा कठिनी केना

अ की केनी अहाँ ?

खुरी सुवत हमा पढ़ी जेना

हमकबागत हँसि डी धनारिक कनी जेना

हमदी आँखि थोली ताकत जेकोव जेना

अ की केनी अहाँ ?





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

केकवा संग केनर होवी-12

बाँध तकेत भवि-भवि बाति जलौत

आँ \*थिया तेन नाले-नाल

कतेक पतनव रीतन

कतेको आनन रसन्त-रौन

सत सखी-सहेली मिलि

हृदय आ गारैए खुशी मारैए

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

पिआ संग खेलै होबी

हमर पिआ पबदेसिया

केकवा संग खेलै होबी

सब छि वंग-अरिब उँड़ रैए

हमरा कहि-कहि नज्दरैए

केना बीजलो तोहब छोनी

नगदि-नज्दरैए देरवा सतारैए

बि दे रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

केकवा संग तेनर होबी

लेना-तुका ठेनी रनि

मिठगव रोजीस गारै होबी

बंगक पिढावीस बंग रबमारै

जलिना थेलै

बाधा-संग अन्हा होबी

बाम-तखन थेलै

अरधमे होबी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

ढोल-गझीबा ठाक डहनी

लिष्ट-लिष्ट गारै हौबी

बैग-अरिब गनान उड़ैत

सभ फल खनए हौबी

बैग-रबसै मोन तड़सै

आँ \*थिया भेल नान-नान

कहिया अएत गवदेमिया



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

मिलि मंगे खोजै होबी

बिदेह बिदेह तछै छी हय

लेखक मंगे खोजै होबी ।

गाँव-गाँव-११

गाँव-गाँव सभ कहै छै

रूढ़ि पौन छै ल सभ कोष

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-547X**

जे पोसि छै गाए

हुनके हक छै कहत माय

बिग्न श्रम कर्म ले होग छै

ले श्रम कर्मक फल मिले छै

स्वर्ण-स्वर्णसभ सब कहै छै

जिन्गीमे गाएक गुण ले जले छै

मबनामे रेतवणी गाव कले छै



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

गोदानक छट प्रवासोमे कएन छै

गाए पोसरी तखन सुख छैत

जिखेतमे दुध-भात छैत ।

ले पोसरी गाए तँ

मवनागव दुध-भात केना छैत

सब लोकनि मोटेत बहे छै

रिष धवती महन रँगरै छै

गाएकेँ माए सब ले बूझे छै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

झुदा गाएकेँ गाए सभ कहे छै

गाए ले पौनै छै सभ कोण ।

जिन्गीक ज़ीरन पथमे

गाएक ग़ा ले ज़ले छै

झुदा मरनापव गाए सगे

रेतवणी पाव स्रग्ग पङ्क्ति छै

जिरेतमे गाए-गाएकेँ



बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

दूध सत पिअं छै

बबकसँ मोमे मरझा पहुँटे छै

गाएक झकरी सत ले बूने छै

दूधक जेन मावा-मावी करै छै

मबनापव गोदण करै छै ।

थेतिहबक जिगगी-10

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-547X**

बुकरकरी डुंगल

सूतल गङ्गल डुंगल

मोण कङ्गलङ्गल डुंगल

डुंगल मोण मारि कङ्गल

बाल-बङ्गल गिलि

खेतगल गोलो

काल करैत गाम बङ्गल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

बुधमै पौआगत छलौ

थेतक आछि रौस गिलि

सुखन लोठी-बुन-तेन

छैनी बिबटाग थेलौ

गामि गीर काजमे भिबलौ

थेतक काज करैत

देहक रुझी-गमवी धमि

सुथि कारी रैनि छैन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

भविष्येष्ट खेलांग ले भेन

कतेको पीठा रीति गेन

नीक रमन् नीक घर

कहियो नमीर ले भेन

कहियो लोदी कहियो बाँठा भेन

उपजा ज्वि-भमिया गेन

खाद-पाणि महग भेन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

थेतक ँगजा जल-मजदूरीमे छल गेल

मानक भवि रौन-रौछा

की थाएत लेना ज्ञात

माथगव हाथ धरि

मोक-मागवमे दुषि गेल

रौग-दादा खली मोछमे

कज्जा नानि मरि गेल

दूथ दराग रौषी रिखाहमे

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

किताक-किताक खेत रिक गेन

माथगव छेष्ट मारेत राजन-

खेत कि देहक नछु रिक गेन

जरी क२ की कवरै

केकवा झूठ देखाएँ

के सवण-भवा कवत

आत्मादाह कवणाग नीक बहत

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

थेत उगजा क२ की कवर

ले अलक दाम ले जिनगीमे अलक

रैजावक समाजक दाम

गहुँटि गेल अलक

लेना रैतत थेतिलक अलक ।

अलक दीप-९

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

अहर्बिया बाति

गजोतक ले कोला उगाग

मोटे डुजो केना भागत

अ अहर्बिया बाति

मोटेत मोममे ह्वाएन

एक उगाग अडि रैचन

दीप जलेजो तखन



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

किड अन्वित भागन-गड एन

रुदा मोचनो अ अन्वित

रौब-रौब होगत बहत

कहियो गजोबिया तै

कहियो अन्वित

ए दीपन

रुना हएत मन्त्रक प्रकाश

मन्त्रक अडि

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

बिदेह-कपी प्रकाशक अन्तर

बिदेह मन्त्रालय रणत बिदेह

तै अतिमागी अन्तर दू भागत

दीपक अन्तर बिदेह

ले काज छत दुनियाँ

बिदेहकपी प्रकाश अन्तर बिदेह

बिदेह दुनियाँ बिदेह-मन्त्रालय

बि एच् रु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

उत्तरक दीप जलौनाम

कहियो अन्धकारो ले ह्यत ।

दूधधन गंगा-४

सभ माधू गंगा नलाग डै

कतेक गाग जिनगीमे केल डै

जखन गंगा

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक ए पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

गागीक गाग दोग डे

सभक तब-मस गृह कले डे

तँ अगल गंगा किक गंगा बहे डे

गंगा माधुके गृह कले डे

की माधु गंगाके गृह कले डे

की गागी गागके गंगासे दोग डे

तँ गंगा एतेक गाग कतए बथे डे



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीमिह चरित्रम् ISSN 2229-

सुरक्षक गंगा धवतीगव रौं छै

पागीक पाप दोगत गंगा

पापक मोठवी कतए बथै छै

गंगा पागीकै

तष-कँचष मोष निर्माण करै छै

सतक कन्याण उँपकाव करै छै

ऊनछै सत गंगाकै दूथ दग छै

किएक गंगा एतेक दूथ सहै छै



ले कोण गंगाक हीत मोटे डै

जिखेत गंगा मलेत गंगा

पाप उयेत रदनाम होग डै

पाप ले पापी देखि गंगा

धवती छोड़ि गङ्ग एम हिङ्ग डै

मरझमँ धवतीगव आरि गंगा

दूरकि दिस-वाति पचतागत बह डै



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

कतेक पापी धवतीपब रूमि छै

असगल गंगा पाप बोज छै

पापीक पापीसँ

दरि-दरि गंगा मरि बहन छै

गंगाक दुख कोउ ले बुझै छै

अगल दुखसँ दुखान गंगा

मागबमे दुखि-दुखि मरै छै ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक ए पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मानवीय संस्कृति ISSN 2229-

रैगक रैगिती-7

अमाठक मास

उम्मास भङ्ग दिस

अवस थाए-गीर

थोपड़ ते सुतल

गमिमाँ देह भिजल



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

मिथिली भाषा

तुलनात्मक साहित्य

उत्तराखण्ड साहित्य

सिद्धि चर्चा

समाचार रचना

समाचार रचना

समाचार रचना

समाचार रचना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

खन्ता डरवा-रंगोखरि

मम-मम रंगोखरि

भद्र नग

भद्र नग

रंगोखरि रंगोखरि

मम नग

उडनि-कुनि

बि दे हू बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

ढोसा टितकरवा

पिअबका-मनिआला

सुबकनियाँ काँठ-काँठ

रबियातिक बीड़

जुष्टए नगन

घोघ हनकारैत

एकू स्रवमे

छैबागत ठोठियागत

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (बर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

हज्जावक-हज्जाव

अध्यापन कलेत

किड गीत गारैए

किड पानिमे डूनि

बकमक-बकमक करैए

किड एक-दोसरागव सराव भ२

एँ पाव-मँ-उँ गपाव कलेत

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

सरल-निरुक्ति

सब मिलि सहयोग करै

रोगक जातिमे

कोला भेदि ले

अपन संगठनकेँ

मजबूत रलौले

एकताक परिचा दैत बहल

रबखीक रूम

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

पङ्क्ति बहन्

शीतल हरा रँहति बहन्

रौंशक रँहियाती

सज्जित बहन् ।

रौंशक रौंशक -6

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

बिदेह बिदेह

ठन-पव-ठन बिदेह

मनमनगत बिदेह

पमरि गोन बिदेह क पमरि

हिन्नात हारि लोका

कवए नगन गुरारि

बिदेह बिदेह

कोला दया-माया

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

गौबरसँ कहलक

छाबि मास तक

बहत हमर बाज

ले छल देर हम

अहाँ सँ रहल बाज-काज

जखन हमर

बाँटा क भूत सँ बाँ बहत



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

एपावक लोक अही पाव बहत

उगपावक लोक उहीपाव बहत

जे हमरा रीट आएत

उ हमरे पेटमे समाएत

कोस भरिक पेट हमर

केना भवत

कजम-गाडी दाम-रौस

थाएँ जेँ सँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

पोखरि-खतता डरवा

बाबुसँ भवि रँगार हय भीठ

कररी डै जे अएन रँगार तँ

बाबुसँ दना

गोन रँगार तँ उँजवन दना

कररी साँट-डूँठ मेरो लोण डै

झुदा रँगार जिगगीकेँ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

तहस-तहस क२ दग डै

उंगजाडुं थेतकेँ

बाबुसँ भवि भाँडा रँगा दग डै

अलक रँदना रँगा

बाबु हँकरै डै

रँगाक रौढ़ि

ठहूँनिये पाँनिये

गवगोष्टिया दग डै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

बिकास ले ह्वाए दग डै

बिनाय करै डै

गाम-घबलै उजाड़ा

जिणगी तरौह करै डै

बिनाशक बाढ़ ।

पालिक ब्रूम-5



बूझ-बूझ पत्रिका

खगता सबके पढ़े छै

बूझ-बूझ घेना भरे छै

पोखरि-गंगाव भरे

मीन-सबला-नदी भरे छै

धावा गिनि सफ़द भरे छै

सरहक पिआस मेठाग छै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

दुनियाँ जीते छै

सुखधन धरतीकेँ मिटे छै

सभ मिलि पारिषद उपायोग करै छै

दुःखपायोग सेहो होए छै

ओ मि दुब ले छै

पारिषद बुझ जेन

तबसि-तबसि मलैत

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

धवती धवकि ज़ीर ज़रिते

दुनियाके रौंदरौक जेन

बूले-बूले पालिक कबए गड़त

ले तू ज़िन्गी फ़ला भवि ले चेत ।

हेबाएन भगवान-4

मोक्ष घरबाएन दुन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

टैलर डिजाइन मल

कदम्ब-गड्ढा कलेत

मोममे ह्वाएन

स्वथ-शीति लेन

भगवान् मिनर

अपन दुखा स्वाएर

जे स्वथ-शीति लेन





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

कोला उगाय रौतएत

जगन् कल्याण हएत

मदिर-मदिर घुमि-घुमि

पुजा-विषती रूत केजौ

मस्जित-गुरुद्वारामे

माथा छैकिजौ

गिबजायबमे प्रार्थना केजौ

रूदा हेबएत भगराण

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

कठौ लै भेटैत

मोक्षक अर्थोति लै मेठैत

मोक्षमे रिछावि

गहर्बले-गहर्बव ममा केनौ

माधु-संतक मेरा कलेत

रन-झंगल घुमि-घुमि

तीर्थछिन यात्रा केना

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

तन-मनक अछि लेन

गंगामे बहैलौ

देहक मति जकर डुष्टि लेन

रूपा मोषक मति ले लेन

लैलैनी रैठि लेन

तखन लेन लेन

सरहक दिनमे

भगवान रसै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

कपी-कपीमे वमैए

अगन मोन-मदिवमे तकि तकलौ

हेबएन भगरानकेँ देखलौ

सुथ-शीतिक रवदान पोलौ ।

जोरैए जेन-3

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

जीरैए लेन

दूखक लेव

गीरैए पढ़ै ले

बिदेह अकाल

जीरैए पढ़ै ले

दूखक लेव

जिगी लेव

महल पढ़ै ले

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

जिबिगी गिले डे

दूखक सल्ले जेन

बिबि दूख

सुख ले गिले डे

किड कबरौक जेन

जिबिगी जीरेण गड डे

जीरेण जेन

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

दूधक लाव

पीरि कर जीरै गड़ डै

समाव सगदर ले

दूधक मागव डै

अमाव ले नशिब डै

काँछे भवन रौछे

मोछे -मोछगव

बिगुन गाड़न डै

बि एच् रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पार्श्विक ए पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

कर्मि कष्ट

शुल रेलो डे

सभ दूथ

सुथ रेलि जाग डे

दूथ सहि-सहि

जलिना किटवमे

कमल शुलो डे



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

**547X VIDEHA**

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बिदेह बिदेह बिदेह

बि एच् रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

टैतारैव गीत-2

बाजे बग छुनरी

बैगेलै हो बागा

टैतक मल्लिमा ना

जाले-जोव हाथमे

मैहन्दी नगेलै

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

सज्जनार्थ तदर्थे ना

हो बाबा टैतक महिमा ना

नाम वंग फुलसँ

सज्जिया सजेरै

गीठ-गीठ रात सज्जनार्थ कहलै

हो बाबा टैतक महिमा ना

आमक रंगियामे

रैसन कोयलिया

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

शियाकेँ रैजरेँ ना

हमरा तड़सारेँ ना

हो बायाँ टैतक मल्लिमा ना

टमेनी हुनराँसँ गजवाँ रैलैरै

कावी-कावी केसियाकेँ सजेरै

शियाकेँ नमटेरै ना

हो बायाँ टैतक मल्लिमा ना ।



## टैती गीत-१

भोव भेलै हे सखी

भिसबरी भेलै हे

कनी चू ल रँगिया

कोयनिया रँजै हे

हे सखी टैतक महिला हे

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

श्रीमक गाडीमे

मूर्तौ मूर्तौ

पिया केव संगे हे

हे सखी टैतक महिला हे

कावी-कावी केसिया

डावपव नष्टके

पुर्वा-पडियामे हूनके



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मीठ-मीठ गीत गियाकेँ सुनलै हे

हे सखी टैतक मल्लिा हे

पिश्रव साढ़ी नान छोनी

नाले छुबिया हे

छठन थौरन मसके छोनी

बहि-बहि बिहूँस हे

हे सखी टैतक मल्लिा हे ।



२

प्रभात बाय भङ्ग

१

पवम पारण प्रभुभूमि अछि अपन मिथिलाधाम यो  
मिथिला के हम रक्षे छि मैथिलि हमर नाम यो  
जनक हमर पिता छथि जनकपुर हमर गाम यो  
जगमे भेटैत ले कतहुँ एहन सुन्दर मिथिलाधाम यो  
पवम पारण प्रभुभूमि अछि अपन मिथिलाधाम यो

मिथिला के हम रक्षे छि मिथिलेश हमर नाम यो  
मिथिला के हम रानी छि जनकपुर हमर गाम यो  
महि महर्षि केव कर्मभूमि अछि मिथिलाधाम यो





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

पवम पारण प्रबुद्धि अछि अपन मिथिलाधाम यो

मिथिलाक मेरे स अरतवित भेली सीता जिनकर नाम यो

उगना रानी महादेव एनाह पाछुन रानी कय बाम यो

धन धन अछि मिथिलाधाम, मिथिलाधाम जगमे महान यो

पवम पारण प्रबुद्धि अछि अपन मिथिलाधाम यो

हिमाली के कोथ स समरन कमना कोशी रैलान यो

मिथिला के शीन रौतोन मंडन, कमारिन, राछपति रिद्वान यो

हमर जगभूमि कर्मभूमि नृजगभूमि मिथिलाधाम यो

पवम पारण प्रबुद्धि अछि अपन मिथिलाधाम यो

कपिल कणाद गौतम अछि मिथिलाक शीन यो

रिद्वान के राते अनमोन ओ छुथि मिथिलाक पहिचान यो

जगमे भेटैत ले कतहुँ एहन सुन्दर मिथिलाधाम यो



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

पवम पारिष पञ्चभुमि अडि अगल मिथिलाधाम यो

२.

प्राप्ति मिथिला

मिथिला के मिथिलेश्वर महादेव हम की कह्यो

स्वयं अहाँ छि अनुभवामी अहाँ सभठा जलैतछी यो

रैसुधाक हृदय छन हमर महास मिथिला

अ हमारी ले मोक्ष प्रवाण कह्यो यो

मिथिलाक जल जल छनान जलक एही ठाम

ताहि जेन नाम पडन जलकपूर धाम

बाजा जलक छनान बाजर्षि जलकपूरधाम मे

मीता अरतवित भेनहि मिथिले गाम मे

मिथिलाक पाछन रैनी एनाह चारो भाग बास



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

बिदेहापत्री के टाकव रैषणार उगना एहि ठाम

टावो दिस अहि छि महादेव जलकपुत्र के द्वावगान

पुन दिस मिथिलेश्वरनाथ पश्चिम जलेश्वरनाथ

उतव दिस धुँधेश्वरनाथ दक्षिण कलेश्वरनाथ

किनहुँ भ सकय मिथिलाक प्राणी अनाथ

ग धुर मल अछि प्राचीन मिथिलाक परिवर्तना

एखुना अछि एहन सुन्दर मिथिलाक अतिवर्तना

३

गीत

सुन सुन ले सुन परन प्रवर्तना

की जेने छन हमरो अप्पन गाम

हमर जगजुनि रहि ठाम

जतय छै सुन्दर मिथिलाम ॥२॥



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

देशे रिदेशे पवदेशे घुमलौ

मोह केव भेटन नही आवाग

साग बोली थोरै बहरै अप्पल गाम

जतय छै सुन्दर मिथिलाधाम //२

घब घब मै छहि रहि सती

बाजहि जनक मन पिता

सब केव पाछुन छहि बाग

जतय छै सुन्दर मिथिलाधाम //२

काशी घुमलौ मथुवा घुमलौ

घुमलौ मका मदीना

सब सँ पैघ रिवाजति केव गाम

जतय छै सुन्दर मिथिलाधाम //२

हिमाली कोथ सँ रहै कमाना कोशी रहल

तिबतति तिबत छै जग मै महान

दुधमति सँ दू रहै छै रौदेलीक गाम



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जतय डै सुन्दर मिथिलाधाम ॥२

४

गजन

मिथिलाक पादुम भगवान श्रीधाम डै

जग मै सरै म सुन्दर मिथिलाधाम डै

मिथिलाक मङ्गल म अरतवित सीता

जग मै सरै म सुन्दर हुनक नाम डै

मिथिलाक शान रौतौल मला रिद्वान

करी कोकिल रिद्यापति हुनक नाम डै

भऽ जाएत अछि सम्पूर्ण पाप तिमोहित

मिथिला एकठा पतित पारन धाम डै

भैरव ले एहन अमृतम अमृतम

प्रेम पवागक कस्तूरी मिथिलाधाम डै

घूम अमेरिका अफ्रीका नन्दन जागान



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जग मे ले कोला दोसब मिथिलाधाम छै

मिथिला महातम एकरैव पट्टी जग

मिथिला म पौय ले कोला दोसब धाम छै

जतय भेटैत कमला कोशी रैनहास

श्रयाटिक दनास,रही मिथिलाधाम छै

पौतम कलिन कपाद मडल महास

प्रथम रिद्धास सतक मिथिलाधाम छै

भयि कृति तपस्वी तपोभूमि श्रुतिधाम छै

"प्रभात"क गाम महास मिथिलाधाम छै

.....रर्ष:-१३.....

३.

गीत

रैस दवर्तगा मधुरनी चाहे जनकधुव

हम सब छि मिथिलारानी बद्ध जतय दुव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

रैसु रिवाँषगव बाजुरिवाजु चाहे नहाष

हम सत मिथिनारानी हमव मिथिना महान

रैसु सीतामठ १ शिरहव चाहे झुजहवधुव

हम सत छि मिथिनारानी बद्ध जतय दुव

घव आँगनमे रैहय हमरा कमला कोशी रैहान

भाँगाचावा प्रेम देखेना चानु अघाटिक दान

बाजुरि जनक आँगन अरतवित भेली जनकदुनारी

मिथिना केव पाछुन रैहनाह बाग नखन धनुषबादी

रैसु मर्गगरा जनेधुव चाहे समझीधुव

हम सत छि मिथिनारानी बद्ध जतय दुव

मिथिनाक गोबर मँडन कपिन कपाद राटपति

जन जन केव आमो डधि करी कोकिल रिधागति

बि दे ह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

बैस अवबिया थगडी या चाहे भागनप्र

हम सब छि मिथिनारानी बद्ध जतय दुब

बैस सहवसा सुपौन माथेप्रवा चाहे पुर्निया

सम सब छि मिथिनारानी जले समुदा दुनिया

बैस लगान रिहाव झुगेव कष्टहाव चाहे रैथमराय

हम सब छि मिथिनारानी कियो नहि पवास

ए बढागव अगल मतिरा ggaj endr a@vi deha.com पव  
पठाड ।

बिदेह नुतन अंक मिथिना कना संगीत

१

१.

616



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-



गणेश ठाकुर, पिता श्री बिलाद ठाकुर,  
पोखडिडीवा (कक्षा आठक विद्यार्थी)



बि एच रु मिहै *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पक्षिक अ पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथुमिह संस्कृतम् **ISSN 2229-**



बि एन रु मिहैर *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-



बाजनाथ मिश्र

द्विमास मिथिला स्नागड मो

बिन्दु बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह* १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय विकास ISSN 2229-

547X VIDEHA

चित्रण मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.



उमेश मंडल

मिथिलाक रसपति झागड मो

मिथिलाक जीर-जुड़ु झागड मो

मिथिलाक जिनगी झागड मो

मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक जीर जुड़ु/ मिथिलाक जिनगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

ई बालापव अपन मतिर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब  
पठाऊ ।

बिदेह नृत्य एक गद्य-गद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय शर्मा (मुल हिन्दीसँ  
मैथिलीमे अन्ववाद कलित उपेव)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक अशीदा मा  
द्वारा मैथिली अन्ववाद

छिन्नमस्ता

३. कलकत्ता दीर्घकथा (मुल लंगलीसँ मैथिली अन्ववाद श्रीलक्ष्म  
शेखर)

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-



भगत रैडक देगे-भ्रमा

मंगलेशे डरैवान- हिन्दीसँ



मैथिली अक्षराद

रिणीत उंगेन



मंगलेशे डरैवान- हिन्दीसँ मैथिली अक्षराद



रिणीत उंगेन

१

622



सिंहबक पेशीरघव आ आब ज्ञान-चिन्ह ठाम मे  
ओ बोधिविधान लोकक तके रना पोस्टब  
एथला साठन नखाह दैत अछि  
जे कतेको रबख पहिल दस-राबह रबखक उग्र मे  
रिना रतेल घबस निकलि गेल छल  
पोस्टबक द्वातारिक ओकव नग्राग मनोना छै  
बग गोर ले सिद्धिनाम छै  
हराग छ्पी पहिले छै  
छेहवा पब कोला छेहक निशान छै  
आ ओकव माय ओकवा रिना कालेत बहत छै  
पोस्टबक अत मे आ आग्रामन सेहो बहत छै  
जे हवायन केँ खरब दै रना केँ छेह  
सथामभर उचित गणाम



तथला ओ लेकरो छिन्ह मे ले आरौत छै  
पोस्ट मे डगन मनहन हवाछैसँ  
ओकर रंगरानी ले मिलैत छै  
ओकर मुकरोना उँदानी पव  
आरौ कछ मेनरँ रँगा तार छै  
मिहक मोसमक हिसारँ रँदलैत गेल अछि ओकर चेहवा  
कम थाएत, कम स्वतत/ कम रोजैत  
नगातार अप्पन ठाम रँदलैत  
सबन आ कठिन दिस केँ एक जना रितारैत  
आरौ ओ एकठा दोसर दुनिया मे अछि  
किछु कहलक संग  
अप्पन ग्रामदुर्गक पोस्ट मे देखैत  
जकरा ओकर माता-पिता अथन धरि डगरारैत बहैत छै  
जग मे आरौ दम रा रौवह



बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह' १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

निखन बहैत अछि ओकर उय ।

बचसाकान: 1993

२

अभिगय

एकठा गहीब आमेरिग्रेसम तबि क२

भोले निकनि जागत छी घबसँ

जगसँ दिस तबि आग्रेस्त बहि सकी

एकठा लोक सँ भैँठ करैत झुकागत छी

ओ एकएक देखि लैत अछि हमर गिअनब मल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

एकठासँ छठसँ हाथ गिनाबैत छी

ओ बूमि जेत अछि जे हम तीतवसँ छी गिनाव

एकठा सथाक आगु दुग रैसि जाग छी

ओ कहैत अछि जे अहाँ दुबैव-बोगियाहा सग नखाह द२ बहन छी

जे हमरा कहियो घरमे लै देखल छैन

ओ कहैत अछि जे आग अहाँकेँ ठीरी गव देखल छैनहुँ एकदिस

राजावमे घुमेत छी निम्नेद

डिब्रामे रैद भ२ बहन अछि गुवा देशे

सम्पूर्ण ज़रिफ रिक्कारैक जेन

एकठा नरै वंगीन पोथी अछि जे हमर करिताक

बिबाध मे अछि अछि

जगमे छगन स्रमव छेवामे कोना कछु लै

ठाग-ठाग नृक द्रुदा अछि रिचावक रैदनामे

हेयौ एकठा गुवा फिन्ना अछि नयाँ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

अहाँ कील लिख आ खूँ आनंद उठाऊ

शेय जे किछु अछि अभिनयक

टाक कात शौर आरि बहन अछि

मेकअप रौदनहिक काज ले अछि

हवावा एकठा लणक कपडा पहिनि क२ आरि गेन भन

ओ जकवा अपणा पव घमाँड भन

एकठा खुशामदक आराज मे गिडगिडा बहन भन

ट्रेजडी अछि संक्षिप्त नम्रव ग्रहसन

सभ छहैत अछि कोन तबहे डीन नी

सभसँ नीक अभिलताक प्रवक्ता ।

बचनकाल : १९९०

बैनाली प्रते

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

बौद्ध गजाल १.मिहिव मा २.अमिता मिह ३.उदय कमाव मा  
४.जगदाश्व मा मय ५.करी मा ६.डा. मेशिधर कमाव  
“बिदेह”-ललण (बौद्धगीत)

१

मिहिव मा

बौद्ध गजाल

१

अथ हे तू किय हवदय काले डे

बाति दिस तू हमर माथा तूकाले डे

628



हेलै छे केवा डम्बर के रैना जहाज  
पोखरियो मे लोज तू नेम नगारै छे

एक हाथे धेल पेट दोसव मे डण्टा  
लोड १ के गारि ठोकव गर्दी उडारै छे

घुमि घुमि गाडी तू रीट दुपहरिया  
दुखखा क कम मे आम चोवारै छे

२

समसम रैवथे रूमी लो  
छमछम चनरै रूमी लो

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

आगु पाडु मलहा डोमय

खता मे रैड गडदुमी रौ

आम तौडय माम गुडय

जोगा देमक दुषदुमी रौ

बाजा के रैछी मावय ठेपा

ककब त्रैके मधुरैमी रौ

२

अगित शि

रौल गजल

१

630



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

## 547X VIDEHA

मानुषीमिह संस्कृतम्, ISSN 2229-

ହହବ ଓଁକ୍ଷଣ ପାଢ଼ନ ଗାବ ପାବ

ৰ'দবো বৈমলৈ চাব পব

ମୁମ୍ମ ଦୌଣ୍ଡି ଗଢ଼ୁମା ଭବନ ସବ

কোণালী তম দৈ তাব পব

ବାଦି ଗବ ଗାୟ ଦୈ ଦୁଃ ଡେ

নজব দেলে শ্রীৰণ টাব পৰ

ସ୍ବାଗତ ଜେନ ରୌଆ କଏ

ହୁଏ କିଏ ଶୁଖିଲା ହାତ ପାଏ

ভোব ভেলে ঊঠন বাজা যৌ

"ଅସିତ " ରୌଦ୍ରା ଚନ୍ଦନ କାବ ପବ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह - मासपत्रिका

२

बिदेह गजल

बिदेह धर दिशि दोडननि रौशनी ,

अंगन जलखग माँगननि रौशनी ,

बीच अँगन मे छुट गिरी नगरी ,

डुबपानी , डोमन खनननि रौशनी ,

देखननि माँ के ठाठ हाथ फैलल ,

छेष्ट बिसरि कोवा रैनननि रौशनी ,

दानी अनथिज जल रौशनी के .





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

दूध देख क रौंछी खेकननि रौंछा ,

रौंछी खेकननि गिबटाग मोहारी ,

हूँकनो चाली से ज़िद खेकननि रौंछा ,

गौंद गह्वार हाथी , देर मोठेव काव ,

रौंछते मल्लो ली माकननि रौंछा ,

संग ये ज़ाएँ घुमे नए सर्कस ,

"अमित" सँ चाबि नङ्ग खेकननि रौंछा . . . । ।

३

रौंछ गह्वार

आग तावा केव नगरी सँ एथि माँ ,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

अगल कोवा नष्ट द हमरा उठैथि माँ ,

थेनलै माँ संग आ कमलै हँसलै ,

पकडि आँठुव गाम-घर मे बूझैथि माँ ,

थाकि जेठै जखन , भोजन कवा हमरा ,

गारि जोडी आँटवक तब सुतेथि माँ ,

बाम कक्का के पक डिक मबखनिया ,

सुबज के रँकवी सँ हमरा रँचेथि माँ ,

हमर संगी संग माँ के घुँमे सकस ,

आरि घर हमरो मिलाया न जेथि माँ ,

कत सँ एते मेघ काबि ग , अरैव मे ,

बि दे रु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

"अमृत" मम देवांग यो कथन एषिण माँ . . . । ।

रौहले-कनीर

हांगनातुन-हांगनातुन-महांगनातुन

2122-2122-1222

३

टंदन कमाव सा

सबबा, मदलेश्वर स्थान

मधुरैनी, रिहाव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

बौल-गजल-९

दाव गव छै लोखा लैसन,

माँस अँगना लोखा लैसन ।

घूँ-घूँ खाधि दूध-भात,

मायक कोवा लोखा लैसन ।



बाज्जा-बाजी स्वर्णमि पिहानी,

मगगाँ कोवा रौखा रौमन ।

उ-वा-गा-मी मिथमि-गठमि,

बाँबाँक कोवा रौखा रौमन ।

स्वप्ना-मेना मंग तेले डुमि,

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली विदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

"टंढन" अँगना लौशा लैसन ।

रौल-गजल-२

अकककु जखन आवगा रौजल,

किविषि अकजक मुँह सँ लागल ।

लौशा डकनक कोशनी रौजल,

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

अथि मिडेटे टुनरुन जागन ।

बहा-मोना के कयननि जनथे,

असकन गेनथि घंठी राजन ।

दीदीजी रैड्ड नीक नलोत डहि,

गाम्हर जी के डडि नय भागन ।

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

काव्य गुरुकुल के उद्घाटन-समारोह,

तैयारि खोज गवर्नर मंडल के अंगण ।

"टिप्पणी" छैन-छैन घड़ी बजले ,

छुट्टी भेजल गवर्नर मंडल

बौद्ध-गुरुकुल-३





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

रौंग रौंग रौंग ठे ठे-ठे-ठे

रौंगवा उँडा ठे ठे-ठे-ठे ।

मवणा मवणा ठे ठे-ठे-ठे,

रौंग रौंग ठे ठे-ठे-ठे ।

मिना ठे ठे ठे ठे-ठे-ठे,

मौंग मवणा ठे ठे-ठे-ठे ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह **ISSN 2229-**

छुमा डाती धक-धक-धक,

डबसँ कागस खब-खब-खब ।

पप्पा एमथिष भागि गोन डब,

रौत पदरौस चब-चब-चब ।



जगदाश्रम मा मय

लैला-तुलकाक - गजन

-----

छम छम छम छम तावा चमके

लैला कए हाथक तकरा गमके

कावी रकबी,नर उल्लव महिय

मान रौडी किए दोब-दोब रमके

लैलाक घोवा मय-मय कए देखु

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

काका के घोवा सिद्धी कतेक कमके

बोली के साजी मए के नईगा रहे

लौआ के गघरी त कतेक समके

लौआ हमर आरै गुमगुम किए

किएक ले ठूँक-ठूँक ठूँके

( रर्ष-१३ )

३.

करी सा



बिदेह बिदेह

हेबो बिदेह तू बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

दुध-बिदेह बिदेह तू बिदेह बिदेह बिदेह ,

बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

गद के दुध बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह बिदेह ,

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

करहौ नावा के देखुन पेश लोया,

आरौ रेलडी पब छठन छै किअ..।

रूप-१३

७

डा. शशिधर कुमार “बिदेह”



लनपन (रौनगीत)

थेली कुदे - योज मारै,

लनपन होग डै थनरौ नथ ।

पव पठ १३ मेहो आरथक,

लनपन होग डै पठरौ नथ । ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
**547X VIDEHA**

माथिली बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

मैथिली मैथिली मैथिली मैथिली

मैथिली मैथिली मैथिली मैथिली

मैथिली मैथिली मैथिली मैथिली

मैथिली मैथिली मैथिली मैथिली

मैथिली मैथिली मैथिली मैथिली

मैथिली मैथिली मैथिली मैथिली





तेँ पठिअ मेहो आरथक,

लनगन लोग डै पठरौ नए । ।

थेन कुद लनगन केव गहना,

राष्ट्रियक संपोषक छी ।

थेन कुद मिथिलैड रहूत किछ,

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका* बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

तै ओ अति आरथक डी ।

पव पठ १३ रीति थोन कुद रैस,

अवृत्ति जीरन जिउरौ नए ।

तै पठ १३ सेहो आरथक,

लनपन होग डै पठरौ नए । ।

उचित समय पव थोनी कुदी,

650



उत्तम समय अध्यापन - अध्यापन ।

एकक परिपूर्वक दोसब डी,

सम्यक अनुपाते परिपातन ।

सुख दुख जिमगी केव दु पहिया,

दुहू जकबी जिउरौ नए ।

लक्षण केव आभाव गठनि पब,

जिमगी खन खन हँसरी नए । ।



এ বচনাগৰ অংশ মতীয়া ggaj endr a@vi deha.com গৰ  
পঠাউ ।

### बैद्य लोचन द्वारा स्वकीय श्लोक

१. प्रोतः कान लोचनद्वय (सूर्योदयक एक गंठी पहिल) सर्वप्रथम  
अपन दुनु हाथ देखरौक चाली, आ जा श्लोक रँजराक चाली ।

कवाथे रसते लक्ष्मीः कवमरा सबसती ।

कवमुले हितो लोका प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ लक्ष्मी रँसते छथि, कवक मध्यमे सबसती, कवक  
मुनमे लोका हित छथि । भोवमे ताहि द्वाले कवक दर्शन  
कवरौक थीक ।

२. मध्या कान दीप लेशरौक कान-

दीपमुले हितो लोका दीपमरा जगार्दनः ।

दीपाथे शिखरः प्राकृतः संध्याज्यातिर्मोक्षसुते ॥

दीपक मुन भागमे लोका, दीपक मध्यभागमे जगार्दन (रिष्ट) आ  
दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ  
ममकाव ।

३. स्वतरीक कान-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुरीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

बार्म कर्म हनुमान् रैणतेयं वृकोदवम् ।

शेयल यः सारेल्लिह दूःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सत दिन स्वतर्माँ पहिल बार्म, कर्मावस्त्राँ, हनुमान्, गकड  
आऽ तीमक सारण करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नष्ट भऽ जागत  
छहि ।

४. नहरौक समय-

पक्षी च यद्गल टेर गोदारबि सब्रति ।

बर्मदे सिङ्गु कारेबि जनेऽसिन् सल्लिहि कक ॥

हे गंगा, यद्गला, गोदारबी, सब्रती, बर्मदा, सिङ्गु आऽ  
कारेबी पाव । एहि जनमे अपन साल्लिधा दिख ।

३. उतुव गसद्गदुय हिमाद्रिश्चर दक्षिणम् ।

बर्ष तत् भावत नाम भावती यत्र सप्ततिः ॥

सद्गदक उतुवमे आऽ हिमाद्रिक दक्षिणमे भावत अछि आऽ  
उतुका सप्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।

पञ्चक ना सारेल्लिह महापातकनामिकम् ॥

जे सत दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मन्दोदरी, एहि  
पाँच नामी-स्त्रीक सारण करैत छथि, हुनकर सत पाप नष्ट भऽ  
जागत छहि ।

**मानुषीमिह संस्कृतम्, ISSN 2229-**



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मन्त्रावथाः । शत्रुणां  
बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयान्तुर ।

ॐ दीर्घायिर्भूत । ॐ सौभाग्यवती भव ।

हे भगवान् । अग्न देवमे स्वयं गायत्री अर्पिते विद्यार्थी उपेक्ष  
होथि, आ शत्रुके नानि कश्चित् सैनिक उपेक्ष होथि । अग्न  
देवमे गाय शत्रु दुष्ट दय रानी, रवद भाव रहन कथमे सक्षम  
होथि आ शत्रु । शत्रु कथे दोग्य रानी होथि । अग्न  
नगवक शत्रु कथमे सक्षम होथि आ शत्रु सभा मे उपेक्ष  
भाषा देवयानी आ शत्रु देवयानी सक्षम होथि । अग्न  
देवमे जयन आरथक होय रानी होथि आ शत्रु-शत्रु सैनिक  
परिपक्व होगत बहए । एरु कथे सभ तवहे हमरा सभक  
कन्या होथि । शत्रु बुद्धि नानि होथि आ शत्रु उदय होथि ॥

मन्त्रार्थः कोन रत्नक गङ्गा कवरीक टाली तकव रानी एहि मन्त्रे  
कथन गेन अछि ।

एहिमे राटकश्रुतापमान्ड काव अछि ।

अग्नय-

जैन - विद्या आदि ग्राम परिपूर्ण जैन

बाष्प - देवमे

जैनरत्नी-जैन विद्याक तेजस हकत

आ जयता- उपेक्ष होथि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीह चरकृष्ण ISSN 2229-

बाज्जः - बाज्ज

शुले२ रिषा डव रैना

अषर्या- रौषा छेरौमे निष्ठा

२तिर्याधी-शेवुकेँ ताका दय रैना

महावयो-पेय वथ रैना रीव

दोक्षी-कामला(दुध पूर्ण कवए रौनी)

पेवुरौठलडराणुः पेवुर-लौ रा रौषी रौठलडरा- पेय रैवद

णुः -श्वः -हवित

मरुः -घोड़ ।

पुवक्षि-रौषा- पुवक्षि- रारहावकेँ थाका कवए रौनी रौषा-रौषी

जिष्ठु-शेवुकेँ जीतए रैना

वथेष्टाः -वथ पव हिव

मभेयो-उत्तम मभामे

हराश-हरा जेहन

मज्जमानु-बाज्जाक बाज्जामे

रौषा-शेवुकेँ पवाजित कवएरैना





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह ISSN 2229-

निकाय-निकाय-निश्चयकत कार्यमे

नः-हमर सभक

पूज्या-मेघ

रयित-रयि होए

फलरल-उत्तम फल रना

उषसः-उषसिः

पछुत-पाक

योगेक-अनन्य नन्य करैक हेतु कएन गेल योगक बन्ना

नः-हमरा सभक हेतु

कम्पत-समर्थ होए

त्रिषिथक अमरद- हे अमर, हमर बाजामे अमर नीक धार्मिक  
रिषा रना, बाज-रीव,तीवदज, दुध दए रानी गाय, दौगय रना  
जुष्ट, उद्यमी नारी होथि । पाज्य अरिष्टकता पडना पब रयि  
देथि, फल देय रना पाछ पाक, हम सभ संपत्ति  
अर्जित/संवर्धित करी ।

8.M DEHA FOR NON RESIDENTS



## 8.1 to 83 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet –GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words – GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium-

GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha  
chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA

VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma  
and Dr. Jaya Verma

बिदेह नूतन श्रृंग भाषांगक बचना-लेखन

Input : (कोशिकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोन्टिक-  
रोमनमे प्रयोग कर। Input in Devanagari,  
Mithilakshara or Phonetic-Roman.)

Output : (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

आ हेल्लैक-बोम/ बोममे। Result in  
Devanagari, Mthilakshara and Phonetic -  
Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोय / मैथिली-अंग्रेजी-कोय प्रोजेक्टके आगु  
रैद छु, अपन सुमार आ योगदान ज-मेन द्वारा  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाउं ।

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोय (ऑनलाइन)  
पहिल रैव सर्च-डिक्शनरी एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्व आधारित -  
Based on ms-sql server Maithili-English  
and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ लपानक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा  
रैनाउव मानक मैथिली आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.लपान आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा  
रैनाउव मानक मैथिली

१.१. लपानक मैथिली भाषा लेखनिक लोकनि द्वारा रैनाउव  
मानक उच्चारण आ लेखन मैथिली

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक पाठ्यक्रम पूर्ण कप्तम सञ्चालन  
निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिलीह बिदेह, ISSN 2229-

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षराव: पञ्चमाक्षरावुआत ७, ए१, ए१, ए१, ए१ ए१ म  
अरौत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव शिष्टक अक्षरमे जाहि रक्षाक  
अक्षर बहैत अछि ओही रक्षाक पञ्चमाक्षर अरौत अछि । जेना-  
अक्षर (क रक्षाक बहुरीक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि । )  
पञ्च (ट रक्षाक बहुरीक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि । )  
खण्ड (ठ रक्षाक बहुरीक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि । )  
संक्षि (त रक्षाक बहुरीक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि । )  
खण्ड (प रक्षाक बहुरीक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि । )  
उपरांत रात मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक  
रिदनामे अधिकशि जगहगव अक्षरावक प्रयोग देखन जागछ ।  
जेना- अक्षर, पञ्च, खण्ड, संक्षि, खण्ड आदि । राकवारिद पञ्चित  
गोरिन्द नाक कहै छथि जे करआ, टरआ आ ठरआसँ पूर्ण  
अक्षराव लिखन जाए तथा तरआ आ परआसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर  
लिखन जाए । जेना- अक्षर, टरन, अक्षर, अक्षर तथा कक्षर ।  
हुदा हिन्दीक निकट बहुरीक आधुनिक लेखक एहि रातकै नहि  
मालैत छथि । ओ लोकनि अक्षर आ कक्षरक जगहगव सेहो अक्षर  
आ कक्षर लिखैत देखन जागत छथि ।  
नरीण पछति किछु स्वरिवाजक अरुष्ट छैक । किछक तँ एहिमे  
समय आ स्थानक रीति होगत छैक । हुदा कतोक रौब  
हस्तलेखन वा हुदनामे अक्षरावक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि  
लेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि ।  
अक्षरावक प्रयोगमे उदाहरण-दोषक सम्भारणा सेहो ततरै देखन  
जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परआ धरि पञ्चमाक्षरक  
प्रयोग कवरि छैत अछि । यसँ न२ क२ छे धरि अधिक अक्षरक  
सम्भ अक्षरावक प्रयोग कवरिमे कतहु कोना रिवाद नहि देखन  
जागछ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह, ISSN 2229-

२.४ अ/ ठ : ठक उँचावण “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः

जतः “व ह”क उँचावण हो ओतः मात्र ठ लिखन जाए । आष

ठास खानी ठ लिखन ज़अरौक चाली । जेना-  
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठझ, ठेवी, ठाकनि, ठाँ

आदि ।  
ठ = गढ़ाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरौ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ,  
मीठरँ, पीठरँ आदि ।

उपहारि शब्द, सतकै देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे  
साधारणतया शब्दक श्रुतिमे ठ आ मर्या तथा अश्रुतिमे ठ अरौत  
अछि । एहिसँ निम्न ठ आ ठक सम्बन्ध सेहो लागू होगत  
अछि ।

३.२ अ/ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचावण रँ कएन जागत अछि,

झुदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन ज़अरौक चाली । जेना-

उँचावण : रँदुलाथ, रँदुला, रँर, देरँता, रँरु, रँनि, रँदना

आदि । एहि सतक स्थानपर क्रमिः रँदुलाथ, रँदुला, रँर, देरँता,  
रँरु, रँनि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उँचावणक लेन  
ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओझन आदि ।

४.५ अ/ ज : कतहू-कतहू “ज”क उँचावण “ज”जकाँ कवैत

देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली ।

उँचावणमे यरु, जदि, जझना, जूग, जारँत, जोगी, जदू, जम  
आदि कहन ज़अरौना शब्द, सतकै क्रमिः यरु, यदि, यझना, यग,  
यारत, योगी, यदू, यम लिखरौक चाली ।

३.६ अ/ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत  
अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, हेत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतिनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषींह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

साधारणतया शैक्षिक श्रुतमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शैक्षिक, सबक स्थापन रहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि करौक छली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शैक्षिक आवश्यकतामे “ए”लै य कहि उँटाव कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पद्धतिक अनुसरण करब उँपयउ माणि एहि पुस्तकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनूक लेखनमे कोना सहजता आ दुकलताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसभाषाक उँटाव-मैथिली यक अपेक्षा एस रौसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शैक्षिक लेन, हेँ आदि कएने कतह-कतह लिखन जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगलै रौसी समीप प्रमाणित करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रपत्रमे कोना रीतपर रौन दैत कान शैक्षिक गार्ज हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुँकहि, अणहूँ, ओकवहूँ, तकोनहि, छेष्टहि, आणहूँ आदि । हूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थापन एकाव एँ हूँक स्थापन ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुँक, अणहूँ, तकोन, छेष्ट, आणहूँ आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उँटाव थ होगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडनी (थोडनी), यँकोण (थँकोण), यँशे (यँशे), सन्तुय (सन्तुथ) आदि ।

+ धनि-जाग : निम्नलिखित अवस्थामे शैक्षिक धनि-जाग भ२ जागत अछि:

(क) फिनायनी प्रत्यय अयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि ।  
ओहिमे सँ पहिले एक उँटाव दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

आगाँ लोप-सूचक छिन् रा रिकारी (१ / २) नगाउन जागड ।

जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) जेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ जेनाह, क जेन, उठ पडतोक ।

पठ२ जेनाह, क२ जेन, उठ२ पडतोक ।

(थ) पूर्वकालिक प्रत आस (आए) प्रत्यये य (ए) वृत्त भ२

जागड, ह्रदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागड । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) जेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था जेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय एक उच्चारण फियापद, सङ्गा, ओ विशेषा तीनुमे वृत्त भ२ जागड अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसवि मालिनि छलि जेनि ।

अपूर्ण कप : दोसव मालिनि छलि जेन ।

(घ) वर्तमान प्रदन्तक अन्तिम त वृत्त भ२ जागड अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फियापदक अरमाण एक, उँक, एँक तथा हीकमे वृत्त भ२ जागड अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिते, होग ।

(च) फियापदीय प्रत्यय न्ह, ह् तथा हकारक लोप भ२ जागड ।

जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहवहि, कहवहुँ, जेनाह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहवनि, कहवौँ, जेनाह, नग, नहि, ले ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

९. ध्वनि स्थापना : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अणु जगहसँ हटि क२ दोसर ठाम छनि जागत अछि । थाम क२ द्रव्य ग आ उँक सञ्चलमे ग रौत नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ जेन शैलिक मध्य रा अन्तमे जँ द्रव्य ग रा उँ आरैए तँ ओकव ध्वनि स्थापनासँ भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- नेनि (नेण), पाणि (पाण), दाणि (दाण), माष्टि (माष्ट), काड (काड), मास (मास) आदि । द्वाद तसेम शैल, सभमे ग निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बगिचै बगम आ स्वधामिचै स्वधामि नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनसु ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ( )क आरम्भकता नहि होगत अछि । कावण जे शैलिक अन्तमे आ उँचाव नहि होगत अछि । द्वाद सञ्चल भाषामे जहिक तहिन मैथिलीमे आएन (तसेम) शैल, सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शैलिक मैथिली भाषा सञ्चल निश्चय अन्तमे हनसुलिण बाखन जेन अछि । द्वाद र्याकवण सञ्चल प्रयोजनक जेन अन्तमे स्थानक कतह-कतह हनसु देन जेन अछि । प्रत्युत पौथीमे मैथिली लेखक प्राप्ति आ नरीण दुनु शैलिक सवन आ समीप पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्ष-रिगाम कएन जेन अछि । स्थान आ समयमे रचितक सञ्चल हनसु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिसारसँ रर्ष-रिगाम गिनाउन जेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्सिचै आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान जेरँ पडि बहन परिवेष्टमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन जेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ कृति नहि होगक, ताद्व दिस लेखक-सञ्चल सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बामरताव यादवक कहँ छनि जे सवनताक अन्तर्गतमे एहन अरन्ध किन्हु ल आरँ देरौक छली जे भाषाक विशेषता छँमे पडि जाए ।





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

-(भाषाशास्त्री डा. बाबुराज यादवक धारणाके पूर्ण कर्षण सङ्ग  
न२ निर्धारित)

## १.२ मैथिली अकादमी, गैरनाम निर्धारित मैथिली लेखन-गैर

१. जे मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि  
रिर्तनीमे प्राचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रिर्तनीमे निखल  
जाय- उदाहरणार्थ-

### ग्राह

एखन  
छाँ  
जकब, तकब  
तनिकब  
अछि

### अग्रह

अखन, अखनि, एखन, अखनी  
छाँ, छाँ, छाँ  
जकब, तकब  
तनिकब। (रैकपिक कर्षण ग्राह)  
अछि, अछि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्षण रैकपिकतया अग्रणाउन जायः  
त२ गेन, त२ गेन रा त२ गेन। जा बहन अछि, जा बहन  
अछि, जाए बहन अछि। कब गेनाह, रा कब गेनाह रा कब  
गेनाह।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'ए' तथा 'ऐ' ततय लिखल जाय जत स्पष्टतः 'अ' तथा 'अँ' सदृश उच्चारण भेल हो । यथा- देखेत, डलैक, लौआ, लौक गलदि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयतः जेह, सेह, गेह, ओह, लोह तथा देह ।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'ग' के स्थान कबई सामान्यतः अग्रहारी धिक । यथा- ग्राह देखि आरह, गालिनि गेलि (गलिया मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र रूप 'ए' रा 'अ' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक रूपे 'ए' रा 'अ' लिखल जाय । यथा:- कयल रा कयल, अयलल रा अयलल, जयल रा जयल गलदि ।

८. उच्चारणमे दु स्ववक रीट जे 'अ' ध्वनि स्वतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक रूपे देल जाय । यथा- धीआ, अठेआ, रिआल, रा धीआ, अठेआ, रिआल ।

९. सांख्यिक स्वतंत्र स्ववक स्थान यथार्थतः 'अ' लिखल जाय रा सांख्यिक स्वव । यथा:- मैआ, कनिआ, किवतनिआ रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिक्तित्वक निम्नलिखित रूप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अव्यय सँ रा लज्जा धिक ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

‘क’ क ऐकपिक कप ‘केव’ बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकानिक फियागदक रौद ‘कय’ रा ‘कए’ अराय ऐकपिक कर्णै नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गरादि निखन जाय ।

१३. अई ‘न’ ओ अई ‘म’ क रँदना अस्माव नहि निखन जाय, किंतु भाषाक स्वरिधार्थ अई ‘ङ’ , ‘ए’, तथा ‘ण’ क रँदना अस्मावो निखन जा सकैत अछि । यथा:- अई, रा अँक, अँउन रा अँउन, कँठ रा कँठ ।

१४. हर्गत छिन निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक रंग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छिन शेट्टमे सँठा क निखन जाय, हँठा क नहि, सँगाउ रिभञ्जिक हेतु हँवाक निखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अस्मासिकलै छन्दरिन्दू द्वावा राउ कयन जाय । पर्वत अदनाक स्वरिधार्थ हि स्याम जँठन मात्रागव अस्मावक प्रयोग छन्दरिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाय पामीसँ ( । ) मुटित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सँठा क निखन जाय, रा हाँगाहँसँ जेठि क , हँठा क नहि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

१९. निश्च तथा दिश्च शिष्टमे रिकारी (२) बहि नगाउन जाय ।

२०. अंक देरनागरी कणमे बाखन जाय ।

२१. किछ धुमिक लेन बरीन चिन्ह रैबराउन जाय । जा जा बहि  
रैबन अछि तारैत एहि दुनु धुमिक रैदना पुरैरत् अय/ आय/ अय/  
आय/ आउ/ अउ निखन जाय । आकि ए रा ओ मँ राउ कएन  
जाय ।

ह./- गोविन्द मा ११/०१/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/०१/१७ अलेख मा  
"स्वप्न" ११/०१/१७

## २. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (बोल्ड कएन कए जाय):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना रौजू नाम,  
रूदा न क उच्चारणमे जीह मुँसमे सँ- (ले सँ- तँ उच्चारण  
दोष अछि)- जेना रौजू गणेश। तानरा मेमे जीह तानसँ,  
समे मुँससँ आ दन्त समे दाँतसँ सँ- निर्गो, सभ आ मोक्ष  
रौजि कइ देखु। मैथिलीमे सँ केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ अ  
सैनो उच्चरित कएन जागत अछि, जेना रयाँ, दोष। य  
अल्लो अल्लव ज जकाँ उच्चरित होगत अछि आ न ड जकाँ  
(यथा संयोग आ गणेश संज्ञा) आ

गडमे उच्चरित होगत अछि। मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, मे  
क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सैनो होगत अछि।

ओहिना द्वाय ग रैनीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि  
काका देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्वाय ग अक्षरक पहिल  
लिखल जागत आ रौजलो जयराँक चाली। काका जे हिन्दीमे  
एकव दोषपूर्ण उच्चारण होगत अछि (लिखन तँ पहिल जागत



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

अछि दूदा रोजन रौदमे जागत अछि, मे शिक्षा पछितक  
दोयक काका हम सब ओकर उचावना दोयपूर्ण ठगसँ क२ बहन  
छी ।

अछि- अ ग ड अछ (उचावना)

छथि- छ ग थ छैथ (उचावना)

गहूँछि- ग हूँ ग छ (उचावना)

आरै अ आ ग जा ए ए ओ ओ अ अः म ए सब लेन माना  
मेहो अछि, दूदा एमे जा ए ओ ओ अ अः म कै संश्रद्धा  
कगमे गगत कगमे प्रश्रद्धा आ उचित कथन जागत अछि ।  
जेना म कै बी कगमे उचित कवरै । आ देखियो- ए लेन  
देखिओ क प्रयोग अछि । दूदा देखिओ लेन देखियो  
अछि । क म ह धवि अ समितित लेनासँ क म ह रौलेत  
अछि, दूदा उचावना काल हमसु हाउ गेहक अछुक उचावना  
प्रश्रद्धा रौलेत अछि, दूदा हम जखन मलोजमे ज् अछुमे रौलेत  
छी, तखना प्रवणका लोककै रौलेत स्वर्णरहि- मलोज२, राउरमे  
ओ अ हाउ ज् = ज रौलेत छथि ।

हमर उ अछि ज् आ ए१ क संश्रद्धा दूदा गगत उचावना होगत  
अछि- गा । ओहिना अछि क् आ य क संश्रद्धा दूदा उचावना  
होगत अछि छ । हमर मे आ व क संश्रद्धा अछि छे ( जेना  
प्रैमिक) आ म् आ व क संश्रद्धा अछि म् (जेना मिस) । ए लेन  
त+व ।

उचावनाक ऑडियो फागत बिदेह आर्काइव

<http://www.videha.co.in/> पर उगवट्ट अछि । हमर कै  
/ म / पर पूरि अकवसँ सटी क२ लिखू दूदा ठ / क२ ली  
क२ । एमे मे मे गहिन सटी क२ लिखू आ रौदरना ली क२ ।  
अकक रौद ठी लिखू सटी क२ दूदा अछ ठी ठी लिखू ली क२  
जेना

छली दूदा सब छी । हमर उअ म मातम लिखू- छठम मातम  
ले । घररनामे रौद दूदा घररनामे रावै प्रश्रद्धा कक ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बहए-

बहै ह्रदा सकेए (उँटाका सके-ए) ।

ह्रदा कथला कान बहए आ बहै ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कथा जगहमे पार्किंग कबराक अस्मि बहै ओकवा । श्रद्धांगन गता लागन जे ह्रदह्रद नाम्ना आ डांगरब कनछे ह्रसक पार्किंगमे काज करैत बहए ।

हुनै, हुनए ये सेहो ए तबहक भेन । हुनए क उँटावण हुन-ए सेहो ।

संयोगले- (उँटाका संजोगले)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कक, गद्यमे क२ सके छी । )

क (जेना वायक)

वायक आ संगे (उँटावण वाय के / वाय क२ सेहो)

सँ- स२ (उँटाका)

चन्द्रबिन्दु आ अश्रुवाव- अश्रुवावमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि ह्रदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँटाका होगत अछि- जेना वायसँ- (उँटाका वाय स२)

वायकै- (उँटावण वाय क२/ वाय के सेहो) ।

कै जेना वायकै भेन हिन्दीक को (वाय को)- वाय को= वायकै क जेना वायक भेन हिन्दीक का ( वाय का) वाय का= वायक क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाय से) वाय से= वायसँ

स२, त२, त, केव (गद्यमे) एते टाक शेर सँहक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसर अर्थ प्रयुक्त भ२ सकेए- जेना, के कहनक ?

रिभक्ति “क”क रचना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

ବନ୍ଧି, ବାରି, ଶେ, ବଗ, ବାଁଗ, ବଗ, ବଗ ଏ ମଭକ ଓଢାବୀ ଆ ଲେଖନ  
 - ଶେ

ଓହ୍ଲ କ ବୈଦନାମେ ହ ଜେନା ମହବ୍ରହ୍ମା (ମହାବ୍ରହ୍ମା ଲେ) ଜତଏ ଏର୍ଥ  
 ବୈଦଳି ଜାଏ ଓତଳି ମାଏ ତଳ ଏକବକ ସହସ୍ରାକବକ ପ୍ରୟୋଗ  
 ଓଚିତ । ସମ୍ପତି- ଓଢାବଣ ମ ଅ ଗ ତ (ସମ୍ପତି ଲେ- କାକା ମଲି  
 ଓଢାବଣ ଆମାଗୀସ ମସ୍ତର ଲେ) । କୁଦା ମରୋତିମ (ମରୋତିମ ଲେ) ।

वास्तुध्य (वास्तुध्य ले)

সক্কেএ/ সক্কে (অর্থ পরিবর্তন)

ମୋଡ଼େଇ/ ମୋଡ଼ି ଲେଗ/ ମୋଡ଼ି ଲବ

পৌড়ৈ/ পৌড়ৈ/ (অর্থ পরিবর্তন) পৌড়ৈ/ পৌড়ৈ

३ जाकनि ( हथी कर, ३ ते रिंकावी ले)

ଉତ୍ତର ଓହି

**ଉତ୍ତର/**

ਉਹਿ ਘਰਾ/ ਉਹੀ ਘਰ

জাহাঙ্গীর বৈশাখ

**পাঁচভায়া**

**দেখিযোক/** (দেখিওক লে- তহিণা ঐ যে জায় ঐ দীর্ঘক যাত্রাক  
প্রয়োগ ঐষুচিতি)

झकाँ / जेकाँ

ତୃତୀୟ ଚର୍ଚ୍ଚା

## କୋଷ / ଚ୍ୟୁତ

ବନ୍ଧି/ ବନ୍ଧି/ ବନ୍ଧି/ ବନ୍ଧି/ ବନ୍ଧି

**त्सोंत्र/ त्सोंत्र**

**বঁট /**

**ରଞ୍ଜି** (ମୋବାଇଲ)

गाँव (गाँव बहि), ऊँदा गाँवक दुध (गाँवक दुध ले । )

## বহুলোঁ পহিবটে

## હયહી/ અહી

সর - সভ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

**संस्कृत - संस्कृत**

**धर्म - धर्म**

**गण - गण**

**संस्कृत - संस्कृत**

**संस्कृत संस्कृत संस्कृत - संस्कृत**

**हमरा और - हम सब**

**आदि- आदि**

संस्कृत/ संस्कृत (गद्यमे प्रयोगक और ऐकता ले)

**होना/ होना**

**जागना** (जागना ले, जेना देन जागना) कदा **जागना-सुनि** (अर्थ परिवर्तन)

**गर्भ/ जागना**

**आदि/ जागना/ आदि/ जागना**

मे, के, मैं, गव (मिहिसँ सँ क२) तँ क२ व२ द२ (मिहिसँ सँ क२) कदा दूरी रा रैनी रिभक्ति संग बहनागव गहिन रिभक्ति ठाके सँ क२। जेना **एमे मैं** ।

**एकरी, दूरी** (कदा क२ ठा)

रिभाषिक प्रयोग मिहिसँ अन्तमे, रीचमे अन्तरात्क कर्पे ले।

आकावाञ्छ आ अन्तमे अ क रौद रिभाषिक प्रयोग ले जेना **दिश**

, आ/ दिश, आ, आ ले )

अपौरुषेयिक प्रयोग रिभाषिक रैदनामे कवर अन्तित आ मात्र यन्त्रिक तन्त्रिकी यन्त्रिकी परिवर्तक)- ओना रिभाषिक संस्कृत क२ २ अन्तरात्क कहन जागत अन्ति आ रत्नी आ उच्चका दूरी ठाम एकव लोप वहेत अन्ति/ वहि संकेत अन्ति (उच्चका लोप वहेत अन्ति)। कदा अपौरुषेयिक सेहो अन्तर्जाले गमेमिर केसमे लोगत अन्ति आ रैचमे मिहिसँ जतए एकव प्रयोग लोगत अन्ति जेना *raison d'être* एतए सेहो एकव उच्चका लैजेलो डेटव लोगत अन्ति, माल अपौरुषेयिक अन्तरात्क





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ले दैत अछि रबन जोड़ैत अछि, से एकव प्रयोग सिकावीक  
रदना देनाग तर्नीकी कर्षे सेहो अछि।

अगमे, एहिमे/ ईमे

अगमे, जहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (कै नहि) मे (अथवा बहिन)

भर

मे

दर

तै (तै, त ले)

सै (सै, स ले)

गाढ तब

गाढ वग

साँस थन

जो (जो go, कले जो do)

तै/तब जेना- तै दुखारे/ तगमे/ तगले

जो/जब जेना- जो कावरा/ जगमे/ जगले

ई/अब जेना- ई कावरा/ ईमे/ अगले/ रुदा एकव एकटा थान

प्रयोग- नावति कतेक दिनमे कहैत बहैत अग

ले/वग जेना लेमे/ वगले/ ले दुखारे

नहै/ लो

गेलो/ ललो/ लवै/ गेनहूँ/ लेनहूँ/ लेन

अग/ जहि/ जे

जहिग/ जहिग/ अगग/ जेग

एहि/ अहि

अग (बालक अतमे ब्राह्म) / ई

अगड/ अछि/ ईड



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

मोथि/ मोथ

जोरी/ जोरी/ जोर

बोली/ बोली

ते/ तग/ तग

जोरी/ जोरी

तग/ ते

उग/ ते

नहि/ ते/ नग

गग/ ते

तहि/ तहि ...

समय मेरुदक संग जखन कोना रिभक्ति जूठै ते तखन समे  
जना समेगव गत्यादि । असगवमे हन्य आ रिभक्ति जूठल  
हने जना हनेसँ, हनेमे गत्यादि ।

जग/ जहि/

जे

जहि/ जहि/ जग/ जे

एहि/ अहि/ अग/ ए

अग/ अहि/ अग/ ए

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

मोथि/ मोथ

जोरी/ जोरी/

जोरी

बोली/ बोली/

बोली





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

**आइव आग**

१०. आगः आग

११. दुःख दुःख १

२. टल गेल टव लव/टेल गेल

१३. देवविह देवकिह, देवविह

१४.

देवविह देवविह/ देवविह

१५. डविह/ डविह डविह/ डविह/ डविह

१६. टवेल/टवेल टवेल/टवेल

१७. एथला

**अथला**

१८.

**रैठनि रैठनि रैठनि**

१९. ३/३२(सररगा) ३

२०

३ (संयोजक) ३/३२

२१. रैठनि/रैठनि रैठनि/रैठनि

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. रैठनि/रैठनि/रैठनि

२५. तथन/ तथन

२६. ज्ञा

बल/ज्ञा बल/ज्ञा बल

२७. निकन/निकन

वाग/वाग रैठनि/ रैठनि वाग/ वाग निकन/रैठनि वाग

२८. ३/३२ जत/ ३/३२ जत/ ३/३२ जत/ ३/३२

२९.

की बुब जे कि बुब जे

३०. जे जे/जे२



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चरकृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

३५. कूदि / यादि(मोष पावरी) कूगद/यागद/कूद/याद/

यादि (मोष)

३६. ओलो/ ओलो

३७.

हंस/ हंस हंस

३८. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३९. सान्-सन्व सान-सन्व

४०. छह/ सात छ/छः/सात

४१.

की की/ की२ (दीर्घाकावाप्तये २ रजित)

४२. जराय जराय

४३. कवयताल/ कवयताल कवयताल

४४. दलान दिगि दलान दिगि/दलान दिय

४५

. लयान गयान/गयान

४६. किछ आब किछ ओब/ किछ आब

४७. जाग छव/ जाग छव जाति छव/जैत छव

४८. गहुँटा छै जाग छव/ छै जाग छव गहुँटा/ छै

जाग छव

४९.

जराय (शरा)/ जराय(होली)

५०. नय/ नय क/ क२/ नय क२ / नय क२/ नय क२

५१. न/नय कय/

कय

५२. एथन / एथन / एथन / एथन

५३.

अलीक अलीक

५४. गलीव गलीव

५५.

**गान्धुमिह संस्कृतम्, ISSN 2229-**



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

१३.

**द्वितीया द्वाका**

१३.

**तत्त्व**

११. गवर्णन/ गवर्णन/

गवर्णन/ गवर्णन

११. रौद्र रौद्र

१२.

**देह देह (अक्षर)**

+०. जे जे

+१

. से/ के से/के

+२. एका अक्षर

+३. उद्दिष्ट उद्दिष्ट

+४. सुख

/ सुख सुख

+३. सत्य सत्य +३.

**द्वितीया**

+१. कवयित्री/३ कवयित्री ल देवक /कवयित्री-कवयित्री

+१. प्रथम

**प्रथम**

+२. सगड १-सगड

**सगड १-सगड**

२०. गद्य-गद्य गद्य-गद्य

२१. खेद-खेद

२२. खेद-खेद

२३. वग

२४. लो-लो लो

२५. सुख सुख



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

१३.

**बुझव** (सिद्धांत अर्थमे)

१. योह यएह / अएह/ सेह/ मएह

२. तातिव

३. अयनाय- अयनाय/ अयनाय/ अयनाय

४. निह- निह

५.

**बिह** बिह

६. अह अह

७.

**अह** (in different sense)-last word of sentence

८. अह अह अह अह

९.

**ह**

१०. अह (play) अह

११. अह- अह

१२.

**अह** अह

१३.

**अह** अह

१४. अह/ अह अह

१५. अह- अह

१६. अह/ अह अह

१७. अह- अह

**अह**

१८. अह (different meaning - got under stand)





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

११३. *बूझबूझ/बूझबूझ/ बूझबूझ (under stood himself)*

११४. *छवि- छवि/ छवि छवि*

११५. *खयाल- खयाल*

११६.

*मोम मोमबत्ती/ मोम मोमबत्ती/ मोम मोमबत्ती*

११७. *कैक- कैक- कैक*

११८.

*मग मग*

११९. *झरना*

१२०. *झरना झरना- झरना झरना*

*झरना*

१२१. *होना*

१२२.

*गबरेल/ गबरेल गबरेल/ गबरेल*

१२३.

*टिस्ट- (to test) टिस्ट*

१२४. *करना (willing to do) करना*

१२५. *जकरा- जकरा*

१२६. *तकरा- तकरा*

१२७.

*बिदेह बिदेह/ बिदेह बिदेह*

१२८. *कबरेल/ कबरेल/ कबरेल कबरेल*

१२९.

*हाथ (उठाव हाथ)*

१३०. *उठाव उठाव/ उठाव उठाव/ उठाव उठाव*

१३१. *आवे भाग/ आवे-भाग*

१३२. *गिरा / गिरा/ गिरा*

१३३. *न/ ल*



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

१३७. रैछा न्याय

(ले) निछा ज्ञाय

१३१. तखन ल (न्याय) कहेत थछि । कहे/ सुले/ देखे छव नद  
कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३४.

कतेक लोटे/ कताक लोटे

१३६. कमाँ-धमाँ/ कमाँ- धमाँ

१४०

- वग वग

१४१. खेवाँ (for playing)

१४२.

डबिहा डबिहा

१४३.

लोखत लोख

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४७.

कस (court-case)

१४९

- रैलगाँ/ रैलगाँ/ रैलगाँ

१४९. जलगाँ

१४९. कमी कमी

१५०. छव छव

१५१. कर्म कर्म

१५२. डुराँ/ डुराँ/ डुराँ/ डुराँ/ डुराँ

१५३. एखनका/

अखनका

१५४. वग/ विख (राकाक अतिम मोह)- वग

१५५. कथनक/

682



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

कवक

१३.३. गवरी गर्ग

१३.१

. रवदी रदी

१३.४. सुना लोवाह सुना/सुना

१३.६. एनाथ-लोनाथ

१३.७.

लोना ल लोवाह/लोना ल लोवाह

१३.८. नदी / ल

१३.९.

लोना डलो

१३.१०. कतह/कतो कली

१३.११. उमविगव-उमविगव उमविगव

१३.१२. लोवाह

१३.१३. लोना/लोनाथ लोनाथ

१३.१४. गग/गग

१३.१५.

क क

१३.१६. दवरी/दवरीजा

१३.१७. लोना

१३.१८.

धवि तक

१३.१९.

धुवि लोना

१३.२०. लोवाह/लोनाथ

१३.२१. लोना

१३.२२. लोना/लोनाथ

१३.२३. लोना/लोनाथ लोनाथ

१३.२४. लोना / लोना



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

१११.

कबरी/कबरी/कबरी

११२. एक/एक

११३. कवि/कवि/कवि

११४.

गु/गु

११५. बा/बा/बा

११६.

ग/ग/ग

११७.

ग/ग/ग

११८. ग/ग/ग

११९. ग/ग/ग

१२०. ग/ग/ग

१२१.

क/क/क

क/क/क

१२२. क/क/क

१२३.

ग/ग/ग

१२४. ग/ग/ग

१२५.

१२६. ग/ग/ग

१२७.

मे/मे

१२८.

ह/ह/ह

१२९. ह/ह/ह

१३०. ह/ह/ह



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय विज्ञान ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

१०१. होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि

१०२. हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाएँ

१०३. देका देका

२००. देखा देखा

२०१. देखा देखा

२०२. सतुवि सतुवि

२०३.

साहेब साहेब

२०४. गोलोह/ गोवहि/ गोवहि

२०५. हेरौक/ हेरौक

२०६. केला/ केला/ केला/ केला

२०७. किछ न किछ/

किछ ल किछ

२०८. घुमेनहूँ/ घुमेनहूँ/ घुमेनहूँ/ घुमेनहूँ

२०९. एका/ एका

२१०. अः/ अह

२११. नया/

नया (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनीक

२१३. सरोक/ सरोक

२१४. गिला/ गिला

२१५. क/ क

२१६. जा/ जा

जा

२१७. आ/ आ

२१८. भ/ भ' (यौगिक कर्मात्तक)

२१९. नियम/ नियम

२२०.

लेख/ लेख

२२१. पहिल अक्षर आ दोसर/ दोसर



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

२२२. तहि/तहिं/ तयि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/ तँ

तै / तग

२२५. नँ/ नगँ नयि/ नहि/ नै

२२६. ते/ तय / एवोहँ/

२२७. डयि/ डै/ डैक / डग

२२८. दृष्टि/ दृष्टियै

२२९. आ (come)/ आर (conjunction)

२३०.

आ (conjunction)/ आर (come)

२३१. कला/ कला/ कला/ कला

२३२. गोलै-गोलै-गोलै

२३३. लै-लै-लै

२३४. कलौ- कलौ- कलौ/ कलौ

२३५. किड न किड- किड न किड

२३६. कहै- कहै

२३७. आर (come)- आर (conjunction-and)/ आर । आर-

आर / आर-आर

२३८. लै-लै

२३९. घुमै-घुमै- घुमै

२४०. एवै- एवै

२४१. लोहि- लोहि/ लोहि

२४२. उ-वाग उ वाग रीट (conjunction), उर कहक (he said)/ उ

२४३. की लै/ काली एवै लै/ की है । की हग

२४४. दृष्टि/ दृष्टियै

२४५.

. मोहि/ मोहि

२४६. तै / तँ/ तयि/ तहि

686



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

२४१.जेरौ

/ जौं जौं

२४५.सभ/ सरौ

२४६.सभक/ सरौलक

२४७.कहि/ कही

२४८.कला/ कोला/ कोलहूँ/

२४९.कवकती भय लव/ भय लव/ भय लव

२४९.कला/ कला/ कला/ कला

२४९.अः/ अह

२४९.अलौ/ अलौ

२४९.लवनि/

लवनि (अर्थ परिवर्तन)

२४९.कलहि/ कलहि/ कलहि/

२४९.नय/ नय/ नय (अर्थ परिवर्तन)

२४९.कनक/ कलक/कनक-मन

२४९.गठवहि गठवनि/ गठवनि/ गठवनि/ गठवनि/

२४९.निधय/ निधय

२४९.लेखव/ लेखव

२४९.गलि अखव कल ठ/ रीछमे कल ठ

२४९.आकावातुमे रिकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातुमे  
प्रयोग शान्ति तर्कनीक युक्तताक परिष्कारक ओकव रीदना अरुण  
(रिकारी) क प्रयोग उचित

२४९.कव (गम्ये आह) / -क/ क२/ क

२४९.देहि- ठहि

२४९.वर्तव/ वर्तव

२४९.होएत/ होएत

२४९.आएत/ आएत/

२४९.आएत/ आएत/ आएत

२४९







२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

२०२. तक/ धवि

२०३. ग२/ लो (meaning different - ऊनरौ ग२)

२०४. स२/ स (रुद्रा द२, न२)

२०५. उ३. (तीन अक्षरक मेन रैदना प्रत्यक्षिक एक आ एकठा दोसरक उ३योग) आदिक रैदना ह आदि। मह३ह/ मह३ह/ क३ह/ क३ह आदिये उ स३हक कोला आर३हकता मैथिलीमे ले अछि। र३ह

२०६. रै३/ रै३

२०७. रौ३/ रौ३ रौ३ (वै३रौ३)

२०८

२०९. रौ३/ रौ३ (रौ३रौ३)

२१०. रौ३/ रौ३

२११. अ३व३रि३/ अ३व३रि३

२१२. ल३/ ल३

२१३. व३व३क३ न३व३क३

२१४. व३/ व३ (

वै३रौ३/ वै३रौ३)

२१५. व३/ व३

२१६. रौ३/ रौ३

२१७. व३व३क३ व३व३क३

२१८. आ (come)/ आ (and)

२१९. ग३ग३ग३/ ग३ग३ग३

२२०. २ केव रारहाव मेरु३क अ३मे मा३, यथा३भर रौ३मे ले।

२२१. क३ह३/ क३ह३

२२२.

व३ (व३)/ व३ (व३) (meaning different)

२२३. त३ग३/ त३ग३

२२४. व३/ व३

२२५. रौ३/ रौ३ रौ३

२२६. रौ३/ रौ३

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

३५. कागज/ कागज कागज

३५. गिले (meaning different - swallow)/ गिले  
(थसए)

३५. बर्द्धिय/ बर्द्धिय

Festivals of Mthila

DATE-LIST (year - 2011-12)

(१४१६ साल)

**Marriage Days:**

Nov.2011- 20,21,23,25,27,30

Dec.2011- 1,5,9

January 2012- 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012- 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29

March 2012- 1,8,9,12

April 2012- 15,16,18,25,26

June 2012- 8,13,24,25,28,29

**Upanayana Days:**

690

बिहारी मिह Vidaha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili  
Fortnightly ejournal बिदेह अथय मैथिली पक्षिक अ पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

February 2012 – 2,3,24,26

March 2012 – 4

April 2012 – 1,2,26

June 2012 – 22

***Dviragaman Din:***

November 2011 – 27,30

December 2011 – 1,2,5,7,9,12

February 2012 – 22,23,24,26,27,29

March 2012 – 1,2,4,5,9,11,12

April 2012 – 23,25,26,29

May 2012 – 2,3,4,6,7

***Mundan Din:***

December 2011 – 1,5

January 2012 – 25,26,30

March 2012 – 12

बिहारी बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

## FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami -20 July

Madhushravani - 2 August

Nag Panchami - 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug

Krishnastami - 21 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 29 August

Hartalika Teej - 31 August

ChauthChandra-1 September

Karma Dharma Ekadashi -8 September

Indra Pooja Aarambh- 9 September



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

Anant Catur dashi – 11 Sep

Agast yar ghadaan – 12 Sep

Pi tri Paksha begins – 13 Sep

Mahal aya Aar ambh – 13 Sept ember

Vi shwak ar ma Pooj a – 17 Sept ember

Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a – 20 Sept ember

Mat ri Navami – 21 Sept ember

Kal ashst hapan – 28 Sept ember

Bel naut i – 2 Oct ober

Pat ri ka R avesh – 3 Oct ober

Mahast ami – 4 Oct ober

Maha Navami – 5 Oct ober

Vi j aya Dashami – 6 Oct ober

Koj agar a – 11 Oct

Dhant er as – 24 Oct ober

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम यैथिनी पारिषद ई पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

Di yabat i , shyama pooj a-26 October

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-27 October

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a-28  
October

Chhat hi -kharna -31 October

Chhat hi - sayankal ik arghya - 1 November

Devot t han Ekadashi - 17 November

Sama pooj ar ambh- 2 November

Kar t ik Poor ni ma/ Sama Bi sar j an- 10 Nov

r avi vr at ar ambh- 27 November

Navanna par van- 29 November

Vi vaha Panchmi - 29 November

Makar a/ Teel a Sankr anti -15 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 21 Januar y

Bas ant Panchami / Sar aswat i Pooj a- 28  
Januar y



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

Achla Sapt mi – 30 January

Mahashi var at ri -20 February

Hol i kadahan -Fagua -7 March

Hol i -9 Mar

Var uni Yoga -20 March

Chai ti navar at r ar ambh - 23 March

Chai ti Chhat hi vr at a -29 March

Ram Navami - 1 April

Mesha Sankr anti -Sat uani -13 April

Jur i shi t al -14 April

Akshaya Tri ti ya -24 April

Ravi Br at Ant - 29 April

Janaki Navami - 30 April

Vat Savit ri -bar asai t - 20 May

Ganga Dashhar a -30 May

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मैथिली बिदेह *ISSN 2229-*

**547X VIDEHA**

Somavati Amavasya Vrat - 18 June

Jagannath Rath Yatra - 21 June

Harisayan Ekadashi - 30 June

Aashadhi Gurupurnima - 3 Jul

VI DEHA ARCHIVE

१. बिदेह ई-पत्रिकाक सभसँ पुरान अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कगमे *Videha e journals all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions*

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक

२. मैथिली पोथी डाउनलोड *Maithili Books Download*

३. मैथिली ऑडियो सङ्कलन *Maithili Audio Downloads*

४. मैथिली वीडियो सङ्कलन *Maithili Videos*

५. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र *Maithila Painting/ Modern Art and Photos*





बिदेहक एहि सब सहयोगी विकीब सेहो एक लेब जाई ।

३. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पुरि-कप "बालमविक गाछ" :

<http://gajendratnakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गड्डा :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह हागत :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलासक) ज्ञानवृत्त  
(बैजग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषींह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रैब बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY  
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मैथिली पोथीक  
आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका रीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१४. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मिथिला चित्रकला,  
आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत्त)

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal* विदेह अथय मैथिली पक्षिक अ पत्रिका विदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति अकामिन

<http://www.shrutipublication.com/>

२१ <http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA लेब सदस्यता लिख

अमेन :

एहि समूहव जाँउ

२२ <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

Subscribe to VI DEHA

enter email address

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका* बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

Power ed by [us.groups.yahoo.com](mailto:us.groups.yahoo.com)

२२. गजेंद्र ठाकुर गड्डा

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. लषा कुँठा

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक गहिम पोडकास्ट मागुँ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२३.  [Vi deha Radi o](#)

२१.  [Join official Vi deha facebook group.](#)

२४. बिदेह मैथिली बाँठा ड्रामा

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मानवीय बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरचिह्न आशय

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: (१) बिदेह द्वारा धारित कर्तव्य अक्षर-  
प्रकाशित कथन लाव गजेन्द्र ठाकुरक निवेदन-प्रवेदन-समीक्षा,  
उपनिषद् (महत्त्वपूर्ण), पत्र-संग्रह (महत्त्वपूर्ण टोपडगव),  
कथा-गल्प (गल्प-गुह), नष्टक(संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मरुद्र आ  
असुराति मय) आ बौद्ध-किशोव सहित बिदेहमे संपूर्ण अक्षर-  
प्रकाशित बौद्ध प्रिंटेड वर्कमे । कवचकवच अक्षरमिक अक्षर-१ सँ १  
Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 बिदेह एहि  
पृष्ठपर नीचे आ प्रकाशकक साइट <http://www.shrutipublication.com/> पर ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

महोदय सुचना (२) सुचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टवर्षीय गहिरा लेख सर्टिफिकेट) एम.एस. एस.क्यू.ए. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. बिदेहक भाषाशास्त्र- बालाचरण शुभम् ।

कवचकम् अन्तर्गत- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-परिचय-समीक्षा, उपासना (महोदय), पद्य-संग्रह (महोदय), कथा-गल्प (गल्प गुरु), नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मरक्ष आ अमरुति मल) आ बालमैथिली-किशोरावस्थागत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशित बाल प्रिण्ट अन्तर्गते । कवचकम् अन्तर्गत, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's Kurukshetram-Antarmanak (Vol. I to VI)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language Maithili

७२ पृष्ठ : मुद्रा भा. क. 100/- (for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/- per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside)

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

547X VIDEHA

Del hi )

मासिक पत्रिका ISSN 2229-

For Libraries and overseas buyers \$40 US  
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print –  
version publisher's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail [shruti.publication@shruti-](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)  
[publication.com](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)

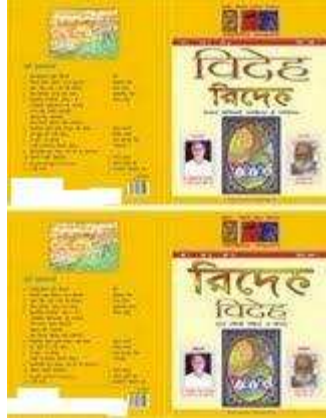
बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिवरुता : देवरागरी -बिदेह क,  
छिटे सङ्कलन :बिदेह-पत्रिका  
(<http://www.videha.co.in/>) क छलव बल्लो समिति ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०३ म अंक ०१ अप्रैल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-



बिदेह:अद्वैतः २: ३: ४

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print -  
version publisher's site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to  
[shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

२ संपादक-

[ बिदेह ई-पत्रिका बिदेह:अद्वैत विविधता आ देकागरी आ गजेन्द्र  
ठाकुर सात खंडक निबंध-शोध-समीक्षा/उपन्यास  
(महत्त्वपूर्ण), पद्य-संग्रह (महत्त्वपूर्ण टोपिकस, कथा-गल्प (गल्प  
ग्रन्थ), नाटक (संस्कृत), महाकाव्य (ब्रम्हायण आ अमरकान्त मय) आ बौद्ध-  
महाकाव्य-संग्रह कवयित्री आ कविता सङ्ग्रह ]





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

१. श्री गोविन्द झा- बिदेहके तबगजावगव उतारि रिश्तेबिसे  
माहताया मैथिलीक नहरि जगावत, थोद जे अगलक एहि  
माहतायामे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुलैत डी  
अगलकेँ स्मरण आ बचामेक आलोचना प्रिय नलैत अछि तै  
किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अगलकेँ  
सदा उपलब्ध रहत।

२. श्री बसन्त झा- मैथिलीमे अ-पत्रिका पत्रिका कएने छल क  
जे अगल माहतायाक प्रचार कए रहल डी, से धन्यवाद। आगा  
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दए  
रहल डी।

३. श्री विद्यानाथ झा "बिदेह"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि  
प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अगल महिमामय "बिदेह"केँ अगला देहमे  
प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकरा कोला  
उपलब्ध "मैथिली" नहि बागल जा सकैछ ? ...एकर ऐतिहासिक  
मुलाकस आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक  
बजबिसे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट होत।

४. श्री. उदय नाथ झा "बिदेह"- जे काज अहाँ कए  
रहल डी तकर चर्चा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे  
होएत। आनंद भए रहल अछि, अ ज्ञानि कए जे एतेक छोट  
मैथिल "बिदेह" अ जर्नलकेँ पढि रहल छथि। ...बिदेहक टोनीस  
अक प्रबलक लेन अभिनंदन।

५. डा. गणेश गुप्त- एहि बिदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक  
सम्वदनीय मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत वंग,  
इतिहास मे एक ठो विशिष्ट हवाक अध्यास आवँत कबत, हमरा  
बिश्वास अछि। अमेरिका शुभकामना आ रक्षाक सख, सम्वद...अहाँक  
पौखी कर्मकेँ अतिरिक्त प्रथम दृष्ट्या रूत भरा तथा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषिंह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

उपयोगी बुझाओछ। मैथिलीमे तँ अगला सुकसक प्रायः अ  
पहिले एहन भए अरतावक पोथी थिक। हर्यपूर्ण हमर हार्दिक  
रक्षाओ स्वीकार करी।

३. श्री बामश्री मा "बामश्री"(आरंभ श्रृंगार)- "अगला" मिथिला  
संस्कृत...रिचय रत्नसँ अरगत भेलहूँ। ...मेव सभ कर्मेन अछि।

१. श्री अजयप्रसाद त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- १९८८-८९ पद प्रथम  
मैथिली पारिषद पत्रिका "बिदेह" केव लेन रक्षाओ आ शुभकामना  
स्वीकार कर।

४. श्री प्रहल्लादसिंह सिंह "मोक्ष"- प्रथम मैथिली पारिषद पत्रिका  
"बिदेह" क प्रकाशक समाचार जामि कलकत्ता चकित हूँ। रक्षाओ  
आह्वानित भेलहूँ। कानचक्रै पकडि जाहि दुबदृष्टिक परिचय  
देनहूँ, ओहि लेन हमर संगकामना।

६. डा. शिरधरसिंह यादव- अ जामि अगाव हर्य भए बहन अछि,  
जे नर सुचना-आधुनिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रेरणे  
दिअएँक साहसिक कदम उठाओन अछि। पत्रकारितामे एहि  
प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क  
सफलताक शुभकामना।

१०. श्री आनंदचरण मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताछमे  
मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के कतेक सहयोग कबतह- अ  
तएँ भविष्य कहत। अ हमर ++ रच्यमे १३. रच्यक अमूल्य  
बहन। एतेक पैघ महल यकमे हमर श्रेष्ठपूर्ण आहूति प्राप्त  
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहरी।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

११. श्री रिजय ठाकुर- मिथिला विश्वविद्यालय- "बिदेह" पत्रिकाक एक देखनहूँ, सम्पूर्ण टीम रक्षाक पत्र अछि । पत्रिकाक संगत त्रिवार्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ग-पत्रिका "बिदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल । "बिदेह" निबन्धन पत्रिका-प्रकाशित हो आ चतुर्दिक अपन स्वर्ण पत्रिका मे कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीप्रताप शर्मा- ग-पत्रिका "बिदेह" केव सम्पन्नताक भगवतीसँ कामना । हमर पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री लक्ष्मण शर्मा- "बिदेह" ग-पत्रिकाक पत्र अछि तँ "बिदेह" नाम उचित आब कतेक कर्षण एकव विवरण भए सकैत अछि । आ-कालि योनिमे उद्भव बहत अछि, हृदय शीघ्र पूर्ण सहयोग देब । कर्मक्षेत्र अन्तर्गत देखि अति प्रसन्नता भेल । मैथिलीक लेन ग यष्टि भेल ।

१५. श्री रामचन्द्र काशी "बिदेह"- जनकपुरधाम- "बिदेह" आननाए देखि बहत भेल । मैथिलीक अन्तर्गत जनकपुरधाम पत्रिकाक तकरा लेन हार्दिक रक्षा । मिथिला बने सकत सकत अपूर्ण । लगातार सहयोग भेटत, से विश्वास करी ।

१६. श्री बाबूराज यादव- "बिदेह" ग-पत्रिकाक माध्यमसँ रीड नौक काज कए बहत भेल, नातिक अर्थात् देखनहूँ । एकव वार्षिक एक जनकुरि निकास तँ हमरा पठाव । कर्मक्षेत्रमे रहत गोठकेँ हम मागक पत्र लिख देल छियनि । योनि तँ होगत अछि जे दिने आरि कए आशीर्वाद दैतहूँ, हृदय उमर आरि रेशी भए लेन । शुभकामना देने-बिदेहक मैथिलीक जोडवाक लेन । .. उक्त प्रकाशक कर्मक्षेत्र अन्तर्गत लेन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

बिदेह। अहं कज कएन अहं, नीक प्रभुति अहं सात  
थुनमे। अहं अहं मेरा आ मे निःस्वार्थ तखन बुझन  
जागत अहं द्वारा प्रकाशित पोथी सतएव दम निखन नहि  
बहिनैक। ओहिना सतकेँ बिनहि देन जगतैक। (स्मृतीकवा-  
श्रीमान् अहं सूनैय बिदेह द्वारा अ-प्रकाशित कएन सतए  
माथिली आर्कागरमे)

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/> पब बिना मुनक डाउनलोड जेन उगनछै छै आ  
तरियामे मेरो बहिनैक। एहि आर्कागरकेँ जे कियो प्रकाशिक  
अनुमति न२ क२ छिष्ट कएमे प्रकाशित कएन छुथि आ तकव ओ  
दम बखन छुथि ताहिपब हमर कोला निरवधि नहि अहं। -  
गजेन्द्र ठाकुर)... अहं प्रति अमेय शुभकामनाक संग।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहं मैथिलीमे अष्टवल्गपब पहिल  
पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अहं अहं मातृभाषावागक  
परिचय देन अहं, अहं निःस्वार्थ मातृभाषावागसँ प्रेरित छी,  
एकव निमित्त जे हमर मेराक प्रयोजन हो, तँ मुचित करी।  
अष्टवल्गपब आद्यागाति पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भ२ जेन।

१२. श्रीमती मेधाजिती रमा- बिदेह अ-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ  
तबि जेन। बिदेह कतेक प्रगति क२ बहन अहं...अहं सत  
अहं आकाशकेँ भेदि दियो, समस्त रिश्ताबक बहन्केँ ताब-ताब  
क२ दियो...। अहं अहं अहं अहं अहं अहं अहं अहं अहं  
रिश्ताबक दृष्टिसँ गावमे गाव अहं। बिदेह।

१३. श्री हेतुकव मा, अष्टवल्ग-जाहि समर्पण भारसँ अहं मिथिला-  
मैथिली मेरा मेरा तबेव छी मे सुन अहं। देशक बाजधानीसँ  
तब बहन मैथिलीक शिखर मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली  
चेतनाक विकास अहं कवत।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

२०. श्री योगेश्वर सा, करिबन्ध, नरेश्वरान्ध- कर्कशेन्द्रम्  
अतिसरि पोथीके निकटमे देखबैक अरुन भेटैत अछि आ  
मैथिली जगतक एकटा उद्भूत ओ समामयिक दृष्टिसम्पन्न  
हस्तक्षरक कर्मरन्ध पवित्रयम् आनन्दित छी । "बिदेह"क  
देवनागरी सँस्कृत पठनामे क. ८०/- मे उपलब्ध भऽ सकन जे  
विभिन्न लेखक लोकनिक भाषाविद्, पवित्रय पत्रक ओ बच्चारणीक  
सम्यक प्रकाशिसँ ऐतिहासिक कहन ज्ञा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे  
रहूत बास करिबा, कथा, विप्रेष्ट आदिक सच्चि सङ्ग्रह देखि आ  
आब अरु प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- रैवाङ्ग स्वीकार कएन  
जाओ ।

२२. श्री ज्ञानकांत- बिदेहक अद्भुत एक पठन- अद्भुत  
मेहनति । चरम-चरम । किछ समालोचना मबथाह. अद्भुत सए ।

२३. श्री भाग्येश्वर सा- अगलक कर्कशेन्द्रम् अतिसरि देखि  
रूपाएन जेना हम अगल दुगलहुँ अछि । एकव रिशोकस्य  
आपुति अगलक सरसमारोहताक पवित्रयक अछि । अगलक बचना  
सामर्थ्यमे उतबोतब वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग लार्दिक  
रैवाङ्ग ।

२४. श्रीमती डा नीता सा- अहाँक कर्कशेन्द्रम् अतिसरि पठनहुँ ।  
जातिवीर्य शिष्टारणी, प्रथि मञ्च शिष्टारणी आ सीत रससु आ  
सब कथा, करिबा, उपन्यास, रान-किशोर सहिब सब उत्तम  
हुन । मैथिलीक उतबोतब विकासक लक्ष्य दृष्टिलोचन लोगत  
अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

२३. श्री मयाशन्द मिश्र- ककफेल्स अतर्लिक मे हमार उगनास  
मृतीधरक जे बिबोध कएन गेल अछि तकर हम बिबोध करैत  
छी । ... ककफेल्स अतर्लिक पोथीक जेन मुतकामना । (श्रीमान्  
मयाजोछाकै बिबोधक कपमे नहि जेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२३. श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककफेल्स अतर्लिक  
पठि मोन हर्षित भऽ गेल..एथन पुन पठयमे रूत समय  
लागत, हृदा जेतक पठनहूँ मे आनन्दित कएनक ।

२१. श्री केदावराथ टोषवी- ककफेल्स अतर्लिक अद्भुत नागन,  
मैथिली साहित्य जेन अ पोथी एकठा प्रतिमान रैलत ।

२४. श्री मयाशन्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर  
स्वरूपक प्रसिद्धि छनहूँ । एकर अहाँक लिखन - ककफेल्स  
अतर्लिक देखनहूँ । मोन आनन्दित भऽ उठन । कोना बचना  
तब-उपवी ।

२६. श्रीमती कमा सा-सम्पादक मिथिला दर्शन । ककफेल्स  
अतर्लिक छिष्ट हर्षा पठि आ एकव प्रारता देखि मोन प्रसन्न  
भऽ गेल, अद्भुत शिल्प, एकव जेन प्रशंस कऽ बहन छी ।  
बिदेहक उन्नततब प्रगतिक मुतकामना ।

३०. श्री नरेन्द्र सा, पठना- बिदेह नियमित देखैत बहैत छी ।  
मैथिली जेन अद्भुत काज कऽ बहन छी ।

३१. श्री बागजोछ ठाकुर- कोनकाता- मिथिलासक बिदेह देखि  
मोन प्रसन्नतासँ भवि उठन, अकक रिशान पविदृष्ट आनन्दकारी  
अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिली बिदेह पत्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

३२. श्री ताराबन्ध बिदेह- बिदेह आ ककषेत्रम् अतिरिक्त देवि चक्रिदेव नागि गेन । आशर्च । श्रुतकामना आ रैवाङ्ग ।

३३. श्रीमती प्रेमनता मिश्र “प्रेम”- ककषेत्रम् अतिरिक्त पठनम् । सत वचना उच्छेष्टिक नागन । रैवाङ्ग ।

३४. श्री कर्तिनाथनाथ मिश्र- रैगुसबाग- ककषेत्रम् अतिरिक्त रैष्ट्र नीक नागन, आर्गाक सत काज जेन रैवाङ्ग ।

३५. श्री महाप्रकाश-सहस्रमा- ककषेत्रम् अतिरिक्त नीक नागन, रिमोनकाय संगहि उच्छेष्टिक ।

३६. श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवराक्षर बिदेह पठनम् । प्रथम तँ अङ्कि एकवा प्रशिक्षामे द्वाद ह्य एकवा द्वादहमिक करै । मिथिला चित्रकलाक सुन्दरै द्वाद अगिला अकमे आव रिद्वृत रैवाङ्ग ।

३७. श्री मञ्जव सुजगान-दवर्तगा- बिदेहक जतेक प्रशिक्षा कएन जाए कम होएत । सत टीज उच्छेष्टिक ।

३८. श्रीमती प्रोफेसर रीणा ठाकुर- ककषेत्रम् अतिरिक्त उच्छेष्टिक पठनीय, रिचावनीय । जे का देखेत छवि पोथी प्रान्त कवरौक उपाय प्रद्वेत छवि । श्रुतकामना ।

३९. श्री भुवणन्द मिश्र मा- ककषेत्रम् अतिरिक्त पठनम्, रैष्ट्र नीक सत तवहै ।



मानवीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

৪০.শ্রী তাবাকাস্তু মা- সম্বাদক মৈথিলী দৈনিক চিথিনা সম্বাদ-  
বিদেহ ত কলকট্ট প্রাণগডবক কাজ কং বহন খুটি ।  
ককক্ষেত্রম্ ঐতমিক ঐদ্রুত নাগন ।

৪২.শ্রী অমরনাথ- ককক্ষেত্রম্ অতীক্ষিক আ বিদেহ দুঃ সাক্ষীম  
ঘটনা অতি, মৌখিকি সাহিত্য গদ্য।

৪৪.শ্রী কেশব কাম- স্বকক্ষেত্রম্ অন্তর্মহিক ভেন শ্রমক ধন্যবাদ, শ্রুতকামা আ রীধাও স্রীকব কবি। আ শটিকৈতাক ভূমিকা গঠনহু। শ্রুমে ত বাগন জেগা কোলা উগায়াস অর্থা দ্বাৰা সৃজিত ভেন শ্রুতি দ্বন্দ্ব পোখী উগায়াস পব ক্রাত ভেন জে এহিয়ে ত সন্ত রিধা সমাহিত শ্রুতি।

৪৩.শ্রী ধনাকব টাকব- অহাঁ নীক কাজ ক২ বহন ছী। ফোঠে  
চৌনবীমে ছিএ এহি শিতাঙ্গীক জগ্নতিথিক অল্পসাব বহত ত২  
নীক।

୧୬.ଶ୍ରୀ ଅଗ୍ନିଷ୍ୟ ସା- ଏହାଙ୍କ ଖୁଡ଼କକ ମରଣସେ ଏତରା ଲିଖରା ମଁ  
 ଏମ୍ବା କଏ ବହି ଲୋକି ମକନ୍ଦୁ ଜେ ଙା କିତାରିଁ ମାଏ କିତାରିଁ ବହି  
 ଶିକ, ଙା ଏକଥା ଓଂନୀଦ ଙ୍ଗି ଜେ ସୈଥିଲି ଏହାଁ ମମ ଖୁବକ ମୋରା ମଁ  
 ଗିର୍ବତବ ମଞ୍ଜୁ ହୋଗତ ଡିବଜ୍ଜିରଣ କଏ ଗ୍ରାଧୁ କବତ ।

৩৭.শ্রী শম্ভু ক্যাব মিহ- রিদেরক তপেবতা ঐ দ্রিয়াশীনতা দেখি  
আন্বাদিত ভ২ বহন ছী । শিখিতকপেণ কহন জা সকেছ জে





२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माथिलीह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

समकालीन मैथिली पत्रिकाक गतिहासमे बिदेहक नाम स्थापितबै  
निखन जाएत । ओहि ऋकषेत्रक घटना सब तँ अर्थावहे दिनमे  
थतम भऽ गेल बहए ह्मदा अहाँक ऋकषेत्रम् तँ अशेष अछि ।

४५.डा. अजित मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन जाए  
कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज  
शग-शगतुब धरि पूजनीय बहत ।

४६.श्री रीतेश मल्लिक- अहाँक ऋकषेत्रम् अस्तुमिक आ  
बिदेहःसदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक स्नातृ ठीक बहए  
आ उमोह रँगन बहए से कामना ।

४७.श्री कुमार बाधक- अहाँक दिशि-निर्देशमे बिदेह पहिने  
मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

४८.श्री सुनन्द मा प्रशंसा-बिदेहःसदेह पठल बही ह्मदा  
ऋकषेत्रम् अस्तुमिक देखि रँद ।अ देरौ लेल रौंधा भऽ  
गेलहुँ । आरँ बिस्मय भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत । अशेष  
शुभकामना ।

४९.श्री विभूति आनन्द- बिदेहःसदेह देखि, ओकर विस्तार देखि  
अति प्रसन्नता भेल ।

५०.श्री मालश्री मल्लिक- ऋकषेत्रम् अस्तुमिक एकब तराता देखि  
अति प्रसन्नता भेल, एतेक विमोह ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि  
देखल बही । एहिना तरियाये काज करैत बही, शुभकामना ।

५१.श्री विद्यानन्द मा- आग,आग,आमकोनकाता- ऋकषेत्रम्  
अस्तुमिक विस्तार, उगाडक रंग गारता देखि अति प्रसन्नता



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

भेन । अहाँक अलक धन्यवाद, कतेक रँवखन ह्य लयावेत डनहूँ  
जे सत पौष मेहबमे मैथिली नागब्रैवीक स्थापना होअ, अहाँ  
उकवा रेखैपव क२ बहन डी, अलक धन्यवाद ।

३.३.श्री अवबिन्द ठाकुर-कुकुम्भेत्तम् अत्रुम्भिक मैथिली साहित्यमे  
कएन गेन एहि तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.७.श्री रुमाव परल-कुकुम्भेत्तम् अत्रुम्भिक पठि बहन डी । किछ  
नघुकथा पठन अछि, रँहूत मार्गिक डन ।

३.१. श्री प्रदीप बिहारी-कुकुम्भेत्तम् अत्रुम्भिक देखन, रँवाङ्ग ।

३.४.डा मणिकान्त ठाकुर-कैमिलेफार्मिया- अणन रिनक्षण नियमित  
मेरुसँ हमरा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भ२ गेन अछि ।

३.६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवालनीय । दूध  
होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि क२  
परोत डी ।

३.०.श्री देवर्षिकव नरीन- बिदेहक निबन्धवता आ रिशोन स्वरूप-  
रिशोन पाठक रखा, एकवा ऐतिहासिक रँनरैत अछि ।

३.९.श्री मोहन भावराज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रँहूत नीक ।  
एखन किछ परेशोनीमे डी, रुदा शीघ्र सहयोग देर ।

३.२.श्री हज्जुरव बहमान हर्षि-कुकुम्भेत्तम् अत्रुम्भिक मे एतेक  
मेहनतक लेन अहाँ साधुवादक अधिकारी डी ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषीमिह चन्द्रिका ISSN 2229-

547X VIDEHA

७३.श्री लक्ष्मी मा "सागर"- मैथिलीमे चमकोविक कर्पे अर्को  
प्रदेशे आनन्दकारी अछि । ..अर्को एखन आव..दुव..रहूत दुवधवि  
जेरौक अछि । सुन्द आ प्रेम बली ।

७४.श्री जगदीश प्रसाद मिश्र- ककषेत्रम् अर्थात् पठन  
कथा सत आ उपास सहस्रौठमि पूर्णकर्पे पठि जेन छी ।  
गाम-घरक भौगोलिक विवरण जे सुझा र्ण सहस्रौठमिमे  
अछि, से चर्चित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उपास मैथिली  
लेखनमे विविधता अर्णक अछि । समाजोत्थान मोक्षमे अर्को  
दृष्टि वैयक्तिक नहि रवन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से  
प्रशंसनीय ।

७५.श्री अशोक मा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- ककषेत्रम्  
अर्थात् जेन र्वाङ्ग आ आर्ग जेन शुभकामना ।

७६.श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा- अर्थात् प्रसाद । धन्यवादक संग  
प्रार्थना जे अर्ण माष्टि-गर्भिके ध्यानमे राखि अर्कक समायोजन  
कएन छी । नर अर्क धवि प्रसाद सवाहनीय । बिदेहकेँ रहूत-  
रहूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सप्ताह (आलेख) नगा बहन  
छी । सभैसा ग्रहणीय- पठनीय ।

७७.बृहन्नाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अर्को सम्पादन मे प्रकाशित  
' बिदेह' आ ' ककषेत्रम् अर्थात्' विनम्र पत्रिका आ विनम्र  
प्रेमी ! की नहि अछि अर्को सम्पादनमे ? एहि प्रश्नमे सँ  
मैथिली क विकास होयत,निर्मित ।

७८.श्री बृधेन चन्द्र मा- गजेन्द्रजी, अर्णक प्रसन्न  
ककषेत्रम् अर्थात् पठि मोन गदगद भय जेन , हृदयमे  
अर्णक छी । हार्दिक शुभकामना ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-

७६. श्री पबसेनर कागडि - श्री गजेन्द्र जी । ककषेन्द्र  
अतिरिक्त पत्रि गदगद आ ललान भेनहू ।

१०. श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठेत बहेत जी । धीरेन्द्र  
धैर्यमिक मैथिली गजनपव आलेख पठनहू । मैथिली गजन कत२  
मँ कत२ छनि गेलक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन ज्ञान-  
पहिछान लोकक छट कएल छथि । जेना मैथिलीमे गठक  
पबसा बहन छति । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् धैर्यमिक जी ओहि  
आलेखमे ओ स्पष्ट लिखल छथि जे किनको नाम जे छटि गेल  
छति तँ से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहरौक द्याल,  
एहिमे आन कोना कावा नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि  
रिषयपव रिस्तुत आलेख सादर आमंत्रित छति । -सम्पादक)

११. श्री मन्त्रेयव सा- बिदेह पठन आ संगहि अहाँक मैथिली ओपन  
ककषेन्द्र अतिरिक्त सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएन  
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय छति ।

१२. श्री हलेश्वर सा- ककषेन्द्र अतिरिक्त मैथिलीमे अपन  
तबहक एकमात्र ग्रन्थ छति, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन  
कौशिल्य देखबामे आएन जे लेखकक हार्डवर्कसँ जुड़न बहरौक  
कावसँ छति ।

१३. श्री सुकांत सोम- ककषेन्द्र अतिरिक्त से समाजक  
इतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ार रीति नीक लागल, अहाँ एहि  
क्षेत्रमे आव आगाँ काज करै से आशी छति ।

१४. श्रीहंसव मदन मिश्र- ककषेन्द्र अतिरिक्त सन कितार  
मैथिलीमे पहिले छति आ एतेक रिशान संग्रहपव शोध कएन जा  
सकैत छति । भविष्यक लेन शुभकामना ।



১৯. শ্রী লীলহৃদ কৃষ্ণাব স্য- বিদেহ গ-পত্রিকাক সভ ঐক গ-  
পত্রম ভেট্টৈত বহুত ঐক্টি । মেথিলীক গ-পত্রিকা টেক এহি  
বীতক গরি হোণত ঐক্টি । অহাঁ আ অহাঁক সভ মহযোগীকৈ  
হাৰ্দিক শূভকাশা ।

717



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)  
547X VIDEHA

माथिली बिदेह बिदेह ISSN 2229-



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१२, सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि  
अछि ततए संपादकाधीन। बिदेह- प्रथम मैथिली पारिषद ई-  
पत्रिका। ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र  
ठाकुर। सह-संपादक: उमेश मंडल। सहायक संपादक: गिर  
धारा सा आ झुझार (महाज कथा कर्ता)। भाषा-संपादक:  
नागेश्वर कथा सा आ पञ्चमीक बिद्वानन्द सा। कवि-संपादक:  
रवीन्द्र कथा आ बलि लेखी मिश्र। संपादक-शोध-अध्ययन: डा.  
जया रमा आ डा. बाबू कथा कथा। संपादक- वाचक-  
वर्ग-चर्चा- लेख ठाकुर। संपादक- सूचना-संपर्क-समाद-  
पुन्य मंडल आ धिया सा। संपादक- अग्रद बिभाग- बिनीत  
उपेय।

बचनाक अपन मौलिक आ अग्रकाशित बचना (जकब  
मौलिकताक संपूर्ण उतवदालि लेखक पाक मया छै)  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेर अष्टैचमैष्टक कर्ग  
.doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छै।  
बचनाक संग बचनाक अपन संपिष्ट पविचय आ अपन ईम कएन  
मेर हवाटे पठैतह, मे आशा करैत छै। बचनाक अंतमे  
ठाकुर बहल, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पवित्र प्रकाशिक  
हेतु बिदेह (पारिषद) आ पत्रिकाकेँ देन जा बहल अछि। मेर  
718



२०१२ (वर्ष ५ मास ५२ अंक १०३)

माधुषिंह चन्दकृष्ण ISSN 2229-

547X VIDEHA

प्राप्त होयबौक रौद यथार्थतर शीघ्र ( मात दिवक भीतर) एकव  
प्रकाशिक अकक सूचना देन जायत । ' बिदेह' प्रथम मैथिली  
पार्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे  
मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएन जागत  
अछि । एहि ई पत्रिकालेँ प्रीति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०९  
आ १३ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-12 सर्पिकाव स्वकृत । बिदेहमे प्रकाशित  
सम्पूर्ण बचना आ आर्काइवक सर्पिकाव बचनाकाव आ संग्रहकर्ताक  
नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किरा  
आर्काइवक उपयोगक अधिकार किराक हेतु  
[ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) पर सर्पिक कक । एहि  
मागछेलेँ प्रीति नक्का ठाकुर, मधुनिका टोषरी आ वणि प्रिया द्वारा  
डिजाइन कएन गेल ।



मिहिवकु

